एक युग : एक पुरुष

मानवीय राजनीतिज्ञ स्व० सिरेमल बापना की जीवनी

लेखक
ओमप्रकाश शर्मा

भूमिका
बनारसीदास चतुर्वेदी

१९६९
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

पहली बार | १९६९

मूल्य | पन्द्रह रुपये

मुद्रक
रायसीना प्रिंटरी
दिल्ली-६

प्रकाशकीय

आत्मकथाए तथा जीवन-चरित सदा प्रेरणादायक होते है। वे व्यक्ति विशेष के जीवन तथा सेवा-कार्यो पर तो प्रकाश डालते ही है, उस युग का चित्र भी सामने रख देते है ।

'मण्डल' ने अबतक बहुत-से आत्म-चरित तथा जीवनिया प्रकाशित की है। इन सबको पाठको ने इतना पसद किया है कि उनमे से कुछेक के तो कई-कई सस्करण हो गये है ।

हमे हर्ष है कि हमारे उस साहित्य मे एक नई पुस्तक का समावेश हो रहा है। प्रस्तुत जीवनी किसी महात्मा या राजनीतिज्ञ की नही है, यह उस व्यक्ति की गाथा है, जिसने प्रशासन मे उच्चासन पर आरूढ होकर भी नीति का मार्ग नही छोडा और अपने कार्य-सचालन मे सदा नीति का अनुसरण किया ।

पुस्तक जहा सुपाठ्य है, वहा प्रेरणादायक भी है । वह बताती है कि ऊचे-से-ऊचे पद पर बैठकर भी आदमी मानवीय मूल्यो की रक्षा कर सकता है और शासन का मुख्य प्रयोजन लोकहित साधन करना है ।

अस्वस्थ होते हुए भी श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने पुस्तक की भूमिका लिख दी, इसके लिए हम उनके आभारी है ।

हमे विश्वास है कि पुस्तक का सभी क्षेत्रो मे आदर होगा और जो भी इसे पढेगे, उन्हे लाभ पहुचेगा ।

—मत्री

निवेदन

१२ मई, १९६५ की बात है। श्री प्रतापसिंह बापना को पं० माखनलाल चतुर्वेदी (जो उस समय अस्वस्थ चल रहे थे) द्वारा अपने सचिव से लिखवाया हुआ निम्न पत्र मिला

मान्यवर श्री बापनासाहब,

मान्य दादा (पं माखनलाल चतुर्वेदी) की ऐसी इच्छा है कि आपके पिता स्व० सिरेमल बापना के विषय मे एक अच्छा-सा संस्मरणात्मक लेख प्रकाशित हो। साथ ही यदि सभव हो तो उनका पुस्तकाकार रूप मे जीवन-चरित प्रकाशित हो। स्व० श्री बापना से पूज्य दादा के घनिष्ट संबंध थे। और श्री बापना की शासकीय योग्यता और विचारो से वह काफी प्रभावित भी थे। अत पूज्य दादा यह जानना चाहते हैं कि इस दिशा मे क्या कोई प्रयत्न हो रहा है? अगर नहीं, तो क्या आप उनसे सबधित सामग्री जुटाकर हमे दे सकेंगे ताकि इस योजना को कार्यान्वित करने पर विचार किया जा सके।

शासकीय जिम्मेदारियो के कारण आप व्यस्त तो अधिक होगे ही, फिर भी यदि आप इस पत्र का शीघ्र उत्तर दे सकें, तो कृपा होगी।

कष्ट के लिए क्षमा करें। भवदीय

...

अपने पूज्य पिता के जीवन-चरित को प्रकाशित कराने की बात पर कौन पुत्र ऐसा है, जो अपने को सौभाग्यशाली न समझेगा, और फिर जब इस योजना को हिन्दी के महान कवि 'भारतीय आत्मा' पडित माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा प्रेरणा प्राप्त हुई हो! इसलिए बापना-बधुओ (स्व० कल्याणमलजी बापना तथा श्री प्रतापसिंहजी बापना) ने 'भारतीय आत्मा' द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार कर लिया और वे अपने पिता के जीवन-चरित से सबधित सामग्री जुटाने मे लग गए। 'भारतीय आत्मा' और उनके अनुज श्री शशिभूषण चतुर्वेदी (वर्तमान सपादक, 'कर्मवीर') के 'मार्गदर्शन मे' श्री सिरेमल बापना की बहुमुखी प्रतिभा के अनुरूप एक प्रश्नावली तैयार की गई। उनके शासकीय, मानवीय, सामाजिक, राजनैतिक सस्मरणात्मक और अन्य पक्षों के बारे मे सूचना और विचार एकत्र करने की दृष्टि से इस प्रश्नावली को उनके निकट मित्रो, परिजनो, परिचितो, सहपाठियो तथा साथियो को भेजा

गया। इस प्रश्नावली का इन सभीने हृदय से स्वागत किया और वापनाजी के जीवन के विभिन्न पक्षो पर प्रकाश डालने वाले लगभग साठ व्यक्तियों से सविस्तर उत्तर प्राप्त हुए।

सर सिरेमल वापना के जीवन का पटल इतना विशाल था कि उसकी झलक प्राप्त करने के लिए होल्कर, अलवर और वीकानेर आदि रियासतो की शासकीय रिपोर्टो, वापनाजी की पत्रावली, भाषणो और टिप्पणियो मे से आवश्यक सामग्री को छाटा गया। जो सामग्री अग्रेजी मे थी, उसका अनुवाद किया गया और इस सम्पूर्ण सामग्री को एक क्रम से लगाकर माखनलालजी चतुर्वेदी की सलाह से जवलपुर के डा० एस० पी० वर्मा को दिया गया। उन्होने कृपा करके इस सारी सामग्री के आवार पर सिरेमल वापना के जीवन-चरित का तथ्य-सकलित मसविदा काफी परिश्रम के साथ कुछ ही महीनो मे तैयार कर दिया। किन्तु इसी वीच 'भारतीय आत्मा' इस असार ससार को सदा के लिए छोडकर चले गये। उनके मार्गदर्शन और परामर्श का अमूल्य लाभ और जीवन-चरित को पूरा करने की प्रेरणा, जो वापना-वधुओ को वरावर मिलती रही थी, वह भी अव नही रही। फिर भी उनका सप्रेम आग्रह वापना-वधुओ के लिए एक स्नेहपूर्ण सतत सुधि और धरोहर के रूप मे काम करता रहा।

वापनाजी की जीवनी को पूरा करने का काम इसके वाद मुझे मिला। तथ्य-सकलित मसविदे को पढकर ही मुझे लगा कि सर सिरेमल वापना के जीवन मे ऐसी अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाए है, जिनको आधार वनाकर एक साहित्यिक कृति की रचना की जा सकती है। उनके जीवन से सम्वन्धित सामग्री मे ऐसे वहुमूल्य ऐतिहासिक तथ्य छिपे हुए हे, जिनको प्रकाश मे लाकर 'एक युग . एक पुरुष' की ऐसी तस्वीर खडी की जा सकती है, जिसने उस युग के जन-जीवन को आलोडित किया था। मुझे लगा कि इस जीवनी के माध्यम से महाकाल के अनत तटो पर पडे हुए उन पदचिन्हो को उभारा जा सकता है, जिनपर समय का 'कोई प्रभाव नही' पड़ता और जो प्रेरणा प्राप्त करने के लिए चिरनवीन और सदैव ताजे रहते हे। इस लक्ष्य को प्राप्त करने मे कहा तक सफल हुआ हू, इसका अनुमान तो पाठक जीवनी को पढने वाद ही लगा सकेंगे। फिर भी इस दिशा मे जहा तक मुझे सफलता मिली है, उसी सीमा तक श्री सिरेमल वापना के मानवीय चरित्र को जन-सामान्य तक पहुचाने मे सार्थकता प्राप्त हुई है, पाठक ऐसा ही समझें। यदि प्रकाशित जीवनी मे कही कोई खोट है, कोई कमी है, तो वह मेरी अपनी है, मेरी सीमित योग्यता की त्रुटि है, क्योकि मैं श्री सिरेमल वापना के स्पन्दनशील मानव-हृदय से प्रत्यक्ष साक्षात्कार नही कर पाया। इसलिए वह कमी

सिरेमल वापना के जीवन की कमी कदापि नही है, क्योकि वह तो एक ऐसे मानव थे, जो एक युग तक ही सीमित नही थे। उन्होने उन जीवन-मूल्यो को अपने जीवन का आधार बनाया था, जो शाश्वत होते है और जो अतीत, वर्तमान और आगत मे उठती और गिरती सभ्यताओ के लिए ज्योति-स्तम्भ का काम करते है।

इस जीवनी को लिखने का श्रेय मै नही लेना चाहता, क्योकि मैंने तो काफी तैयार सामग्री को अधिकाश रूप से काट-छाटकर लगभग वही काम किया है, जो दर्जी किसी कपडे को रूप देने मे करता है। यह प्रसन्नता की बात है कि 'सस्ता साहित्य मण्डल' ने इसको प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि इसको प्रकाशित करने पर 'मण्डल' के सत् साहित्य के भण्डार मे वृद्धि ही होगी। मैने यह कार्य समर्पण-भावना से किया है, अत इसके लिए कोई पारिश्रमिक नही लिया।

अन्त मे मैं डा० एस० पी० वर्मा का आभारी हू, जिन्होने इसका प्रथम मसविदा तैयार किया। निर्मल धवन ने इसकी पाण्डुलिपि तैयार करने मे मेरी सहायता की है। मैं उनका एव उन सब महानुभावो का हृदय से आभार मानता हू, जिन्होने इस जीवनी को रूप देने मे प्रश्नावली के उत्तर भेजने का कष्ट किया और अपने सुझावो एव अन्य प्रकार से सहायता प्रदान की।

—ओमप्रकाश शर्मा

भूमिका

"मैने बहुत-सी किताबे पढी है, और जो नही भी पढी उनकी आलोचना की है।"

वधुवर स्वर्गीय अन्नपूर्णानदजी का यह मधुर व्यग्य आधुनिक आलोचनाओ तथा भूमिकाओ पर लागू होता है। हमारे प्रतिष्ठित आलोचको के पास या तो समय नही है, या फिर उनमे उदारता का अभाव है और इन कारणो से वे लेखको के प्रति न्याय नही कर पाते। टरकौअल आलोचना करना या रसम-अदाई के तौर पर भूमिका लिखना साहित्यिक अनाचार है।

अपने स्वास्थ्य की वर्तमान सकटमय परिस्थिति मे भी मै उपरोक्त अनाचार का भागी नही बनना चाहता। इसलिए स्व० सिरेमल बापनाजी की इस उत्कृष्ट जीवनी को मैंने ध्यानपूर्वक पढा और बिना किसी सकोच के मैं कह सकता हू कि उससे मुझे आश्चर्य तथा हर्ष भी हुआ। निस्सन्देह, यह किसी सिद्धहस्त लेखक की रचना है, जो चरित्र-चित्रण मे कुशल है।

प्रारभ मे ही एक गलती को सुधार देने की जरूरत है। इस पुस्तक मे एक जगह पर लिखा गया है कि मेरा श्री बापनाजी से सपर्क रहा। यदि ऐसा होता तो मेरे लिए वह बडे सौभाग्य की बात होती, पर मै उन दिनो (१९१४ से १९२० तक) राजकुमार कालेज, इन्दौर का एक हिन्दी शिक्षक था और मुझमे न तो इतनी योग्यता थी और न इतना साहस ही कि श्री बापना जैसे उच्चपदस्थ व्यक्ति के सपर्क मे आ सकता। हा, मैने उनकी प्रशसा अवश्य सुन रखी थी और उदयपुर के श्री कन्हैयालालजी, जो हमारे कालेज मे ही अध्यापक थे, प्राय उनके गुणगान किया करते थे।

बापनासाहब का जन्म सन् १८८२ मे हुआ था और स्वर्गवास सन् १९६४ मे। इस प्रकार वह ८२ वर्ष जीवित रहे और इस दीर्घ अवधि मे वह इकतालीस वर्ष शासक बने रहे।

शासक होना कोरमकोर सौभाग्य ही नही, अभिशाप भी है, क्योकि शासको को अपनी अन्तरात्मा के विरुद्ध अनेक कार्य करने पडते है। "**काजल की कोठरी मे कैसौ हू सयानौ जाइ, एक रेख कज्जल की लागि है पै लागि है।**" निस्सन्देह, यह बडे सौभाग्य की बात हुई कि बापनासाहब जीवन-पर्यत 'तलवार की धार' पर चलते रहे और अपने असाधारण व्यक्तित्व पर उन्होने आच नही आने दी। उनका मुख सदैव उज्ज्वल ही रहा। उनकी इस सफलता के मूल मे उनके कई गुण थे—जन्मजात सहृदयता, विनम्रता, ईमानदारी और अपरिग्रह, और इन

सबसे ऊपर थी उनकी निर्भयता। ये गुण उन्हे अपने पूर्वजो से विरासत मे मिले थे और उन्होने यत्नपूर्वक उनकी रक्षा ही नही की, बल्कि उनमे वृद्धि भी की थी। अपने इन गुणो से उन्होने जैन धर्म तथा जैन समाज को गौरवान्वित किया था। यदि वह समाज बापनासाहब के चरण-चिह्नो पर चलने लगे, तो वह स्वय अपना तथा देश का बहुत हित कर सकता है।

यह पुस्तक किसी उपन्यास की तरह मनोरजक है और किसी धर्मग्रंथ की तरह उपदेशप्रद भी। लेखक महोदय ने पूर्वजन्म मे अवश्य ही कुछ पुण्य सचय किया होगा, जिससे उन्हे अपनी लेखनी को धन्य बनाने के लिए ऐसा बढ़िया पात्र मिल सका।

ज्यो-ज्यो मैं इस पुस्तक को पढता गया मेरे मन मे बापनासाहब के प्रति श्रद्धा बढती ही गई और साथ-ही-साथ मन मे यह पछतावा भी बढता गया कि ऐसे महापुरुष के निकट सपर्क मे मैं क्यो नही आ सका। किस्से-कहानिया, घटनाए और पत्र तथा वार्तालाप किसी भी जीवन-चरित की जान होते हैं और इस ग्रथ मे जो घटनामूलक बाते लिखी गई हैं, उन्होंने पुस्तक की सजीवता तथा उपयोगिता को चार चाद लगा दिये हैं। उनसे चरितनायक की विशेषताओ पर काफी प्रकाश पडता है। एक उदाहरण पढ लीजिए:

> "श्री बापना का अपने शासन-काल मे नित्य का नियम था कि वह सुबह ९-१० बजे तक बगीचे मे खड़े होकर जो भी व्यक्ति आता था, उससे मिलते और उसके दु ख-दर्द की गाथा सुनकर जो भी मदद बनती, करते थे। ऐसे मौके का लाभ उठाकर नाथूसिह पिस्तौल मे कारतूस भरकर बापनासाहब को गोली मारने के इरादे से पहुचा और मिलनेवालो की पक्ति मे सबसे आखिर मे खडा हो गया। सब मिलनेवाले चले गये और तब वह उनके पास पहुचा और अपना रिवाल्वर तानने का प्रयत्न करने लगा।
>
> बापनासाहब उसके मन की बात ताड गये, परतु उस भयानक परिस्थिति मे किसी प्रकार भी विचलित न होते हुए। उन्होने गंभीर मुद्रा मे नाथूसिह से पूछा, "क्या चाहते हो ?" नाथूसिह ने कहा, "मैं आपको मारना चाहता हू।" बापनासाहब बोले, "ठीक है! यह तो तुम कभी भी कर सकते हो, परतु मारने से पहले मेरे योग्य काम हो वह ले लो और उसके बाद जब चाहो तब मार देना। मैं तो हमेशा ही यहा मिलता हू और मिलता रहूगा।"
>
> यह उनकी अन्त करण की खरी वाणी थी, जिसका नाथूसिह के मन पर प्रभाव हुए बिना न रहा। उसके हाथ से रिवाल्वर छूटकर जमीन पर गिर गया, आखो से आसुओ की धारा बहने लगी और अन्दर का क्रोध और विद्वेष प्रेम और दीनता मे परिणत हो गया, जिससे अभि-

भूत होकर नाथूसिह वापनाजी के चरणो मे गिर पडा। इसका प्रभ वापनासाहब पर भी पडे बिना न रहा। उन्होने नाथूसिह को दोनो हाथो से उठाकर छाती से लगा लिया। नाथूसिह बडी देर तक वापनासाहब के सीने से लगा हुआ फूट-फूटकर रोता रहा। वापनासाहब ने अपने रूमाल से उसका मुह और आखे पोछी और उसे धीरज बधाकर कहा, 'तुम्हे जो तकलीफ है, वह सब तुम मुझे सुनाओ।' वह बडे ध्यान से, शान्तिपूर्वक उसकी व्यथा सुनते रहे कि किस प्रकार पुलिस ने उसके विरोधियो से मिलकर उसे अन्यायपूर्वक बर्बाद किया है। उसने बताया कि उसके खिलाफ कई झूठे मुकदमे चलाये, जो न्यायालय मे जाकर सभी झूठे पाये गए और अब भी सरकारी कार्यालयो मे उसके खिलाफ अनेक कार्यवाहिया चालू है। लडने की अब उसमे शक्ति नही रह गई है। श्री वापना ने उससे कहा कि तुमने जो कुछ मुझसे कहा है, वह सब लिखकर मुझे दे दो। इसके बाद उसका गिरा हुआ रिवाल्वर उठाकर उन्होने उसे वापस दे दिया। नाथूसिह ने दूसरे ही दिन अपनी सब कठिनाइया लिखकर उनके सामने प्रस्तुत की, जिन्हे पढकर वापनासाहब का दिल भर आया और हर महकमे से सबधित उसकी मिसिले तुरत मगवाकर थोडे ही समय मे उन सबका निर्णय करा दिया।"

श्री वापनासाहब की उदारता के अनेक दृष्टात इस ग्रथ मे वर्णित है। क्या ही अच्छा हो, यदि उनपर लाल निशान लगाकर इस पुस्तक की प्रतिया हमारे राज्यो के भिन्न-भिन्न शासको को भेट कर दी जाय, ताकि वे भी कुछ शिक्षा ग्रहण कर सके।

एक स्थान पर लेखक ने लिखा है

"इस बात पर भी सहसा किसीको विश्वास नही होगा कि एक पूरे राज्य के मालिक श्री वापना, जिसके वह चौदह वर्ष तक प्रधान मत्री रहे, चार वर्ष तक नाबालिग शासन के सर्वेसर्वा रहे, जब कार्यभार से मुक्त हुए तो कर्ज मे डूबे हुए थे। आज के युग मे उनके स्थान पर कोई दूसरा व्यक्ति होता तो करोडो की सपत्ति का मालिक होकर पदमुक्त होता। जिनकी कलम मे इतना जोर था कि लाखो का वारान्यारा कुछ क्षणो मे ही कर सकता था, उसने अपने लिए कुछ नही किया, यह जानकर आज की पीढी उसे क्या कहेगी? वास्तव मे आधुनिक पीढी के लोगो और विशेष रूप से मत्रियो और प्रशासको के लिए उनका यह उदाहरण अनुकरणीय होना चाहिए।"

पर कह सकते हे कि श्री वापना जैसे सहृदय शासक हमे वहुत ही कम मिले ।
सहृदयता एक ऐसा दुर्लभ गुण है, जो शासको मे प्राय नही मिलता । अपने
इस गुण के कारण ही वापनासाहव तत्कालीन सार्वजनिक कार्यकर्ताओ तथा
नेताओ के भी सम्मान के पात्र वन गये थे ।

इस वात का श्रेय श्रद्धेय वापनासाहव को ही है कि महात्माजी जैसे 'खतरनाक' व्यक्ति को एक देशी राज्य मे निमन्त्रित किया जा सका । वापनासाहव की प्रगतिशीलता का यह एक प्रमाण था ।

बन्धुवर हरिभाऊ उपाध्याय, श्री वैजनाथ महोदय, श्रद्धेय सर्वटे साहव, डा० काटजू तथा महामना मालवीय प्रभृति ने उनकी भूरि-भूरि प्रशसा की है । पर जहातक प्रचार की कला का सम्वन्ध है, वापनासाहव अन्य प्रशासको से वहुत पीछे थे । उन्होने किसी प्रसिद्ध पत्रकार को अपने पास नही रक्खा, जो उनके लिए दुभाषिये का काम करता ।

वापनासाहव ने अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति-प्राप्त आचार्य गीडीज को इन्दौर नगर के पुन निर्माण की योजना वनाने के लिए निमन्त्रित किया था और उन्होने एक योजना वनाई भी थी । जिस समय सन् १९१८ मे प्रोफेसर गीडीज ने अपने नक्शो को महात्मा गाधी को प्रदर्शनी-भवन मे दिखलाया था, हमे उन दोनो महानुभावो के साथ-साथ दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । यदि वापनासाहव ने केवल यही एक काम किया होता, तव भी उनका शुभ नाम इन्दौर के इतिहास मे स्मरणीय माना जाता ।

इन्दौर के निवासियो ने ७५ हजार की लागत से सिरेमल वापना छात्रावास वनवाकर अपनी कृतज्ञता का परिचय दिया था, पर इतना ही पर्याप्त नही । मध्य प्रदेश के नवयुवको के लिए वापनासाहव का यह जीवन-चरित सुलभ कर देना चाहिए और वहा के शासको को इसकी एक-एक प्रति भेट भी की जानी चाहिए । लेखक ने वडे कलापूर्ण ढग पर अपने ग्रथ का उपसहार किया है । उनका 'एक उपसहार' अध्याय सर्वथा पठनीय वन पडा है । उनके शब्द सुन लीजिये

"वीसवी सदी के इस वैज्ञानिक युग मे भौतिकता एक वृहत मकडी के समान वन गई है, जो रास्ते मे आनेवाले को अपने जाल मे लपेटती चली जाती है । आज उसी भौतिकता रूपी मकडी के जाल मे फसे वैज्ञानिको के दल छटपटा रहे हैं । चारो ओर गहन अंधकार हे, जिसमे प्रकृति, पुरुप, अडपिड सभी समा गये है ।"

"किन्तु इस अधेरे मे दूर से, वहुत दूर से, मानवो की एक छोटी-सी टोली सहस्रो वर्षो से एक ऐसी मशाल को अपने हाथ मे लेकर आगे वढ रही है, जिसका दृढ निश्चय है कि अधेरा रह नही पायगा । प्रकाश के आते ही

वह हट जायगा और भौतिकता इस सम्मिलित वाणी की गूज मे खो जायगी, छिन्न-भिन्न हो जायगी। यह टोली मनुष्य की सास्कृतिक धरोहर के कधो पर चढकर बराबर आगे बढ रही है। इनका नारा है—तेजोमय पृथ्वी को कोई भी क्षत-विक्षत नही कर सकता, मानवता की भावना सफल होकर रहेगी। इसका मानना है कि विधाता की सृष्टि मे मानवता ही सर्वश्रेष्ठ है, वह प्रचड शक्तिशाली बमो से भी नष्ट नही हो सकती, क्योकि प्रकृति का सबसे बडा सत्य स्वय मानव है। लगता है, सिरेमल बापना इसी छोटी-सी टोली के एक सदस्य थे।"

जीवन-चरित मेरा प्रिय विषय रहा है और जीवनी लेखको को मैं अपना सजातीय ही मानता रहा हू। इस ग्रथ के कुशल लेखक को अपनी बिरादरी के बीच पाकर मैं उनका हार्दिक अभिनदन करता हू।

क्या ही अच्छा हो, यदि इस ग्रथ के अनुवाद मराठी, गुजराती, उर्दू तथा अग्रेजी मे भी प्रकाशित कर दिये जाये ! विभिन्न जातियो तथा सम्प्रदायो के बीच सद्भावना उत्पन्न करने मे यह पुस्तक बहुत सहायक हो सकती है।

स्वर्गीय बापनाजी को श्रद्धाजलि अर्पित करने का अवसर मुझे मिला, इसे मैं अपना परम सौभाग्य मानता हू।

—बनारसीदास चतुर्वेदी

२१ न० प्राइवेट वार्ड,
सरोजनी नायडू अस्पताल,
आगरा
१५ अगस्त, १९६९

श्रद्धांजलि

मानव-जीवन की सच्ची सफलता इसी मे है कि वह दूसरो के लिए जीये। ऐसे मनुष्य विरले ही होते है, पर उनके ही क्रिया-कलापो तथा जीवन से मानवता का तेज प्रकट होता है और मनुष्य के उज्ज्वल भविष्य मे हम सभी का विश्वास दृढ होता है। सिरेमलजी बापना ऐसे ही विरले पुरुषो मे से थे।

मै इसे अपना परम सौभाग्य मानता हू कि मुझे उनके सम्पर्क मे आने का अवसर मिला। मेरे पिताजी और सिरेमलजी बापना उदयपुर मे एक ही स्कूल मे पढे थे और वे एक-दूसरे के मित्र थे। बापनाजी के स्नेहपूर्ण आग्रह पर मेरे रोगी पिता अपना इलाज कराने के लिए इन्दौर गये और दो महीने बाद उनका वही पर देहान्त हो गया। इसके उपरान्त बापनासाहब ने पढाने के लिए मुझे अपने पास बुला लिया। उनकी कृपा से मै उनके साथ चार वर्ष तक उनके परिवार मे रहा और मैने इदोर मे स्कूल की शिक्षा प्राप्त की।

बापनासाहब बडे शिक्षा-प्रेमी थे और अपने स्नेहीजनो के बच्चो तथा निरावलम्बी बच्चो को शिक्षा दिलाने का उनका स्वभाव ही-सा बन गया था। वह हम सभी का बडा ध्यान रखते थे, पर इस बारे मे दिखावा बिल्कुल नही करते थे, क्योकि किसी भी प्रकार के प्रदर्शन से वह कोसो दूर थे।

यह मेरे लिए बडे गौरव की बात थी कि बापनासाहब जबतक जीवित रहे, उन्होने मुझपर अपनी कृपा-दृष्टि बराबर बनाये रखी। मेरे मन मे उनके प्रति अगाध श्रद्धा है और उनकी स्मृति से हमारी भावनाए पवित्र होती है और हमारी निष्ठा सुदृढ होती है।

बापनासाहब ने दरिद्रनारायण की सेवा जिस ढग से की, वैसी कम ही लोग कर पाते है। वह सच्चे अर्थो मे आध्यात्मिक पुरुष थे और सत्याचरण, न्यायप्रियता, मानवता, समानता, निर्भयता तथा उत्सर्ग-भावना उनके जीवन के अग थे।

मै बापनासाहब का परम आभारी हू, पर वैसे भी ऐसे महापुरुषो को श्रद्धाजलि अर्पित करना मै अपना पुनीत कर्त्तव्य मानता हू। डा० ओमप्रकाश शर्मा द्वारा लिखित उनकी इस जीवनी की मैं पूर्ण सफलता चाहता हू। मैं जानता हू कि उन्होने बडी निष्ठा और स्नेह से यह काम किया है। हम सब इसके लिए उनके आभारी है।

—दौलतसिंह कोठारी
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

विषय-सूची

एक युग
एक पुरुष

•

सिरेमल बापना

जिन्होंने मानवीय आधार पर शासन का कुशलतापूर्वक संचालन करके एक आदर्श प्रस्तुत किया

: १ :

सन्त राजनीतिज्ञ

श्री सिरेमल बापना अपने समय के राष्ट्र-निर्माताओ में से एक थे। उन्होने जीवन के प्राय प्रत्येक क्षेत्र मे अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक आदि सभी क्षेत्रों मे उन्होंने इतनी अधिक मौलिक और सृजनात्मक प्रवृत्तियों को जन्म देकर उनका विकास किया कि आज वे प्रवृत्तियां उनके कीर्ति-स्तम्भो के रूप में उन उच्च आदर्शो की गौरव-गाथा कहती जान पडती है, जिनके श्री बापना स्वय साकार रूप थे।

उन्होने बप्पा रावल, राणा सागा और महाराणा प्रताप की वीर वसुधरा मेवाड भूमि मे जन्म लिया। ऐसे प्रतिष्ठित और सम्पन्न परिवार मे उनका आविर्भाव हुआ, जिसमें जन्मे आपके पूर्वज सेठ जोरावरमलजी की कीर्ति-गाथा सर वाइले और कर्नल टाड जैसे प्रसिद्ध इतिहासकारो ने गाई है और जिन्हे तत्कालीन राजनीतिज्ञो मे वरिष्ठ स्थान प्राप्त था। उन्हे भी वही सस्कार, वही प्रतिभा और वही आदर्श उत्तराधिकार मे प्राप्त हुए।

श्री बापना उन विरल महापुरुषो में से थे, जिन्होने आदर्श और न्याय की रक्षा के लिए सकुचित स्वार्थो को कभी अपने निकट भी नही फटकने दिया। उन्होने दूरदर्शिता, चरित्रबल तथा प्रशासनिक योग्यता का एक ज्वलन्त आदर्श उपस्थित किया। इसीलिए महामना मदनमोहन मालवीय के शब्दो में वह "संत राजनीतिज्ञ" थे।

१६३६ का वर्ष सपूर्ण विश्व के लिए भयानकता लेकर आया, क्योंकि इसी वर्ष ३ सितम्बर को जर्मनी ने इग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की, जो अन्ततोगत्वा द्वितीय महायुद्ध में परिणत हो गया। इस समय भारत गाधीजी के नेतृत्व मे अपनी दासता के बधनो को

ढीला करता हुआ आजादी की मजिल के नजदीक पहुच चुका था। इसीलिए जब अग्रेजो ने भारतीय नेताओ की इच्छा के विरुद्ध देश को युद्ध की आग मे झोक दिया तो सपूर्ण देश राष्ट्रीय क्षोभ और आक्रोश से भर उठा। गाधीजी नें कहा, "यदि अग्रेज सारे ससार की स्वाधीनता के लिए लड रहे हैं, तो उन्हे साफ कह देना चाहिए कि भारत की स्वाधीनता भी उनके युद्ध-उद्देश्यो मे सम्मिलित है।" काग्रेस ने १५ सितम्बर, १६३६ को घोषणा की कि यदि भारत से युद्ध मे सक्रिय सहयोग लेना है, तो उसे स्वतत्र राष्ट्र घोषित किया जाय।

इन घोषणाओ से भारत के अग्रेजी शासको को बडी बेचैनी हुई। वे देश को आजाद नही करना चाहते थे, पर साथ ही वे अपनी इस मशा को प्रकट करने की स्थिति मे भी नही थे। इसलिए उन्होने साम्प्रदायिक समस्या और देशी रियासतो के सवाल की आड लेकर भारत की स्वाधीनता के प्रश्न को टालने की कोशिश की।

देशी रियासतो के शासको को भी देश की स्वाधीनता से डर लगता था। इसलिए उन्होने भी अग्रेजो की हा-मे-हा मिलाते हुए ऐलान किया कि "यूरोप मे लोकतन्त्र की रक्षा के लिए हम शक्ति से अधिक सहायता करेगे," हालाकि उनकी अपनी रियासतो मे निरकुशता का बोलबाला था। प्रतिक्रिया-स्वरूप 'देशी राज्य लोक परिषद' ने उसी वर्ष श्री जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता मे लुधियाना मे अपने वार्षिक अधिवेशन मे रियासतो मे पूर्ण उत्तर-दायी शासन की माग की। इस जमाने मे वैसे तो सभी देशी रिया-सतो मे दमघोटू वातावरण था, पर इनमे भी राजपूताना, मध्य भारत, पंजाब और हिमाचल आदि उत्तरी भारत के देशी राज्य कही अधिक पिछडे हुए थे। पर इस गहन अधकार मे भी एक ज्योति-किरण चमक रही थी। इन्दौर का राज्य अपने प्रधान मन्त्री श्री सिरेमल बापना की अद्भुत सूझबूझ, अथक परिश्रम और अटूट विश्वास के कारण एक आधुनिक राज्य बन चुका था। यह वही युग था, जब सदियो की प्रगति सिमटकर दशाब्दियो मे उपलब्ध होने लगी थी। अन्य देशी राज्यो की जनता जबकि अत्यधिक दीन-हीन दशा

मे जीवन-यापन कर रही थी, तब सिरेमल बापना के मार्गदर्शन में इन्दौर राज्य पुराने दकियानूसी विचारों को छोड़कर नवीन मान्यताओ को अपना रहा था।

देशी राज्य लोक परिषद देशी राज्यो मे जनता की हालत सुधारने के लिए आन्दोलन कर रही थी। जयपुर मे उत्तरदायी शासन के लिए सत्याग्रह छिडा हुआ था। इससे पूर्व जोधपुर, बीकानेर और लोहारू की रियासतो में जनता और शासन के बीच गहरी मुठभेड हो चुकी थी। इस वातावरण का कुछ-न-कुछ प्रभाव होल्कर राज्य पर भी पड़ना अनिवार्य था।

कुछ वर्ष पहले इन्दौर नगर के लिए पर्याप्त जल-व्यवस्था की दृष्टि से शहर से कोई बारह मील की दूरी पर एक विशाल जलाशय—यशवत सागर—का निर्माण किया गया था। वहा से जल लाने की व्यवस्था के व्यय की पूर्ति के लिए इन्दौर की नगरपालिका ने १९३९ मे कुछ नये कर जनता पर लगा दिये। नये करों ने बढती हुई महगाई के उस युग में आग में घी का काम किया। आरम्भ मे जनता की आवाज क्षीण थी, पर सत्य और न्याय उसके पक्ष मे थे, इसलिए धीरे-धीरे उसमे काफी जोर आ गया। नगर में व्यापक हडताल हो गई, जो काफी दिनो तक चली। महात्मा गाधी द्वारा चलाये गए करबन्दी और सविनय अवज्ञा आन्दोलन का अनुभव हडतालियों के सामने था। जनता मे अशान्ति और असतोष के बढने के साथ ही यह भय भी बढने लगा कि हडताल का मार्गदर्शन कही असामाजिक तत्वों के हाथो में न चला जाय। जब परिस्थिति अधिक गंभीर हो गई तो राज्य के प्रधान मत्री सिरेमल बापना ने राज्य के मंत्रि-मडल की बैठक रात को अपने निवास-स्थान बक्षी बाग में बुलाई। हडतालियो तथा उनके नेताओ के प्रति क्या व्यवहार किया जाय, इस बारे में शासक वर्ग में तीव्र मतभेद था। एक मत यह था कि हडतालियो की माग के आगे यदि शासन झुक गया तो राज्य की प्रतिष्ठा को बहुत चोट पहुंचेगी और जनता में शासन के प्रति अनादर बढ जायगा, बात-बात पर हडतालें होने लगेगी और इस तरह शासन का सारा रौब-दौब समाप्त हो जायगा। इसलिए

इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस का यह सुझाव था कि हड़तालियो के नेताओ को गिरफ्तार करके रातो-रात कही दूर भेज दिया जाय। इसके लिए उन्होने कुछ व्यक्तियो की सूची भी पेश की, जिसमे श्री मिश्रीलाल गगवाल का नाम भी था, जो उस समय देशी राज्य लोकपरिषद के एक प्रमुख कार्यकर्ता थे। वाद मे वह होल्कर राज्य के मत्री भी रहे। भारत के स्वाधीन होने पर वह मध्य भारत के मत्री वने और फिर मध्य प्रदेश सरकार मे भी मत्री रहे।

सिरेमल वापना का मत इससे भिन्न था। वह जनता के कष्टो और मागो पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने के पक्ष मे थे। उनका विचार था कि आज हमारी जनता निराशा के गर्त मे पडी हुई है। उसको उठाने के लिए आवश्यक है कि हमदर्दी और मित्रता का हाथ उनकी ओर वढाया जाय। उनका मानना था कि मनुष्य एक विचारशील प्राणी है। इसलिए डडे के जोर अथवा हिसात्मक शक्ति से उसके मन को नही जीता जा सकता। इसके लिए उसकी भावनाओ और अनुभूति को प्रभावित करना जरूरी है, उसकी विचार-शक्ति को सत् और असत् का ज्ञान कराना आवश्यक है, तभी जनता शासन का उचित रूप से अनुसरण कर सकती है।

इस प्रकार वहुत देर तक आपस मे विचार-विनिमय होता रहा और अन्त मे श्री वापना ने इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस की तजवीज नामजूर कर दी और नगर मे शान्ति वनाये रखने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। यह एक तरह आग से खेलना था। हडताल कोई भी रूप ले सकती थी। हुआ भी ऐसा ही। एक दिन हडतालियो की भीड महाराजा तुकोजीराव क्लाथ मार्केट मे इकट्ठी हो गई। उसमे कुछ असामाजिक तत्त्व भी शामिल हो गये। हडतालियो ने मार्केट मे भारी आतक पैदा कर दिया और प्रशासन की पूरी अवहेलना की गई। इन्दौर के कलेक्टर स्वय हडतालियो के वीच उनको समझाने-वुझाने पहुच गये, तो भीड ने उन्हे भी घेर लिया। वडी कठिनाई से कलेक्टर महोदय भीड से वाहर निकले। पुलिस ने हडतालियो पर जितना ही अपना रौव-दौव जमाना चाहा, स्थिति उतनी ही गभीर होती चली गई, अन्त मे होल्कर राज्य की

सेना के जनरल कारपेन्डल शस्त्रो से सुसज्जित अपनी कौर को लेकर भीड मे घुसे। भीड मे एक बार तो भगदड़ मच गई, पर थोड़ी ही देर मे नेताओ द्वारा जोश दिलाने पर भीड मे खोया साहस लौट आया और वह भी कुछ महत्वपूर्ण स्थानो व नाको पर डट गई। जनरल साहब की मशीनगन भी भीड को टस-से-मस न कर सकी।

ऐसी विषम स्थिति का पता जब इन्दौर राज्य के तत्कालीन महाराजा यशवन्तराव होल्कर को चला तो उन्होने माणिक बाग मे श्री बापना, उनके मन्त्रि-मडल और नगर के कुछ प्रतिष्ठित नागरिको को मन्त्रणा के लिए बुलाया। इनमे नगर-सेठ सर हुकुमचन्द भी थे।

जिस समय इस भयकर स्थिति को सम्भालने के बारे मे विचार हो रहा था, उस समय श्री बापना का हृदय-मथन चल रहा था। बार-बार उनका कर्तव्य उन्हे झकझोर रहा था, क्योकि उन्होने ही जनता की ओर से नगर मे शान्ति और व्यवस्था को बनाये रखने की जिम्मेदारी उठाई थी। इसलिए बार-बार उनका मन उनसे कहता था कि तुम्हारा स्थान यहा नही, उन हडतालियो के बीच मे है, जहा पर शासन, शाति और व्यवस्था को खतरा पैदा हो गया है। वह उठकर खडे हो गये और महाराजासाहब से प्रार्थना की कि मै स्वय हड़तालियो के बीच शाति और व्यवस्था स्थापित करने के लिए जा रहा हू।

महाराजा होल्कर को बापनासाहब के इस निश्चय पर भारी आश्चर्य हुआ और सेठ हुकुमचन्द तो इस विषम निश्चय से इतने विचलित हुए कि अपनेको रोक नही सके। उन्होने कहा, "वहा की स्थिति बहुत भयानक है, भीड बहुत उत्तेजित है, वहापर जान का खतरा है, इसलिए आप वहा न जाय।" पर बापनासाहब एक बार जो निश्चय कर लेते थे, वह अटल हो जाता था और इसलिए वह उनकी बात को सुनी-अनसुनी करके कलेक्टर को अपने साथ लेकर चल दिये।

मार्ग मे कार मे बैठकर भी कलेक्टर ने उनसे कहा, "आपका वहा जाना सकट से खाली नही है। इसलिए मेरा अनुरोध है कि

आप वहा न जायं।" श्री बापना को कलेक्टर से इन शब्दो की आशा नहीं थी। उन्होने थोडा-सा रोष प्रकट करते हुए कहा, "संकट के समय भी हमे अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए और अगर आपको वहा चलने से डर लगता है, तो भले ही आप मेरे साथ न चले।"

क्लाथ मार्केट के द्वार पर भीड इतनी अधिक थी कि उनको अपनी कार छोडनी पडी। मार्केट के चारो ओर उन्हे लोगो के सिर-ही-सिर दिखाई पडते थे। बापनासाहब द्वार से होते हुए मार्केट के अन्दर चले गए। कलेक्टर और पुलिस के बडे अधिकारियो ने जब श्री बापना को अकेले इस प्रकार निडरता से भीड मे घुसते देखा, तो वे भी उनके पीछे-पीछे हो लिये। पर आगे जाकर भीड काफी सघन हो गई थी और ये लोग बापनासाहब का साथ न दे सके। पुलिस भीड के चारो ओर घेरा डाले हुए थी। ये अधिकारी उस घेरे से बाहर निकलकर पुलिस के साये मे खडे हो गये। इस बीच जनरल कारपेंडल मशीनगन ताने हुए अपनी हथियारबन्द कार को भीड के बीच बराबर घुमा रहे थे। सचमुच यह बडा नाजुक मौका था, क्योकि एक भी गलत कदम सैकडो लोगो की जान का लेवा हो सकता था। किन्तु श्री बापना को अपनी जनता पर पूरा विश्वास था। इससे पहले भी अनेक बार ऐसे अवसर उपस्थित हुए थे और होल्कर राज्य की जनता की जो सेवा बापनासाहब ने की थी, उस विश्वास के सहारे सदैव ही जनता-जनार्दन ने उनको अपना सरक्षक, सहयोगी, निर्भीक साथी और मार्गदर्शक मानकर उनके आदेशो का पालन किया था। इसलिए उस दिन भी उन्होने अपना आत्म-सयम नही खोया और न वह उग्र भीड को देखकर विचलित हुए। वह मार्केट मे कपडा-मिलो की दुकानो के बीच से निकलते हुए चौक मे पहुच गये, जहापर पुलिस और मिलिटरी ने हडतालियो को घेर रक्खा था। हडताली सब प्रकार के दबाव के बावजूद वहा से हट नही रहे थे। मार्केट मे चारो ओर कपडे की बडी-बडी गाठे पडी हुई थी। यदि गोली चल जाती तो जान-माल की बहुत भारी हानि होने का खतरा था। बापनासाहब ने स्थिति की गभीरता को भाप

लिया और वह तुरन्त कपडे की एक ऊंची गाठ पर [illegible] खड़े हो गये। उन्होने जनता को सम्बोधित करते हुए जो कुछ कहा, उसका सार यह था कि मैने अहिल्यावाई के इस महान् मालव प्रदेश की जनता की तन-मन-धन से सेवा की है। आज सपूर्ण देश राजनैतिक उत्क्राति से गुजर रहा है। इस स्थिति में हम सबको मिलकर यह सोचना है कि क्या हम होल्कर राज्य के नाम पर कलक का टीका लगाना चाहते है ? गुजरे जमाने मे आपके सहयोग से राज्य ने शासन-व्यवस्था और सामाजिक सुधार मे जो असाधारण प्रगति की है, वह स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगी। यह ठीक है कि जनता विवश होकर ही हडताल जैसे भयकर अस्त्र को काम मे लाती है, किन्तु सभी समस्याओं को शान्तिपूर्वक ढग से निपटाया जा सकता है। उन्होने हड़तालियो से शातिपूर्वक अपने-अपने घरो मे लौट जाने का अनुरोध किया और इतने दिनो से चल रही हडताल को समाप्त करने की अपील की। श्री वापना की उपस्थिति से एकदम जनता को यह अनुभूति हुई कि यह वही व्यक्ति है, जो सदैव हमारे सुख-दु ख मे साझी रहा है। प्रधान मंत्री के रूप मे उन्होंने जनता-जनार्दन की जो सेवा की थी और अपनी रचनात्मक प्रतिभा के कारण राज्य-भर के लोगो के लिए जीवन-निर्वाह के जो सुख-साधन उपलब्ध कराये थे, वे सभी साकार हो उठे। इसलिए तनाव धीरे-धीरे कम हो चला और भीड से आवाजे आने लगी—"चारो ओर से पुलिस और सैनिको ने हमारा घेरा डाला हुआ है। आप ही वताये कि हम लोग यहा से कैसे जायं। जवतक नौकरशाही का दवदवा और हिसक शक्ति का प्रतिनिधित्व करनेवाली पुलिस और सेना के जवान हमारे सामने डटे है तवतक हम भी अपनी मान-मर्यादा को नही छोड सकते। निहत्थे होने पर भी हम यहीपर डटे रहेंगे, भले ही खून की नदिया वह जाय।"

इसी बीच नगर के एक वडे सेठ कन्हैयालाल भडारी ने श्री वापना के कान मे कहा, 'भीड की मनोदशा उत्तेजनापूर्ण है। स्थिति अच्छी नही है। अच्छा हो, यदि आप किसी दुकान के छज्जे पर जाकर वहा से लोगो को समझावें। इस प्रकार भीड़ के वीच

मे अकेले खडे होकर अपनेको सकट मे न डाले।" किन्तु बापना-साहब ने भडारी की बात पर ध्यान न देकर सेना और पुलिस के अधिकारियो को क्लाथ मार्केट को तुरन्त खाली कर देने की आज्ञा दे दी।

बापनासाहब ने यह आदेश देकर एक बडा भारी सकट मोल लिया था, क्योकि हो सकता था कि पुलिस और सेना के हटते ही उत्तेजित भीड श्री बापना और शासन के दूसरे अधिकारियो के प्रति हिसात्मक कार्यवाही कर बैठती, किन्तु श्री बापना को इन्दौर की जनता का पता था। वह जानते थे कि जनता उनको कितना प्यार करती है और उनके सकेत मात्र पर क्या नही कर सकती। इसके साथ ही निडरता उनमे कूट-कूटकर भरी थी। जनता पर उनकी उपस्थिति का इतना चमत्कारपूर्ण प्रभाव पडा कि जैसे ही सेना और पुलिस ने क्लाथ मार्केट को खाली किया वैसे ही भीड ने गगनभेदी नारा लगाया, 'बापनासाहब जिन्दाबाद! बापनासाहब की जय हो! बापनासाहब अमर रहे!"

लेकिन बापनासाहब ने इन जयकारो को बन्द करवाते हुए कहा, "आपको मेरी जयकार नही करनी चाहिए, क्योकि जो कुछ मै कर रहा हू वह तो वास्तव मे महाराजासाहब का आदेश है। इसलिए हमे उन्हीकी जय-जयकार करनी चाहिए।" इसके बाद धीरे-धीरे सारा क्लाथ मार्केट खाली हो गया। महाराजा होल्कर ने जब इस घटना का पूरा वृतान्त सुना तो उन्होने सन्तोष की गहरी सास ली। किन्तु शासन के कुछ अधिकारियो को यह अच्छा नही लगा कि जो काम पुलिस और फौज नही कर सकी, उसे केवल बापनाजी की उपस्थिति ने सभव बना दिया।

इस घटना की हडतालियो के अलग-अलग वर्गो पर भी अलग-अलग तरह की प्रतिक्रिया हुई।

उग्रवादी हडतालियो का मत था कि हडताल समाप्त नही करनी चाहिए। वे सोचते थे कि जनता की एकता के सामने शासन घुटने टेक चुका है और यदि हडताल जारी रही तो हमारी सभी मागे महाराजा को माननी पडेगी।

उदारवादी ठीक इसके विपरीत सोचते थे। उनका मानना था कि जनता-जनार्दन के संरक्षक श्री बापना के ही कारण खून-खराबी होने से बची है। यदि आज वह घटनास्थल पर न पहुंचते तो न जाने कितने निर्दोष लोगों की जान चली जाती। हमें सारा भूलकर उनका अनुरोध स्वीकार कर लेना चाहिए।

मध्य-मार्गियों का कहना था कि यह सही होते हुए भी कि बापनाजी का जनता पर भारी प्रभाव है और वह उनका बड़ा आदर करती है, हमको तुरन्त हडताल समाप्त नहीं करनी चाहिए। एक-दो दिन प्रशासन का रुख देखना चाहिए।

उदारवादियों को यह पसन्द न था, क्योंकि वे सोचते थे कि हडताल को तुरन्त समाप्त न करके हम बापनाजी के रूप में ऐसे व्यक्ति का अपमान कर रहे है, जिसने अपने जीवन के सबसे महत्व-पूर्ण तीस वर्ष यहा की जनता की सेवा में लगाये हैं।

पर उग्रवादी ठीक इसके विपरीत सोचते थे। उनका मानना था कि बापनाजी पूरी तरह महाराजा होल्कर के आदमी हैं और उन्होने जो कुछ भी किया वह सब महाराजा की प्रसन्नता के लिए किया।

उदारवादी इस मत का प्रतिवाद करते थे और उनका कहना था कि यशवन्त सागर बाध तैयार करवाकर क्या उन्होंने इन्दौर की जनता का जल-सकट सदैव के लिए समाप्त नहीं कर दिया था? मजदूरो के काम के घटो मे कमी करके और बोनस की प्रथा आरंभ करके क्या उन्होने यहा के मजदूरों का भला नहीं किया था? अनिवार्य शिक्षा और स्त्री-शिक्षा को बढावा देकर क्या उन्होंने जन-जागरण का झण्डा ऊचा नही किया? नये बाजारों का निर्माण करवाकर, नया बिजलीघर खोलकर और राज्य में बने सामान की सरकारी खरीद मे प्राथमिकता दिलाकर क्या उन्होंने व्यापारियों और उद्योगों का लाभ नही करवाया? शासन और न्यायालयों को अलग-अलग करके क्या उन्होने जनता को शुद्ध न्याय दिलाने में मदद नहीं की? मुकदमों की तुरन्त सुनवाई और फैसलों में शीघ्रता करवाकर क्या उन्होने कचहरी मे जनता के कष्टों को दूर करने में मदद नहीं की?

बापनाजी के प्रधान-मन्त्रित्व काल मे पहले जो पुलिस जुल्मो-सितम का प्रतीक मानी जाती थी, उनके प्रयत्नो से क्या वही जनता की सेवक नही बन गई ? मन्दिरो मे हरिजनो को प्रवेश दिलाने का कानून बनाकर क्या उन्होने समाज के विघटनकारी तत्वो को मुह-तोड़ उत्तर नही दिया और अपनी जान की बाजी लगाकर भी क्या उन्होने राज्य मे हिन्दू-मुस्लिम एकता को कायम नही रखा ?

उग्रवादियो का इसके लिए केवल एक ही उत्तर था। यदि बापनाजी ऐसा नही करते तो वह इस राज्य में तीस वर्ष तो क्या, तीन वर्ष भी नही ठहर पाते। जो कुछ भी उन्होने किया वह सब परिस्थितियो के दबाव ने उनसे कराया। वह समझदार थे, इसलिए उन्होने जमाने की माग समझकर उसके अनुरूप अपनेको और होल्कर राज्य को ढालने का प्रयत्न किया।

किन्तु उदारवादियो को इस उत्तर से भारी असतोष था। उनका कहना था, "तो क्या गरीब विद्यार्थियो को अपने पैसे से वजीफे देना, जरूरतमन्द व्यक्तियो की आर्थिक सहायता करना, बाल-विवाह और अनमेल विवाहो को कानूनन वर्जित करना, जन-स्वास्थ्य के लिए आवश्यक कदम उठाना, अस्पतालो मे इतना सुधार करना कि देश-भर के रोगी वहा इलाज कराने आये, सभी प्रकार की शिक्षा को उपलब्ध कराने के लिए स्कूल और कालेज खोलना, जनता को मता-धिकार दिलाना, गाव-गाव पचायते प्रारम्भ करवाना, खेतो के लिए सिचाई की सुविधा, उत्तम बीज, उत्तम खाद के लिए सहकारी समितियो का निर्माण और वे सब काम जिनसे होल्कर राज्य आज ५८२ रियासतो मे आधुनिकता और जन-राज्य के लिए ट्रावनकोर, बडोदा और मैसूर जैसी रियासतो का मुकाबला कर रहा है, यह सब भी क्या बापनाजी ने अपने स्वार्थ के लिए किया ?

उग्रवादी इससे निरुत्तर हो गये और मध्य-मार्गियो की यह सलाह मान ली गई कि दो दिन बाद हडताल समाप्त कर दी जाय। जनता-जनार्दन का जिस व्यक्ति पर इतना अटूट विश्वास था, वही श्री सिरेमल बापना हमारे चरित्र-नायक है।

: २ :

उज्ज्वल वंश-परंपरा

उन्नीसवी सदी के आरभ मे राजस्थान का राजनैतिक वातावरण बडा डावाडोल था और विनाश के काले बादल चारों ओर मडरा रहे थे । राजस्थान उस समय अनेक छोटी-बड़ी रियासतों में बटा हुआ था और यहा के राजा, राव, उमराव और राणा कोई भी इतना बलवान नही था, जो सम्पूर्ण राजस्थान में एकता कायम कर सके। छोटी-छोटी बातो को लेकर इन राज्यों के बीच शत्रुता हो जाती थी, जो आमतौर पर लड़ाई का रूप धारण कर लेती थी । सारे प्रदेश मे 'जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली' कहावत चरितार्थ हो रही थी । कलह और फूट के बीज धीरे-धीरे अंकुरित होकर विषवृक्षो का रूप धारण कर रहे थे।

मुगल साम्राज्य अपनी अन्तिम सासे ले रहा था । दिल्ली में मुगलो का नाम मात्र का शासन था और मराठे मुगल सम्राट से चौथ वसूल करते थे । शिवाजी के महान आदर्शो को भूलकर मराठा सरदारों मे स्वार्थलिप्सा तेजी से बढ रही थी । होल्कर, सिन्धिया और पेशवा सभी अपने राज्यो को बढ़ाने में यत्र-तत्र सभी ओर आक्रमण कर रहे थे । राजस्थान के शासक आपसी कलह और फूट मे फसे हुए थे और मराठो ने अपने पंजे राजस्थान मे भी फैलाना शुरू कर दिये । बाजीराव पेशवा ने उदयपुर पहुंचकर मेवाड़ के राणा को सन्धि करने पर विवश कर दिया और कुछ समय बाद सभी मराठे सरदार उससे चौथ वसूल करने लगे ।

मेवाड़ को शक्तिहीन देखकर अन्य विघटनकारी शक्तियो का भी हौसला बढ गया । इनमें पिडारियो के दल प्रमुख थे । उन्होने राजस्थान के अनेक इलाको में भयकर लूटमार की और जनता की शान्ति को खतरे में डाल दिया । इस तरह जब राजस्थान की छाती

पर एक ओर मराठे और दूसरी ओर पिडारी चढे बैठे थे और वहा के राणा और उमराव परस्पर कलहो से पैदा हुई फूट के शिकार थे, तब इस परिस्थिति का लाभ उठाकर बुद्धिमान अग्रेजो ने अपनी राजसत्ता का विस्तार राजपूताना मे भी करना आरभ कर दिया। वे एक के बाद एक जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, जैसलमेर और उदयपुर आदि के सभी नरेशो की मामूली बातो पर हुई शत्रुता का फायदा उठाकर राजपूताना के सभी राज्यो को अपने शिकजे मे कसने लगे। इस सब का मिलाजुला प्रभाव राजस्थान पर यह पडा कि चारो ओर खण्डहर, उजाड और वीरान स्थान नजर आने लगे, क्योकि जो भी आता, यहा के गावो को जलाता हुआ चला जाता, खेती नष्ट हो जाती, भवन खण्डहरो मे बदल जाते और यहा के निवासी अपने वतन को छोडने पर विवश हो जाते । क्षण-क्षण मे होनेवाले राजनैतिक परिवर्तनो से जनता तो क्या, यहा के शासको तक का अस्तित्व खतरे मे पड जाता था। ऐसे निराशापूर्ण वातावरण मे भी राजस्थान की जनता के हृदय से नैतिकता पूरी तरह नष्ट नही हुई थी और इस प्रदेश के पुनरुत्थान के लिए यही आशा का सबसे बडा सबल बनी, क्योकि भले ही किसी प्रदेश की स्वतत्रता नष्ट हो जाय, उसका सम्मान चला जाय, किन्तु यदि उसके अन्दर नैतिकता का कुछ भी अश शेष रह जाता है, तो वह उसके बल पर उन सब चीजो को पुन प्राप्त कर लेता है ।

ऐसे समय मे मेवाड राज्य को पुन समृद्धशाली और प्रगतिशील बनाने का श्रेय श्री जोरावरमलजी को था। उन्होने राजस्थान की उस काल-रात्रि मे प्रकाश की ऐसी मशाल ऊची की, जिसके कारण क्या राजनैतिक, क्या सामाजिक और क्या धार्मिक, सभी क्षेत्रो मे पुन-र्निर्माण हुआ ।

इस समय मेवाड के शासक महाराणा मानसिह थे । मेवाड बहुत कमजोर हो गया था। मानसिह के बाद राणा भीमसिह मेवाड की गद्दी पर बैठे। कमजोरी के कारण उनको अग्रेजो से सन्धि करनी पडी और अग्रेज सरकार ने कर्नल टाड को उदयपुर मे अपना एजेट बनाकर भेजा। इस सन्धि के कारण मेवाड पर मराठो के हमले

बन्द हो गये और पिडारियों की लूट समाप्त कर दी गई। जब राज्य मे शान्ति स्थापित हो गई और किसी प्रकार का खतरा न रहा तो महाराणा भीमसिह को अपने उजडे हुए राज्य को फिर से आबाद करने और कृषि तथा व्यापार को उन्नत करने का अवसर मिला। इसमे कर्नल टाड ने काफी सहयोग दिया। यह वही कर्नल टाड है, जिन्होने प्रथम वार राजपूताना का प्रामाणिक इतिहास लिखा, जिसका आज भी ऐतिहासिक साहित्य मे बहुत ऊंचा स्थान है। राजस्थान का इतिहास लिखने के लिए कर्नल टाड ने बडी खोज की और घोर परिश्रम किया। यही कारण है कि अबतक राजपूताना के जितने भी इतिहास लिखे गये है, उनका मुख्य आधार कर्नल टाड का ग्रन्थ ही रहा है। उन्होने राजपूतो की प्रदेश-भक्ति, आत्मोत्सर्ग के आदर्श और वीरता के उदाहरणो से अपने इतिहास को सजोया है। इसी कारण कर्नल टाड को मेवाड राज्य से विशेष अनुराग हो गया था। वह दिल से कोशिश करने लगे कि मेवाड राज्य की आर्थिक स्थिति मे जल्दी ही सुधार हो।

जब कर्नल टाड सन् १८१८ (वि०स० १८७५) मे अग्रेजी सरकार के राजनैतिक प्रतिनिधि बनकर उदयपुर आये तो उन्होने राणा भीमसिह को सलाह दी कि वह बीकानेर के प्रसिद्ध सेठ जोरावर-मलजी को, जो उस समय अपने निवास-स्थान जैसलमेर को छोडकर इन्दौर मे आ बसे थे, मेवाड की दुर्दशा को सुधारने के लिए आम-त्रित करे, क्योकि कर्नल टाड सेठ जोरावरमलजी की बहुमुखी प्रतिभा से अच्छी तरह परिचित थे। उनको पता था कि न केवल अग्रेज सरकार ही उनपर भारी विश्वास करती है, वरन् इसके साथ ही उत्तरी भारत के सभी रजवाडे उन्हे बडे आदर की दृष्टि से देखते है। उन्होने अपने अनेक अग्रेजी अफसरो से यह भी सुन रखा था कि होल्कर राज्य और अग्रेजी सरकार के विगड़े सबधों को सुधारने और सुलझाने मे सेठ जोरावरमलजी की योग्यता और कुशलता का बडा भारी हाथ था, क्योकि होल्कर राज्य व ईस्ट इडिया कम्पनी के वीच सन् १८१८ मे जो सन्धि हुई थी उसको होल्कर राज्य के अनु-कूल वनाने मे उन्होने विशेप योगदान दिया था। कर्नल टाड को यह

भी पता था कि सेठजी होल्कर राज्य के प्रबध मे भी पूरा सहयोग देते थे। जोधपुर, जैसलमेर आदि रियासतो पर भी उनका अच्छा प्रभाव था, क्योकि उन्होने अग्रेजी सरकार के साथ इन रजवाडो के मैत्री सबध स्थापित करवाने मे बड़ी सहायता दी थी।

उपरोक्त पृष्ठभूमि को भलीभाति समझकर महाराणा भीमसिह ने सेठ जोरावरमलजी को पूरे सम्मान के साथ मेवाड मे अपनी कोठी स्थापित करने के लिए अपने एक विश्वसनीय सरदार के हाथ, कर्नल टाड के परिचय-पत्र के साथ, एक निमत्रण-पत्र भेजा। दूसरे शव्दो मे यह कहा जा सकता है कि मेवाड की भयकर दशा को सुधारने के लिए सेठ जोरावरमल को राणा की यह एक महान् चुनौती थी और इस निमत्रण को स्वीकार कर सेठ जोरावरमल ने उस चुनौती को स्वीकार किया। उस समय की मेवाड की भयकर दशा को कर्नल टाड ने इस तरह व्यक्त किया है—"मेवाड का इतना पतन हो गया था कि नागरिक नगरो को छोडकर चले गये थे, यहातक कि उदयपुर के राणा और उनके परिवार को भी आवश्यक सुविधाए प्राप्त नही थी। यह वही मेवाड था, जिसका इतिहास कदम-कदम पर प्रशसनीय वीरता, अनुकरणीय आत्मोत्सर्ग, पवित्र त्याग और आदर्श देश-प्रेम से लिखा गया था। इस छोटे-से राज्य ने जितने वर्षो तक उस समय के सबसे अधिक सपन्न साम्राज्य का वीरतापूर्वक मुकावला किया था ऐसे उदाहरण सपूर्ण ससार के इतिहास मे भी वहुत कम मिलते है। उदयपुर का अबतक का इतिहास आजादी की लड़ाई का इतिहास था। सासारिक सुख, सपत्ति और ऐश्वर्य को त्यागकर उसने स्वतत्रता और अपने गौरव की रक्षा की थी। वावर के जमाने मे यह अत्यत शक्तिशाली और विस्तृत राज्य था, किन्तु औरगजेव के वाद जव मुगल साम्राज्य का तेजी से पतन हुआ और दिल्ली मे मराठो की जीत हुई, तो उन्होने सारे राजपूताने और खास तौर पर उदयपुर राज्य पर कई हमले किये, जिसके फलस्वरूप उदयपुर को काफी हानि उठानी पडी और उसका काफी भाग उनके हाथ से चला गया था। तव अग्रेजो ने ही मराठो से उदयपुर की रक्षा की थी। उस समय की दुर्दशा का हाल इसी

बात से जाना जा सकता है कि उदयपुर और जहाजपुर (जिसका अतर १४ मील है) के बीच केवल दो छोटे-छोटे कस्बे ऐसे रह गये थे, जिनपर राणा का शासन था। बाकी सब वीरान था, यहातक कि मानव के पद-चिह्न भी नही मिलते थे। राजमार्गो पर बबूल और दूसरे वृक्ष उग आये थे और वीरानों में चीतो और जगली सूअरो का निवास था। प्रत्येक भवन खण्डहर हो गया था। भीलवाडा मे जहा दस वर्ष पूर्व पाच हजार परिवार रहते थे, जीवन का नाम-निशान तक नही था। गलियों में सन्नाटा छाया हुआ था। कोई जीवधारी प्राणी दीख नही पडता था। हा, कभी-कभी कुत्तो के भौकने की आवाज जरूर आ जाती थी।"

सेठ जोरावरमल ने इस गुरुतरभार को संभालने की जिम्मेदारी इसलिए उठाई थी, क्योंकि उन्हे राजपूताने की जनता में ऐसी दुरवस्था मे भी ऊचे नैतिक आदर्श के दर्शन हो रहे थे, जिनके कारण प्रत्येक जाति जीवित रहती है। उन्होने इस अटल विश्वास के साथ महाराणा के आह्वान को स्वीकार कर उदयपुर मे अपनी कोठी स्थापित की। उन्हे अपनी शक्ति पर विश्वास था, क्योकि उन्होने बहुत ही छोटे पैमाने पर अपने व्यापार का काम शुरू किया था, किन्तु अपने परिश्रम और आत्मविश्वास के कारण उनका व्यापार इतना चमक उठा था कि देश के विभिन्न ३५० से अधिक नगरो में ही नही वरन् चीन और रगून में भी अपनी पेडिया स्थापित कर ली थी। उस जमाने मे जब रेल, तार, डाकखाने आदि यातायात के सभी आधुनिक साधनों का अभाव था और जब यात्राए पैदल, बैलगाडी या ऊटों पर करनी पडती थी, देश के एक छोर से दूसरे छोर तक व्यापारिक केन्द्रों मे सेठ जोरावरमल ने दुकानों को स्थापित किया। इस सम्बन्ध में प० गौरीशकर ओझा ने अपने राजपूताने के इतिहास में निम्नलिखित टिप्पणी दी है :

"यह सेठ बापना (पटवा) वश का ओसवाल महाजन था। इसके पूर्वजो का मूल निवास-स्थान जैसलमेर था। इसके पूर्वज देवराज के गुमानचद नाम का पुत्र हुआ। गुमानचंद के बहादुरमल, सवाईराम, मगनीराम, जोरावरमल और प्रतापचंद नामक पाच पुत्र थे। चौथे

पुत्र जोरावरमल ने व्यापार मे अच्छी उन्नति कर कई बडे-बडे नगरो मे दुकाने कायम की और बडी सम्पत्ति अर्जित की। इन्दौर राज्य के कई महत्वपूर्ण कार्यो मे भी इसका हाथ रहा। इसीकी कोशिश से अग्रेजी सरकार और होल्कर मे अहदनामा हुआ। इस सेवा से प्रसन्न होकर अग्रेजी सरकार तथा होल्कर ने इसे परवान देकर सम्मानित किया।"

इसी आत्म-विश्वास के बूते पर वह उदयपुर मे आये। उन्होने चारो ओर अराजकता का बोलवाला देखा, यहातक कि राणा स्वय भी बडे भयभीत और अशात थे। उनके पास नाम मात्र की सत्ता थी। सन् १८१८ मे हालत यह थी कि राणा के पास अपने कहने के लिए पचास घोडे भी नही थे, किन्तु कर्नल टाड और जोरावरमल-जी के प्रयत्नो से कुछ ही समय मे सम्पूर्ण मेवाड हरा-भरा हो गया। पूरा मेवाड जोरावरमलजी को ठेके पर दिया गया और कर-वसूली का काम भी उन्हे सौपा गया। मेवाड राज्य मे उस समय ब्रिटिश सरकार की तरफ से जगह-जगह रुपये मे छ आने के हिसाव से कर-वसूली के लिए अधिकारी रहते थे। उनको सेठजी ने अपनी कार्य-कुशलता से हटवा दिया व उसकी वजाय तीन लाख रुपये की वार्षिक रकम ठहरवा दी। इसमे कर-वसूली की ज्यादतिया दूर हो गई। इसके अतिरिक्त चोर और लुटेरो को दण्ड दिलवाकर राज्य मे शान्ति स्थापित की गई। किसानो को आर्थिक सहायता दी गई, जिसके कारण वर्षो से विना जुती जमीनो पर हल चले और उनमे फसल पैदा हुई। सडके ठीक करवाई गई, यात्रा को निरापद बनाया गया जगह-जगह पर कुए खुदवाये गए, प्याऊ लगवाई गई। किसानो, दुकानदारो और व्यापारियो को आर्थिक सहायता दी गई और इस तरह कुछ ही समय मे तीन सौ उजडे हुए गाव और नगर वस गये। इन कार्यो से प्रजा-वत्सल सेठजी प्रजा के प्रीतिभाजन बन गए। मेवाड की इस खुशहाली को देखकर वाहर के व्यापारी भी उदयपुर राज्य मे वसने लगे और उन्होने यहा के नगरो मे अपना व्यापार फैलाना आरभ कर दिया। को उद्योगो वढावा देने के लिए दूसरे राज्यो से व्यापार करने के प्रतिवध उठा दिये गए। इससे अनेक कारखाने लगने शुरू हुए। सेठजी ने मेवाड की आय वढाने तथा उसे

वैभवशाली बनाने के लिए अपनी गाठ से लाखों रुपये खर्च किये। अपनी प्रबध-कुशलता व शासन-पटुता से मेवाड की आय तिगुनी कर दी। कही-कही यह भी उल्लेख है कि सन् १८१८ मे मेवाड़ की आय कुल ४० हजार रुपये रह गई थी, उससे बढकर वह दस लाख रुपये प्रति वर्ष हो गई। सेठजी ने ब्रिटिश सरकार को प्रभावित करके मेवाड़ राज्य को होल्कर राज्य से कुवाखेड ग्राम दिलवाने में भी सफलता प्राप्त की। इन सेवाओ से प्रसन्न होकर महाराणा ने सेठजी को बहुत ही सम्मानित किया, वश-परम्परा के लिए जागीर प्रदान की और कस्टम ड्यूटी से बरी कर दिया। सेठ जोरावरमलजी के इन सत्प्रयत्नो के बारे में प्रसिद्ध इतिहासकार प० गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने अपने राजपूताने के इतिहास में लिखा है, "ईस्वी सन् १८१९ (वि० सं० १८७५) में कर्नल टाड मेवाड़ का पोलिटिकल एजेट होकर उदयपुर आया। उस समय मेवाड की आर्थिक दशा बहुत बिगडी हुई थी, अतएव उक्त कर्नल की सलाह के अनुसार महाराणा भीमसिह ने इन्दौर से सेठ जोरावरमल को उदयपुर बुलाया। उसके उदयपुर आने पर महाराणा ने उसे वहा सम्मानपूर्वक रखकर उसकी दुकान कायम करने के लिए उससे कहा, 'राज्य के कामो में जो रुपये खर्च हो वे तुम्हारी दुकान मे दिये जायं और राज्य की सारी आय तुम्हारे यहा जमा रहे।' महाराणा के कथनानुसार जोरावरमल ने उदयपुर मे अपनी दुकान खोली, नये खेड़े बसाये, किसानो को सहायता दी और चोर-लुटेरो को दड दिलवाकर राज्य में शान्ति स्थापित करने मे मदद दी। उनकी इन सेवाओ के उपलक्ष्य मे वि० स० १८८३ (चैत्रादि १८८४, ज्येष्ठ सुदी १, ता० २६ मई सन् १८२७) को महाराणा ने उनको पालकी तथा सम्मान के साथ वंश-परम्परा के लिए वदनौर परगने का परासोली गाव और सेठ की उपाधि दी, पोलिटिकल एजेट ने भी उनके प्रबन्ध-कौशल को देखकर अंग्रेजी खज़ाने का प्रबध उनके सुपुर्द कर दिया।"

महाराणा भीमसिह जोरावरमलजी पर अटूट विश्वास करते थे। उनके तीन राजकुमारिया थी, जिनके विवाह महाराणा भीमसिह ने जैसलमेर, बीकानेर और किशनगढ के राजघरानो से पक्के किये

हुए थे। इन तीनो विवाहो का सारा प्रबध सेठ जोरावरमलजी ने किया था। वारात लानेवालो में जैसलमेर के महारावल गजसिह-जी की बड़ी नेकनामी हुई। इससे महाराजा बीकानेर अप्रसन्न होगये और यह आशका थी कि इस छोटी-सी वात को लेकर ही कही बीकानेर और जैसलमेर के बीच युद्ध न ठन जाय, जैसाकि उस समय आमतौर पर होता था। किन्तु चतुर जोरावरमलजी की अपूर्व बुद्धिमत्ता के कारण दोनो राज्यो के बीच सघर्ष होते-होते बच गया।

इस तरह उस समय तो रण-भेरी बजते-बजते रह गई, किन्तु बीकानेर-नरेश रतनसिह के मन से यह द्वेषभावना दूर न हुई और मौका पाकर भाटियो द्वारा अपनी ऊटनी चुराए जाने का कारण बनाकर उन्होने जैसलमेर के महारावल गजसिह से लडाई छेड दी। बीकानेर की सेना के सेनापति युद्धभूमि से पीठ दिखाकर भाग गये। इस युद्ध मे बीकानेर के सात सौ सैनिक खेत रहे। सेठ जोरावरमलजी इस वात से भली-भाति परिचित थे कि आपस की फूट और लडाई से राजपूताने के सभी राज्य दिनोदिन कमजोर पडते जा रहे हैं। इस वात को ध्यान मे रखते हुए सेठ जोरावरमलजी ने इन दोनो राजाओ मे पुन मेल करा दिया।

सेठ जोरावरमलजी के समय जैसलमेर और बीकानेर राज्यो की सीमाए आपस मे मिली हुई थी और जैसाकि ऊपर वताया जा चुका है, इन राजवशो के परस्पर सवध बहुत ही नाजुक स्थिति को पहुच चुके थे। आपस मे बडा अविश्वास था और बिना वात के ही वैमनस्य पैदा हो गया था। बीकानेर के महाराजा रतनसिह और जैसलमेर के महारावल गजसिह दोनो ही अपने राज्यो की सीमाए निर्धारण करने के बारे मे कोई फैसला नही कर पाये थे। गुरियाल बीकानेर का अतिम गाव था और जैसलमेर का गिरिराजसिह अतिम गाव था। उनके बीच साढे तीन मील का अतर था। सेठ जोरावरमलजी के बीच मे पडने से और अंग्रेजी राज्य के लेफ्टीनेट ट्रवेलियन के मध्यस्थ बनने से सीमा-सवधी यह झगड़ा बहुत ही खूबसूरती के साथ निपट गया। सीमा-बंदी पर दोनो शासको की मुलाकात कराई गई। दोनो राज्यो के बीच की सीमा को बांटनेवाली

रेखा के एक ओर महारावल के और दूसरी ओर महाराणा बीकानेर के डेरे-तम्बू लगे थे । इस ऐतिहासिक अवसर पर सेठ जोरावरमलजी भी मौजूद थे। लेफ्टि० एच०ई०बोइले के शब्दो में, जिन्होने इस अवसर का आखों देखा हाल अपनी पुस्तक 'परसनल नेरेटिव आफ टूर टू दी वैस्टर्न स्टेट आफ राजवाड़ा आफ १८३५' मे लिखा है कि इस अवसर पर जो लोग पहुचे थे उनमें सेठ जोरावरमलजी भी थे, जो मारवाड के सबसे धनी व्यापारी थे और जिनको देखकर मुझको बहुत खुशी हुई। यद्यपि वह इस अवसर पर जैसलमेर के महारावल की ओर आकर बैठे थे, तो भी न तो वह महारावल के दल के साथ आये थे और न महाराणा बीकानेर के साथ पधारे थे, पर दोनो के मित्र थे।"

इस प्रकार जबतक महाराणा भीमसिह मेवाड की गद्दी पर आसीन रहे तबतक सेठ जोरावरमलजी ने उनकी सेवा की। उनकी मृत्यु के बाद महाराणा जवानसिह सवत् १८८५ मे मेवाड की गद्दी पर बैठे। जब वह तत्कालीन वाइसराय द्वारा आयोजित राज-दरबार मे सम्मिलित होकर सवत् १८८९ मे अजमेर गये तब सेठजी भी महाराणा के साथ उक्त दरबार में गये थे। सेठजी के प्रभाव के कारण वाइसराय खुद अजमेर से छ मील जाकर महाराजा का स्वागत करने आये। जब महाराणा अपने पिता भीमसिहजी का श्राद्ध करने आये तब भी सेठजी के ज्येष्ठ पुत्र सुलतानमल को अपने साथ सब प्रबन्ध करवाने के लिए ले गये थे। महाराणा जवानसिहजी ने भी सेठजी को समय-समय पर इतना सम्मानित किया कि वह राज्य के प्रथम श्रेणी के उमरावो के सदृश माने जाने लगे।

महाराणा जवानसिह की मृत्यु संवत् १८९५ मे हो गई। उनके कोई पुत्र नही था। अत उनकी मृत्यु के उपरान्त मेवाड की गद्दी के उत्तराधिकारी के लिए बहुत झगड़ा चला। सेठजी ने अपने प्रभाव से ब्रिटिश सरकार से महाराणा सरदारसिहजी को दत्तक लिया जाना मजूर करा दिया। महाराणा सरदारसिहजी भी सेठजी से कठिन मसलो पर हमेशा सलाह लिया करते थे। महाराणा सरदारसिह की मृत्यु सवत् १८९९ मे हो गई और उनके पश्चात महाराणा स्वरूपसिहजी मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। इनके शासन-काल के बारे

में प० गौरीशकर हीराचन्द ओझा नें अपनें इतिहास के पृष्ठ १०५६-५७ पर लिखा है कि "महाराणा स्वरूपसिह के शासन-काल मे उदय-पुर राज्य पर कई लाख रुपयो का कर्ज था, जिसमे से अधिकाश कर्ज सेठ जोरावरमलजी का ही था। महाराणा ने उक्त कर्ज का निबटारा करनें की इच्छा प्रकट की। उनकी यह इच्छा देखकर २८ मार्च १८४६ ई० को सेठजी ने महाराणा को उक्त कर्जे के सम्बन्ध मे अपनी हवेली पर मेहमान (आवाहन) किया और उनकी इच्छा-नुसार कर्जे का निबटारा कर दिया। इससे प्रसन्न होकर महाराणा ने सेठजी को जागीर मे घीडोडा ग्राम (जो कि सवत् १९०५ मे उदय-पुर से ६ मील की दूरी पर स्थित कुण्डाल ग्राम से बदल लिया गया था), इनके पुत्र चादमलजी को पालकी और प्रपोत्रो गभीरमल और इदरमल को भूपण तथा सरपाव आदि प्रदान किये। दूसरे लेनदारो ने भी सेठ जोरावरमल का अनुकरण करके महाराणा की इच्छानुसार अपने कर्जे के रुपयो का फैसला कर दिया। इस प्रकार रियासत का भारी कर्जा सेठजी की उदारतापूर्ण कार्यकुशलता से सहज ही मे वेबाक हो गया। इससे सेठ जोरावरमलजी की बडी नेकनामी व प्रशसा हुई।"

सेठ जोरावरमल ने मेवाड राज्य को ही अपनी सेवाए अर्पित नही की, उन्होने तो राजस्थान के प्रत्येक राज्य को सकट से उबारने की कोशिश की, जिससे राजस्थान की एकता बनी रहे। जैसलमेर तो उनकी जन्मभूमि थी ही, इसलिए वहा के महारावल से उनके व्यक्तिगत सबध थे। किन्तु जोधपुर, बीकानेर, कोटा, इन्दौर आदि के दूसरे शासको से भी उनके बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध थे और ये सभी शासक उनपर पूरा भरोसा करते थे। दूसरी ओर अग्रेज सरकार भी इनको बडी इज्जत की दृष्टि से देखती थी। तत्कालीन अग्रेजी सर-कार के राजस्थान मे स्थित सभी राजनैतिक प्रतिनिधियो का यह विश्वास था कि सेठ जोरावरमल का राजस्थान के विभिन्न राज्यो के साथ व्यापक सबध था और इन सभी राज्यो के आन्तरिक मामलो की उनको इतनी अधिक जानकारी थी, जितनी किसी एक व्यक्ति को आमतौर पर नही होती। यही कारण था कि बीकानेर, जोधपुर और

जैसलमेर आदि सभी रियासतो के मामलो को सुलझाने के लिए अंग्रेजी सरकार के उन राजनैतिक प्रतिनिधियो ने सेठ जोरावरमलजी की व्यापक जानकारी का लाभ उठाया और इन राज्यों के साथ अंग्रेजी सरकार के सबधो का नियत्रण करने के लिए सेठ जोरावरमलजी की सलाह से काम लिया। यह सेठ जोरावरमलजी की प्रतिभा का सबसे अच्छा उदाहरण है। इसका उल्लेख लेफ्टि० ए० एल० बोइले ने अपने ग्रन्थ 'परसनल नरेटिव आफ टूर टू दी वेस्टर्न स्टेट आफ राजवाड़ा आफ १८३५' के पृष्ठ ४३ पर करते हुए लिखा है, "जब हम जोधपुर पहुचे तो जोधपुर दरबार मे एक ऐसे आदरणीय व्यक्ति (जोरावरमलजी) मिले, जिन्हे रियासत के मत्रित्व का भार भी सौपा जा सकता था, किन्तु महाराणा मानसिह अविश्वासी अधिक थे। अतः वहा जोरावरमलजी की, जो कि कोटा व अजमेर के प्रतिष्ठित बैकर थे और जो किसी गुट मे शामिल नही थे तथा रजवाड़ो के सब नरेशो से सम्मानित थे, उपस्थिति बहुत लाभदायक सिद्ध हुई, उनकी सलाह से तथा जोधपुर, जैसलमेर व बीकानेर नरेशो पर उनका प्रभाव होने से बहुत काम निपटा, इन नरेशो से जोरावरमलजी ने पहले ही बातचीत कर रखी थी।"

उस जमाने मे जोधपुर के महाराणा मानसिह थे, जो बड़े चतुर नीतिज्ञ और उदार थे। किन्तु कर्नल टाड ने अपने इतिहास मे लिखा है कि वह घोर अत्याचारी थे, क्योकि उन्होने न तो जीवनभर स्वय ही सुख भोगा और न अपने उमरावो को चैन लेने दिया। अंग्रेज सरकार से उनकी सधि हुई। उसमे यह निश्चय हुआ था कि वह प्रति वर्ष कुछ वार्षिक कर अंग्रेजी सरकार को देगे, किन्तु उन्होने अपने वचन का पालन नही किया, जिससे १८३९ में अंग्रेज़ों ने जोधपुर के किले पर अपना कब्जा कर लिया। उस समय जोधपुर के नरेश महाराजा मानसिह से समझौता करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने लेफ्टीनेट ट्रवेलियन को जोधपुर भेजा, जो दो सप्ताह तक जोधपुर ठहरा। जोरावरमलजी पहले लेफ्टीनेट ट्रेवेलियन से मिले और फिर उसके बाद राजा मानसिह से बातचीत की और इस प्रकार वह मध्यस्थ बन गये। जबतक महाराजा मानसिह और लेफ्टीनेट ट्रेवेलियन के

बीच समझौता नही हुआ, तबतक वह जोधपुर मे ठहरे रहे। इसके लिए उनको काफी भागदौड़ करनी पडी और इस सिलसिले मे उनका काफी रुपया भी खर्च हुआ, किन्तु अपने परिश्रम और कुशलता के कारण अन्त मे वह अपने इस मिशन मे सफल हो गये। लेफ्टीनेंट ट्रेवेलियन के एक साथी बोइले ने अपने ग्रन्थ मे लिखा है कि जोधपुर के झगडो को निपटाने मे इनकी मैत्रीपूर्ण सलाह और सुझाव ने बडा काम किया।

इसका फल हुआ कि जोधपुर-नरेश जोरावरमलजी पर पूरी तरह विश्वास करने लगे और उन्होने खुश होकर जोधपुर की पोद्दारी का काम सेठजी के हवाले कर दिया। सवत् १९०० तक वह इस काम को करते रहे। महाराणा मानसिह के बाद जब महाराजा तख्तसिह जोधपुर की गद्दी पर बैठे तो उनकी गद्दीनशीनी करवाने मे भी सेठजी का भारी हाथ रहा।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सेठ जोरावरमलजी ने इन्दौर, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर व राजस्थान के अन्य देशी नरेशो की तन-मन-धन से महान सेवाए की और उन राज्यो की राजनैतिक गुत्थिया सुलझाने मे समय-समय पर भारी सहायता पहुचाई। उनकी अतुल सम्पत्ति, कार्य-कुशलता, शासन-पटुता, योग्यता व बुद्धिमत्ता के कारण उनका देशी राज्यो के राज-दरबारो तथा अग्रेजी सरकार पर अप्रतिम प्रभाव था। इसी कारण वह उस समय ब्रिटिश सरकार (ईस्ट इडिया कम्पनी) और उक्त देशी राज्यो के बीच जो सधिया हुई थी उनमे देशी नरेशो व राज्यो को काफी लाभ पहुंचा सके। प० गौरीशकर ओझा ने अपने राजपूताना के इतिहास के पृष्ठ १०५७ की टिप्पणी मे सेठजी की राजनीतिज्ञता की मुक्त कठ से प्रशसा की है और लिखा है "कि जोरावरमल बहुत बडी सम्पत्ति का मालिक होने के अतिरिक्त बडा राजनीतिज्ञ भी था, जिससे जोधपुर, उदयपुर, कोटा-बूदी, जैसलमेर, टोक, इन्दौर, भरतपुर, किशनगढ, बीकानेर आदि राज्यो मे उसकी बडी प्रतिष्ठा हुई और देशी राज्यो के अग्रेजी राज्य के साथ एव पारस्परिक सम्बन्ध मे उसकी सलाह और मदद ली जाती थी।"

२० अगस्त, सन् १८४६ ई० के एक पत्र में राजपूताने के तत्कालीन पोलिटिकल ऐजेन्ट कर्नल टी० रोबिन्सन ने सेठ जोरावरमल के विषय में जो उद्गार व्यक्त किये है, उनसे ज्ञात होता है कि ब्रिटिश सरकार के उनके साथ कैसे सबध थे और उनकी दृष्टि में उनका क्या सम्मान था । उन्होने अपने पत्र में कहा है, "सेठ जोरावरमल की व्यापारियो और जनता दोनो ही के बीच इतनी अधिक प्रसिद्धि रही है कि इनके लिए किसी वैयक्तिक प्रमाण-पत्र की कोई आवश्यकता नही जान पडती । आज से लगभग तीस वर्ष पहले मै पहली बार इन प्रतिभाशाली तथा आदरणीय सेठ के सम्पर्क में आया और विशेष रूप से इस अवधि के पिछले दिनो मे निजी तथा शासकीय दोनो ही हैसियत से मेरा उनसे लगातार पत्र-व्यवहार चलता रहा । इस लम्बे अरसे के सम्पर्क और पत्राचार के फलस्वरूप उनके वड़प्पन के विषय में मेरी भी वही धारणा बनी है, जो उनके सम्पर्क मे आनेवाले अनेक देशी और यूरोपीय व्यक्ति उनके सम्बन्ध मे रखते आये है । सेट्रल इडिया के विभिन्न राज्यों के साथ उनके अनेक रूपो मे व्यापक सम्बन्ध रहे है, जिनके कारण उन्हे उनसे सम्बन्धित मामलो की इतनी अधिक जानकारी है, जो किसी एक व्यक्ति को आम तौर पर नही होती और यही कारण है कि राज्यो के साथ हमारे सवधों का नियत्रण करने के लिए नियुक्त किसी भी नये व्यक्ति के लिए यह वहुत लाभदायक होगा कि वह उनकी उस व्यापक जानकारी का लाभ उठाये ।

"सभी स्रोतों से प्राप्त जानकारी से यह पता लगता है कि उन्होने अपनी धन-सपत्ति का उपयोग सदा ही मनुष्य-मात्र की भलाई के लिए प्रशसनीय रूप मे किया है । दीन-दरिद्रो की सहायता के लिए और सार्वजनिक कल्याण के उद्देश्यो के लिए उनकी दानशीलता के कारण उनका स्थान दान-दाताओ की सूची में काफी लम्बे समय से प्रमुख रहा है । यह उनके सत्प्रयत्नो का ही परिणाम था और इसके लिए ब्रिटिश सरकार पिछले कई वर्षो तक उनकी ऋणी रही है कि मेवाड एजेसी के भीतर आने वाली अनेक छोटी-मोटी रियासतो से ठीक समय पर नजराना मिलता रहा और भीलकोर

को नियमित भुगतान के लिए उसी देश की मुद्रा मे, जहा वह स्थित थी, निधियो की व्यवस्था होती रही, ये दोनों ही बाते ब्रिटिश हितो के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण थी, क्योकि हम देखते है कि जहातक पहली वात का सबध है, नजराना वार-वार जोर-जवरदस्ती किये विना वसूल नही किया जा सकता था। जहां तक दूसरी वात का सवध है, कोर के मासिक भुगतान के लिए आवश्यक घन कही भी दूसरी जगह इतनी अनुकूल शर्तो पर प्राप्त नही हुआ था।"

सेठ जोरावरमलजी ने जितनी सफलता राजनैतिक क्षेत्र में पाई उतनी ही अपने व्यापार और वैकिग मे प्राप्त की। उन्होने जगह-जगह अनेक विशाल व भव्य इमारते, मदिर, धर्मशालाए, वगीचे, वावडिया व तालाब स्थापित किये। उन्होने कुछ ही वर्षो मे व्यापार इतना फैला दिया था और इतना धनोपार्जन कर लिया था कि बोइलो ने अपने ग्रन्थ मे उन्हे मारवाड का राथसचाइल्ड कहा है। (पृष्ठ १३३)। उसने यह भी लिखा है कि उन्होने अजमेर मे जो मकान वनवाया उसे महल ही कहना चाहिए। उन्होने लगभग एक करोड रुपयो की लागत से इन्दौर, मेवाड़, अजमेर, जोधपुर, जैसलमेर व अन्य स्थानो मे जो भवन आदि वनावाये वे उनके कीर्ति-स्तम्भ-स्वरूप थे। इनमे से जैसलमेर, अजमेर और कोटा के भवनो पर क्रमश दस लाख, तीन लाख तथा चार लाख रुपये खर्च किये गए थे। इससे सेठजी की कलाप्रियता तथा भवन-निर्माण-प्रेम का अनुमान लग सकता है। जैसलमेर मे उन्होने जो हवेली वनवाई वह अव भी पत्थर के कोरनी के काम के लिए भारत मे प्रसिद्ध है। वोइलो ने उनके जैसलमेर के वगीचो की भी वडी तारीफ की है (पृष्ठ ४४-४६)। सेठ जोरावरमलजी के सार्वजनिक तथा कलापूर्ण कार्यो की प्रशसा करते हुए तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के सेक्रेटरी डब्ल्यू० एच० मेइने ने अपने एक पत्र मे उनको लिखा था, "हाल ही में अजमेर मे निर्मित विभिन्न प्रकार के उपयोगी एव कलापूर्ण इमारतो की ओर शासन का ध्यान आकर्षित किये जाने पर मुझे यह सूचना प्रेषित करने का निर्देश दिया गया है कि जिस परोपकार की भावना से प्रेपित होकर आपने इन उपक्रमो के कार्य मे योगदान दिया है,

भारत के गवर्नर जनरल सपरिषद् इसके लिए आपकी बारबार प्रशसा करते है । आपने जिस निस्स्वार्थ भाव से अपने देशवासियो के कल्याण के लिए कार्य किया है, उसका उचित प्रतिदान आपको मिलेगा और देश एक जन-हितकारी के रूप मे आपका नाम सदा अपनी स्मृति मे कृतज्ञता के साथ ऐसे रूप मे सजाकर रखेगा, जो आपकी तथा आपके वशजो की भावना के अनुरूप हो ।

"आशा है, आपको जो सफलता मिली है उसमे आपकी सुनिर्दिष्ट वृत्ति को बल मिलेगा और आपने जो उदाहरण प्रस्तुत किया है उससे प्रेरणा लेकर दूसरे व्यक्ति भी अजमेर मे और अन्य स्थानो मे उसका अनुकरण करेगे ।"

श्री जोरावरमलजी की सम्पत्ति का अनुमान इससे ही हो सकता है कि जब सम्वत् १८८१ मे उनके पुत्र चादनमलजी की शादी हुई तो उसमे १० लाख रुपये खर्च हुए । कहा जाता है कि इस तरह की शादी अबतक किसी बैकर ने नही की थी ।

सेठ जोरावरमलजी बुनियादी रूप से धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थे । यही कारण है कि उन्होने अपने जमाने मे परोपकार की भावना से प्रेरित होकर समाज को आगे बढाने मे योगदान किया । उनको जब भी अवसर मिला निःस्वार्थ भाव से उन्होने अपने देश और देशवासियो की सेवा करने का प्रयत्न किया । जिस राज्य मे भी वह रहे, वहा उन्होने अनेक जनहित के कार्य किये । जगह-जगह धर्मशालाए बनवाई, कुए खुदवाए, सडको की मरम्मत करवाई । जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, वह अराजकता का जमाना था, और साधारण जनता की तो बिसात ही क्या, राव-उमराव तक भी उस जमाने मे बिना फौज के एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करने मे घबराते थे । कर्नल टाड ने अपने इतिहास मे लिखा है कि अग्रेजी अफसरो को भी यात्रा करने के लिए काफी फौज के साथ निकलना पडता था । फिर भी उनके साथ लूट-मार की अनेक घटनाए हो जाती थी । ऐसे जमाने मे जनसाधारण के लिए अपने तीर्थो की यात्रा करने जाना तो जोखिम मे डालनेवाला ही काम था । यही कारण है कि [illegible] लोग भी समय-समय पर बडे-

सघ निकालते थे, जिनमे साधारण जनता, साधू और साध्वी मिलकर चलते थे और उनकी सुरक्षा के लिए सेना आदि उनके साथ चलती थी। जैनधर्म मे सघ निकालने की यह प्रथा वहुत पुरानी है। इस प्रकार की तीर्थ-यात्रा मे जो कुछ भी व्यय होता था, वह पूरा-का-पूरा सघ निकालने वाले को करना होता था।

सेठ जोरावरमल और उनके भाइयो ने भी परोपकार की भावना से प्रेरित होकर एक वहुत वडा सघ निकाला, जो जैन धर्म के अनेक तीर्थो की यात्रा करता हुआ छ महीने मे वापस लौटा। इस सघ मे तेरह लाख रुपये खर्च हुए। इस सघ का विस्तृत वर्णन श्री पूनमचदजी नाहर द्वारा लिखित जैसलमेर ग्रन्थ मे (पृष्ठ १४३-१५०) हुआ है। उसमे वताया गया है कि सघ मे हजारो व्यक्तियो के अतिरिक्त लगभग २१०० साधू और साध्विया थी तथा ४०० सेवक थे। इस सघ की विशेषता का इसी वात से अनुमान लगाया जा सकता है कि जव इसका समापन-समारोह शत्रुजय (पालीताना) मे हुआ तो उसमे उस समय के मारवाड, मेवाड, गुजरात, हाडोती, कच्छयुग, मालवा, दक्षिण सिंध, पजाव आदि दूर-दूर के भागो से लगभग ढाई लाख लोगो ने भाग लिया।

सेठ जोरावरमल का राजस्थान के सभी तत्कालीन राजा और महाराजा वडा आदर करते थे। इसलिए जैसे ही उन्हे पता चला कि सेठजी ने परोपकार की भावना से सघ निकालने का निश्चय किया है, उन्होने उसकी रक्षा के लिए तुरंत अपने-अपने राज्यो से काफी वडी सख्या मे साज-सामाज के साथ फौजे भेजी। मेवाड के महाराणा ने सघ के साथ चार तोपे, चार हजार पल्टन सिपाही और डेढसौ सवार भेजे। इनके अतिरिक्त कोटा राज्य ने ५०० सवार, जोधपुर राज्य ने १०० सवार, जैसलमेर के महारावल ने १०० सवार तथा ४०० फुटकर सैनिक भेजे थे। अग्रेज सरकार ने भी अपनी कुछ सेना को संघ की रक्षा के लिए भेजा। इस प्रकार १५०० सवार और ४००० फौजी जवानो तथा चार तोपो के साथ यह धार्मिक सघ अपनी यात्रा करने के लिए निकला। व्यक्तिगत लोगो की ऊट-ऊटनियो-गाडियो आदि को छोडकर संघ की तरफ से ९ पालकी, ४ हाथी, ५१

म्याने, १०० रथ, ४०० गाडिया और १५०० ऊट चले थे। सेठ जोरावरमलजी ने इस सघ मे स्वय भाग लिया था। आज भी इस सघ की याद करके भारत के उस गौरवमय अतीत का स्मरण आता है, जब इस देश मे अशोक का राज्य था और धर्म-प्रचार, शान्ति और सत्य की खोज के लिए इसी प्रकार अनेकानेक धार्मिक यात्राएं होती थी। सेठ जोरावरमल का सघ भी इसी परम्परा का प्रतीक था। यह सघ राणकपुर, आबू होता हुआ शत्रुजय के प्रसिद्ध जैन-तीर्थ पर पहुचा। वहा से गिरनार पर्वत पर स्थित प्रसिद्ध जैन-तीर्थ पर आया और फिर तारगा नाम के जैन-तीर्थ की यात्रा भी की। सघ के वापस जैसलमेर लौटने पर वहा के महारावल स्वय स्वागत को पधारे व सयोजको (सेठ जोरावरमलजी और उनके भाइयों) को हाथी पर बैठाकर अपने यहा लाकर सारे नगर मे घुमाकर उनकी हवेली में प्रवेश कराया। फिर उनके सम्मानार्थ महारावल, जैसलमेर उनकी हवेली पर पहुचे। इसी तरह उदयपुर में मेवाड के महाराजा, कोटा में वहा के महारावल, वीकानेर, बूदी और किशनगढ में वहा के महाराजा तथा इन्दौर में होल्कर-नरेश उनके घर पर पधारे।

तीर्थ-यात्रा में प्रत्येक व्यवित की मोहमाया नष्ट हो जाती है और ऐसा वातावरण वन जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने से उन शाश्वत प्रश्नो का उत्तर पाने का प्रयत्न करता है कि मै कौन हू, क्या हू, कैसा हू, यह जगत क्या है और मेरा इससे क्या सम्वन्ध है? साधको के वीच मे बैठकर सेठ जोरावरमल ने भी इन प्रश्नो पर मनन करने की कोशिश की होगी। जब वह प्रसिद्ध शत्रुजय पर्वत पर पहुँचे तो उन्होने भी निष्पक्ष भाव से हर्ष-शोक से मुक्ति पानेवालो, आत्मा की शोध करनेवालो और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पानेवालो की स्वस्थ परम्परा का स्मरण किया होगा। इस सन्दर्भ मे उन्होने अपने जीवन के सभी कार्य-कलापो को सोचा होगा। उनके सामने भी उनके जीवन के सभी अनुभव चलचित्र की भाति आये होगे। उन्होने भी अपने जीवन मे अनेक मित्र वनाये होगे, अनेक मित्रो को उनके जीवन-काल में मृत्यु ने उनसे छीना होगा, उन्होंने जीवन मे अनेक सत् और असत् कार्य किये होगे,

किन्तु जिस मनुष्य ने अपने देश की एकता बनाये रखने के लिए अपना जीवन लगा दिया और धार्मिक कार्यो के लिए जिसने अपना सबकुछ उत्सर्ग कर दिया ऐसे सेठ जोरावरमलजी के सत्यकार्यों की ही हमने ऊपर चर्चा की है। उन्होंने अपने जमाने मे इस देश को बचाने मे और विशेषकर राजपूताने को ऊपर उठाने मे, उसकी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक दशा को सुधारने मे, जो योगदान किया है, वह इतिहास के पृष्ठो मे स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगा।

इस तरह अपने जीवन-काल मे जनता व राज्य की अमूल्य सेवाए करते हुए सेठ जोरावरमलजी का सम्वत् १९०८ मे इन्दौर नगर मे स्वर्गवास हो गया। होल्कर राज्य के तत्कालीन महाराजा ने उनके शव का अंत्येष्टि-सस्कार बडे समारोह के साथ होल्कर राज्य-वश के दाह-स्थान छत्रीबाग मे करवाया। वह स्वय भी अत्येष्टि सस्कार मे सम्मिलित हुए। उदयपुर मे जब महाराणा स्वरूपसिह ने सेठजी की मृत्यु की खबर सुनी तो उन्हे भारी दुख हुआ और उन्होने अपने विश्वस्त सरदारो के साथ उनके पुत्र सेठ चादनमल के पास शोक-सदेश व सरोपाव भेजा। जब सेठ चादनमल उदयपुर लौटे तब उनको महाराणा ने अपने यहा बुलाकर वही सम्मान प्रदान किये, जोकि उनके पिता को प्राप्त थे। सेठ चादनमल भी अपने पिता की तरह राज्य की सेवा करते रहे। सम्वत् १९२४ मे उनकी मृत्यु हो गई। उनके जुहारमल तथा छोगमल नामक दो पुत्र थे। श्री सिरेमल बापना श्री छोगमल के द्वितीय पुत्र थे।

: ३ :

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'

ससार मे ऐसा कोई भी भू-खण्ड नही है, जो त्याग और बलिदान मे वीर-भूमि मेवाड की होड कर सकता हो । यहां का चप्पा-चप्पा बलिदान की अमर गाथाओ से रंगा हुआ है । इस भूमि को सीचने के लिए यहा के नौनिहालो ने अपना रक्त बहाया है । उनके लिए प्राणो का उत्सर्ग एक खेल रहा है । इस धरती की धूल को मस्तक पर लगाने के लिए प्रत्येक भारतीय का हृदय मचल उठता है । इसी उत्सर्ग और बलिदान के प्रदेश मे श्री सिरेमल बापना का २४ अप्रैल, १८८२ को जन्म हुआ था । हम देख चुके है कि उनके पितामह सेठ जोरावरमल की परम्परा कितनी महान थी । अपने जीवन-काल में उन्होने न केवल राजस्थान के राजनैतिक इतिहास को नया मोड देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, वल्कि अपने अनेकानेक लोकोपयोगी कार्यो से जन-जन के प्रिय बन गये थे । इन्होने अपने पुत्र चांदनमल के विवाह में दस लाख रुपये खर्च किये थे । इन्ही चादनमल के पुत्र श्रीमंत छोगमल सिरेमल बापना के पिता थे ।

१८५७ के स्वतन्त्रता-संग्राम के बाद अग्रेजो ने भारत मे अपने साम्राज्य को स्थायी रूप से स्थापित करने की नीति अपनाई । जिस समय श्री सिरेमल बापना का जन्म हुआ, उसके एक वर्ष बाद अक्तूबर १८८३ मे राजस्थान मे ऋषि दयानंद को विष देकर मारा गया था । अग्रेजी शासन की घोर दमन-नीति के कारण देश मे चारो ओर दमघोंटू वातावरण था । ईसाइयत और अग्रेजियत के विस्तार के लिए रास्ते खोल दिये गए थे । ऐसे ही समय में भारत मे भावी पुनर्जागरण का सूत्रपात हुआ । बंगाल में ब्रह्मसमाज और महाराष्ट्र में प्रार्थना-समाज के रूप मे यह फला-फूला । जो काम इन

सस्थाओ ने किया वही काम राजस्थान, पजाब और पश्चिम-उत्तर प्रदेश मे स्वामी दयानंद के प्रादुर्भाव से हुआ। वह सस्कृत के प्रकाड पडित थे और उन्होने उस समय सती-प्रथा, छुआछूत और बहुदेव-पूजा आदि के विरुद्ध आन्दोलन छेडा था। उनके प्रभाव के परिणाम-स्वरूप राजस्थान के नवयुवको की रग-रग मे स्वदेशाभिमान व्यापने लगा और अपने देश के प्रति उनमे गौरव की अनुभूति होने लगी। इसी जमाने मे धार्मिक क्षेत्र मे रामकृष्ण परमहस, राजनैतिक क्षेत्र मे दादाभाई नौरोजी, ह्यूम और सर सैयद अहमद खा आदि एव साहित्य के क्षेत्र मे बकिमचन्द्र चटर्जी, गालिब और इकबाल तथा विज्ञान के क्षेत्र मे जगदीशचन्द्र बोस और प्रफुल्लचन्द्र राय जैसी विभूतियो का प्रादुर्भाव हो चुका था। इस वातावरण का सिरेमल बापना पर भी प्रभाव पडना अनिवार्य था।

जिस वर्ष सिरेमल बापना का जन्म हुआ वह अनेक दृष्टियो से महत्वपूर्ण है। १८८२ मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्मदाता एलन ह्यूम अग्रेजी सरकार की सत्ता से विलग हुए। इसी समय स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहस के सपर्क मे आये। १८८२-८३ मे स्वामी दयानन्द जैसे त्यागी एव विद्वान को विष दिया गया। क्या आश्चर्य है कि सरेमल बापना पर इन परिस्थितियो का शायद कुछ ऐसा प्रभाव पडा हो, जिससे उनके मन मे आधुनिक भारत के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण की कल्पनाए आगे प्रस्फुटित हुई।

समृद्ध और मानी परिवार मे जन्म लेने के कारण उनकी देख-भाल भी उसी तरह से आरम्भ हुई जैसे धनीमानी परिवारो मे होती है। उनका घर समृद्धि से भरपूर था। दुकान के गल्ले मे अन-गिनत रुपया पडा रहता था। घर मे बेशुमार नौकर-चाकर थे। इनमे से जब किसी नौकर को रुपये-पैसे की जरूरत होती तो वह पाच-छ वर्ष की आयु के सिरेमल बापना को दूकान के गल्ले से रुपया उठाने के लिए उकसाते और बाल्यकाल मे सिरेमल दौडे-दौडे जाकर दोनो मुट्ठियो से गल्ला उठाकर दूकान से भाग निकलते और नौकरो की ओर उछाल देते। श्रीमत छोगमल भी इतने उदार

थे कि इस प्रकार नौकरो की ओर फेके गए रुपयों को कभी वापस लेने तक की नही सोचते थे। इस तरह बालपन से ही सिरेमल के में उदारता कूट-कूटकर भरी जाने लगी।

उनके पिता और ताऊ की इच्छा थी कि सिरेमल बापना के वड़े भाई को अग्रेजी पढाई जाय और सिरेमल को व्यापार में कुशल बनाया जाय। परन्तु जब सिरेमल को इस बात का पता चला तो उन्होने अपनी अग्रेजी पढने की लालसा को एक कागज पर टेढी-मेढी लकीरें खीचकर व्यक्त करते हुए कहा कि हम भी इसी प्रकार की भाषा पढेगे। पिता को पुत्र के आग्रह पर अपना विचार बदलना पड़ा और महामहोपाध्याय प० गौरीशकर हीराचन्द ओझा द्वारा उनकी अग्रेजी की प्रारम्भिक शिक्षा शुरू कर दी गई।

इतनी छोटी उम्र मे अग्रेजी पढने की लालसा का सिरेमल वापना में होना इस बात का सकेत है कि १८३५-३६ मे लार्ड मैकाले ने अग्रेजी माध्यम के द्वारा भारतीयो को शिक्षा देने की प्रणाली के पीछे जिस कल्पना की आशा की थी, उसे मूर्त रूप प्राप्त हो चुका था, क्योकि मैकाले ने कहा था कि अग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य ऐसे लोगो का एक वर्ग पैदा करना है, जो रक्त और रग की दृष्टि से भारतीय हो, किन्तु उनका स्वभाव, उनकी नैतिकता, उनकी बुद्धि और उनके मन अंग्रेजियत से भरपूर हो। जो भी इस शिक्षा को पायगे वे पश्चिमी संस्कृति और विज्ञानो को भारतीय जनता मे फैलायगे और भारतीय ज्ञान को उसके सामने नीची श्रेणी का मानेंगे। हुआ भी यही। ब्रिटिश सरकार द्वारा इस नीति को अपनाने के लगभग ५० वर्ष बाद जब सिरेमल बापना ने स्वय अग्रेजी पढने की इच्छा जाहिर की थी उस समय देश मे अग्रेजी पढे-लिखे लोगों का एक ऐसा वर्ग तैयार हो चुका था, जो अपनी मातृभाषा मे बोलने और परस्पर बातचीत करने को पिछडापन और असभ्यता की निशानी समझने लगा था। उन्होने खाने, पहनने और रहन-सहन आदि सभी बातो मे पश्चिमी तौर-तरीके अपना लिये थे। इसका फल यह हुआ कि वे अपने देश मे ही अजनबी हो गये और स्वभाव, भाषा और सोचने के तरीको मे भारतीय जनता से अलग पड गये। उस समय सारे देश

वेदना के लिए सवेदनशील रहा और उन्होने सदैव सबको एक समान समझा।

जैन धर्म मे अणुव्रत का पालन करना जरूरी है। ये अणुव्रत सत्य, ब्रह्मचर्य, अहिसा, अस्तेय और अपरिग्रह है। इनसे भी जरूरी यह है कि दिये हुए वचन का पालन किया जाय और उसे भरसक निभाया जाय। सिरेमल बापना ने जीवन-भर अपने वचन को निभाने की कोशिश की।

जैन-दर्शन के अनुसार ज्ञान आत्मा का मौलिक गुण है। सपूर्ण आत्मा ही पूर्ण ज्ञान है और वह अन्तर्मन की आवाज है। सभी प्रकार का ज्ञान आत्मा मे निहित है। सिरेमल बापना पर परोक्ष रूप मे इस ज्ञान-सिद्धान्त का भी व्यापक प्रभाव पडा, क्योकि जबतक वह विद्याध्ययन करते रहे तबतक उनके मन मे यही एक कामना बनी रही कि वह ज्ञान के अगाध भडार में से अधिक-से-अधिक प्राप्त कर सके। यही कारण है कि वह अपने विद्यार्थी-जीवन मे सदा ही प्रथम श्रेणी के विद्यार्थी रहे।

सिरेमल बापना का जन्म एक ऐसे परिवार मे हुआ था, जो वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र मे जितना अधिक महत्वपूर्ण था, उतना ही वह राजनैतिक क्षेत्र मे भी अपना दखल रखता था। इस लिए लगता है कि बापनाजी ने बडे होकर रियासती क्षेत्रो मे राजनीति और आर्थिक क्षेत्र मे जो प्रतिभा विकसित की, वह उनको धरोहर के रूप मे अपने पुरखो से प्राप्त हुई थी।

यह सिरेमल बापना का बहुत बडा सौभाग्य था कि उनके जीवन के प्रारम्भ मे महामहोपाध्याय प० गौरीशकर हीरोचन्द ओझा जैसा विद्वान शिक्षक मिला। श्री ओझा न केवल अग्रेजी के बहुत बडे विद्वान थे, वरन् उनको साहित्यिक क्षेत्र मे, विशेष रूप से इतिहास, पुरातत्व और भाषा-विज्ञान-सबधी खोजो के कारण, बहुत ऊचा स्थान प्राप्त था। यही नही, उनकी रग-रग मे स्वदेशाभिमान भरा हुआ था। उदारता उनका स्वाभाविक गुण था। वह ऊचे दर्जे के सुधारक थे। इन सभी बातो का प्रभाव उनके शिष्य सिरेमल बापना पर भी पडा। ओझाजी को ऐसे सुयोग्य शिष्य के शिक्षक

होने का सदैव गर्व रहा है। इसका उल्लेख उन्होने स्वय अपने ग्रंथ मे निम्नलिखित शब्दो मे किया, "सिरेमलजी को मैंने इग्लिश पढाना उदयपुर में आरम्भ किया था। वाल्यकाल मे तो यह इतने कुशाग्र-बुद्धि थे कि जो वात एक वार इन्हे वताई जाती थी उसे कभी नही भूलते थे। इनमे ऐसी प्रतिभा देखकर मैंने इनके पिताजी से कहा था कि 'आपका यह पुत्र वडा होनहार प्रतीत होता है और भविष्य मे यह अवश्यमेव बड़ा आदमी वनेगा। मुझे इस वात से प्रसन्नता है कि मेरा यह अनुमान वहुत ठीक निकला, क्योकि सिरेमलजी इस समय इन्दौर जैसे वडे राज्य के दीवान-पद पर योग्यतापूर्वक काम कर रहे हैं।''

किन्तु 'श्रेयासि वहु विघ्नानि' इस लोकोक्ति के अनुसार वापना-जी के पढने मे अनेक वाधाए उपस्थित हुई। उनके शिक्षा-काल मे ही वापना-परिवार का एक ऐसा डावाडोल जमाना आया जव उस-के वैभव का अन्त हो गया और पीढी-दर-पीढी से इकट्ठी हुई दौलत खत्म हो गई। इसका मुख्य कारण यह था कि तत्कालीन महाराणासाहव उदयपुर की वापना-घराने पर कोप दृष्टि हो गई और एक साधारण-सी वात पर मेवाड की सरकार ने वापना-परिवार का लाखों रुपये का माल व धन-दौलत कुरकी कराकर कौडियो के मोल नीलाम कर दिया। इस प्रारम्भिक सकट ने सिरेमल वापना में मेहनत, लगन और सचाई आदि गुणो का विकास किया।

वालक वापना वड़े खिलाडी थे। खेल-कूद में इनका मन खूव लगता था। एक दिन खेल-खेल मे किसी वात पर झगडा हो जाने पर उनके वड़े भाई ने इनके वाएं कान की वाली को इतनी जोर से खीचा कि इनका कान कट गया, जिसका चिन्ह मरण-पर्यन्त कायम रहा और उन्हे अपने वचपन की उस घटना की याद दिलाता रहा। उनके यहा एक पहलवान नौकर था। इससे उनको ७-८ वर्ष की

की इच्छा उनको हमेशा बनी रही और वह लगभग ४० वर्ष की आयु तक कुछ-न-कुछ व्यायाम बराबर करते रहे।

विद्यार्थी-काल मे ही, जब सिरेमल बापना केवल चौदह वर्ष के थे, सन् १८९६ मे उनका विवाह मेहता भोपालसिह की पुत्री आनन्द-कुमारी के साथ हो गया। मेहता भोपालसिह का परिवार भी उतना ही इतिहास-प्रसिद्ध था, जितना सेठ जोरावरमल का।

यह विडबना ही है कि बाल-विवाह के घोर विरोधी सिरेमल बापना का बाल-विवाह हुआ था, किन्तु उनके विवाह को तो बाल-विवाह भी नही कहना चाहिए, क्योकि उनके जन्म लेने से पूर्व ही उनकी सगाई हो चुकी थी।

एक विशेष प्रथा के अनुसार जब वह और उनकी पत्नी आनन्द कुमारी गर्भावस्था मे थे तभी उनकी दादियो ने आपस मे यह बात-चीत पक्की कर ली थी कि यदि एक के यहा पुत्र और एक के यहां पुत्री हुई तो परस्पर विवाह कर देंगे। आज के युग मे भले ही यह प्रथा विचित्र मानी जाती हो, किन्तु उस जमाने मे इसका आम रिवाज था।

मेहता भोपालसिंह के पूर्वज राजस्थान के प्राचीन धनी परि-वारो मे थे। इनके एक पूर्वज माडू के खिलजी नवाब के समय वहा उच्च कर्मचारी थे। इनके सबध मे एक किवदन्ती प्रसिद्ध है कि एक बार ये लोग शत्रुजय (पालीताना) के उत्सव मे गये थे। वहा आरती उतारने का अधिकार उसे ही मिलता था, जो सबसे अधिक रुपया दे। बोली बढते-बढते ९९लाख पर खत्म हुई, जो इन्हीकी थी। इन्होने यह रुपया खिलजी के खजाने से लेकर दिया था। बाद मे इसे अदा न कर सकने की ग्लानि के कारण कटारी खाकर आत्महत्या कर ली थी। इससे इनके वश की उपाधि 'कटारिया' हो गई। फिर यह वश बीकानेर चला गया। वहा भी ये लोग उच्च कर्मचारी रहे। बीकानेर की राजकुमारी महाराणा उदयपुर को व्याही थी। उनके साथ ये उदयपुर पहुचे और वही रह गये। सिरेमल बापना के श्वसुर के पिता मेहता गोपालदासजी उदयपुर मे उच्च अधिकारी थे। जब महाराणा ने बोहडा के उमराव को फतह करने के लिए सेना भेजी

तब ये सेनानायक थे। उनके पुत्र मेहता भूपालसिहजी, जो बापनाजी के श्वसुर थे, महारणा फतहसिह के सीनियर दीवान रहे। उनके पुत्र मेहता जगन्नाथसिहजी भी उदयपुर राज्य मे दीवान रहे। दोनो ही बहुत लोकप्रिय थे और बड़ी नेकनामी से काम किया।

सौभाग्यवती आनन्दकुमारी इन्ही स्वर्गीय मेहता भोपालसिह की पुत्री थी। वह प्राचीन भारत की वीर कन्या, वीर जाया, वीर जननी, प्रधान मत्री की पुत्री, प्रधान मत्री की भगिनी तथा प्रधान मंत्री की आदर्श गृहणी थी।

विवाह-सस्कार उन दिनो बड़ी शान-शौकत के साथ किये जाते थे। अत. सिरेमल बापना का विवाह भी बडी धूमधाम से किया गया, किन्तु इस विवाह ने उनकी पढाई पर कोई असर नही डाला, बल्कि इससे उन्होने अपने ऊपर एक जिम्मेदारी का अनुभव किया। यही कारण है कि विवाह के पूर्व उदयपुर महाराणा हाई स्कूल मे १३ वर्ष की आयु मे जब वह भर्ती हुए थे, तो उस वर्ष तृतीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए थे, किन्तु विवाह के बाद १८९८ मे उन्होने मैट्रिकुलेशन की परीक्षा उसी हाई स्कूल से प्रथम श्रेणी मे पास की और सन १९०० मे तो उन्होने इन्टरमीडिएट की परीक्षा अजमेर गवर्नमेट कालेज से न केवल प्रथम श्रेणी मे पास की वरन् सारे विश्वविद्यालय मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

सौभाग्य से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए म्योर सेन्ट्रल कालेज, इलाहाबाद में प्रवेश मिल गया और उसके साथ ही न्यू बोर्डिंग हाऊस मे रहने को स्थान मिला। इस बोर्डिंग हाऊस की परम्परा थी कि यहा से विज्ञान के प्रतिभा-सम्पन्न विद्यार्थी बराबर निकलते थे और यहा पर पठन-पाठन का एक ऐसा वातावरण था, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी प्रतिभा को विकसित करने मे सहायता मिलती थी। यहां आकर सिरेमलजी को गणित और भौतिकी विषयो से बहुत प्रेम हो गया। सभवत. इन दोनो विषयो मे गहन रुचि होने के कारण ही सिरेमल बापना मे एकाग्रता के साथ गहन चितन करने की प्रतिभा का विकास हुआ तथा बारीकी और परिशुद्ध निरीक्षण करने की आदत उनमे पड़ी।

प्रयोगशाला का शात वातावरण उन्हे बड़ा रुचिकर लगता था और वहा मेज के सहारे खड़े-खडे वह सदैव व्यस्त दिखाई पड़ते थे। विज्ञान की पुस्तकों का अनुगमन करके प्रयोगशाला मे तरह-तरह के प्रयोग करते थे। जब परिणाम आशातीत होता तो उन्हे बड़ा प्रोत्साहन मिलता, किन्तु प्रयोग मे असफलता पाने पर भी वह निराश न होते। वैज्ञानिक प्रयोगो को करते-करते उन्होने अनुभव से यह सीखा था कि सफलता प्राप्त करना कोई आसान काम नही है। वह तो निरन्तर काम करने से ही प्राप्त होती है। किन्तु फिर भी अपने परिश्रम और प्रयत्न से उन्हे विश्वास हो गया था कि उनका भविष्य अनिश्चित और धुंधला नही है। उनके मन मे उन महान् वैज्ञानिको के समान आशा की अनेक कल्पनाए जन्म लेने लगी थी, जिन्होने अधेरे कमरो मे प्रयोग करते हुए अपने युग के ज्ञान से आगे निकल जाने का यत्न किया था।

पर इसका अर्थ यह नही कि वह किताबी कीडे थे, वरन् पढ़ने के अतिरिक्त अन्य प्रवृत्तियो मे भी वह काफी समय लगाते थे। उनको टैनिस का खेल बहुत प्रिय था और उसे खेलने की उनकी अपनी निराली शैली थी, जिसे इनके सहपाठी बहुत पसद करते थे। टेनिस के खेल मे तो उनकी रुचि उस समय भी बराबर बनी रही जब वह इन्दौर राज्य के प्रधान मंत्री बन गये। वह वाद-विवाद प्रतियोगिता मे भी अत्यधिक रुचि लेते थे।

बापनाजी की स्मरण-शक्ति इतनी तेज थी कि जो पाठ एक बार देख लेते थे उसे फिर कभी नही भूलते थे। वह अपनी पढाई दूसरो से पहले ही समाप्त कर लेते थे और अपने साथियो की कठिनाइयो को हल करने और उन्हें समझाने मे लग जाते थे। छात्र बापना की यह विशेषता थी कि जब वह मेज पर बैठकर अपनी पुस्तको को पढ़ते तो उनमे इतने तन्मय हो जाते कि फिर चाहे उनके चारो ओर कितना ही शोर हो रहा हो उनकी आखे तक नही उठती थी। वह अपने अध्ययन के साथ-साथ उन वाद-विवाद क्लबो मे भी जाते थे, जहा पर सांस्कृतिक उन्नति के लिए नवयुवको का परस्पर विचार-विनिमय होता था। उस समय ही उनके मन मे यह विचार

घर कर गया था कि जबतक देशवासियो को शिक्षा नही दी जायगी, उनकी सांस्कृतिक उन्नति नही हो सकती। वह मानने लगे थे कि व्यक्तियो की उन्नति के बिना कोई भी अच्छी दुनिया बनाने की आशा नही रख सकता। उनका निश्चित विचार था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सर्वोत्कृष्ट उन्नति करने का यत्न करना चाहिए। इसके साथ ही मनुष्य का सामाजिक जीवन के प्रति जो उत्तरदायित्व है, उसे भी नही भूलना चाहिए। तभी उन्होने निश्चय कर लिया था कि उनका विशेष कर्तव्य है ऐसे लोगों की सहायता करना, जिनके लिए वह अधिक-से-अधिक उपयोगी बन सकते है।

विद्यार्थी-जीवन मे वह बहुत ही सादगी से रहे। उन्होने अपने में कोई भी बुरी आदत नही डाली। सिगरेट पीने की बुरी लत उनमे जरूर पड़ गई थी, किन्तु उसमे भी वह अतिवादी नही थे। वह यद्यपि विज्ञान के अध्ययन मे पूरे उत्साह और उमंग से जुटे हुए थे, तथापि विज्ञान के अतिरिक्त दूसरे विषयों के पढ़ने में भी उनकी रुचि कुछ कम न थी।

उस समय से ही बापनासाहब के हृदय मे समाज-सुधार के लिए जन-जागरण की लगन पैदा हो गई थी, किन्तु उन्होने किसी आन्दोलन मे अपने विद्यार्थी-जीवन मे भाग नही लिया। उनकी मान्यता थी कि विद्यार्थी-जीवन में पूरी लगन तथा उत्साह से अध्ययन करना ही विद्यार्थी का प्रथम कर्तव्य है।

१८८५ मे ह्यूम ने देश के अन्य राष्ट्रीय नेताओं के साथ मिलकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की। दादाभाई नौरोजी ने इसी वर्ष अपनी पुस्तक 'दी पावरटी अंडर दी ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' प्रकाशित की थी, जिसमे उन्होने बताया था कि भारत की गरीबी का मुख्य कारण अग्रेजो द्वारा देश की दौलत को इंग्लैंड ले जाना है। फिरोजशाह, रानडे, गोखले और तिलक सभी कांग्रेस मे शामिल हो चुके थे और आधुनिक भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका मे गोराशाही का विरोध करने के लिए सत्याग्रह और अहिंसा का तरीका अपना रहे थे। स्वामी विवेकानन्द ने १८८६ मे रामकृष्ण मिशन की नींव डाली और उसकी अनेक

शाखाएं स्थापित की थी। वह १८९६ मे इग्लैड तथा यूरोप के अन्य देशो और अमरीका गये, जहापर उन्होने भारतीय दर्शन और अध्यात्म-सबधी अपने ओजस्वी भाषणो से पश्चिम को आश्चर्य-चकित कर दिया था। इस प्रकार राजनैतिक और सास्कृतिक पुनर्जागरण के जो आन्दोलन साथ-साथ चल रहे थे, उनसे सिरेमल बापना अछूते न रह सके।

भारत मे गोराशाही का ताण्डव नृत्य उस समय जोरो पर था। अग्रेजो ने सारे देश को प्रशासन की दृष्टि से जिलो में बाटा था और प्रत्येक जिले का हाकिम ज़िला मजिस्ट्रेट होता था, जो जार की तरह काम करता था और अपनेको हिन्दुस्तानियो के मुकाबले मे महामानव समझता था। आएदिन अग्रेज सिपाहियो द्वारा भारतीयो को पीटने और भारतीय स्त्रियो के सतीत्व लूटने की घटनाए होती रहती थी। जब कोई अग्रेज किसी भारतीय को कत्ल कर देता था तो अग्रेज-जूरी उसको बरी कर देते थे। रेलगाड़ियो मे यूरोपियनो के लिए डिब्बे रिजर्व रहते थे। कोई भारतीय उनमें सफर नही कर सकता था, भले ही वे खाली पडे रहे। सार्वजनिक बगीचो और दूसरी जगहो मे भी बैचे और कुर्सिया रिजर्व रखी जाती थी। इस सभी वातावरण के प्रभाव से सिरेमल बापना के मन मे यह बात घर कर गई कि राष्ट्रीय भावना का उदय विदेशी राज्य की गुलामी का स्वाभाविक परिणाम होता है। सामाजिक सुधार के मसलो मे वह बहुत दिलचस्पी लेते थे। १९०४ मे समाज-सुधार के बारे मे उन्होने एक जोरदार वक्तव्य प्रकाशित किया था और अपने विद्यार्थी-जीवन मे ही जब वह कानून की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे तो विद्यार्थियो का एक एसोसियेशन बनाया गया था, जिसके वह अध्यक्ष थे।

इस प्रकार विद्यार्थी-जीवन मे विभिन्न क्षेत्रो मे सक्रिय भाग लेते हुए १९०२ मे उन्होने बी० ए० और बी० एस-सी० दोनो परीक्षाए एक साथ पास की। रसायन-शास्त्र मे उन्होने आनर्स प्राप्त किया और प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण होने के अतिरिक्त विश्वविद्यालय मे उन्हे विज्ञान-विभाग मे सर्वप्रथम स्थान मिला। इस सम्मान-

पूर्ण सफलता के उपलक्ष्य में उनको जुबली पदक और ईलियट छात्र-वृत्ति मिली। यही नही, इसी समय उनको स्वर्गीय टाटा ने यूरोप में विद्याध्ययन करने के लिए एक छात्रवृत्ति भी दी। सिरेमल बापना की विदेश-यात्रा करने मे बड़ी रुचि थी, परन्तु वह इस छात्रवृत्ति का उस समय उपयोग नही कर सके, क्योंकि उनके परिवार की आर्थिक दशा ऐसी नही थी कि वह अनेक वर्षो तक विदेश में रह सके। अपने विद्यार्थी-काल मे वह इतने लोकप्रिय हो गये थे कि बी० एस-सी० परीक्षा में प्रथम आने के उपलक्ष्य में उनके छात्र मित्रों की ओर से उपाधि-वितरण-समारोह में उनके एक साथी, फतहलाल कोठारी ने अंग्रेजी में कविता लिखकर उनका सम्मान किया था। इसका हिन्दी-रूपान्तर निम्नलिखित है :

"हे प्रतिभावान युवक ! तुम प्रसन्नता और जीवन
के महान स्रोत हो।
तुम सभीके प्रिय हो और सभी तुमको विशुद्ध
स्वर्ण की तरह प्यार करते है।
तुमने आज ऊंचा स्थान धारण करके विजय का
सेहरा धारण किया है,
उससे हमारे हृदय में आशा के मधुर फल पैदा
होने लगे है,
तुमने एक नई आशा को जन्म दिया है जो सौभाग्य और
प्रसन्नता को लानेवाली है,
और प्रकृति ने भी तुमको ऐसे सौभाग्य को वरण करने
के लिए आशीर्वाद दिया है।
हे सुगन्धवान् फूल, आज तुम इतने अधिक खिले हो कि
इससे पहले कभी प्रस्फुटित नहीं हुए थे
और वह भी ऐसे जंगली चट्टानी मैदानों में, जहा पर
विकर्षण ही रहता है।
यहां की परम्परा के अनुसार
तुम एक उगते हुए गौरव हो
और भविष्य तुम्हारे द्वार पर

प्रसिद्धि को बुला रहा है ।
इस देश के हे बहुमूल्य हीरे,
तुम्हारी इस गौरवमय विजय के समय
हम सभी मित्र यह प्रार्थना करते है
कि नियति तुम्हे स्वास्थ्य और ऋद्धि-सिद्धि से भर दे और
सौभाग्य तुम्हारे द्वार पर बिना बुलाए ही आ खड़ा हो ।"

बापनाजी अपनी मधुर मुसकान, अपूर्व प्रतिभा, विनयशीलता, उत्कृष्ट विद्याभ्यास तथा सबसे मित्रवत व्यवहार करने के कारण सबके प्यारे और दुलारे बन गये थे । इलाहाबाद के म्योर सेन्ट्रल कालेज मे वह बहुत समाजप्रिय, उत्तम आचार-विचारवाले, व्यवहार-कुशल तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करनेवाले विद्यार्थी समझे जाते थे । वह अपनी अपूर्व प्रतिभा के कारण अपने शिक्षकों के भी प्रिय शिष्य थे । उनका चरित्र अनुकरणीय था ।

जब वह एल-एल० बी० की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे तब इन्होने अपने छात्रालय मे एक लीगल एसोसिएशन स्थापित किया था । इसके वह सभापति चुने गये थे । जब वह अपनी शिक्षा समाप्त करके म्योर सेन्ट्रल कालेज से विदा हुए तब इस एसोसियेशन ने उनके सम्मान मे एक आयोजन किया । यह सम्मान उनकी इतनी कम उम्र मे ही कानूनी उपलब्धियो और विधि-शास्त्र के अगाध ज्ञान का अच्छा परिचायक है ।

सन् १९०३ मे उन्होने भौतिकी मे डी० एस-सी० प्रथम वर्ष की परीक्षा पास की । इसमे भी उनका विश्वविद्यालय मे प्रथम स्थान रहा । खेद है कि वह डी० एस सी० मे द्वितीय वर्ष की परीक्षा में न बैठ सके । १९०४ मे उन्होने एल-एल० बी० की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की और उनको प्रथम स्थान भी मिला, जिसके उपलक्ष मे उनको लेम्सडन पदक दिया गया ।

वापनाजी का प्रत्येक परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान प्राप्त करना उनके अपूर्व मेधावी और प्रतिभाशाली छात्र होने का प्रबल प्रमाण है । इस प्रकार सम्मानपूर्वक परीक्षाए उत्तीर्ण करते हुए उन्होने चरित-नायक वर्प की अवस्था मे अपना अध्ययन समाप्त किया ।

: ४ :

कार्य-क्षेत्र में

कानून की शिक्षा समाप्त कर श्री सिरेमल बापना ने १९०४ मे अजमेर मे वकालत करनी आरम्भ की । फिरोजशाह मेहता, बदरुद्दीन तैय्यबजी, मदनमोहन मालवीय और मोतीलाल नेहरू जैसे प्रसिद्ध वकीलो का जीवन उनके सामने था। उन्होने भी अपने वकील-जीवन को इसी प्रकार यशस्वी बनाने का निश्चय किया। उस समय उनकी आयु केवल २२ वर्ष की थी। अपने अध्यवसाय, परिश्रम और प्रतिभा के कारण शीघ्र ही वह अच्छी वकालत करने लगे। उन्हे मुवक्किल भी खूब मिलने लगे। लेकिन मन से वह वकालत के पेशे की कद्र नही करते थे और न यह पेशा उनकी प्रकृति के अनुकूल पडता था। फिर भी वह इसमे दत्तचित्त लगे रहे। परन्तु अजमेर मे अधिक समय तक वकालत करना उनके भाग्य में बदा नही था। अजमेर मे उन्होने लगभग एक साल ही वकालत की थी कि उन्हे १९०५ मे मेवाड़ राज्य और उसकी जनता की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ और वह उस राज्य में जुडिशियल अफसर के पद पर नियुक्त किये गए। उन्होने इस पद पर केवल सवा वर्ष काम किया होगा कि वह जनवरी, १९०७ मे होल्कर राज्य में डिस्ट्रिक्ट तथा सेशन जज के पद के लिए चुन लिये गए। यहा पर उन्होने बडी योग्यता, उद्यम और सच्चरित्रता के साथ काम किया। न्याय-विभाग में जटिल-से-जटिल मामलो के फैसले देने मे न्यायप्रियता और अपने कठोर श्रम के कारण वह शीघ्र ही विख्यात हो गये। इसका फल यह हुआ कि वह होल्कर शासन की दृष्टि में बडे जिम्मेदार व्यक्ति समझे जाने लगे और शीघ्र ही उन्हे होल्कर राज्य के होनेवाले महाराजा श्रीमंत तुकोजीराव द्वितीय को पढाने के लिए कानूनी शिक्षक के रूप मे नियुक्त कर दिया गया, क्योकि शासन महाराजा

तुकोजीराव को ऊंचे-से-ऊंचा और अच्छे-से-अच्छा, प्रशिक्षण देना चाहता था। कुछ समय छोडकर उन्होने वापस न्याय-विभाग मे काम किया और सन् १९११ तक आप इसी जगह पर काम करते रहे। सन् १९१० मे जब महाराजा ने यूरोप-यात्रा के लिए प्रस्थान किया तो तत्कालीन शासन द्वारा बापनाजी भी उनके साथ भेजे गए। वह लगभग डेढ वर्ष तक उनके साथ यूरोप मे रहे।

इस विदेश-यात्रा ने श्री सिरेमल बापना को पश्चिमी जगत के निकट ला खडा किया। यूरोप जाकर सिरेमल बापना का दृष्टि-कोण सभी दृष्टियो से व्यापक बन गया। उन्होने वहा की राजनैतिक, सास्कृतिक तथा वैज्ञानिक उन्नति को बहुत ही निकट से देखा। यूरोप मे उस समय बडे पैमाने पर आर्थिक, सास्कृतिक और वैज्ञानिक परिवर्तन हो रहे थे। बिखरा हुआ यूरोप ऊपर से एक जगह जमकर बैठने की कोशिश कर रहा था। माना कि उस समय पूजीशाही उद्योगो का बोलबाला था, किन्तु यूरोप के लोगो ने कुछ ऐसे निराले प्रयोग किये थे, जिनसे सिरेमल बापना प्रभावित हुए बिना न रह सके। उनमे से एक था सहकारी तरीके पर माल को मिलकर खरीदने, बेचने और मुनाफे को आपस मे बाटने का तरीका। यूरोप मे उस समय यह सहकारी आन्दोलन उन्नति पर था और सबसे ज्यादा सफलता उस आन्दोलन को डेन्मार्क जैसे छोटे-से देश में मिली थी। सिरेमल बापना पर इसका प्रभाव पडे बिना नही रहा। आगे जाकर जब वह इन्दौर राज्य के गृहमत्री के पद पर नियुक्त हुए, वह नाबालिग शासन के प्रमुख बने, तब इसी अज्ञात प्रेरणा के कारण सहकारिता आन्दोलन को उनसे प्रोत्साहन मिला।

इस समय उन्होने जहाज बनाने के कारखानो का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया और पोर्ट्समाउथ के बन्दरगाह पर जाकर अनेक प्रकार के लड़ाकू जलपोतो का निरीक्षण किया, जैसे विध्वसक जहाज, क्रूसर और पनडुब्बी नाव आदि।

इग्लैड की राजनैतिक विचारधाराओ से परिचय प्राप्त करने के लिए जब कभी उन्हे समय मिलता, वह उदार, अनुदार और यूनियनिस्ट दलो की सभाओ मे भाग लेते, और उनके दृष्टिकोणो

को समझने का प्रयत्न करते । उस जमाने में उन्हे इग्लैड के बैलफोर, एस्क्वीथ और चर्चिल जैसे प्रसिद्ध वक्ताओं के भाषण सुनने का भी अवसर प्राप्त हुआ । यही नही, उन्होने विशेष प्रबन्ध कराकर अर्थ-शास्त्र के तत्कालीन प्रसिद्ध प्रोफेसर लिपसन, कार्लइल और डारले के मार्ग दर्शन में कुछ समय तक आक्सफोर्ड में अर्थशास्त्र का अध्ययन भी किया ।

उन्होंने उन वैज्ञानिक आविष्कारों को भी बहुत निकट से देखा, जिनके कारण यूरोप सारे संसार का सिरमौर हो गया था । रेल, भाप के जहाज, तार-प्रणाली और मोटरकार आदि ने दुनिया को बिल्कुल बदल दिया था और उस समय तक यूरोप में वायुयान का विकास तेजी से हो चुका था । इन सबको सिरेमल बापना को बहुत ही नजदीक से देखने और उनके अध्ययन करने का मौका मिला । उस जमाने में ही इन आविष्कारो ने दुनिया को छोटा बना दिया था और ससार-भर के लोग एक-दूसरे के पास आ गये थे ।

यूरोप में उन्हे राजनैतिक प्रगति के अध्ययन करने का भी अवसर मिला । उस समय यूरोप मे लोकतत्री विचारो की प्रगति हो रही थी और वहा की पार्लमेंट और विधान-सभाओं के लिए वोट देने के अधिकार लगभग सभी वालिग व्यक्तियो को मिल गये थे । स्त्रियो को भी सभी क्षेत्रों मे समानता के अधिकार प्राप्त हो गयें थे । इन सब बातों का भी प्रभाव सिरेमल बापना पर पडा ।

यूरोप में जब सिरेमल बापना आये उस समय एच० जी० वेल्स और बर्नाड शा सामाजिक और आर्थिक मूल्यो को चुनौती दे रहे थे । फ्रायड मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में क्रातिकारी हलचल पैदा कर रहे थे । पैवलाव विज्ञान के क्षेत्र में समाज को मानसिक दासता से मुक्त करने मे प्रयत्नशील थे । जेम्स जीन्स दार्शनिक विवेचन मे मग्न थे । लेकिन दूसरी ओर वहा इसान, कौमें और राष्ट्र तगदिल होते जा रहे थे । सारे यूरोप पर भय फैलता जा रहा था और यूरोप दो गुटो में बट-सा गया था । इसमें जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली एक ओर तथा इग्लैंड, रूस और फ्रास दूसरी ओर थे । इस गुट-विभाजन से आम लोगों का बड़ा नुकसान होता था ।

यूरोप की यात्रा से लौट आने पर सिरेमल बापना का दृष्टिकोण काफी परिपक्व हो चुका था। इस डेढ वर्ष के निकट सपर्क से महाराजा पर सिरेमल बापना के व्यवहार का इतना अधिक प्रभाव पडा कि यूरोप से लौटने पर सन् १९११ मे जब महाराजा तुकोजीराव होल्कर तृतीय गद्दी पर बैठे और उनको सपूर्ण राज्याधिकार प्राप्त हुए, तब उन्होने बापनाजी को अपना निजी सचिव नियुक्त किया। उन्होने लगन, कर्त्तव्य-भावना और एकाग्रता से यह काम किया। उसके कारण महाराजा ने शीघ्र ही १९१३ मे उनको अपना प्रथम सचिव नियुक्त कर लिया। महाराजा बापनाजी के दिल और दिमाग की सूझो के इतने अधिक प्रशसक थे कि वह राज्य के महत्वपूर्ण मसलो पर अक्सर उनकी राय लेते थे। बापनाजी भी सदैव अपना निष्पक्ष मत व्यक्त करते थे। इन्ही गुणो के कारण १९११ मे ब्रिटिश सरकार ने उन्हे राज्याभिषेक पदक दिया और १९१४ मे रायबहादुर की पदवी देकर सम्मानित किया। १९१४ मे वह फिर एक बार महाराजा के साथ अपनी दूसरी यूरोप-यात्रा पर रवाना हुए और छ माह तक वहा रहे। इस समय प्रथम विश्वयुद्ध के बादल यूरोप के आकाश पर छा गये थे। वहा के जीवन मे पेचीदगिया और उलझने बढ गई थी और यूरोप के सभी देश युद्ध की बाट ही नही देख रहे थे, बल्कि उसके लिए सरगर्मी से तैयारिया कर रहे थे। फिर भी यूरोप का कोई भी देश युद्ध नही चाहता था, क्योकि सभी युद्ध के नतीजो से डरते थे। यूरोप मे दो पक्ष एक-दूसरे के खिलाफ आमने-सामने खडे हुए थे। यहा शक्ति का सतुलन इतना नाजुक था कि एक जरा-से धक्के से भी बिगड सकता था।

यूरोप से लौटने पर सन् १९१५ मे होल्कर नरेश ने बापनाजी को गृहमत्री के पद पर नियुक्त कर दिया। अप्रैल, सन् १९२१ तक वह इसी पद पर कार्य करते रहे। वित्त, विधि, शिक्षा, स्वायत्त शासन आदि विभाग उनकी अधीनता मे रहे।

श्री सिरेमल बापना ने इदौर के गृहमत्री के नाते जो महत्वपूर्ण कार्य किये, उनको समझने के लिए देशी रियासतो की उस समय की पृष्ठभूमि समझना आवश्यक है। आजादी से पहले अग्रेज सरकार

इन देशी रियासतों को अपनी कृपा पर जीवित समझती थी और इनके शासक मामूली तौर पर ब्रिटिश सरकार के वफादार होते थे। देशी रियासतों की सख्या लगभग ६०० थी। उसमें भारत के क्षेत्र का ४५ प्रतिशत तथा जनसख्या का १४ प्रतिशत भाग आता था। देशी राज्यों की जनता आर्थिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में ब्रिटिश भारत से पिछडी हुई थी। ब्रिटिश सरकार को प्रथम स्वतत्रता-युद्ध यानी सन् १८५७ के बाद यह पता चल गया था कि इस देश में अग्रेजी राज को बनाये रखने के लिए देशी राजाओ की वफादारी प्राप्त करना बडा जरूरी है। सन् १८२९ मे लार्ड कर्जन ने गवर्नर जनरल की हैसियत से देशी रियासतो में आतरिक तथा बाहरी मामलो में ब्रिटिश सरकार के हस्तक्षेप की नीति अपनाई, यहा तक कि उन्होंने देशी राज्यो के शासको पर विदेश जाने पर भी रोक लगा दी थी। लेकिन १९०५ के बाद अंग्रेजी सरकार की नीति बदली और उसने देशी रियासतो के राजाओं को अपना विश्वासपात्र बनाया, उनसे परामर्श लेने की नीति अपनाई और सन् १९१६ में लार्ड हार्डिंज ने इसको और आगे बढाया। लेकिन फिर भी देशी रियासतो की हालत कोई अच्छी नही थी।

उनके अन्य आतरिक मामलो में भी ब्रिटिश सरकार को हस्त-क्षेप करने का अधिकार था। उत्तराधिकार के प्रश्न पर अन्तिम निर्णय ब्रिटिश सरकार के हाथो मे रहता था। ब्रिटिश सरकार को ऐसे शासकों को गद्दी से उतार देने का अधिकार था, जिनका शासन ठीक ढग से न चल रहा हो। कुशासन का आरोप लगाकर देशी राज्यो के मामलो मे हस्तक्षेप करने के कई उदाहरण मिलते है। बडौदा के नरेश गायकवाड पर कुशासन का आरोप लगाकर उन्हे गद्दी से उतार दिया गया। मणिपुर में भी कुशासन के नाम पर शासक को हटाकर युवराज को गद्दी पर बैठाया। इन सब घटनाओ से यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्रिटिश सरकार एक राजा को गद्दी से उतारकर दूसरे को उसी गद्दी पर बैठा सकती थी।

यही नही, कुछ सधियों के द्वारा देशी राज्यो के शासको को देश की भलाई के लिए आर्थिक योजनाओ मे सहायता करने के

लिए कहा गया था। सिक्को के प्रयोग और निर्माण पर भी ब्रिटिश सरकार ने नियम बनाये। देशी राज्यो के भीतर ब्रिटिश रेजिडेण्ट रहते थे। देशी नरेश उन रेजिडेटो के आधीन रहते थे। रेजिडेट नरेशो को सलाह देते थे तथा ब्रिटिश साम्राज्य के हित की रक्षा करते थे। ब्रिटिश सरकार ऐसी जगहो पर भी रेजिडेट स्थापित करना अपना कर्त्तव्य समझती थी, जहा के शासक नाबालिग थे। उनकी शिक्षा पर नियत्रण रखने मे भी ब्रिटिश सरकार दखल दिया करती थी।

दीवानों, मुख्य मत्रियो और रियासत के अन्य पदाधिकारियो की नियुक्ति की स्वीकृति प्राय सरकार के राजनैतिक विभाग से लेनी पडती थी। सरकार को यह अधिकार था कि वह भारतीय रियासतो की प्रजा से राज्य-प्रशासन के विरुद्ध प्रार्थना-पत्र ले सकती थी।

किन्तु होल्कर राज्य के तत्कालीन महाराजा तुकोजीराव अन्य देशी नरेशो से भिन्न प्रकृति के थे। उनमे स्वाभिमान कूट-कूटकर भरा था। इसलिए वह अग्रेजी सरकार से हुई होल्कर राज्य की सन्धियो के अनुसार उनसे समानता के व्यवहार की आशा करते थे। पर अग्रेज सरकार इसे कैसे सहन कर सकती थी। महाराजा तुकोजीराव भी कभी उनके सामने झुके नही और जहा भी स्वाभिमान व राज्य के हक का प्रश्न आया, उन्होने छोटी-से-छोटी बात पर अग्रेजी सरकार से टक्कर ली। बापनाजी का यह सौभाग्य था कि महाराजा उनपर पूरा भरोसा करते थे। वह भी उनके प्रति पूरी वफादारी रखते थे, इसलिए ऐसे मौको पर बापनाजी महाराजा के सम्मान को अक्षुण्ण बनाये रखने मे कुछ भी कोर-कसर नही छोडते थे। जरूरत पडती तो निडरता के साथ अग्रेज एजेन्टो से टक्कर भी लेते थे।

जब बापनाजी गृहमत्री थे तो एक बार महू-स्थित अग्रेज पुलिस के एक अफसर ने इदौर राज्य के एक मामूली सिपाही को साधारण-सी बात पर चाटा रसीद कर दिया। महाराजा के लिए यह राज्य की प्रतिष्ठा का प्रश्न था। बापनाजी ने गृहमत्री के नाते इस प्रश्न

को गभीर रूप से लिया, जिसके कारण उस अग्रेज पुलिस अफसर को माफी मागनी पड़ी। उस जमाने में यह बहुत बडी बात थी।

इस पृष्ठभूमि में गृहमत्री होकर सिरेमल बापना ने सर्वप्रथम स्वायत्त शासन व शिक्षा-विभागो के विकास व सुधार करने की ओर ध्यान दिया। इस सम्बन्ध में उन्होने बडे-बडे देशी रजवाडों तथा भारत के मुख्य नगरो का भ्रमण किया। उस जमाने में देश के अलग-अलग भागो में थोडा-बहुत अतर होते हुए भी स्थूल रूप से सभी जगह भय और आतक का साम्राज्य था। लोगों में अपने असन्तोष को प्रकट करने की कुछ मनोवृत्ति ही न थी और अगर कोई प्रकट करना चाहता भी था तो यथेष्ट साधन न थे। देशी रियासतों मे तो हाल और भी बुरा था। प्रजा में इतना भय बैठा हुआ था कि लोग आपस में भी शासन की आलोचना करते डरते थे। वहा जन-जागरण नाम मात्र को भी न था।

श्री बापना के प्रयत्नो के फलस्वरूप इदौर राज्य की जनता में चेतना आने लगी। उसके मन मे एक अपूर्व क्रियाशीलता, जागरण और अनुभूति की लहर व्याप्त होने लगी। सदियो से सोए हुए सस्कार जाग उठे और उनमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अन्वेषण की प्रवृत्ति पैदा होने लगी। अधेरे का स्थान प्रकाश लेने लगा, मन में नये सकल्पों के अकुर फूटने लगे तथा कर्म में नई शक्ति प्रकट होने लगी।

सिरेमल बापना को इस वात का पूरी तरह से ज्ञान था कि ग्राम-पचायत भारतीय समाज का एक बडा आधार-स्तम्भ है। उन्होंने इस सम्वन्ध में काफी अध्ययन किया था कि किस प्रकार ग्राम पचायते प्राचीन काल से चली आ रही है। सिरमेल वापना का विचार था कि जैसे प्राचीन काल में ग्रामीण पचायतो को कार्यपालिका और न्यायपालिका दोनों प्रकार के अधिकार प्राप्त थे वैसे ही आधुनिक काल मे भी ग्रामीण पचायतो को ये अधिकार मिलने चाहिए। अग्रेजी शासको ने पचायतो के महत्व को स्वीकार तो किया था, किन्तु अपने राजनैतिक स्वार्थ के कारण ये प्राचीन सस्थाए अग्रेजी राज्य मे नष्ट कर दी गई थी।

ब्रिटिश शासन के पूर्व भूमि-कर सयुक्त रूप से वसूल किया जाता था, परन्तु अब व्यक्तिगत उत्तरदायित्व को अधिक महत्व प्रदान किया गया। इससे पचायतो का प्राचीन सविधान बहुत प्रभावित हुआ। पुलिस की व्यवस्था होने के कारण पचायतो के अधिकार और उत्तरदायित्व समाप्त हो गये। दीवानी और फौजदारी के न्यायालयो के अधिकार-क्षेत्र के अन्तर्गत गाव भी आ गये और पचायतो की न्यायिक महत्ता भी न रही। आवागमन के साधनो के विकास तथा नगरो मे उद्योग-धन्धो की वृद्धि के कारण योग्य व्यक्ति नगरो की ओर आकृष्ट हुए और पचायतो का सुचारु रूप से सचालित करना भी सभव न रहा। पाश्चात्य सभ्यता के प्रसार के साथ ही व्यक्तिवाद की भावना भी दृढ हुई और पचायतो का विघटन प्रारभ हुआ। इस प्रकार आत्म-निर्भर और प्रजातन्त्रात्मक आधार पर सगठित ग्राम-पचायते समाप्त हो गई।

इन्दौर राज्य मे ग्राम-पचायतो को सुदृढ करने के लिए गृहमंत्री की हैसियत से श्री सिरेमल बापना ने इस दिशा मे अबतक जो कुछ हुआ था, उसका भी अध्ययन किया। पचायतो के विघटन के बाद अग्रेजी राज्य को गावो मे सब प्रकार की व्यवस्था करने के लिए सस्थानो की जरूरत पडी और इसीलिए ग्राम-पचायतो की स्थापना की आवश्यकता साइमन कमीशन ने अपनी रिपोर्ट मे बताई। इस कमीशन ने बताया कि जिला बोर्ड ठीक से कार्य करने मे असफल रहे है।

१९०९ के 'रायल कमीशन आफ डिसेण्ट्रलाइजेशन' ने इस बात पर विशेप जोर दिया कि गावो मे स्वायत्त सरकारो की स्थापना के लिए पचायतो को सगठित और विकसित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। १९१५ मे भारत सरकार ने एक प्रस्ताव पास करके समस्त प्रान्तीय सरकारो के पास भेजा, जिसमे यह आदेश दिया गया कि "ग्रामो मे सहयोग द्वारा पचायतो को सचालित करने के लिए पूर्ण प्रयास करना चाहिए।" सन् १९१९ मे भारत सरकार ने इस बारे मे ग्राम पचायत के लिए अधिनियम बनाया। इसमे भी इसी नीति को कार्यान्वित करने पर विशेप बल दिया गया।

यह वात स्मरणीय है कि वापनाजी ने अपने गृहमत्री के कार्य-काल मे इदौर राज्य में प्रथम वार सन् १९२० मे पचायत अधिनियम वनवाया और उसे मान्य करवाया। उस समय से इन्दौर राज्य में ग्राम-पचायतों की नीव पडी, जबकि दूसरे अधिकाश भारतीय क्षेत्र मे कुछ नहीं किया जा रहा था। उसी समय ग्राम पचायतों को ग्राम-सुधार-अधिकारों के साथ-साथ न्याय-सम्वन्धी अधिकार भी दिये गए। हा, इससे पहले बंगाल-सरकार ने वगाल ग्राम पचायत अधिनियम १९१९ मे वनाया था। इन्दौर की देखादेखी फिर तो वम्वई, उत्तर प्रदेश आदि की सरकारों ने ग्राम-पचायत अधिनियम पारित किये और इसके वाद आसाम, उडीसा, विहार, त्रावणकोर-कोचीन, पजाव, मैसूर व वड़ोदा की सरकारो ने भी ग्राम पचायत एक्ट पास किये। यह जरूरी था कि विभिन्न प्रातों में भिन्न-भिन्न स्थिति के कारण पचायत राज्यो की स्थापना के लिए अलग-अलग नियम और अलग-अलग व्यवस्था कायम की जाय। जहा एक ओर ब्रिटिश भारत मे ये पचायते ठीक से नही पनप सकी वहा दूसरी ओर इदौर राज्य में इन पचायतो का तेजी से विकास हुआ। इसका कारण यह था कि इसके पीछे श्री सिरेमल वापना की कल्पना और कार्य-शक्ति काम कर रही थी। उन्होने यह अच्छी तरह से हृदयगम कर लिया था कि गावो में लोगो द्वारा चुनी हुई पंचायते उस प्राचीन व्यवस्था का चिन्ह है, जिसके द्वारा भारत के अनगिनत गांवो में लोकराज चलता था। उन्हे यह भी विश्वास था कि यदि इन पचायतो मे ये चुने हुए पंच ईमानदारी से काम करें तो निश्चित ही ये गावों को स्वर्ग वना सकती है।

पचायती राज की स्थापना के साथ ही अपने गृहमत्री के कार्य-काल मे १९१० मे उन्होंने अनिवार्य प्रारभिक शिक्षा कानून वनवाया था, जिसके अन्तर्गत राज्यभर मे अनिवार्य और नि.शुल्क शिक्षा की योजना को कार्य रूप मे परिणत करने का प्रस्ताव था। शिक्षा विभाग में अनेक परिवर्तन किये गए और इदौर नगर के हाईस्कूल के लिए एक भव्य भवन का निर्माण करवाया गया।

सन् १९०० तक तो इन्दौर का शासन प्राय निरकुश ही था।

१६०८ मे शासन ने नाम मात्र की स्वतन्त्रता प्रदान की थी। श्री बापना ने नगरपालिकाओ का पुनर्निर्माण किया। उनका मानना कि जबतक राज्यो की ओर से नगरपालिकाओ के कार्यो मे हस्त-क्षेप किया जायगा तबतक नगरपालिकाए अपने कर्त्तव्यो का निर्वाह भली प्रकार नही कर सकेगी। इसीलिए उन्होने इन्दौर की नगर-पालिका को स्वायत्त शासन की ओर अग्रसर करना शुरू किया। इसका फल यह हुआ कि नगर के जिम्मेदार लोग नगरपालिका के दैनिक कार्यो मे अधिकाधिक रुचि लेने लगे, जिससे नगर की चहुमुखी उन्नति होने लगी। इदौर नगरपालिका का सविधान सन् १६०६ मे बनाया गया था। इसके अन्तर्गत नगर-पालिका को बहुत कम अधिकार प्रदान किये गए थे तथा नामजद सदस्यो की सख्या अपेक्षाकृत अधिक थी। इसलिए उनका प्रभाव भी अधिक था। बापनाजी ने इस सविधान मे अनेक सुधार करवाये तथा सदस्यो की सख्या बढाकर चौतीस कर दी गई, जिनमे नामजद सदस्यो की सख्या केवल बारह रखी गई। इनमे से चार विभिन्न हितो, जैसे व्यापार, कारखाने, मजदूर वर्ग, हरिजन आदि का प्रति-निधित्व करते थे और आठ विभिन्न शासकीय (सरकारी) विभागो का प्रतिनिधित्व करते थे, जिनका सम्बन्ध नगरपालिका से पडता था। इस हेतु एक अग्रेज आई० सी० एस० अफसर, मि० हेनरी हेग को, जो आगे चलकर उत्तर प्रदेश के गवर्नर के पद पर आसीन हो गये थे, इन्दौर नगर के म्युनिसिपल कमिश्नर के पद पर नियुक्त करवाया। सर हेनरी हेग ने व्यक्तिगत रुचि लेकर नगर के जन-स्वास्थ्य की ओर उल्लेखनीय प्रगति कर दिखाई। इसी काल मे नगर मे पर्याप्त मात्रा मे जल उपलब्ध कराने की दृष्टि से बिलाबली तालाब का कार्य पूरा करवाया गया। इसके अतिरिक्त इदौर के विकास के लिए वृहत नगर-योजना बनाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विकास विशेषज्ञ सर पैट्रिक गिडीज को उन्होने इदौर मे आमत्रित करवाया और विशेष वेतन देकर उनकी सेवाए इन्दौर नगर के लिए प्राप्त की गई। सर पेट्रिक गिडीज ने नगर की समस्याओ का विस्तार से अध्ययन कर विस्तृत योजना तैयार की।

उन्होने अन्य विषयो के साथ नई बस्तियो को बसाने के लिए और नगर-भर के विभिन्न मोहल्लो मे बगीचे आदि लगाने के लिए भी सुझाव दिये। यह योजना दो भागो में सन् १९१८ में प्रकाशित की गई और उसपर अमल करने के लिए इन्दौर मे १९२४ में 'इन्दौर नगर सुधार' कानून बनाया गया, जिसके अनुसार 'सिटी इम्प्रूवमेट बोर्ड' की स्थापना की गई। इन्ही सर गिडीज की योजना को ध्यान मे रखकर आगे चलकर स्नेहलतागज, तुकोगज, मनोरमागंज, हरसिद्धि आदि वस्तिया इन्दौर नगर मे बसाई गई।

इन्दौर नगर मे भारत के अन्य नगरो की तरह प्रति वर्ष प्लेग महामारी का प्रकोप होता था और उससे सहस्रो नरनारी काल के कराल गाल मे चले जाते थे। इस बीमारी को जड़मूल से निकालने के लिए बापनाजी ने भरसक प्रयत्न किये। प्रोफेसर गिडीज की सहायता से नगर की सफाई के लिए विशेष योजना बनवाकर नगर का कूडाकर्कट साफ करवाया गया। इसके बाद यह महामारी इस नगर से सदा के लिए विदा हो गई। सन् १९१९ में प्लेग का एक विशाल पुतला बनवाकर उसकी होली जलवाई गई, जो इस बात का प्रतीक था कि यह महामारी सदा-सदा के लिए इन्दौर से दूर हो जाय।

इन्दौर राज्य मे सन् १९१४ में सहकारी समितियो का प्रथम कानून बनाया गया। बापनाजी के गृहमत्री पद पर नियुक्त होने के बाद इस कानून के अन्तर्गत नगर के भिन्न-भिन्न क्षेत्रो में सहकारी सस्थाओ की स्थापना की गई। राज्य के ग्रामीण क्षेत्रो में भी सहकारी समितिया सगठित करके उनकी आर्थिक उन्नति के लिए सहकारी विभाग द्वारा 'दी इन्दौर प्रीमियर कोआपरेटिव बैक लिमिटेड' की स्थापना सन् १९१६ मे की गई। प्रथम पाच वर्ष तक इस सस्था का सचालन और नियन्त्रण सहकारी विभाग के हाथ मे रहा। तत्पश्चात् उसका प्रबन्ध बैक के शेयरहोल्डर्स द्वारा निर्वाचित बोर्ड आफ डायरेक्टर्स को सौप दिया गया।

श्री सिरेमल बापना के गृहमत्रित्व काल मे ब्रिटिश राज्य की ओर से माण्टेफोर्ड सुधारों की घोषणा की गई थी। १९१७ में

भारत-मत्री मि० माण्टेग्यू ने भारतवर्ष मे आकर यहा के वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड के साथ मिलकर शासन-सुधारो की एक रिपोर्ट तैयार की थी, जिसके आधार पर १९१९ मे माण्टेफोर्ड सुधार जारी किये गए थे। ब्रिटिश भारत मे स्वराज्य और आत्म-निर्णय के अधिकार की भावना को बढता देखकर ब्रिटिश सरकार देशी रियासतो के राजाओ को भारतीय जनता के विरुद्ध उपयोग करने का अच्छा साधन समझती थी। उधर राजा लोग भारत सरकार के राजनीति विभाग की ज्यादतियो से यथासभव छुटकारा पाने के इच्छुक थे। बस, राजाओ और ब्रिटिश सरकार दोनो को एक-दूसरे की जरूरत थी। राजाओ ने इस अवसर से लाभ उठाकर अपने सगठन की ओर ध्यान दिया। ब्रिटिश सरकार कुछ समय से ऐसा चाह रही थी। इस प्रकार सन् १९२१ मे नरेन्द्र मडल की स्थापना की गई। इसके बाद राजाओ के प्रति ब्रिटिश अधिकारियो की सहानुभूति और भी बढ गई और वे साम-दाम-दड-भेद से जैसे भी बना इन्हे, अपनी ओर मिलाने लगे। इससे एक ओर तो रियासती कार्यकर्त्ता सावधान हुए और उनमे अपना सगठन बनाने की भावना बढी। दूसरी ओर ब्रिटिश भारत के नेता भी अब रियासतो के प्रश्न की उपेक्षा न कर सके। उन्होने इनकी निरकुशता मिटाने और उत्तरदायी शासन-पद्धति प्रचलित कराने की ओर अधिकाधिक ध्यान दिया।

सिरेमल बापना को अंग्रेज सरकार के इस दृष्टिकोण का भी ध्यान रखना था। उनके सामने त्रिकोणी समस्याएं थी, जिनमे एक कोने पर ब्रिटिश सरकार थी, दूसरे कोने मे देशी रियासतो की जनता या प्रजा थी और तीसरे कोने पर होल्कर नरेश थे। उनको इन तीनो को ही सतुष्ट रखते हुए राज्य को आगे बढाना था। इन परिस्थितियो मे जो भी योग्य-से-योग्य व्यक्ति कर सकता है, वह सिरेमल बापना ने किया।

श्री सिरमेल बापना १९२१ तक होल्कर राज्य के गृहमत्री रहे। इस बीच उन्होने कुछ ऐसे काम कर दिये, जिनसे राज्य प्रगति के पथ पर पड गया। इनमे राज्य के अन्दर ग्राम पचायतो का निर्माण करवाना, प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एव नि शुल्क करवाने का

प्रयत्न, नगरपालिकाओ को उत्तरदायी शासन की ओर बढाना और सहकारिता की नीव डालना प्रमुख थे। समाज-सुधार की दिशा मे होल्कर राज्य मे सिविल मेरिज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट अपने गृहमत्रित्व काल मे उन्होने पारित कराया। स्मरण रहे कि इससे पहले भारत मे भारतवासियो के लिए सिविल मेरिज करना असभव था। इस सामाजिक सुधार का महत्व जानने के लिए उस समय की पृष्ठ-भूमि को समझना आवश्यक है। यह वह जमाना था जब देश की बहुसख्यक जनता का धर्म हिन्दू-धर्म रूढि और सस्कारो से भरा पडा था। जिस जमाने मे विदेश जाना और जहाजो पर बैठना भी इतनी बुरी बात समझी जाती थी कि उसके कारण जाति-बहिष्कार हो सकता था, उस जमाने में सिविल मेरिज की बात सोचना एक बहुत बडा क्रातिकारी विचार था। हिन्दू धर्म के युवक और युवतियो का दूसरे धर्मो के युवक और युवतियो से तो विवाह करना असभव था ही, किन्तु इसके साथ ही हिन्दू धर्म के अन्दर एक जाति के युवक का दूसरी जाति की युवती से विवाह करना भी सभव नही था। यह एक ऐसी सामाजिक प्रथा थी, जिसके कारण अनेक होनहार प्रतिभावान् युवक और युवतियो को अपनी जानो से हाथ धोने पडे थे। जिस प्रकार राजा राममोहन राय ने सती-प्रथा को समाप्त करवा कर जनता और विशेष रूप से महिलाओ पर होनेवाले विवशतापूर्ण अत्याचार को नष्ट किया था, उसी प्रकार सिरेमल बापना ने सिविल मेरिज रजिस्ट्रेशन एक्ट पारित कराकर देश-भर के ऐसे युवक और युवतियो के लिए कल्याण और मंगल का मार्ग खोल दिया था, जो परस्पर विवाह-बधन मे नये जीवन का प्रारभ करना चाहते थे। यही कारण है कि उस समय भारतवर्ष के अन्य प्रदेशो के लोग सिविल मेरिज के लिए इन्दौर आया करते थे।

बापनाजी के गृहमत्री-काल मे राज्यों के सामने यह प्रश्न आया कि अपने हितो की रक्षा के लिए एक नरेन्द्र मण्डल (चैम्बर आफ प्रिसेस) की स्थापना की जाय। इस समस्या का समाधान करने के लिए होनेवाले सम्मेलनो मे होल्कर राज्य के प्रतिनिधि के रूप में बापनाजी आमतौर पर शामिल होते थे। इसके लिए

उन्होने अपनी एक योजना भी बनाई थी । यदि वह कार्यान्वित हो जाती तो देशी राज्यो मे प्रजातन्त्र काफी सीमा तक आ सकता था । उनकी योजना मे देसी राज्यो के प्रतिनिधियो के रूप मे वहा के राजाओ के स्थान पर दीवानो और गण्यमाण्य जनसेवको का सुझाव था । ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि के रूप मे इस योजना मे वायसराय को स्थान नही दिया गया था । उस काल मे सचमुच यह योजना क्रान्तिकारी थी, शायद इसीलिए देसी राज्यो ने इसको स्वीकार नही किया ।

इस तरह गृहमत्री के अपने पाच वर्ष के कार्यकाल मे श्री सिरेमल बापना ने कुछ ऐसे बुनियादी परिवर्तन कर दिये, जिनमे वह जनता और इन्दौर महाराज दोनो के ही प्रिय बन गये । इन गुणो के लिए ही सन् १९१९ मे महाराजा साहब ने उन्हे 'एतमादुद्दौला' की सम्मानसूचक उपाधि प्रदान की थी। किंतु सन् १९२१ मे इन्दौर राज्य मे ऐसे प्रधानमत्री की नियुक्ति हुई, जिन्होने शासन मे कुछ ऐसे परिवर्तन किये और अपने सहयोगी मत्रियो के सम्बन्ध मे श्रीमान् महाराजा साहब से ऐसी विशेष आज्ञा प्राप्त कर ली कि जिनको सिरेमल बापना सैद्धातिक रूप मे राज्य के हित मे नही समझते थे । सिरेमल बापना ने इन्हे सिद्धात का प्रश्न बना लिया और उन्होने अपने निजी स्वार्थ एव उज्ज्वल भविष्य की परवा न करके गृहमत्री के पद से त्यागपत्र दे दिया । इससे पहले भी सैद्धान्तिक मसलो पर सिरेमल बापना दो बार अपना त्यागपत्र दे चुके थे । किन्तु उस समय महाराजासाहब ने स्वय ही इन समस्याओ को सुलझा दिया था और उनका त्यागपत्र स्वीकार नही किया था । १९१५ मे जिस समय उन्होने सबसे पहले महाराजा साहब को सैद्धातिक समस्याओ को लेकर त्यागपत्र दिया था और उनको जिस समय उनके विरुद्ध प्रपचियो ने षड्यत्र रचा था, उस समय पडित मदनमोहन मालवीय ने एक पत्र लिखा, जिसमे उन्होने कहा था

"मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि इन्दौर मे अभिसधि षड्यत्र अभी भी चल रहा है। मुझे यह जानकर बहुत चिन्ता हुई कि

प्रपञ्चियो ने आपको भी अपना लक्ष्य बनाया है। मै आशा करता हूँ कि वे श्रीमन्त महाराजा को ईमानदार व्यक्तियो की सेवा से वञ्चित करने के अपने दुष्प्रयासो में सफल नही होगे और महाराजा से उनकी चालबाजिया छिपी नही रहेगी और उन्हे उनका कोपभाजन होना पडेगा। मै चाहता हू, आप अपने विरोधियो द्वारा इतनी आसानी से परेशान न हो। उन्हे आप अपने तथा श्रीमन्त महाराजा के ऊपर इन्हे इतनी आसानी से हावी न होने दे। यदि आप यह विश्वास करते है कि श्रीमत महाराजा को यह सोचने के लिए बाध्य किया जा रहा है या वह स्वय यह सोचते है कि आपने उनका अपमान किया है तो एक भद्र पुरुष और सच्चे मित्र की भाति सच्चे दिल से क्षमा-याचना करे और मै समझता हू कि आपने ऐसा किया भी होगा। उन्होने आप पर वर्षो भरोसा किया है और आपकी प्रशसा की है। किसी उपयुक्त समय पर उन्हे विश्वास मे लेकर बातचीत कीजिये और उनके सामने सारी स्थिति स्पष्ट कर दीजिए। यदि आप यह समझते हो कि वह इसे पसंद नही करेगे तो बात अलग है। जब आप महाराजा को सुनने और उसपर गौर करने की स्थिति में पाये उस समय नम्रतापूर्वक किन्तु स्पष्ट रूप मे कहे। स्पष्ट कथन से भारी गलतफहमी दूर हो सकती है और होनी भी चाहिए। आप इससे तो अवगत होगे ही कि मै महाराजा होल्कर का कितना सम्मान करता हूं और हृदय से यह चाहता हूं कि उन्हे सुयोग्य आदमियो का सहयोग प्राप्त होता रहे। मुझे यह जानकर दु ख हुआ कि स्थिति ऐसी उत्पन्न होती जा रही है जिसमे आपको महाराजा की सेवाओ से अलग होना पडेगा। मै चाहता हू कि मेरी यह आशका निर्मूल हो। आपकी ओर से यह भरोसा करता हू कि आप धीरज रखेगे। यदि आप आत्म-सम्मानपूर्वक ऐसा न कर सके तो जल्दी में अप्रिय वातावरण से छुटकारा पाने का निर्णय न ले। हम जिस हैसियत से भी काम करे, हमें अपनी सामर्थ्य से काम करना चाहिए। मुझे पूरा भरोसा है कि यदि आप धीरज रखेंगे और अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा करेगे तो आपका अहित चाहने वाले अपने प्रयास में सफल नही हो सकेगे। यदि आप इस आशका

से विचलित हुए बिना भी कि आपके विरुद्ध श्रीमन्त महाराजा के कान भरे रहे है, आप उनकी सेवा करते रहे तो मै समझता हू कि श्रीमन्त महाराजा को शीघ्र ही इस बात का पता चल जायगा कि इस समय जो उनके आसपास है उनमे कौन अनुचित उद्देश्यो से प्रेरित होकर कार्य कर रहे है और वह समय पाकर उन्हे समाप्त कर देगे। अन्त मे सत्य और धर्म की ही विजय होती है।"

किन्तु इस बार सिरेमल बापना ने त्यागपत्र को स्वीकार कराने के लिए महाराजा से विशेष आग्रह किया। अनेक साथियो और मित्रो ने उनसे आग्रह किया कि वह त्याग-पत्र पर पुनर्विचार कर ले, किन्तु धुन के पक्के सिरेमल बापना अपने सिद्धात पर अडिग रहे और उन्होने महाराजासाहब को पत्र लिखा कि कोई भी स्वाभिमानी ऐसी स्थिति मे कार्य नही कर सकता और केवल पद के मोह से राज्य की सेवा मे रहना उनके स्वभाव के विपरीत है। अन्त मे महाराजासाहब ने बडे खेद के साथ सिरेमल बापना का त्याग-पत्र स्वीकार किया, किन्तु इसके साथ ही महाराजा ने उनकी वफादारी और उनके उत्कृष्ट गुणो से भरपूर सेवाओ के उपलक्ष मे ४०० रु० मासिक की विशेष पेशन प्रदान की।

सैद्धान्तिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण बापनाजी ने इदौर राज्य के गृहमत्री का गौरवपूर्ण पद त्याग दिया था। उस समय वहा के एक नागरिक श्री शिवसेवक तिवारी ने अपने निम्न उद्गार जनता की ओर से प्रकट किये थे

**सिद्धान्त के अनुसार ही रखकर सदा निज कामना,
इन्दौर मे विजयी हुए है श्री सिरेमल बापना।
एक दिशि था मन्त्रि-पद-गौरव, प्रलोभन-सा जहां,
नीति-पथ से फिसलकर चलना जरूरी था वहा।
दूसरी दिशि मन्त्रि-पद निज हाथ से खोना पड़े,
और तत्सम काम हित उद्योग बहु करना पड़े।
ऐसे समय सिद्धान्त का आदर किया, तुम धन्य हो,
मन्त्रि-पद त्यागा, न त्यागा नीति-पथ, तुम धन्य हो।
माता अहिल्या राज्य के सत-पथ-पंथी धन्य हो,**

बीर महि मेवाड़ के वीराग्रणी सुत धन्य हो ।

वह अपने गृहमन्त्रित्व कार्य-काल के थोड़े समय में ही इदौर राज्य में इतने लोकप्रिय हो गये थे कि जब वह इदौर छोड़कर जा रहे थे तो वहा की हिंदू और मुसलमान जनता ने उन्हे बडे सम्मान-पूर्वक विदा किया और अभिनदन-पत्र प्रदान कर बडी भावभीनी विदाई दी । यही नही, मुसलमानो ने तो अपनी मस्जिदों मे खुदा से इस बात की इबादत की कि बापनाजी और कही सफल न हो और जल्दी ही इन्दौर वापस लौट आवे ।

अभिनदन मे जनता की ओर से जो भाव प्रकट किये वे इस प्रकार है :

"इदौर रियासत के अनेक उच्च विभागो मे पन्द्रह वर्ष तक प्रशसनीय कार्य करके जो आज आपने अवकाश प्राप्त किया है, उस वियोग के कारण हम इदौर के नागरिक एवं प्रजाजन हार्दिक खेद प्रगट करते हुए अपनी शुभेच्छाओ को आपकी भावी उन्नति के लिए प्रगट करते है ।

"आपका पंद्रह वर्ष का कार्यकाल व सहवास इदौर की जनता के लिए बडा ही आनंदप्रद रहा है । इस बीच में इंदौर-राज्यप्रणाली के मुख्य-मुख्य और उच्च पदो पर रहकर प्रजाहित के लिए जो चिरस्मरणीय कार्य आपने किये है उनका इंदौर की वर्त्तमान और भावी प्रजा पर अखण्डनीय प्रभाव पडा है और पड़ेगा । उदाहरणार्थ, आपका अनिवार्य शिक्षा-सम्बंधी प्रयत्न इंदौर की उन्नति के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा । दुर्भाग्यवश यद्यपि उसके पूर्ण रूप से सफल होने मे विलंब हुआ, पर तो भी इन्दौर की जनता हमेशा उसे कृतज्ञता से अपने हृदयपट पर अंकित रखेगी ।

'आपने जिस स्थानिक स्वराज्य के वृक्ष का आरोपण कर दिया है, वह पूर्ण रूप से फलने-फूलने पर इंदौर की प्रजा को उत्तर-दायित्व शासन का मधुर फल चखाने मे समर्थ होगा ।

"आपका उच्च चरित्र, नम्र और मिलनसार स्वभाव, आपके उच्चतम बौद्धिक गुण आदि अनेक बाते विद्वानो के लिए आदर्शरूप हो जायगी । आपका निष्पक्ष न्याय, राज्यभक्ति और नि स्वार्थ त्याग

प्रशंसनीय हैं। यद्यपि आपका वियोग इन्दौर के लिए वडा ही कष्ट-प्रद है तो भी इन्दौर की प्रजा यह सोचकर आनद मनाती है कि आप अपनी उज्ज्वल कीर्ति के साथ अपने गुणों का उपयोग इससे भी विस्तीर्ण क्षेत्र मे करेंगे।

"अन्त मे उस सर्वशक्तिमान से यही प्रार्थना है कि आप जैसे सज्जनो का स्मरण हमारे हृदय मे और हमारा स्मरण आपके हृदय में चिरकाल तक बना रहे और वह आपको दिन-प्रतिदिन शारीरिक, मानसिक और साम्पत्तिक सुख प्रदान करे, जिसे देखकर हमारा हृदय प्रफुल्लित हो।'

: ५ :

प्रधानमंत्री तथा मत्रिमण्डल के अध्यक्ष

सिरेमल बापना पद के बजाय मर्यादा और मूल सिद्धातो को अधिक महत्व देते थे। इसीलिए उन्होंने होल्कर रियासत से अपने चौदह वर्ष पुराने सबंध बात-की-बात में समाप्त कर दिये। जैसे ही इन्दौर राज्य से त्यागपत्र देने का समाचार अन्य देशी रियासतों मे फैला, बापनासाहब के पास अनेक रियासतों से निमत्रण आने लगे। पटियाला महाराजा ने उनसे विशेष आग्रह किया और इसलिए उन्होने वहा का गृहमत्री होना स्वीकार कर लिया।

इस समय पटियाला की दशा बहुत अच्छी नही थी। राज्य में लोगों पर अत्यधिक कर लगे हुए थे और महाराज पर बहुत कर्जा था। पटियाला राज्य मे उस समय दूसरे किसी देशी राज्य की अपेक्षा कही अधिक देशी शराब, सिगार और सिगरेट आती थी। उसीके कारण राज्य में प्रारभिक, माध्यमिक और कालेज स्तर की शिक्षा, जो अबतक नि शुल्क थी, उन सभी स्तरो की शिक्षा पर फीस ली जाने लगी थी।

पटियाला राज्य में बापनासाहब ने दलबदियो के दलदल में न फसकर बडी योग्यतापूर्वक कार्य सपादन किया। उनसे पटियाला की प्रजा और महाराजा दोनो ही सतुष्ट रहे। यह उनकी कुशल नीतिज्ञता व शासनपटुता का दृढ प्रमाण है। बापनाजी पटियाला मे ऐसे नाजुक समय मे पहुचे थे जबकि पटियाला व नाभा राज्य के झगड़े की जाच अग्रेज सरकार द्वारा कराई जा रही थी और यह मामला पच निर्णय के लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज मि० जस्टिस स्टुअर्ट को सौपा गया था। बापनाजी को उनकी कानूनी ज्ञान उपलब्धियो और भारतीय विधि-शास्त्र के विद्वान होने की वजह से राज्य परिषद के सदस्य के साथ-साथ ही

इस मामले को परिचालित करने का विशेष कार्य सौपा गया। पच-निर्णय पटियाला के पक्ष मे दिया गया। वस्तुत: श्री बापना इस मामले की तैयारी और उसके परिचालन के लिए प्रशसा के पात्र बने। पटियाला मे किसानो और राज्य के विस्वेदारो के बीच लम्बे अरसे से चले आ रहे झगडे को, जो दिन-प्रतिदिन गभीर होता जा रहा था, निपटाने के लिए भी इन्हे नियुक्त किया गया।

इसी बीच होल्कर नरेश को बापनाजी की अनुपस्थिति रह-रह कर खलने लगी। उनके सद्गुण रह-रहकर उन्हे याद आने लगे। यह तो मानव-स्वभाव ही है कि किसी व्यक्ति के गुण, उसकी अच्छाइया तभी नजर आती है जब वह आखो से ओझल हो जाता है। अत १९२३ मे बापनाजी को लौटकर फिर इदौर आना पडा।

जब बापनाजी ने पटियाला राज्य-सेवा से अपना त्यागपत्र दिया तब वहा के महाराजासाहब ने कुछ महीनो तक उसे स्वीकार नही किया और उन्हे अपना त्यागपत्र वापस लेने के लिए समझाते रहे। अन्त मे बापनाजी के बहुत आग्रह करने पर और महाराजा धौलपुर के, जोकि सब परिस्थिति से अवगत थे, कहने पर उन्होने त्यागपत्र स्वीकार कर बापनाजी को पटियाला छोडने को अनुमति दे दी।

इन्दौर आते ही वह फिर से गृहमत्री बनाये गये और कुछ ही समय बाद वह उप-प्रधान मत्री और मन्त्रिमंडलकी अपील कमेटी के सभापति पद पर नियुक्त किये गए। इन दोनो पदो पर उन्होने सन् १९२३ मे काम करना आरम्भ किया। इस हैसियत मे उन्होने इन्दौर कोर्ट मे अनेक उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत कराये, जिनमे नगर-पालिका अधिनियम (म्युनिसिपल ऐक्ट) भी है। यह अधिनियम इस बात के लिए प्रसिद्ध है कि इसमे प्रथम बार महिलाओ को मताधिकार दिया गया था।

श्रीमत महाराज तिकोजीराव तृतीय ने फरवरी १९२६ मे कुछ अनिवार्य परिस्थितियोवश राज्य से सन्यास ग्रहण किया और उनके यशस्वी पुत्र महाराज यशवतराव गद्दी के उत्तराधिकारी हुए।

महाराजा यशवंतराव को राज्य के पूर्ण अधिकार मई १९३० में प्राप्त हुए। इस बीच नाबालिग शासन कायम हुआ और बापनाजी भारत सरकार द्वारा राज्य के प्रधान मत्री और मत्रिमडल के अध्यक्ष नियुक्त किये गए। यह इनके लिए अद्वितीय सम्मान था और इनकी बुद्धिमानी, लोकप्रियता तथा कुशल-प्रशासक होने का द्योतक था, क्योंकि अबतक देशी राज्यो के नाबालिग शासन-काल मे मत्रिमडल का अध्यक्ष या तो कोई अग्रेज रेजिडेन्ट या कोई राजा-महाराजा ही हुआ करता था। हिन्दुस्तानी मत्रियों मे इस पद के लिए बापनाजी ही सर्वप्रथम व्यक्ति थे।

ये चार वर्ष इन्दौर राज्य के लिए बहुत ही मूल्यवान सिद्ध हुए, क्योंकि इसी काल में उन अनेक सुधारो की नीव रखी गई, जिन्होने इन्दौर राज्य को देश के प्रगतिशील राज्यों की प्रथम पक्ति में खडा कर दिया। इस सदर्भ मे यही बात याद रखने की है कि जब ब्रिटिश भारत मे सुधारवादी नेता जिन बातो के लिए जद्दोजहद कर रहे थे, वे सुधार नाबालिग शासन-काल मे बापनाजी ने इन्दौर राज्य में किये। सच तो यह है कि ब्रिटिश भारत मे अग्रेजी सरकार उन स्वतत्र सवैधानिक सुधारों को लागू करने से दृढतापूर्वक इन्कार कर रही थी, जो बापनाजी ने इन्दौर राज्य मे लागू किये थे। १९२६ की वसत ऋतु मे केन्द्रीय धारा-सभा में प० मोतीलाल नेहरू ने ब्रिटिश भारत की धारा सभा की आलोचना करते हुए कहा था कि 'इस पाखण्डपूर्ण संस्था का हमारे लिए कोई उपयोग नही रहा है और राष्ट्र की प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए कम-से-कम जो कुछ हम कर रहे है वह यह है कि हम उसमे से निकल जायं और देश का काम करने के लिए देश में वापस चले जाय।' इतना कहकर तालियो की गडगडाहट के बीच वह और उनके स्वराज्यवादी पार्टी के सदस्य उठे और सामूहिक रूप से मदन से बाहर चले आये थे। ऐसे समय मे इदौर राज्य मे धारा-सभा की न केवल स्थापना हुई थी, वरन् उसका विस्तार भी हो गया था।

श्री सिरेमल बापना को किन परिस्थितियो मे होल्कर राज्य

का नाबालिग शासन सभालना पडा था, इसका अनुमान आज की हिन्दुस्तान की आजाद पीढी आसानी से नही लगा सकती। देश मे छ सौ से अधिक रियासते थी, अग्रेजो ने इन्हे ए, बी और सी श्रेणियो मे बाट रखा था। इसके उपरात भी जागीरे थी, रावले थे और ताल्लुकेदार और जमीदार थे। ए श्रेणी के राज्यो मे होल्कर राज्य था।

१९२०-३० का समय देशके इतिहास मे जद्दो-जहद और सघर्ष का समय था। जनता मे जागृति आती जा रही थी, स्वराज्य और उत्तरदायी शासन के लिए आन्दोलन चलाया जा रहा था और देशी राज्य भी इस आन्दोलन से बचे नही थे। देशी राज्यो की मुसीबते हो रही थी। इन्हे अग्रेजो की मर्जी भी रखनी पडती थी। चूकि अग्रेजो को सन् १८५७ को भारतीय राज्य-क्राति का बडा ही कटु अनुभव था, इसलिए वे देशी राजाओ को हमेशा शक की निगाह से देखा करते थे। दिल्ली मे वायसराय, प्रदेशो मे गवर्नर और राज्यो मे गवर्नर जनरल के एजेट रहा करते थे और ये लोग रेसीडेट यानी स्थान विशेष मे मुकाम रखनेवाले बनकर देशी राज्यो को अपने इशारो पर चलाया करते थे।

एक तरफ ए० जी० जी० (गवर्नर जनरल के एजेन्ट) की खुफिया नजर, दूसरी तरफ जनता के बदलते तेवर, उमडती हुई आकाक्षाए, जागृति की लहर और सार्वजनिक आन्दोलन की दबी-छुपी आग थी। जनता की आकाक्षाए पूरी करना और अग्रेजो को यह अहसास न हो कि अमुक राज्य मे जनता प्रबल होती जा रही है, इसका निर्वाह करना कठिन काम था। प्रदेशो मे विधान सभाए बन गई थी। उनकी राय से वहुत-कुछ काम चलते थे, स्वराज्य के आन्दोलन ने अग्रेजो को जनता को सुख-सुविधा तथा अधिकार देने को मजवूर कर दिया था। शिक्षा, स्वायत्त शासन और चिकित्सा के काम वढाने पड रहे थे। इनकी देखादेखी देशी राज्यो को भी ये कार्य करने पडते थे।

जिस समय वापनाजी ने नावालिग शासन-सूत्र अपने हाथ मे लिया उस समय भारत के वातावरण मे प्रबल झझावात आये हुए

थे। अंग्रेजी शासन से ऊबकर जनता सभी राज्यो मे आन्दोलन कर रही थी। देशी राज्य भी इससे अछूते नही थे। अखिल भारतीय कांग्रेस इन आन्दोलनो का नेतृत्व कर रही थी और देशी रियासतो में भी यह आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा था। इन्दौर राज्य मे १९२० मे नागपुर-काग्रेस के जमाने से राजनैतिक जागृति का जोर आरम्भ हो गया था और वहापर इन्दौर राज्य प्रजा परिषद की स्थापना हो चुकी थी। इसके कारण राष्ट्रीयता उठ खडी हुई थी। चारो ओर जागृति फैल रही थी। यहा की जनता भी पुरानी परपराओ को तोडकर आगे बढ रही थी। अपने गुजरे हुए जमाने की खोज उसने नये सिरे से शुरू की थी। राष्ट्रीय परपराओं मे वापस लौटने की बात यहा के मजदूर वर्ग में, मेहनतकशों में आमतौर पर दिखाई पडने लगी थी। इस समय जागृति की लहर उच्चतम सीमा पर थी। प्रजातत्र शासन, नागरिक स्वाधीनता, उत्तरदायी सरकार की स्थापना, व्यवस्थापिका सभाओ में प्रतिनिधि का चुना जाना आदि मागे प्रत्येक रियासत की प्रजा के मुह पर थी। इस बात की लगातार कोशिश हो रही थी कि भारत की ६६२ रियासतो को भी ब्रिटिश भारत के प्रान्तों की वराबरी के दर्जे पर लाया जाय। इस इस समय रियासतो की जनता आदोलन चलाने के लिए काग्रेस की सहायता चाहती थी। रियासतो मे प्रजा-मडल कायम हो गये थे और उनका सबध अखिल भारतीय सगठन से कायम किया गया था। रियासती प्रजा अपने यहा वही सुधार चाहती थी, जो ब्रिटिश प्रातों मे हो रहे थे।

अनेक रियासतो मे दमन का चक्र अभूतपूर्व तरीके से चल रहा था। प्रतिक्रियावादी सभी तरीके काम मे लाये जा रहे थे, जिसके परिणामस्वरूप जनता मे हिसा की भावना उभर रही थी। राजपूताना और मध्य भारत की अनेक रियासतो मे सामाजिक गतिविधियो पर भी रोक लगाई थी। अकाल-पीडितो के सेवा कार्य पर भी आपत्ति की जाती थी। उत्तर भारत मे पजाव की रियासतो मे न जाने कितने लोगों को जेल मे ठूस दिया गया था और इन रियासतों मे किसान-आदोलन भी तेजी से चल रहा था। इन

आंदोलनो के साथ भारत की स्वाधीनता का व्यापक प्रश्न जुडा हुआ था, क्योकि सारी जनता समझती थी कि शासन से उसकी मुक्ति तभी हो सकती है, जब सारा देश आजाद हो।

जनता की बढती हुई शक्ति को देखकर भी रियासतो ने अपने शासन मे किसी तरह की प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली शुरू नही की थी। अबतक हालत यह थी कि वहा के नरेश अपनी प्रजा के लिए साक्षात् भगवान थे। प्रजा अपनी रोजी-रोटी की कीमत पर ही उनके खिलाफ आवाज उठाने की जुर्रत कर सकती थी। उन्हे अपनी प्रजा के रहन-सहन के बारे मे फैसला करने का हर अधिकार प्राप्त था और अपने जीवन के बारे मे वे पूरी तरह निरकुश थे। उनकी प्रजा चाहे गरीबी मे रहे या आराम से, वे मदिरा के नशे मे चूर हो, ऐयाश हो या होशहवाश वाले हो, वे न्यायप्रिय हो अथवा अन्यायी, यह सब कुछ उनकी मर्जी पर निर्भर था। यह ठीक है कि उनमे कुछ ऐसे शासक भी थे, जिन्होने ऐसे योग्य और अनुभवी प्रशासको को अपना मत्री नियुक्त किया था, जो अनुशासन को ध्यान मे रखते थे।

अगर अग्रेज चाहते तो इन रियासतो के साथ सत्ता का आधार वैधानिक हो सकता था, राजाओ के व्यक्तिगत खर्चे सीमित हो सकते थे और ऐसी हालत मे हिन्दुस्तानी रजवाडो का इतिहास ही बदल सकता था। लेकिन रजवाडे नही चाहते थे कि अग्रेजी शासन किसी तरह का दबाव डाले। वे तो चाहते थे कि उनके सबधो का आधार निश्चित करनेवाली सधियो से हो, क्योकि यह उनके प्रतिकूल पडना था। इसके लिए ये बिल्कुल स्वतत्र थे और इस समय हिन्दुस्तान के प्रति इनकी कोई वफादारी नही थी।

श्री बापना ने प्रधान मत्री का पद उस समय सभाला जिस समय १९२६ मे लार्ड अर्विन भारत के वायसराय थे और उस समय भारत का राजनैतिक वातावरण अशात था। ८ नवम्बर, १९२७ ई० को ब्रिटिश सरकार ने साइमन कमीशन की इसलिए नियुक्ति की थी कि वह भारत की शासन-व्यवस्था के ढाचे मे भावी सुधारो तथा परिवर्तनो के सबध मे जाच करे। इस कमीशन मे एक भी भारतीय

सदस्य नही था। भारत के सारे राजनैतिक दलों ने इसे घोषणा पर रोष प्रकट किया और इसे बुरा बतलाया। १९२७ मे कांग्रेस ने मद्रास मे साइमन-कमीशन के बारे मे प्रस्ताव पास किया कि "ब्रिटिश सरकार ने भारत के स्वभाग्य-निर्माण की पूर्ण उपेक्षा करके एक शाही कमीशन नियुक्त किया है, उसपर कांग्रेस यह निश्चय करती है कि भारत के लिए आत्मसम्मानपूर्ण एक मात्र मार्ग यही है कि वह साइमन कमीशन का हर हालत मे और हर तरह से बहिष्कार करे।" इसी कांग्रेस मे पहली बार यह घोषित किया गया कि भारतीय जनता का लक्ष्य पूर्ण राष्ट्रीय स्वाधीनता है। सन् १९२८ मे साइमन कमीशन ने भारत में पदार्पण किया, किन्तु सर्वसाधारण ने इसका बहिष्कार किया। जहा-जहा यह गया वहा इसका विरोध बडी प्रबलता से किया गया। 'साइमन लौट जाओ' का नारा भारत-भर मे गूज उठा। पुलिस ने जगह-जगह पर प्रदर्शनकारियों पर लाठियां चलाई। लाहौर मे लाला लाजपतराय पर प्रहार किये गए, जिससे कुछ ही महीनो मे उनकी मृत्यु हो गई। उत्तर प्रदेश मे जवाहरलाल नेहरू पर डडे बरसाये गए। मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में 'नेहरू-रिपोर्ट' तैयार की गई और गाधीजी ने ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी कि यदि एक वर्ष मे उसने इस रिपोर्ट के अनुसार भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य नही दिया तो कांग्रेस पूर्ण स्वाधीनता की मांग पर चली जायगी। १९२९ मे लाहौर मे कांग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा कर दी और २६ जनवरी को स्वतंत्रता-दिवस मनाया जाने लगा। गाधीजी ने पूर्ण आजादी पाने के लिए महान् आन्दोलन शुरू किया। उन्होने १२ मार्च, १९३० को स्वय दाडी-यात्रा की और चौबीस दिन मे दो सौ मील दूर की पैदल-यात्रा समाप्त करके समुद्र-तट से नमक बीनकर नमक कानून तोड़ा। दाडी-कूच ने सारे देश मे सविनय अवज्ञा आदोलन का शख फूक दिया और भारत के कोने-कोने में नमक कानून तोडा जाने लगा। शराब की दुकानो पर धरने दिये गए। विदेशी वस्त्र जलाये गए, शातिपूर्ण जनता पर लाठिया बरसाई गई और गोलियां चली, अखबारो के मुह बद कर दिये गए, जेले तेजी से भरने लगी। एक लाख व्यक्ति जेलो मे गये।

उस समय भारतीय नारी भी जाग उठी, लाखो नारियो ने अपने घूघट खोल दिये और अपने घरो की चहारदीवारी को छोडकर पुरुषो-से-कधे से कधा मिलाकर लडने के लिए बाहर निकल पडी। ऐसी परिस्थिति मे बापनाजी को जो सफलता प्राप्त हुई, वह उनके प्रशासकीय गुणो व व्यक्तिगत विशेषता का ही फल था।

श्री बापना जानते थे कि अपनी मन्त्रि-परिषद को किस प्रकार अपने विचारो के अनुकूल रखा जा सकता है, इसलिए नही कि उनके सहयोगी कमजोर थे या उनका विरोध करना नही चाहते थे, अपितु इसलिए कि वह मामलो का तथ्यो के आधार पर अध्ययन करते थे और ऐसे प्रस्ताव ही प्रस्तुत करते थे, जो उनके राज्य और युवा महाराज के हित मे हो।

वह सदैव सभी प्रकरणो का सागोपाग अध्ययन करते थे और उसपर ही उनके वास्तविक निर्णय आधारित होते थे और परिणामत. संपूर्ण मन्त्रि-परिषद् की सहमति उन्हे प्राप्त हो जाती थी। वह अपने सभी अधीनस्थो से अधिकतम काम ले सकते थे और उन्हे अपने सहयोगियो का विश्वास पूर्ण रूप से प्राप्त होता था।

श्री बापना विभागो के विभिन्न अध्यक्षो से, जिनकी मनोवृत्तियां और स्वभाव भिन्न-भिन्न होते थे, काम लेना जानते थे। वह इदौर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश हो या बदोबस्त अधिकारी हो, चाहे वह सेवानिवृत्त प्रेसीडेन्सी टाउन का सेनीटेशन कमिश्नर हो या सेवा-निवृत्त वरिष्ठ श्रेणी का लेख-परीक्षक हो, श्री बापना जानते थे कि उनकी सेवा का सर्वोत्तम उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है। मुख्य इन्जीनियर के पद पर कार्यरत रायल सर्विस के पी० डब्ल्यू०डी० अफसर अथवा अतर्राष्ट्रीय ख्याति के उद्योग तथा वाणिज्य विभाग के सदस्य को श्री बापना तथा उनके सहयोगियो को सर्वोत्तम रूप से सेवा देनी ही पडती थी। चाहे वह अग्रेज पुलिस महानिरीक्षक हो अथवा युवा और उत्साही वनसरक्षक हो, श्री बापना उनका पूरा उपयोग कर सकते थे।

राज्य के मामलो मे उनका व्यापक अनुभव राज्य प्रशासन के कार्य मे उनके लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। उन्होने प्रत्येक

विभाग का विस्तृत अध्ययन किया था और जीवन के हर क्षेत्र मे उनकी गहरी पैठ थी । चाहे मत्रि-परिषद् को अतरग रूप से जानने की बात हो या सहयोगी को दिलासा देने का कार्य या पथ-भ्रष्ट युवकों को डरा-धमकाकर रास्ते पर लाने का काम, उनकी उत्कृष्ट बौद्धिक क्षमता सदैव सहायक होती थी ।

श्री बापना मित्रो से व्यवहार करना और शत्रु पर काबू करना अच्छी तरह जानते थे। प्रातीय तथा भारतीय स्तर पर ख्याति प्राप्त योग्य व्यक्तियो, जिनमे कुछ उच्च अग्रेजी शिक्षा प्राप्त तथा बौद्धिक क्षमतावाले व्यक्ति भी होते थे, अनेक विषयो के विशेषज्ञो, बैंकरों, व्यापारियो, वकीलो, उद्योग-सचालको तथा अनुभवी प्रशिक्षित लोक-प्रशासको से उन्हे काम पड़ता ही रहता था। उन्हे उत्तरदायी तथा अनुत्तरदायी सभी प्रकार के आलोचको, अच्छे और बुरे मित्रों, वास्तविक और काल्पनिक दुश्मनो से सामना करना पड़ता था और वे सबसे इस प्रकार व्यवहार करते थे कि हरेक को दण्ड या पुरस्कार, जिसका वह पात्र हो, मिल जाय और लोक-मानस पर कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया न होने पाये ।

राज्य के उच्च अधिकारियो के उलझन-भरे कई प्रकरण वह सहज ही समझौते द्वारा निपटा देते थे । वह अक्सर कहा करते थे कि सरकार के दैनिक कार्यो मे झूठे आत्म-सम्मान और कल्पित प्रतिष्ठा द्वारा रुकावट नही डालनी चाहिए । इसका नतीजा यह होता था कि विभागीय अधिकारी मिलकर प्रकरणों का सही हल निकाल लिया करते थे और उनमे कोई कटुता नही पैदा होती थी। कठिनाइयो और सूक्ष्म जटिलताओ से सबधित प्रश्नो के सभी पहलू उनके सामने स्पष्ट हो उठते थे । उनमे सबसे बडी खूबी यह थी कि वह हर परिस्थिति मे अविचलित रहते थे और उनका हृदय बड़ा विशाल था ।

श्री ग्लेडस्टन हमेशा कहा करते थे कि किसी भी राजनीतिज्ञ मे अहकार होने का कोई कारण न होना चाहिए । इन्दौर के योग्य प्रधान मत्री बापना निश्चय ही ऐसे व्यक्ति थे, जिनमे अहमन्यता रंचमात्र भी नही थी और यह कमजोर न होने के कारण ही अपने

वरिष्ठो का अनुग्रह, अपने साथियो का विश्वास, अपने अधीनस्थो से सम्मान और उन व्यक्तियो से, जिनसे काम पडता था और जिन के सुख-दु.ख मे वे भागीदार होते थे, प्रशसा के पात्र हो सके। लार्ड अर्विन ने कहा था कि "किसी भी सफल प्रशासक मे सबसे बडा गुण यह होना चाहिए कि वह बुद्धिमत्तापूर्वक उन व्यक्तियो का चुनाव कर सके, जिन्हे उत्तरदायित्व सौपा जाना हो और उसके अदर क्षमता होनी चाहिए कि वह उन व्यक्तियो पर विश्वास कर सके और काम ले सके।" श्री बापना मे ये गुण बहुत अधिक मात्रा मे पाये जाते थे।

श्री बापना से मिलनेवाला जो व्यक्ति उनकी नीतिमत्ता और आदर्शो तथा उन्हे कार्यरूप मे परिणत करने के उनके अपने तरीके का परिचय प्राप्त करता था, होल्कर राज्य का सचालन जिस नीति के अनुसार चलाया जा रहा था, उससे अवगत होता तो एकदम वह महसूस करने के लिए बाध्य हो जाता था कि भारत मे राजनीतिज्ञो की कमी नही है। श्री बापना से परिचय प्राप्त करना एक आनद की बात थी, उनसे घनिष्ट रूप से परिचित होना एक विशेष लाभदायक प्रसंग था तथा उनके आदर्शो और उनके कार्यान्वयन के तरीको से परिचित होना देशी राज्यो की राजनीति के अध्येता के लिए एक प्रकार का प्रशिक्षण था।

तत्कालीन देशी राज्यो मे उस समय इन्दौर राज्य को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त हो गया था। भारत के प्राय समस्त प्रख्यात वकील इन्दौर मत्रिमडल के सामने आते रहते थे, जिनमे प० मोतीलाल नेहरू, बैरिस्टर मुल्ला, सर सीतलवाड, श्री भूलाभाई देसाई और श्री जिन्ना आदि मुख्य थे। सभीने इन्दौर राज्य के शासन-प्रबध की ही नही, वरन् न्याय-विभाग की भी मुक्त कठ से प्रशसा की। बापनाजी एक उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ व प्रशासक ही नही थे, वरन् उनका कानूनी ज्ञान भी अगाध था। एक बार की बात है, मत्रिमडल के सामने एक ऐसा मुकद्दमा चल रहा था, जिसमे सफाई पक्ष के वकील होकर प० मोतीलाल नेहरू स्वय उपस्थित हुए थे। मुकद्दमे के दौरान बापनाजी की जो कानूनी प्रतिभा और ज्ञान

उनकी दृष्टि में आया, उसकी उन्होने कई बार प्रशंसा की थी। बैरिस्टर डी एम मुल्ला तो श्री बापनाजी के व्यापक ज्ञान और तथ्यो की पकड़ से इतने प्रभावित थे कि जब वह सन् १६३० मे प्रीवीकौंसिलर के पद पर नियुक्त हुए तब उन्होने लिखा था कि बापनाजी किसी भी हाईकोर्ट की शोभा बढाने के योग्य है।

श्री बापना ने इन चार वर्षो में बहुत ही परिश्रम तथा निष्ठा से कार्य किया। थकावट और चिन्ता तो जैसे उनसे कोसो दूर रहती थी। वह सदैव प्रसन्न रहते थे, उनका स्वभाव मृदु और रुख सहानुभूतिपूर्ण रहता था। उनकी बौद्धिक प्रतिभा उद्बोधक और प्रोत्साहन प्रदान करनेवाली होती थी, उनकी आखो मे चमक और सजीवता थी, जिनसे निष्ठा और सद्भाव फूटा पड़ता था। यद्यपि उनका व्यक्तित्व गरिमापूर्ण था तथापि उनमें अहकार तनिक भी नही था। वह शीलवान ही नही, अपितु शालीनता की भी प्रतिमूर्ति थे।

प्रशासकीय कार्य मे वह सदैव निर्बन्ध व निरपेक्ष रहते थे। ऐसे कार्यो मे इन्हे कभी किसी प्रकार का व्यक्तिगत रागद्वेष, मोह या लोभ दिखलाने का एक भी उदाहरण ढूढने पर मुश्किल से प्राप्त होगा। उनका व्यक्तित्व प्रशासकीय सबधो से कही अधिक ऊंचा था और इनकी सफलता का यही एक सबसे बड़ा कारण था। वह प्रत्येक कार्य राजा, प्रशासन तथा प्रजा तीनों की भलाई को ध्यान मे रखकर ही करते थे और अपने व्यक्तित्व को "दृष्टम पृथक् स्थित:" की श्रेणी मे डालते थे।

बापनासाहब के महान् व्यक्तित्व का इसी बात से पता चलता है कि वह पाच वर्ष तक इन्दौर राज्य के कर्ताधर्ता रहे। वह चौदह वर्ष तक प्रधान मत्री रहे, पर उन्होने इस काल मे लेशमात्र भी व्यक्तिगत लाभ प्राप्त नही किया। उनके स्थान पर कोई दूसरा होता तो न जाने कितनी बड़ी सम्पत्ति एकत्र कर लेता। वह यह सब इसीलिए कर पाये कि दृढ निश्चय और आत्मबल उनके चरित्र की विशिष्टता थी। नाबालिग शासन के प्रधान मत्री और अध्यक्ष के नाते जो अधिकार उनको मिले थे, वे देशी रियासतों मे विरले प्रधानमंत्रियो को ही मिले होगे, लेकिन उन्होने ऐसी विशेष

सत्ता को पाकर भी कभी अपने अधिकारो का दुरुपयोग नही किया। इतिहास मे ऐसे न जाने कितनें उदाहरण है जब इनसे भी कम अधिकार पाकर अन्य लोगो ने अपनी स्वार्थपरता का ही प्रदर्शन किया, लेकिन बापनाजी इन अधिकारो को पाकर और भी उदार, दानी और अनासक्त हो गये। सच बात तो यह है कि उन्हे अपनी इस विशिष्ट हस्ती का कभी भान ही नही हुआ, क्योकि वह तो हर समय प्रजा-हित मे ही दत्तचित्त रहते थे। सभी जानते है कि देशी रियासतो मे जब कभी नाबालिग शासन हुए तो वहापर अग्रेजो का प्रभाव बढ जाता था। रियासतो मे अदरूनी षडयत्र होने लगते थे। विलासिता और अत्याचार अपनी जडे जमा लेते थे। किन्तु सिरेमल बापना का नाबालिग शासन इन सबसे अछूता था। उनकी प्रशासनिक क्षमता का लोहा अंग्रेजो ने भी माना था और वे कुचक्रो और षड्यत्रो के बीच उसी प्रकार निर्लिप्त रहते थे जैसे कीचड मे कमल। वह एक ऐसे राजनीतिज्ञ थे, जिन्होने राज्य के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया और उनकी उत्कृष्ट सेवाओ का कीर्ति-लेख उन लोगो के कृतज्ञ मनो पर सदा अकित रहेगा, जिनके लाभ और हित के लिए उन्होनें अपनी सुख-सुविधाओ का बलिदान कर दिया और एक ऐसे प्रशासन का सूत्रपात किया, जो अपनी कार्य-कुशलता और कार्य-प्रणाली की दृष्टि से अद्वितीय था।

बापनाजी जनता की दिक्कतो और शिकायतो को बराबर सुनते थे और तुरत उसका हल निकाल लेते थे। उन्होने प्रतिदिन लोगो से मिलने का समय निश्चित कर रखा था। उस समय कोई भी व्यक्ति उनसे मिल सकता था और अपने दु ख-दर्द उन्हे सुना सकता था। जनता से उनका सरलता से बिना रुकावट के मिलने और जनता के सब वर्गो के लोगो के प्रतिनिधियो से उनका बहुत सपर्क होने के कारण, उन्हें उनकी तकलीफो को जानने मे कोई कठिनाई नही होती थी।

उनकी शासन-निपुणता की प्रशसा तत्कालीन वायसराय, प्रत्येक ए० जी० जी० और स्वय महाराजासाहब ने की थी। महामना मालवीयजी इन्हे इन्दौर का रत्न समझते थे। वह उनको सत

प्रशासक कहते थे ।

नाबालिग शासन-काल मे एक बार भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड अर्विन इन्दौर पधारे थे। तब कुछ दलबन्द लोग बापनाजी के विरुद्ध कुछ शिकायते वायसराय तक पहुचाना चाहते थे। यदि बापनाजी चाहते तो इन लोगो की पहुच वायसराय तक न हो पाती, लेकिन उनका हृदय विशाल था और उन्हे किसी बात का डर नही था, क्योकि उन्होने जो कुछ किया था, वह सदैव राज्य के हित की दृष्टि से किया था। उन्होने इन लोगो की मुलाकात मे कोई रुकावट नही डाली, पर वायसराय जब इन्दौर से लौटने लगे तो उन्होने बापनाजी से नाबालिग शासन के बारे मे कहा था कि इन्दौर का तत्कालीन शासन जितना अच्छा जन-हित व राज-हित मे चलाया जा रहा है उससे अच्छा हो नही सकता ।

नाबालिग शासन-काल फरवरी, १९२६ से लेकर मई, १९३० तक अर्थात् चार वर्ष तक रहा। इसके तीसरे वर्ष मार्च, १९२९ मे सर रेजीनेल्ड ग्लेन्सी, दि गवर्नर जनरल के एजेन्ट, सेंट्रल इडिया ने होल्कर राज्य के प्रशासन का उल्लेख निम्नलिखित शब्दो मे किया है, "तीन विभिन्न प्रकार के बड़े राज्यो अर्थात् मुसलमान, राजपूत और मराठा राज्य मे, जहा मेरी क्रमानुसार नियुक्ति हुई, प्रशासन-तत्र के एक अग के रूप मे कार्य करने का मुझे बड़ा विचित्र अनुभव है। इन तीनों की तुलना करना तो अनुचित है और इस प्रकार के अविवेक पूर्ण कार्य में मै नही पड़ना चाहूगा, लेकिन मै यह अवश्य कहूगा कि आपके यहा इदौर मे बड़ा कुशल प्रशासन-तत्र है और मेरे देखने मे जितनी रियासतें आई है, उनमे यह बेजोड़ है। आपके यहा ऐसा प्रधान मत्री और मत्रि-परिषद् है, जो राज्य की भलाई मे रत है। मैं होल्कर प्रशासन को भारतीय रियासतो के बीच अत्यत उच्च स्थान देता हू या उच्च श्रेणी मे रखता हू।"

पुन. राज्यारोहण-समारोह के अवसर पर अर्थात् नाबालिग शासनकाल की समाप्ति पर सेंट्रल इडिया के गवर्नर जनरल के एजेण्ट ने अपने भाषण मे कहा, "मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि इस अवधि मे राज्य

ने तात्विक रूप से बड़ी ही प्रगति की है और इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि श्रीमत की प्रजा सतुष्ट और सपन्न है। इसका श्रेय रायबहादुर बापना की प्रशासनिक कुशलता और निष्काम सेवा-भावना को है, जो इस सपूर्ण अवधि तक प्रधानमत्री रहे और मैं उन्हे तथा मत्रि-परिषद के अन्य सदस्यो को, जिन्होने निष्ठापूर्वक सहयोग प्रदान किया, हार्दिक बधाई देता हू। इदौर की आज जो स्थिति है, उसका श्रेय इन लोगो को है।"

राज्यारोहण दरबार के अवसर पर श्रीमत महाराज ने भी अपने भाषण मे बापनासाहब की सेवाओ की सराहना करते हुए कहा था, "यह देखकर मुझे बडा आनद और सतोष प्राप्त होता है कि मेरी अवयस्कता के दौरान राज्य का प्रशासन सफलतापूर्वक चलाया गया और बहुत अधिक विभागो, विशेष रूप से लोक कल्याणकारी विभागो, मे सुधार किये गए। इसके लिए मैं प्रधान मत्री रायबहादुर सिरेमल बापना तथा मत्रि-परिषद् के अन्य सदस्यो को विशेष रूप से धन्यवाद देता हू। साथ ही उन विभागाध्यक्षो को भी धन्यवाद देता हूं, जिन्होने उनके साथ निष्ठापूर्वक सहयोग किया।"

इदौर राज्य के पुलिस महानिरीक्षक (१९२९ से १९३२ तथा १९३७-४१) श्री डो० वी० वाटसन ने उनके सेवानिवृत्त होने के कई वर्ष बाद लिखा था, "मुझे प्रधानमत्री सर एस० एम० बापना के उत्कृष्ट गुणो को महसूस करने तथा उनकी प्रशसा करने के अनेक अवसर प्राप्त हुए। हमेशा ही ऐसा नही होता कि अधिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति व्यावहारिक राजनीति तथा राज्य-प्रशासन मे निर्णय लेने की योग्यता दोनो मे ही चमक उठे, किन्तु सर सिरेमल बापना ऐसे गिने-चुने व्यक्तियो मे से थे, जिन्हे दोनो क्षेत्रो मे अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई। उनके साथ काम करना एक आनददायक बात थी और उनके विवेक तथा मित्रतापूर्ण सहयोग के लिए मैं सदैव आभारी रहूगा। सर सिरेमल बडे शिष्ट और विवेकशील थे और मैं व्यक्तिगत रूप से उनसे बहुत प्रभावित था। हम दोनो एक दूसरे पर पूरा भरोसा करते थे। यही कारण था कि मैं अत्यत अल्प समय मे राज्य की पुलिस का पूरी तरह से पुनर्सगठन कर सका, जबकि मुझे बाद मे

सेंट्रल प्रोविन्सस तथा बरार मे कुछ थोड़ा-सा ही कार्य करने मे काफी समय लग गया।"

इदौर के महाराजा श्री यशवतराव होल्कर द्वितीय के राज्याधिकार के अवसर पर जब नाबालिग शासन समाप्त हुआ तो कई अग्रेजी अखबारो ने नाबालिग शासन की भूरि-भूरि प्रशसा की थी। 'लीडर' ने अपने दिनाक ६ मई, सन् १६३० के अक मे लिखा था—"मि० बापना इन्दौर राज्य के परीक्षित और विश्वासपात्र कर्मचारी, उच्च शिक्षा प्राप्त किये हुए बड़े योग्य और शासन-प्रबध मे कुशल पुरुष है। उच्च पद के गरिमा भाव को प्रजा-वर्ग के सामने व्यक्त किये बिना राज्य-तत्र चलाने की रीति को वह भली भाति जानते है। वह राज्य और प्रजा के सच्चे हितैषी है और सदा उनकी उन्नति और कल्याण मे लगे रहते है। गत चार वर्ष मे महाराजा के शैशवकालीन राज्य मे अपगे सुयोग्य और स्वामिभक्त सहकारियो की सहायता से मिस्टर बापना राज्य के कई लाभदायक विभागो मे सफलतापूर्वक बडी उन्नति करके अपने नवीन स्वामी के सम्मुख शुद्ध अन्त.करण के साथ किये हुए अपने कारोबार का शुद्ध लेखा रखने मे समर्थ हुए है। आज हम मि० बापना और उनके सहकारी कर्मचारियो राज्य-प्रबध का विवरण देते है और हमे भरोसा है कि उसे पढकर सामान्यत सबको यह सतोष हो जायगा कि गत चार साल के समय मे मि० बापना जैसे सुयोग्य व्यक्ति का प्रधान मत्री होना इदौर राज्य का सौभाग्य है।"

'पायोनियर' ने १८ मई, १६३० के अक मे लिखा—"ऐसी सभी प्रकार की उदार नीति का, जिससे राज्य और प्रजा की इन चार वर्षो मे अच्छी वृद्धि हुई है, सारा श्रेय विशेषकर रायबहादुर एस० एम० बापना की अध्यक्षता मे होनेवाले राज्य-प्रबध को है। इन्दौर राज्य के प्रबध का ऐसे प्रधान मत्री के हाथ मे होना राज्य के लिए पूर्ण सौभाग्य की बात है।

'टाइम्स आफ इडिया' ने १२ मई, १६३० के अक मे लिखा था, "आशा है कि श्री बापना ने महाराजा की शैशव अवस्था मे जिस सूझ-बूझ, कुशलता और सूक्ष्म विचारो के द्वारा क्रान्तिकारी तत्वो का

समाधान कर आलोडित जल-तरगो पर राज्यरूपी नौका को सफलतापूर्वक चलाया है, उसी प्रकार आगे भी वैसी ही सफलता प्राप्त करेंगे।"

इससे आगे चलकर कहा गया था, "उन्होने (बापनाजी ने) राज्य-प्रबन्ध-सबधी अपनी महान प्रतिभा का परिचय प्रधान मत्री के पद पर नियुक्त होकर दिया और मत्रि-मडल के अध्यक्ष की हैसियत से जो-जो काम उन्होने किये, उनसे होल्कर दरबार की प्रजा मे सुख-शान्ति का आगमन हुआ।"

: ६ :

नाबालिग शासन की महत्वपूर्ण उपलब्धियां

श्री बापना मे राजनीति, प्रशासनिक अनुभव, तत्परता, शात-चित्तता, स्वतत्रता, निष्ठा, उदारता, सतत दानशीलता और मानवोचित गुणो का अद्भुत समन्वय था। अपनी इन विशेषताओ के कारण वह लोगो के इतने स्नेह-पात्र हो गये और देशी राज्यों के प्रधानमत्रियों मे अत्यन्त सफल लोकप्रिय प्रधानमत्री हो सके।

जिस समय बापनाजी ने नाबालिग प्रशासन का कार्यभार सभाला उस समय उन्हे राज्य के लगभग सभी विभागो मे लम्बे समय से चले आ रही दुरभिसन्धिया और दुरव्यवस्था ही विरासत में मिली थी। यह काम बहुत बडा था और इस अव्यवस्थित स्थिति को सुधारने मे किसी निर्भीक और महान् व्यक्ति के प्रयास भी सफल न होने की सम्भावना अधिक थी। इस प्रकार बापनाजी के सामने नाबालिग शासन के रूप में एक भारी चुनौती आ खडी हुई। नाबालिग शासन को सबसे बडा काम यह करना था कि भूतपूर्व शासन के समय की जिन दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओ को लेकर जनता मे असन्तोष और विक्षोभ था उसको दूर करके आवश्यक सुधारो द्वारा जनता को शात करना और फिर से राज्य सरकार के प्रति जनता में विश्वास पैदा करना। इसके अतिरिक्त नाबालिग शासन को राज्य के सभी विभागो को अधिक दक्ष और सक्षम बनाने का काम भी करना था। इस शासन को ऐसे समाज-विरोधी तत्वो का उन्मूलन भी करना था, जिन्होने भूतपूर्व शासन को दूषित कर रखा था और राज्य के बौद्धिक स्तर को सकटापन्न स्थिति में डाल दिया था। नाबालिग शासन को अच्छे शासन का एक ढाचा ऐसे राज्य मे खडा करना था, जिसका खजाना खाली था। फिर भी बापनाजी निराश नही हुए और उन्होने होल्कर राज्य के सम्बन्ध मे अपने

वर्षों के सचित अनुभव के आधार पर कार्य आरम्भ कर दिया। अपनी चतुराई और साहस के कारण वह धीरे-धीरे आमूल-चूल परिवर्तन करने लगे। प्रत्येक विभाग में सुधार किया गया। रचनात्मक कार्यों से सम्बन्धित विभागो पर विशेष बल दिया गया कुछ नये विभाग खोले गये और नाबालिग प्रशासन-काल मे कुछ ऐसे सुधार भी किये जिनकी कल्पना आज हमारी राष्ट्रीय योजनाओ के अन्तर्गत की जा रही है।

चार वर्ष के कैबिनेट शासन की प्रकाशित रिपोर्ट से पता चलता है कि श्री बापना ने कृषि, न्याय, विधि, ग्राम-पंचायत, सहसहकारी सस्थाएं, चिकित्सा, शिक्षा मालगुजारी, आबकारी. चुगी, पुलिस फौज आदि अनेक विभागो मे आमूल परिवर्तन कर उन्हे अधिक सक्षम और जन-कल्याणकारी बनाने के लिए उनका पुनर्गठन किया।

बापनासाहब के शासनकाल मे इंदौर राज्य की विदेश नीति का आधार यह था कि वह महाराजा और ब्रिटिश सरकार के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखे और पड़ोसी देशी राज्यो और ब्रिटिश प्रांतों के साथ भी उनका व्यवहार सौहार्दपूर्ण रहे। इस नीति को कार्यान्वित करने मे श्री सिरेमल बापना ने अनेक ऐसे महत्वपूर्ण सुधार किये, जिनके कारण पडोसी राज्यो और ब्रिटिश भारत के प्रांतो के साथ इदौर राज्य के ऐसे परस्पर विनिमय के करार होने लगे जिनसे एक-दूसरे का सहयोग और सहायता मिलती रहे। इन करारो के कारण जो सुविधाएं प्राप्त हुई उनमें से कुछ है—एक राज्य में से निकले हुए व्यक्तियो को दूसरे राज्य मे शरण न देना, राज्यो के अपराधियो को दूसरे राज्य मे पकड़ने की सुविधाए, पुलिस और फौज से भागे हुए लोगो को गिरफ्तार करने, एक राज्य से गये मोटर वाहनो का दूसरे राज्य मे रजिस्ट्रेशन होना आदि। इन सुधारो के कारण दैनिक कार्यो मे जो विलंब होते थे वे दूर कर दिये गए और न केवल राज्य के शासन मे तेजी से काम हुए, वरन् इसके साथ ही दूसरे राज्यो के साथ सहयोग भी बढ़ा। श्री सिरेमल बापना ने एक कार्यालय स्थापित किया, जो इंदौर राज्य और पड़ोसी राज्यो के

बीच के सम्बन्धों के प्रकरणों को तेजी से निबटाता था।

श्री बापना ईमानदारी और साहस से काम लेते थे, इसलिए राज्य के जो जागीरदार अपराधी मनोवृत्ति के पाये जाते थे उनको तुरन्त सख्ती से सजा दी जाती थी। इसका अर्थ यह नही कि जागीरदारो के वह खिलाफ थे, बल्कि उन्होने जागीरदारो की आर्थिक और सामाजिक दशा सुधारने के लिए अनेक कदम उठाये। एक बार लालगढ के दीवान ने इदौर राज्य के दैनिक कार्यो में भी रुकावट डालनी चाही। श्री सिरेमल बापना ने दृढ होकर उन गावो पर, जो दीवान लालगढ के अन्तर्गत थे, एक वर्ष के लिए इन्दौर राज्य का पूरा शासन लागू कर दिया। इसी प्रकार नाबालिग शासन के प्रथम वर्ष ही भूमिया नाम के जागीरदार से दिलाबावर गाव का अततोगत्वा इदौर-जजी के अन्तर्गत ले लिया गया। यही नही, दाही हीरापुर और लालगढ इन सभीमें होल्कर राज्य के चुगी नियमो को लागू किया।

सुन्दरसी कस्बे पर ग्वालियर, धार और इदौर का त्रिशकुवी प्रशासन था। श्री सिरेमल बापना ने अपने नाबालिग प्रशासन के जमाने में इस समस्या को पूरी तरह से हल कर दिया। सुन्दरसी कस्बे मे इदौर राज्य की जो मिल्कियत थी, वह ग्वालियर राज्य को दे दी गई और उसके बदले ऐसे पाच गाव लिये जो इदौर राज्य की सीमा पर पडते थे। इससे न केवल राज्यो की सीमा सघन हो गई, वरन् आयेदिन जो सीमा के झगडे होते रहते थे, वे भी खत्म हो गये। इसी प्रकार ऐसे अनेक इलाके, जो ब्रिटिश भारत से होल्कर राज्य को प्राप्त हुए थे, उनकी मालगुजारी श्री सिरेमल बापना ने अपने शासन मे कम कराई। नाबालिग प्रशासन मे डाक विभाग ने बडी उन्नति की और इन्ही दिनो ट्रक-टेलीफोन भी स्थापित किया गया, जिससे इदौर का सम्बन्ध उत्तर भारत के सभी नगरो से हो गया।

सन् १८१८ की होल्कर राजवश और ब्रिटिश सरकार के बीच हुई सन्धि की शर्तो के अनुसार इन्दौर नगर से लगा हुआ एक विस्तृत क्षेत्र रेसीडेन्सी के निर्माण के लिए ब्रिटिश सरकार को

सौंप दिया गया था, जिसमे ब्रिटिश सरकार के अधिकारी वर्ग के लिए आवास व्यवस्था की गई थी। इस क्षेत्र मे शनै-शनै अंग्रेज अफसरो के आवास स्थानो के साथ-साथ एक बाजार भी बन गया था और वहा के कई व्यापारी व्यवसाय करने लग गये थे, क्योकि उस क्षेत्र मे व्यापार करनेवालो को दूसरी रियासतो से आनेवाले कच्चे माल पर आयात शुल्क तथा जानेवाले माल पर निर्यात शुल्क नही देना पडता था। यह क्षेत्र इदौर नगर के व्यापार का प्रतिद्वन्द्वी बन गया था। नाबालिग शासन काल मे बापना साहब द्वारा जोरदार पहल कर यह दलील दी गई कि चूकि रेसीडेन्सी एरिया जो कि ब्रिटिश सरकार को अपने अधिकारियो की आवास सुविधा के लिए दिया गया था, उसमे व्यापारिक मंडी बनाना सन्धि की शर्तो के अनुकुल नही है इसलिए उक्त व्यापारिक क्षेत्र होल्कर राज्य को वापस किया जाय। इस सम्बन्ध में श्री सिरेमल बापना तत्कालीन वायसराय आदि से भी मिले। फलस्वरूप उक्त क्षेत्र जो 'छावनी बाजार' के नाम से जाना जाता था, सन् १९३१ मे ब्रिटिश सरकार की ओर से होल्कर राज्य को वापिस लौटा दिया गया। इस क्षेत्र के इन्दौर नगर मे सम्मिलित हो जाने से इन्दौर नगर के व्यापार मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही और उक्त क्षेत्र आज इन्दौर के व्यापार व्यवसाय मे प्रमुख स्थान रखता है।

प्रशासन मे मितव्ययिता तथा कार्यक्षमता लाने के लिए प्रशासनिक सेवाओ मे कुछ कमी करना अनिवार्य था। ऐसा करने से अयोग्य व्यक्तियो की भी सहज छटनी की जा सकी। यह सारा कार्य बडी चतुरतापूर्वक किया गया और सभी योग्य व्यक्तियो को अंतत लाभदायक स्थानो पर रखा गया। ऐसे कम आवश्यक पदो पर जिनका जनता की भलाई से बहुत कम सम्बन्ध था, सख्ती के साथ खर्च कम कर दिया गया। प्रत्येक प्रकार की फजूल खर्ची पर रोक लगा दी गई। इसका परिणाम यह हुआ कि जनता की भलाई की नवीन योजनाओ और सुधारो को क्रियान्वित करने वाले कार्यो पर खर्च करने के बाद भी नाबालिग शासन के अन्त मे बापनाजी खजाने मे पचास लाख रुपये बचत करने मे सफल हुए

बापनाजी ने यह अनुभव किया कि कार्य के [illegible] होने से जनता को अत्यधिक तकलीफ होती है और यह [illegible] का भी एक बहुत बडा कारण है। अत. इन्होंने तहसील से लेकर मंत्रिमण्डल स्तर तक काम के शीघ्र निपटारे पर जोर दिया। नाबालिग शासन-काल के चार वर्षों में सभी विचाराधीन एव जटिल मामलों को निपटा दिया गया। इस दिशा में इन्हें जो सफलता मिली उसका एक मुख्य कारण यह था कि प्रशासन के दैनिक व सामान्य काम-काज जो कि काफी तादाद में रहते थे उन्हे बापनासाहब बहुत ही जल्द निपटा देते थे। अपने इस विशेष गुण के कारण ही वह अपना बहुमूल्य समय शासन के दूसरे महत्वपूर्ण मसलों या मामलों के लिए बचा सके थे। इनकी आदत थी कि वह दैनिक कार्य दूसरे दिन के लिए नही छोडते थे। इनके उदाहरण से दूसरों को भी प्रेरणा मिलती थी।

पुलिस विभाग में कार्यक्षमता का अभाव देखकर बापनाजी ने उसका पुनर्गठन किया और उसे एक योग्य तथा सक्षम पुलिस महानिरीक्षक के अधीन रखा गया। इसके साथ एक पुलिस मैन्युअल भी तैयार किया गया। बापनासाहब स्वयं देखते थे कि पुलिस किसी भी प्रकार जनता को तंग न कर पाये। तदनन्तर अपनी कुशलता और कार्यक्षमता के लिए इंदौर राज्य की पुलिस ने उस समय के देशी राज्यो मे ख्याति प्राप्त की थी।

बापनाजी की देखरेख में कैदियों के साथ अच्छा व्यवहार करने और उन्हे अपना सुधार आप करने के लिए प्रेरित करने की दृष्टि से इदौर राज्य के जेल-नियमों का पुननिर्माण किया गया। किशोरवय के अपराधियो के लिए अलग ब्लाक बनाये गए। प्रौढ तथा किशोर वय के बदियों को लिखने-पढनें और प्राथमिक शिक्षा देने का प्रबन्ध किया गया और केन्द्रीय जेल की सुधार-शाला (रिफोरमेटरी स्कूल) में उन्हें प्रशिक्षित किया जाने लगा। कैदियों को विभिन्न प्रकार के उद्योग-धंधो की शिक्षा दी जाने लगी और उनमें पुस्तकालय तथा पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था की गई। जेल के स्वास्थ्य तथा सफाई पर पर्याप्त ध्यान दिया जाने लगा।

इसी प्रकार इनकी संरक्षकता मे इन्दौर सिविल सर्विस रेग्यूलेशंस का पुनरीक्षण भी किया गया और इन्दौर एकाउण्ट कोड (लेखा-सहिता) तथा लेखा परीक्षा नियम (आडिट रूल्स) तैयार किये गए। यात्रा भत्ता नियम पुनरीक्षित किये गए और पूर्व-लेखा-परीक्षा-प्रणाली (प्री आडिट सिस्टम) प्रारभ की गई। सेवा का अभिलेख रखने के लिए नये तथा सरल फार्म लागू किये गए तथा पुराने अभिलेख की छटनी करके तत्सबधी नियमो मे संशोधन किया गया। होल्कर स्टेट लाइफ इन्शोरेंस योजना के अन्तर्गत जारी की गई पालसियोको इन्दौर सिविल प्रोसीजर कोड के अधीन डिग्री के लिए कुर्की तथा बिक्री से मुक्ति प्रदान की गई।

इन्ही दिनो पर्याप्त संख्या मे प्रशासनिक तथा पुलिस इमारतो का निर्माण, उनकी मरम्मत तथा विस्तार किया गया। पाच लाख वार्षिक की व्यवस्था से एक अकाल सहायता कोप भी कायम किया गया। विधि परामर्शदाता (लीगल रिमेम्बेरेंस) कार्यालय मे अधिनियमो के हिंदी अनुवाद के लिए एक अनुवाद शाखा को स्थायी रूप से व्यवस्था की गई।

वेतन कम होने के कारण सरकारी कर्मचारियो मे असन्तोष और निराशा का वातावरण फैला हुआ था। बापनासाहब का यह निश्चित मत था कि कम वेतन पानेवाले कर्मचारियो को पर्याप्त वेतन और सुविधा प्रदान कर संतुष्ट न किया जायगा तो लाख प्रयत्न करने पर भी उन्नति की ओर अग्रसर होना कठिन ही होगा। रिश्वत और चोरी की जड पर कुठाराघात करने के लिए भी वेतन बढाना अनिवार्य समझा गया। इसलिए मन्त्रियो के नीचे राज्य के सभी श्रेणी के कर्मचारियो के वेतन बढा दिये गए। वेतन-मान तय किये गए। सर्विस को स्थायित्व प्रदान किया गया और अलाउंस मे भी वृद्धि की गई। इससे सरकारी कर्मचारियो की कार्यक्षमता काफी बढ गई।

सामान्य प्रशासन के साथ-साथ न्यायपालिका का भी पूर्ण परीक्षण किया गया और उसकी कार्य-प्रणाली मे पर्याप्त सुधार किया गया। जिलो मे उसे कार्यपालिका से पृथक कर स्वतन्त्र कर दिया गया। यह एक ऐसा कदम था, जो राज्यो मे अब उठाया जा रहा

है। उच्च न्यायालय एक योग्य मुख्य न्यायाधीश के अधीन रखा गया और श्री बापना के प्रयास तथा हस्तक्षेप न करने की नीति के कारण इदौर की न्यायपालिका ने ईमानदारी तथा निष्पक्षता के लिए काफी ख्याति प्राप्त की। श्री बापना तथा नाबालिग शासन-काल की यह एक वहुत बडी उपलब्धि थी। इन्ही दिनों इन्दौर लॉ रिपोर्टो का प्रकाशन सुव्यवस्थित रूप से प्रारभ किया गया और कानूनी पुस्तको की खरीद के लिए पर्याप्त अनुदान दिया गया। निष्पक्ष तथा ईमानदार न्यायपालिका ने अभिभावक वर्ग में अनेक योग्य व्यक्तियो को आकर्षित किया और शीघ्र ही इन्दौर के अभिभावक वर्ग ने अपनी क्षमता के कारण ख्याति अर्जित कर ली।

भू-प्रबध तथा कृषि-विकास को पूरा-पूरा महत्व दिया गया। ग्रामीण जनता की आर्थिक उन्नति पर श्री बापना ने अपना ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित किया। उन्होने सपूर्ण राज्य में भू-राजस्व का सशोधित बदोवस्त हाथ मे लिया और उसे पूरा किया। भूमि का लगान इस नीति पर निर्धारित किया गया कि कृषकों को अपनी जमीन की पैदावार बढाने मे प्रेरणा मिले। कृषि-उत्पादको के बाजार-भाव को देखते हुए लागत की दर में आसानी से काफी वृद्धि की जा सकती थी, किंतु नाबालिग प्रशासन ने ऐसा करना उचित नही समझा, क्योकि उनका उद्देश्य केवल राजस्व मे वृद्धि करना ही नही था, अपितु कृषको के मन मे एक निश्चितता की भावना पैदा करना भी था, ताकि वे अधिक संतुष्ट और साधन-सम्पन्न हो सके और अपने अतिरिक्त साधनो को भूमि-सुधार पर खर्च कर सके और इस प्रकार अकाल के वर्षो मे उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयो का सामना करने मे समर्थ हो सके। ग्रामीण क्षेत्रो के अधिकार अभिलेख अद्यतन तैयार किये गए और इसकी सहायता से १० हजार मामले निपटाये गए। राज्य तथा जिलो के नक्शे दुबारा तैयार किये गए और बाहरी सीमाओ का अभिलेख तैयार करने का कार्य पूरा किया गया।

कृषि-योग्य भूमियो पर लोगो को बसाने के लिए नई रियायते दी गई और इस कार्य के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किये गए।

हजारो एकड वन-विहीन क्षेत्रो का सर्वेक्षण-कार्य भी पूरा किया गया।

पटवारियो के वेतनो में सशोधन किया गया, उनके वेतन बढा दिये गए। इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बात यह की गई कि पटवारियो मे से राजस्व निरीक्षको, जमाबदी क्लर्को (लिपिको) आदि की उच्च वर्ग मे पदोन्नति की पद्धति अपनाई गई। इससे प्रतियोगिता की भावना पैदा हुई और पटवारियो की कार्यक्षमता वढी, जोकि राजस्व प्रशासन का आधार होती है।

कृषि तथा ग्रामोद्धार को नाबालिग प्रशासन के जमाने मे महत्वपूर्ण स्थान दिया गया, क्योकि श्री सिरेमल बापना उस जमाने मे भी इस बात को भली भाति जानते थे कि किसी राज्य की समृद्धि के लिए कृषि-क्षेत्र मे प्रगति अत्यत आवश्यक है। इसलिए उन्होने इन्दौर राज्य मे न केवल वैज्ञानिक ढग पर खेती करने को वढावा दिया वरन् उन्होने इस बात का भी ध्यान रखा कि राज्य के किसानो की दशा निरन्तर सुधरती चली जाय। नाबालिग शासन से पहले इन्दौर राज्य मे कृषि और सहकारी समिति के विभाग अलग-अलग थे। श्री सिरेमल बापना ने इन दोनो विभागो को मिलाकर ग्राम-विकास के लिए एक नया विभाग प्रारम्भ किया, क्योकि उस समय ही उन्होने यह अनुभव कर लिया था, जिसपर आज भारत सरकार द्वारा बल दिया जा रहा है कि उन्नत कृषि के लिए एक ठोस सहकारी सस्था और आन्दोलन अत्यन्त आवश्यक है और इन दोनो विभागो को सहयोग से काम करना चाहिए। इस सुधार से राज्य के किसानो को एक साथ ही कृषि और सहकारी सस्थाओ का लाभ मिलने लगा। इन्दौर में काफी पहले से कृषि उद्योग सस्थान काम कर रही थी। इसने विज्ञान की सहायता से कृषि के क्षेत्र मे ऐसे अनेक तरीके निकाले थे, जिनसे विभिन्न कृषि-कार्यो मे विज्ञान का उपयोग करके कृषि का विकास किया जा सकता था और पैदावार को काफी बढाया जा सकता था। श्री सिरेमल वापना ने इन सुधरे हुए वैज्ञानिक तरीको का राज्य के किसानो मे प्रचार करवाया। उन्हे इस सस्था द्वारा विकसित किया गया। कृषि औजारो के लिए राज्य मे जगह-जगह पर प्रदर्शनिया

करवाई गई, जहापर सुधरे हुए बीजो को भी दिखाया गया। इस सस्था द्वारा खाद को और अधिक उपयोगी बनाने के तरीकों की ओर भी किसानों का ध्यान आकर्षित किया गया। इसका फल यह हुआ कि राज्य के किसानों में वैज्ञानिक तरीके से खेती के प्रति एक नई चेतना पैदा हुई और किसान धीरे-धीरे नये कृषि-औजारो, सुधरे और विकसित बीजों और नये प्रकार के खादो का इस्तेमाल करने लगे। कृषि-विभाग द्वारा खेती के लिए कम्पोस्ट खाद, फसल को सुरक्षित रखने, कीटनाशक के रूप मे तूतिया पाउडर और सुधरे कृषि उपकरणों और औजारो के बारे में अनेक छोटी-छोटी पुस्तके और बुलेटिन प्रकाशित करके राज्य-भर में बाटे गये। यही नही, अपितु किस प्रकार अच्छी खेती की जा सकती है, किस प्रकार फसलो से अधिक पैदावार ली जा सकती है, खेती की तल सपाट और समान करने मे क्या लाभ है, पशुशाला कैसी होनी चाहिए और पशुओ के लिए विपत्तिकाल मे चारे को साइलेज के रूप में कैसे सुरक्षित रखा जाना चाहिए, आदि के सम्बन्ध मे राज्य-भर में भाषण दिलवाये गए और मैजिक लालटेनो की मदद से इस प्रचार को और भी अधिक तेज करवाया गया। इसका फल यह हुआ कि राज्य-भर के किसानो में अपनी हालत को सुधारने के लिए एक नवजागरण हुआ। सन् १९३९ में सबसे पहले इन्दौर राज्य मे कृषि और बागवानी प्रदर्शनी की गई। तभी से यह प्रदर्शनी इदौर के जीवन में एक वास्तविक मेला बन गया। इस प्रदर्शनी में ही पहली बार गुड बनाने के लिए रस उबालने के नये सुधार और विकसित तरीको का प्रदर्शन किया गया था।

इन सबके साथ ही सहकारी विभाग ने किसानो को ऋण लेने के लिए विशेष सुविधाए उपलब्ध कराई। वे इसके द्वारा सुधरे हुए बीज और सुधरे हुए कृषि-औजार भी प्राप्त कर सकते थे। इसके लिए दी इन्दौर प्रीमियर को-ओपरेटिव बैंक की पूजी तिगुनी कर दी गई तथा इसका कार्यक्षेत्र बढा दिया गया। कृषि अनुसधान सस्थान इन्दौर के द्वारा श्री मिश्रीमल बापना ने तहसीलदारो और नायब तहसीलदारो को कृषि और ग्राम-सुधारो के कामो में विशेष रूप से

प्रशिक्षित कराया, जिससे वे इस तकनीकी प्रशिक्षण का किसानो को पूरा-पूरा लाभ पहुचा सके। राज्य-भर के अनेक खेतो मे खर-पतवार उग जाते थे। उनमे से कास-कुडा मुख्य थे। किसानो को इन्हे पूरी तरह से नष्ट करने के लाभ समझाये गए और इनको उन्मूलित करने के लिए राज्य-भर मे एक बडा अभियान चलाया गया। राज्य के किसानो मे उत्साह बढा और राज्य के लोगो को यह पता चला कि कृपि के क्षेत्र मे और किसानो के जीवन मे क्या-क्या अन्य सुधार हो रहे है। इस उद्देश्य से एक पत्रिका 'किसान' नाम से प्रकाशित की गई, जो हर ग्राम पचायत को नि शुल्क भेजी जाती थी। राज्य-भर के सिचाई के स्रोतो और सिद्धान्तो का सर्वेक्षण किया गया और इस बात की जाच की गई कि उनको और अधिक कैसे सुधारा जा सकता है, जिससे किसानो को अधिक-से-अधिक सिचाई-सुविधाए उपलब्ध हो सके। यही नही, इस सिचाई के काम के लिए एक विशेष धनराशि राज्य ने स्वीकार की। छोटी सिचाई योजना भी राज्य मे चलाई गई। इसके अतर्गत गाव मे कुए खोदने के लिए योजना बनाई गई, जिससे गावो मे पानी की सुविधा हो सके। जमीन बदोवस्त के जमाने मे जितने भी खेत नई सिचाई योजनाओ के अतर्गत आये, उन सभी को पानी की मालगुजारी के लिए जो शुल्क लगाया गया था उससे मुक्त कर दिया गया। इस बदोवस्त मे जो जमीन बजर थी उसपर कम मालगुजारी लगाई गई। रियाया के खेतो मे खडे हुए पेडो पर उनकी मिल्कियत मान ली गई और इस बारे मे विशेष नियम बना दिया गया। दीवानी अदालत द्वारा किसानो और विशेष रूप से गरीब मजदूरो के विरुद्ध जो डिग्रिया पडी हुई थी उनको कुछ समय तक तामील मे लाने से रोक दिया गया और विशेप रूप से बीज, तकावी, खाद्य तकावी आदि दी गई। किसानो को अपनी उपज का अच्छा मूल्य मिले, इस उद्देश्य से विभिन्न स्थानो पर कपास-बाजार व मडिया स्थापित की गई। गावो को कस्बो और मडियो से जोडने के लिए सडके तथा चौराहे ठीक किये गए और नई सडके बनाई गई, जिससे वे अपने माल को आसानी से मडियो तक पहुचा सके। ग्रामीण भारत मे सामुदायिक

सफाई एक बहुत बड़ा सरदर्द है, क्योंकि गुजरे जमाने मे इस बात की ओर बहुत कम ध्यान रहा है कि घरो का गन्दा पानी नालियों द्वारा बहता हुआ किसी एक जगह इकट्ठा करके उसका प्रयोग खाद आदि के लिए किया जाय। श्री सिरेमल बापना का ध्यान इस समस्या की ओर गया। उन्होने ग्रामीण क्षेत्र मे उचित सफाई रखने के लिए नियम बनवाये व विशेष तहसीलदारो को गावो की सफाई की दृष्टि से प्रशिक्षण दिलाया। उनको विशेष रूप से इस काम के लिए राज्य के अलग-अलग जिलो मे तैनात किया, ताकि वे गावो की सफाई पर ध्यान रख सके। इसके अतिरिक प्रति वर्ष किसानो व राजस्व अधिकारियो का एक सम्मेलन आयोजित किया जाता था, जिससे वे एक-दूसरे की कठिनाई को समझ सके और उनके हल निकाल सके।

उद्योग तथा व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए सीमा-शुल्क तथा अन्य सुविधाए और रियायते प्रदान की गई। रायल्टी से सबंधित नियम सशोधित किये गए और एक्साइज ड्यूटी समाप्त कर दी गई। मशीनो के पुनर्आयात और पुर्ननियात के सम्बन्ध में सुविधाए प्रदान की गई। इनका परिणाम यह हुआ कि अनेक ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनिया तथा जिनिग और प्रेसिग फैक्टरिया स्थापित हुई। उद्योगपतियो को श्री बापना मे विश्वास था और वे यह अनुभव करते थे कि यदि यथार्थ कठिनाइयां लेकर वे उनके पास पहुचेगे, तो वह उनको दूर करने में उनकी भरसक सहायता करेगे। विद्यमान सियागज मूल क्षेत्र का विस्तार किया गया और तुकोजी-राव कपडा बाजार पाच वर्षो के लिए मूल क्षेत्र घोपित किया गया। इससे इन्दौर के व्यापार तथा वाणिज्य की बडी तेजी से प्रगति हुई। कुटीर उद्योगो, विशेषकर महेश्वर के हाथ करघा कुटीर उद्योग को भी सुविधाएं प्रदान की गई व उनकी स्थिति फिर से सुधारी गई। जिस तरह उन्होने उद्योग व उद्योगपतियो को प्रोत्साहन दिया उसी तरह उन्होने मजदूरो की स्थिति सुधारने मे दिलचस्पी ली। इन्दौर की कपडा मिलो के मजदूरो की दशा सुधा-रने के लिए प्रथम बार काम के अधिकतम घण्टे निर्धारित कर दिये

गए और मजदूरो के वोनस के भुगतान का प्रश्न शान्तिपूर्वक निपटा दिया गया। उनके सद्प्रयासो से यह भी निश्चय किया गया कि लाभ का पांच प्रतिशत मिलो द्वारा मजदूरो के गृह-निर्माण के लिए पृथक निर्धारित किया जाय और सडको, नालियो तथा सुख-सुविधाओ पर होनेवाला खर्च सरकार द्वारा उठाया जाय।

इस सम्वन्ध मे राजस्थान के भूतपूर्व वित्त-मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय लिखते हैं;

"स्वर्गीय श्री वापनाजी अपने समय के दक्ष और कुशल प्रशासको में से थे। अपने अनुभवो मे मैंने उन्हे सर्वदा वाजिव वात को मानने, दु.खी-जनो की सहायता करने और सार्वजनिक कार्यो के प्रति सहानुभूतिशील पाया। मेरा उनसे प्रथम सम्पर्क १९१८-१९ मे हुआ जवकि मैं इन्दौर मे वसकर कुछ साहित्यिक और सार्वजनिक सेवा करना चाहता था। उसके वाद कई अवसर उनसे मिलने के आते रहे, जिनमे मैंने उन्हे सदैव मिलनसार और सहानुभूतिशील पाया। जव इंदौर मे वडी जवरदस्त मजदूरो की हड़ताल हुई और पूज्य वापू ने मुझे वहा हडतालियो की मदद करने और उन्हे न्याय दिलाने के लिए भेजा तो श्री वापनाजी ने न केवल मुझे उनमे काम करने के लिए ही प्रोत्साहित किया, वल्कि यहा तक कहा कि आपके आ जाने से सरकार को भी वड़ी तसल्ली हुई कि हम किसी जिम्मेदार आदमी से हडताल के वारे मे इतमीनान से वात तो कर सकेंगे। यहा तो रोज इनके नेता वदलते हैं और पहले नेता की वात दूसरा नेता वदल देता है।

"इस समय वापनाजी होल्कर राज्य के प्रधान मन्त्री थे। इन्होने मजदूरो के काम के घण्टे वाध दिये और मिल-मालिको से समझौता कराने मे काफी सहायता की। एक स्थिति तो ऐसी आ गई थी कि मजदूरो की तरफ से हमने स्वय श्री वापना को पच मुकर्रर किया। इससे यह वात स्पष्ट है कि वह उस समय भी मजदूरो के विश्वासपात्र समझे गये थे। इसमे कोई शक नही कि अपने जमाने के वह सफल प्रशासक रहे। वीकानेर, अलवर, रतलाम और कई रियासतो ने प्रधान मन्त्री के रूप मे उन्हें स्वीकार कर उनके अनु-

भवो से लाभ उठाया । हिन्दी और हिन्दी-भाषियो के वह सदैव समर्थक रहे । शिक्षा के वह बड़े प्रेमी थे और शिक्षण सस्थाओ को उनसे बढावा मिलता था ।

नाबालिग शासन-काल मे बापनासाहब द्वारा शिक्षा तथा स्वास्थ्य कार्यक्रम के पर विशेष बल दिया गया । इदौर शहर के लिए श्री बापना द्वारा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा योजना प्रारभ की गई । गावो मे स्कूलो की सख्या में वृद्धि की गई । यह शिक्षा नि.शुल्क दी जाती थी । राज्य मे प्राथमिक तथा कन्या-शिक्षा के प्रसार के लिए उन्होने बहुत प्रयत्न किये, क्योकि वह जानते थे कि केवल उपयुक्त शिक्षा ही अतत मानव-उत्थान का सर्वोत्तम साधन हो सकती है ।

स्कूली शिक्षा पर खर्च काफी बढा दिया गया । नाबालिग शासन-काल के चार वर्षों मे राजकीय तथा सहायता-प्राप्त स्कूलो और विद्यार्थियो की सख्या मे ५० प्रतिशत की वृद्धि हो गई । राज्य भर मे परीक्षाओ के स्तर मे एकरूपता लाने के उद्देश्य से पाचवी से लेकर ऊपर तक की कक्षाओ की परीक्षा के लिए एक केन्द्रीय मण्डल गठित किया गया । प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओ मे पुस्तकालयो एव वाचनालयो की व्यवस्था की गई । शिक्षा प्रशिक्षण शाला मे सुधार किया गया और अनेक स्कूलो मे व्यायाम-शिक्षको की व्यवस्था की गई । स्कूलों मे बालक-बालिकाओं की स्वास्थ्य-परीक्षा की योजना भी स्वीकृत की गई । इस प्रकार की योजना अभी तक राज्यो मे लागू नही की जा सकी है । मोघिया जनजाति (राज्य की जरायम पेशा जाति) के बालकों के लिए अनिवार्य शिक्षा की एक योजना भी स्वीकृत की गई ।

अनुदानो में पर्याप्त वृद्धि करके महाविद्यालयो की शिक्षा मे भी पर्याप्त सशोधन एव परिवर्धन किया गया । एम० ई० और लॉ (कानून) की कक्षाए प्रारम्भ की गई तथा होल्कर कालेज, इन्दौर में विश्वविद्यालय की परीक्षाए चालू की गई । बापनासाहब ने सस्कृत महाविद्यालय को अनेक परीक्षाओ का केन्द्र बना दिया गया ।

लोक स्वास्थ्य के क्षेत्र मे चिकित्सा विभाग को उदार अनुदान

देकर चिकित्सा तथा लोक-स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओ का विस्तार किया गया। सरकार द्वारा श्रेणीकृत तथा अश्रेणीकृत औषधालयो की सख्या तथा योग्यता-प्राप्त डाक्टरो एव नर्सो की सख्या मे काफी वृद्धि की गई। नर्सेज इन्स्टीट्यूट की स्थापना की गई। अशासकीय चदे से इन्दौर मे एक पृथक नेत्र चिकित्सालय और नर्सिग होम भी बनवाये गए।

बापनाजी ने उसी समय यह अनुभव कर लिया था, जिसपर भारत सरकार अब बल दे रही है, कि शहरो तथा गावो मे आरोग्य की स्थिति तथा सफाई मे सुधार के लिए अधिकारी आवश्यक हैं। इसलिए चिकित्सा अधिकारियो के पदो के अतिरिक्त जिला स्वास्थ्य अधिकारियो के पद, आवश्यक कर्मचारियो-सहित, निर्मित किये गए और उनके द्वारा बडा मूल्यवान काम किया गया। इन्होने यह भी महसूस किया कि गावो मे सफाई रखने के लिए ग्राम पचायतो की सहायता आवश्यक है, अत. गावो मे उचित सफाई रखने के लिए तदनुसार नियम बनाये गए और उनके पालन का उत्तरदायित्व ग्राम पचायतो को सौपा गया।

लोक स्वास्थ्य तथा सफाई विभाग को टीका लगाने, जन्म-मृत्यु-सम्बन्धी आकडे एकत्र करने, खाद्य-पदार्थो मे मिलावट रोकने तथा उत्तेजक पदार्थो के व्यापार के नियत्रण का कार्य भी सौपा गया। ये कार्य हाल के वर्षो में ही राज्यो ने हाथ मे लिये है। इस एकीकृत प्रणाली के अतर्गत अनेक कार्य किये गए, जिनका परिणाम यह हुआ कि राज्य के सामान्य स्वास्थ्य तथा सफाई मे, विशेष रूप से इन्दौर शहर के सामान्य स्वास्थ्य और सफाई मे, पर्याप्त सुधार हुआ।

स्वास्थ्य के लिए पीने के स्वच्छ पानी की आवश्यकता भी अनुभव की गई और नगरो तथा गावो में स्वच्छ पीने के पानी की पूर्ति की व्यवस्था की गई।

श्री बापना की यह मान्यता थी कि ग्रामीण क्षेत्रो के उचित विकास के लिए एक अच्छी पचायत, ग्राम सहकारी सस्था और प्राथमिक शिक्षा की सुविधाए अत्यन्त आवश्यक हैं। अत इन

सस्थाओ के विकास और विस्तार के लिए पर्याप्त प्रयत्न किये गए थे। १९२८ मे एक नया ग्राम पचायत अधिनियम बनाकर ग्राम पचायतो को सुदृढ आकार प्रदान किया गया। इस अधिनियम के अतर्गत ग्राम पचायतो की न्यायिक तथा प्रशासनिक शक्तियो में वृद्धि की गई और उन्हे लगभग स्वायत्त सस्था बना दिया गया। जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, इसी समय सहकारी आन्दोलन को बहुत अधिक प्रोत्साहन दिया गया और प्राथमिक शिक्षा नि शुल्क कर दी गई। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जो कदम हम आज पचवर्षीय योजनाओ के अन्तर्गत उठा रहे है, उस समय इन्दौर मे इनके द्वारा प्रारम्भ कर दिये गए थे, यद्यपि उस समय धन और साधन अत्यत सीमित थे। जहा-तक नगरपालिकाओ का प्रश्न है, इदौर नगरपालिका मे निर्वाचित सदस्यो मे काफी वृद्धि कर दी गई। नगरपालिका अधिनियम मे सशोधन कर के इदौर नगर-पालिका को वही अधिकार दे दिये गए जो तत्कालीन बम्बई राज्य की नगरपालिकाओ को प्राप्त थे। फलस्वरूप नगरपालिका को अपना बजट बनाने, विभिन्न कर लगाने और अपने कार्य के लिए भूमि प्राप्त करने आदि के अधिकार प्राप्त हो गये।

नाबालिग शासन-काल मे विभिन्न विषयो पर अधिनियम बनाये गए जो लोकोपयोगी लोगो के सामाजिक उत्थान और कृपको की उन्नति आदि से सबधित थे। उनका यह भी उद्देश्य था कि न्याया-लयो के द्वारा सिविल अधिकारी के निर्णय से सम्बन्धित कानून तथा तत्सबधी प्रक्रिया मे सुधार किया जाय।

जनहित-सम्बन्धी छियालीस कानून बनाये गए। राज्य की विधान-सभा का अधिकार और क्षेत्र बढाया गया, जिससे जनता को शासन के अधिकाधिक निकट सम्पर्क में आने का अवसर मिला। शिक्षा तथा स्वास्थ्य और मेडिकल विभाग का व्यय बढाया गया और देहातो में कई दवाखाने और शालाए स्थापित की गई। किसानो की आर्थिक उन्नति की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया और कृषि-सम्बन्धी खोजो को किसानों तक पहुंचाने का समुचित प्रबन्ध किया गया। विकास-विभाग कायम करके खेती की उपज

वढाने और देहातो की सर्वागीण उन्नति करने की ओर ध्यान दिया गया ।

इन्दौर नगर के विकास तथा उसके औद्यौगिक, वाणिज्यिक, शैक्षिक, सामाजिक एव सास्कृतिक विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितिया पैदा करने का श्रेय श्री आपना को ही है। उन्होने यह अनुभव किया कि जलपूर्ति तथा विद्युत की उचित सुविधाओ के बिना और पर्याप्त स्वच्छता सम्वन्धी तथा नागरिक सुविधाओ के अभाव मे सर्वागीण विकास असम्भव है ।

इन्दौर शहर मे जल-पूर्ति एव जल-निकास का अभाव था। वहुत विचार करने के पश्चात नावालिग प्रशासन ने जल-पूर्ति और भूमिगत जल-निकास की ऐसी योजना स्वीकृत की, जो आगामी २५ वर्षो के लिए नगर की आवश्यकताओ की पूर्ति कर सके। योजना की लागत ५८ लाख रुपये आकी गई थी, जिसपर अतत राज्य निधि से लगभग १ करोड रुपया खर्च हुआ। इस योजना के अन्तर्गत गम्भीर नदी पर यशवन्तसागर नामक एक बाध बनाया गया। यह इन्दौर से १२ मील दूर है, जहा इन्दौर की आवश्यकता के लिए जल सग्रहीत किया जाता है, वर्षा ऋतु मे वाढ के पानी की निकासी के लिए जो साइफन प्रणाली वनाई गई है, वह भारत मे अपने ढग की विशेष प्रणाली है। प्रति मिनट ८० से लेकर ९० हाजर क्यूसेक पानी की निकासी के लिए २५ साइफन बनाये गए। प्रारभ मे योजना का लक्ष्य प्रति व्यक्ति प्रतिदिन ३० गैलन पानी पम्प करना, साफ करना और वितरित करना था, लेकिन इतनी गुजायश रखी गई थी कि कुछ परिवर्तन करके यह मात्रा ४५ गैलन और यदि आवश्यक हुआ तो ६० गैलन तक वढाई जा सके, क्योकि यह महसूस किया गया था कि एक वार जहा सफाई, जल-पूर्ति और जल-निकास की उचित व्यवस्था हो गई वहा उस नगर का विकास अत्यन्त उदार अनुमान से भी ज्यादा तेजी से होता है। प्रति व्यक्ति प्रतिदिन ४० गैलन पानी के लिए भूमिगत जल-निकास प्रणाली की योजना भी वनाई गई थी, किन्तु धनाभाव के कारण यह योजना आजतक पूरी नही हो सकी है। आगे जाकर इन्दौर नगर का उल्लेखनीय विकास

मुख्यत' अच्छी जल-पूर्ति प्रणाली के कारण ही संभव हो सका और इस दूरदर्शितापूर्ण कार्य के लिए इन्दौर की जनता आज भी श्री बापना के प्रति आभार प्रकट करती है। लार्ड विलिगडन ने अपनी इन्दौर-यात्रा के दौरान कहा था, "इस प्रकार की परियोजनाएं इस बात की ज्वलत प्रमाण है कि सफल तथा लोकप्रिय शासन की नीव अच्छी तरह पड चुकी है।" महामहिम जार्ज स्टेन ले ने, जो १९३४ मे इन्दौर आये थे, कहा, "न केवल बाध की रचना अपितु उसके कार्यान्वित किये जाने से इन्दौर की जनता को पहुंचनेवाले लाभ से भी मै बहुत अधिक प्रभावित हुआ हूं।" आगे उन्होने यह भी कहा, "एक स्थायी जलपूर्ति तथा जल-निकास प्रणाली से बढकर इन्दौर के लिए और कोई सम्पत्ति अधिक मूल्यवान नही हो सकती।" उन्होने राज्य-शासन को इसके लिए बधाई दी कि उसने लोक-कल्याण के प्रनि अपनी सच्ची लगन प्रदर्शित की। पर्याप्त जल-पूर्ति का महत्त्व इस समय और भो अधिक प्रकट होता है जव हम देखते है कि नगर के विकास मे सव तरफ से इसलिए वाधा पड रही है, क्योंकि नगर का इनना अधिक विकास हो चुका है कि जलपूर्ति पिछले १० वर्षो से अव नाकाफी साबित हो रही है।

जहातक बिजली का सबंध है, विद्यमान बिजली संगठन को राज्य द्वारा अपने अधिकार मे ले लिया गया और १२ लाख रुपये की लागत से एक और बिजलीघर वनाकर उसका विस्तार किया गया। विजली के वितरण की प्रणाली मे भी परिवर्तन किया गया और उसे डी० सी० से ए० सी० कर दिया गया।

राज्य के खर्च से इन्दौर का वायु-सर्वेक्षण किया गया। शहर के विकास के लिए अनेक योजनाएं स्वीकृत की गई, उदाहरणार्थ-(१) मनोरमागज योजना, (२) पलासिया पेलेग केम्प पर दूकान तथा सब्जी मार्केट की योजना, (३) नगरपालिका कपास परिवर्धन योजना, (४) खजरानी जागीर भू-अर्जन योजना, (५) हरिसिद्ध मदिर के पीछे की जमीन से सबधित योजना, (६) प्राकृतिक क्षेत्र योजना। इसके अतिरिक्त यशवत निवास पैलेस के चारो ओर के स्थान के सुधार के लिए विस्को पार्क के निकट कुछ मकान अर्जित

किये गए। ये योजनाए इन्दौर नगर-सुधार-न्यास द्वारा हाथ मे ली गई और विकसित क्षेत्र मे सभी वर्गो के लोगो को रहने की सुविधाए प्रदान की गई। शासकीय सेवको को राज्य ऋण की सुविधा प्रदान की गई और गृह-निर्माण-कार्य के लिए कई लाख रुपये का ऋण दिया गया।

सकुलता और भीड-भाड से उत्पन्न होनेवाले अनिष्ट या कुप्रभाव को रोकने के लिए भी अनेक योजनाए बनाई गई जैसे कमाठीपुरा योजना, रामबाग योजना, मुरलीधर चौक योजना, दागबाडी अड्डा योजना, कलालकुई से भवर कुआ जकशन तक जानेवाली सडक के किनारे-किनारे नगरपालिका कर्मचारियो के लिए रिहायशी बस्ती योजना, नयापुरा चमार गोदास योजना आदि। ये योजनाए इन्दौर नगरपालिका के द्वारा कार्यान्वित की गई। नगर के विभिन्न क्षेत्रो मे नई सडके बनाई गई तथा पुरानी सडको की मरम्मत की गई। नगर मे सडको पर डामर विछाई गई। नवनिर्मित स्वास्थ्य तथा सफाई विभाग द्वारा सारे शहर मे मच्छरो का नाश करने का अभियान चलाया गया, जल-निकास व्यवस्था मे सुधार किया गया, महामारी-उन्मूलन के लिए निवारक उपाय अपनाये गए, काफी धनराशि खर्च करके नया मार्केट बनाया गया, और शुद्ध दूध की पूर्ति की समस्या का भी तत्परतापूर्वक समाधान किया गया। नगर मे नगरपालिका के उद्यानो तथा अन्य उद्यानो का सुधार किया गया और जनता के लिए वहा बेचो आदि की व्यवस्था की गई। १ अक्तूबर १९२९ से एक सग्रहालय भी स्थापित किया गया। यात्रियो की सुख-सुविधा के लिए इन्दौर मे एक होटल बनवाया गया। श्री वापना ने धनी व्यापारियो को भी लोक-कल्याणकारी निर्माण-कार्यो के लिए प्रोत्साहित किया। इसके परिणाम-स्वरूप नेत्र चिकित्सालय तथा नर्सिग होम स्थापित किये गए, जिनसे इन्दौर के निम्न एव मध्यम वर्ग के लोगो को अति आवश्यक सुविधाए उपलब्ध हुई।

महाराजा तुकोजी राव क्लाथ मार्केट पाच वर्षो के लिए मूल क्षेत्र घोषित किया गया और सियागज मूल क्षेत्र का विस्तार किया गया। चुगी-कर लगाने के पूर्व इस मडी के हितो को विशेप रूप से ध्यान मे

रखा जाना था, जिसके फलस्वरूप अन्य पडोसी राज्यो द्वारा आसपास के अपने क्षेत्र में बनाई गई मण्डियो का इसपर विपरीत प्रभाव न पड़ सके। विशेष परिस्थितियो में इस मण्डी को बोन्डेड वेकर हाउस भी वना दिया जाता था, जिससे इसके व्यापार को कोई हानि न हो। इन सुविधाओ के फलस्वरूप इन्दौर रेलवे स्टेशन से लगे हुए सियागज क्षेत्र मे विशाल भवनो का निर्माण हुआ व उसका पर्याप्त विकास हो सका। उद्योग तथा वाणिज्य को प्रोत्साहन देने के लिए सीमा-कर से सम्बन्धित कुछ अन्य सुविधाए प्रदान की गई। इन कदमो से और श्री बापना द्वारा उद्योगपतियो और व्यापारियो मे पैदा किये गए विश्वास के कारण, उद्योग एव वाणिज्य का पर्याप्त विकास हुआ।

इन्दौर नगर के लिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा प्रारभ की गई और शिक्षा-सस्थाओ का पर्याप्त विस्तार किया गया। होल्कर कालेज इन्दौर की गिनती बहुत अच्छी सस्थाओ मे की जाने लगी और देश के मध्यवर्ती भागो से वहुत वडी सख्या मे विद्यार्थी यहा शिक्षाजन के लिए आने लगे। इसी प्रकार इन्दौर मे चिकित्सा सुविधाओ में पर्याप्त सुधार किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि इन्दौर स्थित चिकित्सालय ने सेन्ट्रल इण्डिया और राजपूताना मे काफी ख्याति अर्जित कर ली और चिकित्सोपचार के लिए इन भागो से काफी वड़ी सख्या मे लोग आने लगे।

नावालिग शासन-काल मे उठाये गए इन कदमो से इन्दौर नगर के विकास की नीव वडे मजवूत आधार पर स्थापित हुई और आगे चलकर इस नगर की औद्योगिक, वाणिज्यिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा सास्कृतिक क्षेत्रो मे जो सर्वांगीण प्रगति हुई वह अन्य नगरो के लिए स्पर्धा की वस्तु हो गई। वस्तुत इन्दौर की गिनती देशी रियासतो की राजधानियो मे सवसे ऊचे नगर के रूप मे की जाने लगी। वहुत थोडे नगर ऐसे थे, जहा इन्दौर के समान जीवन की गतिविधिया नजर आती थी। इन्दौर नगर के विकास का श्रेय श्री बापना को ही है और वस्तुत. इन्हे 'आधुनिक इन्दौर का निर्माता' कहा जाना चाहिए।

ऊपर के विवरण मे यह स्पष्ट हो जायगा कि श्री बापना ने

समूचे शासन-तंत्र मे आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया। स्थायी प्रकार के युगान्तरकारी परिवर्तन और महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक सुधार किये तथा अनेक सामाजिक एव लोक-कल्याणकारी अधिनियम बनाये। इन्होने प्रशासन को दृढ आधार प्रदान किया तथा इन्दौर नगर का नाम उज्ज्वल कर दिया। उस समय इन्दौर और उसका प्रशासन देशी रियासतो के बीच अत्यन्त प्रगतिशील समझा जाने लगा।

: ७ :

राजनैतिक और सामाजिक गतिविधियां

१० मई, १९३० को महाराज यशवतराव होल्कर (द्वितीय) को राज्य के पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गये। श्रीमत होल्कर-नरेश नें राज्याधिकार पाकर पहला काम यह किया कि बापनासाहब को फिर से अपना प्रधान मत्री और मन्त्रिमडल का अध्यक्ष नियुक्त किया। इस सरकारी समाचार को ११ मई, १९३० के सरकारी गजट मे प्रकाशित किया गया। महाराजा द्वारा श्री बापना की प्रधान मत्री के पद पर पुनर्नियुक्ति से न केवल प्रत्येक श्रेणी के पदाधिकारियो मे, अपितु इदौर की जनता व किसानो के घरो एव झोंपड़ियों मे भी खुशी और सतोष की लहर दौड गई।

सन् १९३० में जब महाराजा को पूर्ण अधिकार सौपा गया, उस समय उन्होने घोषित किया था कि वह अपनी सिविल लिस्ट (निजी खर्च) की रकम राज्य के सपूर्ण राजस्व के ११ प्रतिशत तक सीमित रखेगे। किसी भी देशी राज्य मे यह पहली घटना थी, क्योकि राज्यों के नरेश अपनी सिविल लिस्ट पर असीमित रूप से खर्च करते थे। सन् १९३६ में महाराजासाहब नें यह उद्घोषित किया कि राजस्व मे वृद्धि होनें के बावजूद वह राजस्व के ११ प्रतिशत के बजाय अपनी सिविल लिस्ट के लिए केवल ११ लाख रुपये ही लेगे। बापना-जी की नेक व सच्ची सलाह और दूरदर्शितापूर्ण नीति के कारण ही यह संभव हो सका।

प्रधान मत्री के पद पर बापनाजी १९३९ तक सफलतापूर्वक कार्य-सचालन करते रहे। उनकी शासन-कुशलता, निर्भीकता आदि गुणों से प्रसन्न होकर महाराजा होल्कर ने सन् १९३० में ही उनको वजीरउद्दौला की पदवी से अलकृत किया और सन् १९३१ मे भारत सरकार द्वारा सी० आई० ए० की उपाधि प्रदान की गई।

बापना साहब का प्रभाव अब होल्कर राज्य की सीमाओ से निकलकर सारे भारत मे फैल गया था और ब्रिटिश सरकार भी उनके प्रशासनिक अनुभव से बहुत प्रभावित हो गई थी। इन वर्षो मे भारत के जनगण मे इतनी अधिक चेतना पैदा हो गई कि मजबूर होकर इग्लैड मे बैठे अग्रेज शासक यह सोचने लगे थे कि भारत को किसी-न-किसी रूप मे औपनिवेशिक स्वराज्य देना ही होगा। इसीलिए उन्होने लदन मे मई, १९३० में भारत की समस्या को हल करने के लिए एक गोलमेज परिषद की। इस समय भारत में सत्याग्रह आन्दोलन जोरो पर था और अग्रेज सरकार उसे बुरी तरह दबा रही थी। अग्रेजो का विचार था कि भारत को कुछ रियायते देने से काग्रेस के बिना भी वे गोलमेज परिषद को सफल बना सकेगे। इसलिए इस परिषद मे अग्रेजी सरकार ने केवल नामजद सदस्यो को ही रखा। इसमे ५७ ब्रिटिश भारत से और २६ देशी राज्यो से नामजद प्रतिनिधि लिये गए थे। यद्यपि इस परिषद मे अनेक निश्चय लिये गए, पर काग्रेस द्वारा भाग न लिये जाने के कारण वे सफल न हो सके। अग्रेजी सरकार की मशा यह थी कि किसी तरह से कांग्रेस के साथ समझौता करके देश मे अग्रेजो के खिलाफ बढते हुए असतोष को रोका जाय। मि० स्लोकोम्ब ने अग्रेजी सरकार की ओर से प० मोतीलाल नेहरू से बातचीत की। इसके बाद सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जयकर भी गोलमेज परिषद मे काग्रेस द्वारा भाग लेने के बारे मे बिचौलियो का काम करने लगे। उनके ही माध्यम से प० मोतीलाल नेहरू, प० जवाहरलाल नेहरू और डा० महमूद नैनी जेल मे लाये गए, जहा महात्मा गाधी और काग्रेस वर्किंग कमेटी के दूसरे सदस्य मौजूद थे, पर पटरी नही बैठी और मामला टूट गया।

मार्च, १९३१ ई० मे काग्रेस और सरकार के बीच कुछ दिन के लिए सुलह या अस्थायी समझौता हुआ, ताकि दोनो मिलकर आगे बातचीत कर सकें। यह गाधी-इर्विन-समझौता कहलाया। सविनय अवज्ञा-आदोलन कुछ दिन के लिए रोक दिया गया और हजारो सत्याग्रही कैदी छोड़ दिये गए। आर्डिनेंस उठा दिये गए।

सितंबर, १९३१ ई० मे कांग्रेस की तरफ से गांधीजी गोलमेज परिषद की दूसरी बैठक में भाग लेने के लिए लदन गये। इधर भारत मे ऐसी समस्याए उठ खड़ी हुई कि कांग्रेस और सरकार दोनों का ध्यान उनपर अटक गया। महात्मा गांधी इग्लैड पहुचे। पर उनके वहा पहुचते-पहुचते ब्रिटिश मत्रिमण्डल बदल गया। अब वेजवुड-वेन के स्थान पर सर सेम्युअल होर भारत-मत्री हुए। पर मिस्टर मैकडानल्ड अपनी लेवर पार्टी के अधिकाश लोगों से अलग होकर प्रधान मत्री वने रहे। यद्यपि नाम के लिए तो यह सब दलों का मत्रिमंडल था तथापि वास्तव मे यह कन्सर्वेटिव (अनुदार) दल का ही मत्रिमण्डल बना। इसलिए वहा से जो थोडी-बहुत उदारता की आशा की जा सकती थी, उसका रास्ता भी बद हो गया। गाधीजी ने काग्रेस की माग पेश की। उनकी बहुत आवभगत और खातिर-दारी भी हुई। पर हिन्दुस्तान के लिए कुछ भी सतोषजनक विधान न बन सका। प० मदनमोहन मालवीय और श्रीमती सरोजिनी नायडू भी वहा गई थी। काग्रेस की ओर से केवल महात्माजी ही थे और उसकी ओर से वही वोलते थे। गोलमेज परिषद की दूसरी बैठक के अत मे इस वात का भी प्रयत्न हुआ कि आपस के झगडे तय हो जाय, पर ऐसा हो न सका।

इस परिषद में जहा ब्रिटिश भारत का भाग्य-निर्णय होने वाला था वहा देशी रियासतो के बारे मे भी कोई फैसला लिया जाने वाला था। देशी रियासतों और सर्वोपरि सत्ता का प्रश्न सभी राजाओं के सामने था। रजवाडों मे से अधिकांश इस मत के थे कि उनका सीधा सबध ब्रिटिश सरकार से हो, फिर भले ही भारत को औप-निवेशिक स्वराज्य दिया जाय या पूर्ण स्वतन्त्रता।

भारत के सबसे ज्यादा प्रगति-विरोधी तत्वो के साथ गठजोड़ करने का यत्न ब्रिटिश नीति का भंडा फोडने वाला पहलू रहा है। अग्रेजो ने अपने सहारे के लिए निहित स्वार्थो को एक झण्डे के नीचे लाने का यत्न किया था और उन्हे यह हौआ दिखाकर डराया गया कि अगर भारत से सत्ता उठ जायगी तो सामाजिक क्रांति हो जायगी। इसके लिए उन्होंने सामन्ती राजा लोगो को अपने बचाव की पहली

कतार बनाया था।

ऐसी परिस्थिति मे बापनाजी ने नरेन्द्र मण्डल मे व उस वक्त देशी राज्यो के सामने जो राजनैतिक समस्याए थी, उनको सुलझाने में महत्वपूर्ण कार्य किया था। उस समय मध्य भारत के देशी नरेशो व उनके मंत्रियो की इन्दौर मे कई सभाएं हुई, सम्मेलन हुए, जिनमे उनको फेडरेशन व कानफेडरेशन की समस्याओ का सामना करना पडा। इस नाजुक स्थिति मे बापना साहब ने इन समस्याओ का धैर्य से मुकाबला किया तथा अपना सारा समय व शक्ति लगाकर इन विषयो पर एक विस्तृत विवरण तैयार करके इस ऐतिहासिक अवसर के अनुरूप सही नेतृत्व किया और मध्य भारत के देशी राज्यो को ठोस व ठीक सलाह दी कि उनके हित मे उस समय सर्वोत्कृष्ट बात कौन सी है और वे किस प्रकार उत्तमता से अपने भविष्य की रक्षा कर सकते है। वह नरेन्द्र मण्डल की कमेटियो के भी सदस्य रहे, जहा उनकी योग्य सलाह का बहुत आदर किया जाता था। उनके इन समस्याओ के अध्ययन व इस सबध की सेवाओ के फलस्वरूप ही सितम्बर १६३१ मे लन्दन मे होने वाली गोलमेज परिषद की दूसरी बैठक मे उनको देशी नरेशो का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला। इसके लिए यद्यपि राजा-महाराजाओ की ओर से महाराजा होल्कर को प्रतिनिधि नियुक्त किया गया किन्तु बापनाजी की सेवाओ के कारण महाराजा होल्कर ने यह दायित्व उन्ही को सौप दिया।

इस गोलमेज परिषद मे श्री बापना को अन्य भारतीयो की तरह यह आशा थी कि अवश्य ही यहा समस्याओ का कुछ हल निकलेगा, क्योकि उस समय इग्लैंड मे पहली मजदूर सरकार मेक्डानल्ड के प्रधान-मन्त्रित्व मे बनी थी और मजदूर पार्टी की भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के साथ गहरी सहानुभूति थी। श्री सिरेमल बापना ने बडी मुस्तैदी के साथ रजवाडो का मामला इस सम्मेलन मे उपस्थित किया, पर इग्लैड के तत्कालीन प्रधान मत्री मैक्डोनल्ड ने उनको भाषण देते समय बीच मे ही उसे जल्दी से समाप्त करने के लिए कहा। बापना साहब को इससे देश की प्रतिष्ठा पर चोट लगती-सी दीख पड़ी,

इसलिए उन्होने अपना भाषण उसी समय बद कर दिया। इसका असर यह हुआ कि बाद में प्रधान मंत्री मैक्डानल्ड ने अपनी गलती महसूस करके उनसे पत्र द्वारा माफी मागी।

इधर अंग्रेजी सरकार ने तिकडमे करके कट्टर सम्प्रदायवादियो की आड में भारत की आजादी के रास्ते मे रोडा अटका दिया। मन्दिर-प्रवेश के सवाल पर ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुओं मे प्रथम श्रेणी के कट्टरपन्थियो के साथ हर तरह की हमदर्दी और दिली प्रेम दिखाकर बडा अजीब नजारा पेश किया। सवर्ण हिन्दुओ और अछूतों में सदा-सदा के लिए खाई पैदा करने की इस चाल को महात्मा गाधी ने समझ लिया था। परिषद की दूसरी बैठक में एकता तो हुई नही, इसके बजाय अंग्रेज, मुसलमान और हरिजनों मे एक प्रकार का समझौता हुआ। जब आपस में बाते तय न हो सकी तो मिस्टर मैक्डानल्ड ने १६ अगस्त, १९३२ को साम्प्रदायिक मसले पर अपना फैसला दिया जिसके द्वारा मुसलमानों की प्रायः सभी मागें पूरी कर दी गई। इससे हिन्दुओ और सिखों में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ। इसमे हरिजनो के लिए भी अलग चुनाव की व्यवस्था थी। महात्माजी ने इसका बहुत विरोध किया था। उन्होने अपने एक भापण मे यहातक कह दिया कि हरिजनो के लिए यदि अलग निर्वाचन-क्षेत्र कायम किये गए और उनको सवर्ण हिन्दुओं के चुनने में अथवा सवर्ण हिन्दुओ को उनके चुनने मे भाग लेने का अधिकार न मिला, तो इस प्रकार की अलग निर्वाचन-विधि का यह तीव्र विरोध करेगे तथा अपनी जान तक दे देने के लिए तैयार रहेगे। इसी संदर्भ में महात्मा गाधी ने विवश होकर २० सितम्वर, १९३२ को आमरण अनशन शुरू कर दिया, जिससे सारे देश मे वहुत हलचल मच गई।

मि० मैक्डानल्ड के फैसले में एक वात यह भी थी कि वह फैसला तबतक कायम रहेगा जवतक उन जातियो के लोग, जिनका फैसले से सबध था, आपस के समझौते से उसके स्थान पर कोई दूसरी वात तय न कर ले। गाधीजी के अनशन के कारण स्वभावत: इस ओर लोगों का ध्यान गया। अव इस वात की कोशिश होने लगी कि अस्पृश्य वर्ग के लोगो को ही राजी करके अलग निर्वाचन-क्षेत्र छुड़वाए

जाय। बबई मे डाक्टर अम्बेदकर रहते थे। सरकार ने उनको ही अस्पृश्यो का नेता बनाकर गोलमेज परिषद मे भेजा था। उनसे बाते होने लगी। एक-दो दिन बीत गये, पर कोई बात तबतक तय न हो सकती थी जबतक गाधीजी से भी राय न ले ली जाय। इस बीच मे अस्पृश्य वर्ग की जनता मे भी हलचल मच गई, क्योकि अस्पृश्यता-निवारण मे गाधीजी ने बहुत काम किया था। उस वर्ग के लोग देखने लगे कि महात्मा गाधी की मृत्यु यदि इसी कारण हो जायगी तो उनके लिए यह एक अमिट कलक हो जायगा।

गाधीजी ने जिस कारण से अलग क्षेत्र का विरोध किया था वह कारण भी कुछ लोग अवश्य समझते थे। गाधीजी का कहना था कि अस्पृश्य लोग हिन्दू ही है, पर किसी कारण से समाज मे ऐसी रूढि हो गई है कि हिन्दू जाति के इतर वर्ग उनको आज अस्पृश्य समझने लगे हैं। वह खुद इस अस्पृश्यता को हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज का कलंक मानते है और इसे हटा देना चाहते है। यो तो जो अस्पृश्य, ईसाई या मुसलमान हो जाता है और इस प्रकार हिन्दू समाज तथा हिन्दू धर्म से अलग हो जाता है, वह उनसे बिल्कुल कट जाता है, फिर भी वहा पर कुछ हद तक अस्पृश्यता रह ही जाती है, तथापि वह हिन्दुओं के लिए अस्पृश्य नही रह जाता। इसलिए यह प्रश्न उनके सम्बन्ध मे ही होता था, जो हिन्दू रह जाते है। गाधीजी समझते थे कि राजनैतिक चुनाव के लिए भी यदि अलग क्षेत्र हो जायगे तो यह एक नया अछूतपन हो जायगा। जिस अछूतपन को दूर करने का प्रयत्न किया जा रहा है तथा जहा इसके दूसरे रूप हट रहे है वहा यह उसका एक नया कारण एव रूप हो जायगा। अछूतो के शिक्षित नेता भी यह मानते थे कि जब सब अधिकार चुनाव के ही बल पर अवलम्बित होगे तो उनको भी अपने सख्या-बल पर लाभ मिलना चाहिए और वह तभी पूरी तरह मिल सकेगा जब उनके लिए अलग चुनाव-क्षेत्र हो जायगा। इसीलिए गोलमेज परिषद मे डाक्टर अम्बेदकर ने इसपर जोर दिया था।

गाधीजी ने एक दिन सध्या को डा० अम्बेदकर से बहुत बाते की और उनसे जोरदार अपील भी की। बाते तय हो गईं। मुख्य

शर्तें यह थी कि अलग निर्वाचन-क्षेत्र नही होगे, उनके बदले में चुनाव का तरीका यह होगा कि निर्वाचित संख्या में अस्पृश्य वर्ग के लिए जगहे सुरक्षित रहेगी, चुनाव के समय अस्पृश्य मतदाताओ को अधिकार होगा कि प्रत्येक स्थान के लिए चार उम्मीदवार मनोनीत कर दें। यदि चार से अधिक उम्मीदवार हो तो केवल उनके ही वोट से चार ही चुन लिये जाय और इन चार की ही उम्मीदवारी कायम रहे, चारों नामो पर वोट लिये जायं और वोट सवर्ण तथा अस्पृश्य सभी हिन्दू दे। जो सबसे अधिक वोट पाये वे ही चुने जाय। यह व्यवस्था दस बरसो तक रहेगी और उसके बाद में इसपर फिर विचार किया जायगा। मिस्टर मैक्डानल्ड के फैसले में अस्पृश्यों को जितनी जगहे मिली थी उनकी सख्या बहुत बढ़ा दी गई। वह उनकी जनसख्या के अनुपात से बढाई गई। ये बाते तय हो गई और प्रधान मंत्री मैक्डानल्ड के पास तार भेज दिया गया। उन्होंने इसे मजूर कर लिया और अपने फैसले को इस हद तक बदल दिया, जिसके फलस्वरूप गांधीजी ने अपना अनशन तोड़ दिया।

साप्रदायिक निर्णय के बाद गोलमेज परिषद की तीसरी बैठक भी बुलाई गई, यद्यपि इग्लैड के उपनिवेश-मन्त्री सर सैम्युअल होर को यह विचार ही अरुचिकर लगता था कि गुलाम देश के प्रतिनिधियो को गोल मेज पर बराबरी के दर्जे पर बैठाया जाय। इसमें केवल ४६ नामजद प्रतिनिधियो को बुलाया गया और इसमें कांग्रेस के शामिल होने का सवाल ही नही उठता था। इस बैठक मे जिन्ना साहब को भी नही बुलवाया गया था। जाहिर है कि जिन्ना साहब इस बात से बडे परेशान थे कि उनको गोलमेज परिषद मे नामजद क्यों नही किया गया। उन्होने २४ दिसम्बर, १९३२ को बापनाजी को जो पत्र लिखा था, उसमे इस बात की चर्चा करते हुए कहा था :

"आपके २४ नवम्बर के पत्र के लिए धन्यवाद। इस सम्मेलन (गोलमेज परिषद) मे आमन्त्रित न किये जाने से मै वास्तव में अपने आपको बडा हल्का-सा महसूस कर रहा हू। किसी भी समझदार व्यक्ति को यह बताने की जरूरत नही है कि इस प्रकार की चर्चाओं

का कोई खास नतीजा निकलनेवाला नही है। यह देखकर खेद होता है कि हमारे लोग एक मकडी के जाल मे फसते चले जा रहे हैं। हम राज्य-कौशल का प्रारम्भिक पाठ तक नही सीख पाए है। अंग्रेज निर्णय करेंगे और हम केवल इतने भर के लिए है कि उनपर अमल करे और आपस मे लडते रहे। यहा चर्चाओ के सम्बन्ध मे वातावरण उत्साहजनक नही है, अखिल भारतीय सघ की पहली शर्त यह है कि उसमे कुछ नरेशो को शामिल होना ही चाहिए और इस सम्बन्ध में देशी रियासतो को निर्णय लेना है। मेरे विचार से इनमे से अधिकाश रियासते इस योजना मे शामिल होने के लिए उद्यत दिखाई नही देती। मैं समझता हू कि अभी भी जो कुछ उन्हे करना है उसे न तो भलीभाति समझती है और न महसूस ही करती है। यदि इस योजना को अतिम रूप से मान लेती है तो यह उनके तथा ब्रिटिश भारत के लिए एक बुरा दिन होगा। कुछ सप्ताहो मे ही सारी बाते और अधिक स्पष्ट हो जायगी।"

लेकिन कुछ राजनैतिक प्रश्नो पर समझौता हो जाने से ही गाधीजी सतुष्ट होनेवाले नही थे। उनके हृदय मे तो अस्पृश्यता को जला देने के लिए आग धवक रही थी। यह आग केवल चुनाव मे एक क्षेत्र अथवा अस्पृश्यो को कुछ सुरक्षित जगहे मिल जाने से कैसे बुझ सकती थी। वे सव सवाल उस समय तक उठते ही रहेगे जवतक उनके साथ अछूतपन का व्यवहार होता रहेगा और हिन्दू जाति उनको मनुष्यो की श्रेणी से एक प्रकार अलग ही समझती रहेगी। इसलिए वह इसे निर्मूल कर देनें का भी उपाय करना चाहते थे। अनशन समाप्त करने के कुछ समय वाद एक अच्छी सभा हुई, जिसमे हिन्दुओ की ओर से इस वात की प्रतिज्ञा की गई कि वे अछूतपन को दूर करा देने का प्रयत्न करेगे। इस काम को चलानें तथा दूसरे प्रकार से अछूतो को सेवा करने के लिए एक सस्था कायम की गई। गाधीजी ने उस समय तक 'अछूत' शव्द के वदले मे 'हरिजन' शव्द का व्यवहार आरम्भ कर दिया था। इसलिए उस सस्था का नाम 'हरिजन सेवक सघ' रखा गया। उसके सभापति हुए सेठ घनश्यामदास विडला और मत्री श्री अमृतलाल ठक्कर,

जिनको लोग प्रेम से 'ठक्करबापा' कहते है। वह संस्था अभी तक अच्छी तरह काम कर रही है। सारे देश मे उसकी शाखाए कायम हो गई है।

बापनासाहब की महात्मा गाधी के कार्यो में कितनी श्रद्धा-भावना थी, यह इन्दौर मे हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन से पता चलता है, जिसका वर्णन अन्यत्र दिया गया है। अब गाधीजी के हरिजन-उपवास के बाद हरिजन-उद्धार का काम सारे भारत मे जोर-शोर से आरम्भ हुआ तो बापनाजी ने भी इसे सफल बनाने में हार्दिक सहयोग दिया।

बापनाजी कभी रूढिवादी नही रहे थे। वह हमेशा समाज-सुधार के पक्षपाती थे। शिक्षा-काल से ही वह समाज-सुधार मे दिलचस्पी लेते थे और सन् १९०४ में ही उन्होनें समाज-सुधार के सम्बन्ध मे एक जोरदार वक्तव्य प्रकाशित किया था। अपने प्रशासन काल मे उन्होने समाज-सुधार के अनेक कायदे-कानून बनाये थे। समाज-सेवा एव समाज-सुधार की अनेक सस्थाओ को वह सहायता पहुचाते थे। इसी तरह विधवा-आश्रम और अनाथालय आदि को भी उनके द्वारा प्रोत्साहन मिलता रहता था। समाजोत्थान के सभी कामों मे उन्होने सक्रिय योगदान दिया था जिनमें बाल-शिक्षा, बाल-विवाह, नुकते (मृतक-भोज) मे वृथा खर्च न करना आदि विषय उल्लेखनीय है।

दलित वर्गो की हालत सुधारने के लिए इन्दौर राज्य में मार्च १९३८ मे एक युगान्तरकारी घोपणा की गई, जिसके अन्तर्गत सभी राजकीय मन्दिर हरिजनो के दर्शनार्थ खोल दिये गए। सभी विद्य-मान शासकीय कुए एव भविष्य में बनाए जानेवाले कुए सभी वर्गो के लिए समान रूप से खोल दिये गए। सार्वजनिक स्थानो जैसे होटल-रेस्तराओ तथा लोक-वाहनो मे हरिजन अबाध रूप से प्रवेश कर सकते थे। उन्हे सभी क्षेत्रो में मकान आदि बनाने की भी अनुमति दी गई, जहा उच्च जाति के लोग मकान बना सकते थे। राजकीय शैक्षणिक सस्थाओ मे हरिजन-बालको के प्रवेश पर से सभी पाब-न्दिया हटा ली गई और राजकीय सेवाओ मे उनकी भरती तथा

राजकीय कार्यालयो और भवनो मे उनके प्रवेश पर से सभी प्रतिबन्ध हटा लिये गए ।

उपर्युक्त निर्णयो को कार्यान्वित करने के लिए राज्य मे एक केन्द्रीय हरिजन समिति स्थापित की गई । सम्पूर्ण राज्य के लिए एक व्यापक कार्यक्रम बनाया गया । परगना कमेटिया तथा जिला बोर्ड गठित किये गए । शहरो मे ये कार्य हरिजन-सेवक-सघ के सुपुर्द किये गए । प्रत्येक जिले के लिए पूर्णकालिक प्रचारक रखे गए, जो अस्पृश्यता-निवारण तथा हरिजन-उद्धार का प्रचार-कार्य करते थे । हरिजनो को नि शुल्क औषधिया दी जाती थी और उनके लिए गृह-निर्माण के हेतु पर्याप्त रकम मजूर की गई । समाज-सुधार के क्षेत्र मे यह उल्लेखनीय उपलब्धि थी । महात्मा गाधी की प्रेरणा से हरिजनो को इस प्रकार की जो स्वतन्त्रता दी गई, उनमे इन्दौर राज्य का उल्लेखनीय स्थान है । त्रावणकोर राज्य के अतिरिक्त भारत मे और कही छुआछूत मिटाने की दिशा मे इतना महत्त्वपूर्ण कदम नही उठाया गया था । ब्रिटिश भारत के सभी प्रान्तो मे छुआछूत वैध मानी जाती थी ।

इस घोषणा को कार्यान्वित करने और इसके स्वागत के लिए हरिजन सेवक सघ इन्दौर द्वारा मार्च १९३८ मे नगर के प्रसिद्ध वैष्णव देवस्थान—गोपाल मदिर—मे हरिजन-प्रवेश कार्यक्रम बनाया गया । इससे इन्दौर के कट्टरपथी वर्गो मे खलबली मच गई । उनके प्रतिनिधि सरकार पर दबाव डालने के लिए बापनासाहब से मिलने लगे । मन्दिर-प्रवेश के विरुद्ध जबरदस्त प्रचार होने लगा । धीरे-धीरे मन्दिर-प्रवेश-विरोधी आन्दोलन जोर पकडने लगा । इस आन्दोलन को इन्दौर के अत्यन्त प्रभावशाली व्यापारी वर्ग का समर्थन प्राप्त था । इधर हरिजनो का उत्साह और जोश भी दिनोदिन बढता जा रहा था । हरिजन मोहल्लो मे सभाए हो रही थी । भजन-मंडलिया सगठित हो रही थी, जलूस के लिए नारो, भजनों और व्यायाम-प्रदर्शनो की व्यवस्था की जा रही थी । दिनोदिन वातारवण उत्साहवर्धक परन्तु साथ-ही-साथ तनावपूर्ण होता जा रहा था । बापनाजी दोनो पक्षो की बढती हुई सरगर्मियो से परिचित थे । परन्तु वह

हरिजनो के नागरिक अधिकारो की अवहेलना नही करना चाहते थे। उन्होने हरिजन-सेवक-सघ के मन्त्री को बुलवाकर कहा कि बढ़ते हुए तनाव को देखते हुए क्या हरिजन-सेवक-सघ जुलूस का कार्यक्रम स्थगित करने पर विचार कर सकता है ? सघ के मन्त्री ने बापनाजी से कहा—पहले हरिजनो के उत्साह को जागृत कर हमने उन्हे मन्दिर-प्रवेश के लिए तैयार किया। अब हम यदि यह कार्यक्रम स्थगित कर दे तो हरिजन-समाज पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा और सघ तथा राज्य-सरकार से उनका विश्वास उठ जायगा। दूसरे, इस ऐतिहासिक घोषणा का उचित समारोह के द्वारा स्वागत होना चाहिए, वरना यह भ्रम होगा कि हरिजनो की निगाह में नागरिक अधिकारो का कोई महत्त्व नही है।"

बापनासाहब को भी यह दृष्टिकोण उचित मालूम हुआ। अन्त मे वह चिरस्मरणीय दिन आया, जिसके लिए इन्दौर का हरिजन-समाज उत्कठा से प्रतीक्षा कर रहा था। इधर प्रतिक्रियावादी वर्ग भी अपनी सारी शक्ति सगठित कर विरोध करने पर तुला हुआ था। सवेरे से सचिवालय मे भीड एकत्र होने लगी, मन्त्रियो के कार्यालय में आते ही प्रतिनिधि-मडलो नें उनपर प्रभाव डालना प्रारम्भ किया। सैकड़ो व्यक्ति सचिवालय के प्रागण मे लेट गये कि जबतक सरकार जुलूस बन्द नही करेगी तबतक हम यहा से नही हटेंगे और न किसी मत्री को सचिवालय से जाने देगे।

मत्रिमडल की बैठक हुई। दकियानूसी वर्गो के प्रतिनिधि-मण्डल ने अन्तिम बार मत्रिमडल पर अपने सम्पूर्ण प्रभाव का प्रयोग किया। उन्होने यह भी कहा कि यदि यह जुलूस निकला तो निश्चय ही शान्ति भग होने का बडा खतरा है। प्रधान मन्त्री बापनाजी ने फिर हरिजन-सेवक-सघ के मन्त्री को बुलाया और उनसे कहा कि आपने देखा कि मदिर-प्रवेश-विरोधी तत्त्वो मे कितनी उत्तेजना फैल रही है। शान्ति भग होने की आशका है। इस परिस्थिति में क्या हरि-जन-सेवक-सघ जुलूस निकालना चाहेगा ?

हरिजन-सेवक-सघ के मन्त्री ने उत्तर दिया, यदि आप शान्ति-रक्षा के लिए यह आवश्यक समझते है कि जुलूस न निकाला

ज़ाब-तो सरकार को जुलूस बन्द करने का आदेश देना चाहिए। संघ हरिजनो को यह राय कैसे दे सकता है कि अपने नागरिक अधिकारो की प्राप्ति को समारोहपूर्वक न मनाये? इसपर श्री वापना नें कहा कि यदि वह हरिजनो की सभा किए रखे तो वह उस सभा मे आकर उन्हे राय देंगे कि नगर की शान्ति और एकता को ध्यान में रखते हुए आप लोग आज का जुलूस स्थगित कर दीजिए।

सघ के मन्त्री ने निवेदन किया कि यदि आप सभा मे आकर यह राय देंगे तो हरिजन-सेवक-सघ भी अपनी ओर से हरिजनो से आग्रह करेगा कि वे जुलूस का कार्यक्रम आज न रखे। उन्हे विश्वास है कि नगर का सारा हरिजन समाज उनका (वापनाजी का) आदेश कभी नही टालेगा। इसपर पुलिस के अग्रेज महा-निरीक्षक नें कहा कि वह प्रधान मन्त्री को भीड़ मे जाकर भाषण देने की राय नही देंगे। फिर भी वापनासाहव भाषण देने के लिए तैयार हो गये, क्योकि वह चाहते थे कि शान्ति भग हुए बिना जुलूस निकल सके। जव महा-निरीक्षक ने वापनाजी का भीड में जाकर भाषण देने का निश्चय देखा तो उसने शान्तिपूर्ण ढग से जुलूस निकलवाने की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली और यथासमय जुलूस निकला। हजारो की सख्या में हरिजन तथा सुधारप्रेमी नागरिक जुलूस मे शामिल हुए। उस समय का उल्लास और जोश देखते ही वनता था। इन्दौर के इतिहास मे ही नही, वरन् भारत के छुआ-छूत-निवारण के इतिहास मे यह दिन विशेष महत्त्व रखता है। इस महान् अवसर पर वापनासाहव का निर्णय उनके नागरिक अधिकारो के साहसपूर्ण समर्थन, निडरता एवं कर्त्तव्यपरायणता का वडा अच्छा उदाहरण है।

१९३८ में विघान-सभा को सम्वोधित करते हुए श्री वापना नें कहा था, "हिन्दू समाज के एक वडे वर्ग के साथ दुर्व्यवहार तथा उसके दमन के लिए नैतिक या मानवीय आधार पर कोई उचित कारण नही हो सकता। प्रतिक्रियावादियो का किसी धार्मिक आधार पर भी समर्थन नही किया जा सकता। हरिजनो को दी जानेवाली स्वतन्त्रताओ के घोषणा-पत्र की, जिसका उद्देश्य तथाकथित दलित

वर्गों के लोगों की हालत सुधारना था और उनपर लगाये गए नैतिक तथा सामाजिक नियन्त्रणों को शीघ्रता से हटाना था, १९३८ में जारी किया गया है।

"समूचे देश में हरिजनों तथा उदार एव प्रगतिशील हिन्दुओं ने इस कदम का हार्दिक एवं उत्साहपूर्वक स्वागत किया है और राज्य में हरिजन-उद्धार का काम तेजी से प्रारम्भ कर दिया गया है। इस काम में सहायता देने के लिए जिला बोर्ड तथा परगना कमेटिया गठित की गई और हरिजन बस्तियों का निरीक्षण करने के लिए प्रचारक नियुक्त किये गए, जो उनका जीवन-स्तर ऊचा उठाने के लिए हर सभव सहायता देगे। इस बड़े कार्य के केवल उज्ज्वल पक्ष की ओर ही ध्यान आकृष्ट करना एक गलत बात होगी। इन्दौर के कुछ अनुदार सनातनी लोगों ने इस घोषणा का इतना उग्र विरोध किया कि जब अपने नये अधिकारों के प्रयोग मे हरिजनो ने मदिरो मे प्रवेश करना चाहा तो सनातनियों ने उन्हे ऐसा करने से रोकने का प्रयत्न किया और बडी कठिन तथा उत्तेजक स्थिति पैदा हो गई। लेकिन मुझे खुशी है कि अच्छाई की आखिर में जीत हो गई।

"पुरानी परंपरागत रूढिया तथा आचार-विचार भी प्रगति में बाधक होते है। राज्य की शक्ति और समृद्धि इस बात पर निर्भर करती है कि हम नवीन रूप मे प्रतिष्ठित मानव-समाज की उदार तथा व्यापक विचारधारा में जो कुछ सर्वोत्तम है, उसे अपनाने के लिए कहा तक तत्पर रहते है और उन सामाजिक तथा प्रशासनिक सिद्धान्तो का कहा तक अनुगमन करते है, जिन्हे परंपरा तथा इतिहास ने उपयोगी पाया है। एक बहुत बडे जन-समुदाय को बहुत अधिक समय तक गुलामी की जंजीरो में जकडे रखना सत्ताधारी की सकीर्ण मनोवृत्ति तथा अनुदार विचारधारा का परिचायक होता है और इससे अततोगत्वा उसे ही हानि उठानी पड़ती है। मैं आशा करता हू और आप भी शायद मुझसे सहमत होंगे कि इन्दौर के सनातन धर्मावलबी भी धीरे-धीरे यह महसूस करने लगेंगे कि अपने अभागे भाइयो की दशा सुधारने का उन्हें उपयुक्त अवसर प्रदान करना एक न्यायोचित कार्य है। इस प्रकार वे हिन्दू समाज की एक कमजोर कडी होने

के स्थान पर उसकी शक्ति के स्रोत होगे।"

वापनाजी की प्रसिद्धि दिन-प्रतिदिन बढती जा रही थी। देशी राज्यो से सम्बन्धित समस्याओ पर विचार-विमर्श करने के लिए उस जमाने मे बराबर सम्मेलन और गोष्ठिया होती रहती थी, जिनमे देशी राज्यो के नरेश और मन्त्री भाग लेते थे। यहा पर श्री सिरेमल वापना का सर्वश्री अकबर हैदरी, कृष्णमाचारी, जोसेफ मोर, मनुभाई मेहता, षण्मुखम् चेट्टी, पणिक्कर, मिर्जा इस्माइल तथा गोपालस्वामी आयगर जैसे व्यक्तियो से निकट सम्पर्क बना। ये सभी वापनाजी की सूझ-बूझ और परामर्श को अमूल्य मानते थे। महाराजा धौलपुर, महाराजा पटियाला और नवाव भोपाल तो वरावर उनसे परामर्श लेते थे। इसी पृष्ठभूमि मे कुछ वर्षो पहले जैसे उन्होने रजवाडो का गोलमेज परिषद मे प्रतिनिधित्व किया था उसी प्रकार १९३५ मे भारत सरकार ने उनको राष्ट्र-सघ मे भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए नामजद किया। राष्ट्र-सघ सवसे पहली सस्था थी, जिसने यह प्रयत्न किया कि अलग-अलग देशो के झगडे शान्तिपूर्ण ढग से मेज पर बैठकर निपटा लिये जाय। यह आजाद और स्वशासित राज्यो का एक सघ था और इसका उद्देश्य था, 'न्याय और आत्म-सम्मान के आधार पर आपसी सबंध स्थापित करके भावी युद्धो को रोकना और ससार के राष्ट्रो के बीच दुनिया की चीजो और दिमागी वातो से ताल्लुक रखनेवाले मामलो मे सहयोग वढाना।' वडी तारीफ के काबिल थे ये मकसद। सघ के हर सदस्य-राज्य ने वादा किया कि जवतक बिना लडाई के समझौते की सारी सम्भावनाए खत्म न हो जाय तवतक वह किसी साथी-राज्य से युद्ध नही छेडेगा और अगर छेडेगा भी तो उसके वाद नौ महीने छोडकर। कोई सदस्य-राज्य इस वचन को भंग करे, उस हालत मे दूसरे राज्य इस वचन से वधे हुए थे कि उस राज्य के साथ अपने लेन-देन के और माली रिश्ते तोड दे।

सघ मे एक तो असेम्वली शामिल थी, जिसमे तमाम सदस्य-राज्यो के प्रतिनिधि लिये गए थे और एक कौसिल थी, जिसमे वड़ी-वडी शक्तियो के स्थायी प्रतिनिधियो के अलावा असेम्वली के

चुने हुए कुछ और प्रतिनिधि भी आ सकते थे। संघ का एक सचिवालय रक्खा गया था, जिसका सदर मुकाम जेनेवा था। संघ की गतिविधियों को संचालित करने के लिए अन्य विभागों की भी स्थापना की गई। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर कार्यालय, जिसका संबध मजदूरो के मामलो से था, हेग में अतर्राष्ट्रीय न्याय की स्थायी अदालत और बौद्धिक सहयोग की एक समिति थी। सघ की ये सारी हलचले एक साथ शुरू नही हुई। कुछ हलचले वाद मे शामिल की गई।

कोई भी स्वाधीन राज्य इस सघ मे शामिल हो सकता था, पर चार देशो को जान बूझकर अलग रखा गया था। तीन तो हारी हुई शक्तिया—जर्मनी, आस्ट्रिया और तुर्की थी और चौथी शक्ति थी वोल्शेविक रूस। हा, यह व्यवस्था कर दी गई कि वाद मे ये देश कुछ शर्तो पर सघ में आ सकते हैं। मगर निराली वात यह हुई कि भारत इस सघ का मूल सदस्य वन गया, हालाकि यह उस नियम के विलकुल विरुद्ध था, जिसके अनुसार केवल स्व-शासित राज्य ही सघ के सदस्य हो सकते थे। भारत से मतलव था भारत की ब्रिटिश सरकार और इस चतुर चालवाजी से ब्रिटिश सरकार ने प्रतिनिधि शामिल करने का ढग वैठा लिया, मगर दूसरी तरफ अमरीका ने, जो एक तरफ से सघ का जन्मदाता था, इसमें शामिल होने से इन्कार कर दिया। अमरीकावासियो ने राष्ट्रपति विल्सन की कार्यवाहियो को और यूरोपीय साजिशो व उलझनो को पसन्द नही किया और अलग ही रहने का फैसला किया।

जेनेवा मे १९३५ में श्री सिरेमल वापना ने राष्ट्र-सघ (लीग आफ नेशन्स) के वारे में यह सोचा था और यह विचार भी जाहिर किये थे कि वहुत लोग सघ की तरफ वड़ी रुचि से देख रहे हैं और आशा कर रहे हैं कि वह आजकल की दुनिया के झगडे-फसादो का अन्त कर देगा या कम-से-कम उनमे वहुत-कुछ कमी कर देगा और अमन व खुशहाली का जमाना ले आयगा। सघ को लोकप्रिय वनाने के लिए ये राष्ट्र-सघ समितिया कायम हुई हैं। वहुत-से लोगो ने सघ को एक ढोंग व ढकोसला वतलाया है। अवतक हमें इसका कुछ व्यावहारिक अनुभव हो गया है और शायद इसके लाभो के वारे मे

राय देना आसान हो गया है। सघ ने १६२० ई० के साल के नये दिन से काम करना शुरू किया। अभी तक उसके जीवन के थोडे ही दिन बीते है, पर इतने ही समय मे उसकी पोल बिलकुल खुल गई है। इसमे शक नही कि आज के जमाने की जिन्दगी के गली-कूचो में इसने अच्छा काम किया है, और यह तथ्य कि इसने राष्ट्रो को, या यो कहिये कि उनकी सरकारो को, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ पर विचार करने के लिए एक साथ पुराने तरीको से आगे बढा दिया है। सघ ने भी युद्धो का अत करने की कोशिश नही की, उसने तो केवल युद्धो के रास्ते मे कठिनाइया पैदा करनी चाही, ताकि समय बीतने पर और मेलजोल की कार्यवाहियो से युद्धो का जोश ठडा पड जाय। उसने युद्धो के कारणो को भी दूर करने की कोशिश नही की।

बापनाजी के ऐसे विचारो का वहा इकट्ठे हुए प्रतिनिधियो पर बडा असर पडा। भारत सरकार पर उनकी इन सार्वजनिक सेवाओ और सर्वांगीण चरित्र का इतना प्रभाव पडा कि उसने १६३६ मे उन्हे 'नाइट' (सर) की उपाधि से विभूषित किया।

उस समय के राजनैतिक और सामाजिक नेताओ से भी इनका काफी सपर्क था। महात्मा गाधी दो बार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हुए और दोनो बार यह सम्मेलन इन्दौर मे हुआ। दोनो बार महात्मा गाधी को इन्दौर लाने मे बापनाजी का प्रमुख हाथ रहा। सन् १६३५ में दूसरी बार जब महात्मा गाधी इन्दौर पधारे, उस समय श्रीमती बापना का स्वास्थ्य अच्छा न था। महात्माजी को यह ज्ञात हुआ तो वह स्वय कस्तूरबा को साथ लेकर बापनाजी के यहा गए और उनको आशीर्वाद दिया। महामना प० मदनमोहन मालवीय भी इन्दौर पधारे थे। वह तो बापनासाहब को इन्दौर का रत्न समझते थे। बाबू पुरुषोत्तमदास टडन, सेठ जमनालाल बजाज व डा० मुजे से आपके बहुत निकट के सम्बन्ध थे। ये लोग श्रीबापना के गुणो के प्रशसक थे। जमनालालजी बजाज तो अक्सर बातचीत मे बापनासाहब को अपना पद छोडकर काग्रेस मे शामिल होने का अनुरोध किया करते थे। श्री मुहम्मद अली जिन्ना से भी उनका पत्र-व्यवहार होता रहता था। सर्वश्री मोतीलाल नेहरू, लाला

लाजपतराय, श्रीमती सरोजिनी नायडू, सर तेजबहादुर सप्रू, राज-गोपालाचार्य, श्री गोविन्दवल्लभ पन्त, रफी अहमद किदवई, सेठ गोविन्ददास और श्री संपूर्णानन्द से भी इनका काफी परिचय रहा। सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर श्री बापना की दूरदर्शिता, धैर्य तथा साहस से सबधित घटनाओं का जिक्र किया करते थे। सर विश्वेश्वरैया भी तकनीकी मामलों में इनसे मिलते रहते थे।

बापनाजी के कार्यकाल मे उनकी प्रेरणा और दिलचस्पी से अखिल भारतीय वैश्य सम्मेलन का अधिवेशन तथा अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन हुए और महामना मालवीय के सभापतित्व मे ज्योतिष सम्मेलन हुआ। कवि-सम्मेलन तो यहा अक्सर होते ही रहते थे। ऐसे आयोजनो में उनकी व्यक्तिगत और राज्य की ओर से काफी सहायता की जाती थी। भारतवर्ष की, विशेषतया उत्तर भारत की अनेक सामाजिक व शैक्षणिक सस्थाओं से भी उनका निकट-सम्बन्ध रहा था और उनमे से बहुत-सी सस्थाओ को समय-समय पर वह राज्य की ओर से एवं व्यक्तिगत रूप से आर्थिक सहायता देते रहते थे। भारत धर्म महामडल, वाराणसी, से उनका सपर्क बहुत पुराना था और सन् १९३५ में वाराणसी विद्या-परिषद द्वारा उन्हे उनके विद्या-प्रेम के उपलक्ष मे 'विद्यारत्न' की उपाधि दी गई थी। इसी तरह आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद, वाराणसी, की भी वह सन् १९२८ से बराबर सहायता करते रहे थे और आजीवन उनकी कौंसिल के सदस्य रहे। डाक्टर मुजे के प्रयत्नो से नासिक मे जो सैनिक स्कूल खोला गया था, उसे भी उनके द्वारा पर्याप्त सहायता दी जाती थी।

: ८ :

कुछ लोकोपयोगी कार्य

सन् १९३२ से सन् १९३९ तक बापनासाहब लोक-निर्माणकारी विभागो पर विशेष ध्यान देते रहे। श्रीमत महाराजा की सरकार ने इस अवधि मे अनेक लोकोपयोगी कार्य किये। सन् १९३१ नें 'भूमि राजस्व' तथा 'कृषकाधिकार अधिनियम' पारित किया गया। इसके द्वारा वास्तविक किसानों को उनके खेतो की बिक्री तथा उपपट्टों पर देने की बंदिश लगाकर उनके हितो की रक्षा की गई थी। ये खाते भविष्य में केवल कुछ शर्तो के अधीन ही बिक्री या रेहन किये जा सकते थे या उपपट्टों पर दिये जा सकते थे। कृषि की जमीन केवल वास्तविक किसानो को ही बेची जा सकती थी। इस अधिनियम का उद्देश्य यह था कि असली काश्तकार जबतक वह जमीन को जोतने वाला रहता है तबतक एक न्यूनतम क्षेत्रफल गुजारे के लिए उसके पास रहना ही चाहिए। इसी अधिनियम के आधार पर आगे चलकर मध्यभारत मे 'रय्यतवारी' कानून बना और मध्यप्रदेश का मौजूदा कानून भी बहुत अंशो में मध्यभारत के कानून के आधार पर ही बना है। उस समय एक ऐसी प्रथा भी प्रारंभ की गई, जिसके अनुसार भूमि-राजस्व की बकाया रकमें, यदि पांच वर्ष में वसूल नही हो पाती थी तो छठे वर्ष बट्टेखाते डाल दी जाती थी, ताकि किसानों का भार अधिक समय तक न चलता रहे। किसानो के ऋण की समाप्ति के लिए एक 'ऋण परिशोध अधिनियम' भी बनाया गया।

श्री बापना ने पंजाब के श्री ब्रायन को भी आमन्त्रित किया और पंजाब और मैसूर के राज्यो के आधार पर अपने यहां पर ग्राम-विकास कार्य प्रारम्भ किया। इसके लिए कृषि तथा सहकारिता विभाग का पहले ही समन्वय कर दिया गया था। अब इस विभाग

का और अधिक विस्तार किया गया।

'दि इंदौर प्रीमियर कोआपरेटिव बैंक' की भी काफी प्रगति हुई और सन् १९३५ में बैंक ने अपने कार्यालय के लिए ८५ हजार रुपये की लागत का एक भवन सियागज क्षेत्र मे बनाया। सहकारिता के शिक्षण व प्रचार के क्षेत्र में भी इस बैंक द्वारा उल्लेखनीय कार्य किया गया। यह बैंक उस समय भारत के अच्छे सहकारी बैंको की श्रेणी में समझा जाने लगा था और उसके तत्कालीन मैनेजर को सन् १९३६ में अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी सम्मेलन, पेरिस, मे भारतीय प्रतिनिधि के नाते जाने का गौरव प्राप्त हुआ था। इसी अवधि में मिस केटन नाम की एक महिला को डेनमार्क से, जिसने वहा सहकारिता के क्षेत्र मे काफी कार्य किया था, इन्दौर मे आमत्रित किया गया। मिस केटन ने राज्य के कई ग्रामों में भ्रमण कर तथा सहकारी क्षेत्र में कार्य करनेवाले व्यक्तियो से संपर्क स्थापित कर राज्य के सहकारी आन्दोलन को और भी बढावा दिया।

यह अनुमान करके कि कृषि-क्षेत्र में भी गांवो के सुस्थिर तथा मूलभूत विकास के लिए ग्राम-पंचायते आवश्यक है, सम्पूर्ण इन्दौर राज्य मे १९३९ के पूर्व ग्राम-पचायतो का निर्माण किया गया जबकि अनेक राज्यो मे ग्राम-पचायते १९६० के पश्चात् ही स्थापित की जा सकी हैं। नागपुर के 'न्यायबोध' मासिक द्वारा प्रकाशित १९३९ के 'ग्राम-पचायत विशेषाक' में अंग्रेजी प्रान्तो-सम्बन्धी ग्राम-पचायतो का गावो से उस समय क्या अनुपात था, उसकी जानकारी निम्न प्रकार है.

प्रान्त का नाम	पचायतो का गांवो से अनुपात
१. बम्बई	१ : ९०
२. मध्यप्रान्त	१ : ४३
३. संयुक्त	१ : ३५
४. पंजाब	१ : २२
५. इन्दौर राज्य	१ : १०

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि सन् १९३९ में

इन्दौर राज्य मे प्रमुख अग्रेजी राज्यो की तुलना से गावो में ग्राम-पंचायतें कायम करके जनता को स्वाभाविक स्वराज्य और नागरिकता का शिक्षण देने के प्रयत्न हो रहे थे। इसका श्रेय श्रीवापना को ही है, क्योकि उन्होने ही सन् १६२० में प्रथम और सन् १६२७ मे ग्रामपचायत सम्वन्धी कानून बनवाया तथा सन् १६३६ तक उन्हीके हाथ मे इन्दौर राज्य की बागडोर रही। उनका यह विश्वास था कि गावो के विकास के लिए, खेती की उन्नति के लिए, ग्रामो मे सुदृढ पचायतें, सहकारी समिति और पाठशालाओ का प्रबन्ध होना आवश्यक है। इसी हेतु उन्होने पचायतो की नींव डाली, सहकारी समितियो को प्रोत्साहन देकर गावो मे इस आन्दोलन को बढाया और पाठशालाओ की सख्या गावो मे बढाकर प्राथमिक शिक्षा नि शुल्क कर दी गई। वह प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य करना चाहते थे और इसकी शुरुआत उनके कार्यकाल मे इन्दौर नगर से की गई थी।

इन्दौर नगरपालिका अधिनियम मे इस दृष्टि से सुधार किया गया कि नगरपालिका परिषद अपना बजट स्वय बना सके और उसे लागू कर सके। समस्त मध्य भारत एव राजपूताना मे इन्दौर की नगरपालिका का उस समय प्रथम स्थान गिना जाता था। इसमे निर्वाचित सदस्यो की सख्या भी दो-तिहाई कर दी गई थी।

विधान समिति (लेजिस्लेटिव कमेटी) की स्थापना १६२५ मे ही हो गई थी, किन्तु २६ फरवरी, १६३६ को विधान-समिति को विधान-परिषद (लेजिस्लेटिव कौसिल) का नाम दे दिया गया और इसके अधिकार-क्षेत्र मे वृद्धि कर दी गई। सन् १६३० मे इस विधान-परिषद को सबोधित करते हुए बापनाजी ने कहा था, "आपको अपने मतदाताओ का अधिकृत प्रतिनिधि होने का अधिकार प्राप्त है। आप उनके विश्वासपात्र के रूप मे समाज के लिए एक अच्छे वातावरण के निर्माण मे जुटे हुए है। जनता-जनार्दन तथा देश की सेवा के लिए विस्तृत तथा अनगिनत क्षेत्र है। वास्तव मे यह एक विशेषाधिकार है, जिसके लिए यदि आप वैधानिक रूप से गौरव अनुभव करे तो कुछ अनुचित न होगा। किन्तु प्रत्येक अधिकार के साथ उत्तरदायित्व जुड़ा होता है। वास्तव मे आपका बड़ा उत्तर-

दायित्व अनेक क्षेत्रो में है। आपका अपने निर्वाचन-क्षेत्रो मे, जिनके हितों की रक्षा करने के लिए आप यहा आये है, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व होगा। लेकिन उस उत्तरदायित्व के साथ-साथ इस तथ्य को भी हृदयगम करना है कि एक निकाय के रूप मे विधान-सभा का उद्देश्य अपेक्षाकृत अधिक उच्च है और वह है सामूहिक रूप से तथा शासन के साथ मिल-जुलकर राज्य की भलाई के लिए कार्य करना। राज्य और जनता के हित समान होते है। लेकिन अंश पूर्ण रूप से सदैव छोटा ही रहता है। कोई भी इकाई अकेली चाहे कितनी भी बड़ी और महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, पर वह राज्य की वरावरी नही कर सकती। अत. अलग-अलग निर्वाचन-क्षेत्र से आने पर भी आपको पूरे राज्य की भलाई के लिए उपाय खोज निकालने होगे। दूसरे शब्दों में आपको अधिकतम लोगो की अधिकतम भलाई के लिए प्रयत्न करना होगा।" श्री बापना ने जो सलाह उस समय दी थी, वह आज भी पूरी तरह सार्थक है।

नावालिग शासन के समय से ही वापनाजी द्वारा अपनाई गई दूरदर्शितापूर्ण विदेश-नीति के परिणामस्वरूप १९३१ मे इदौर रेजीडेन्स वाजार राज्य को वापस दे दिया गया और राज्य के चादगढ पर दावे के बदले मानपुर परगना भारत सरकार द्वारा होल्कर राज्य को सौप दिया गया। विदेशी-नीति के क्षेत्र में श्री बापना की ये महान् सफलताए थी। तत्कालीन वायसराय और गवर्नर-जनरल लार्ड विलिग्डन ने कहा था कि इन दोनो ही मामलो में उन क्षेत्रों के निवासियों ने ब्रिटिश अधिकार-क्षेत्र से इदौर शासन के अतर्गत जाना प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। यह इस वात का परिचायक है कि उस समय इन्दौर के लोग वड़े सतुष्ट थे। उनके प्रयत्नो से पोलिटिकल डिपार्टमेट द्वारा दिल्ली मे स्थित वायसराय के कोर्ट मे होल्कर राज्य का एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार स्वीकार कर लिया गया। किसी अन्य राज्य को यह अधिकार प्राप्त नही था। राज्य का एक वरिष्ठ मंत्री इस प्रयोजन से दिल्ली रखा गया।

वापनासाहव का अपने ढग से इस ओर भी ध्यान गया था कि गावों में सदियों से चले आ रहे शिल्प-उद्योग-धधो का विकास हो।

ऐसा न हो कि इस तरह के पेशे वालो के बच्चे पढ़-लिखकर नगरो की ओर चले जाय। किसानो और मजदूरो के लडके पढ-लिखकर अपने गावो मे ही रहकर अपने धन्धो और उद्योगो का विस्तार कर सके, इस हेतु देहाती स्कूलो मे औद्योगिक तथा कृषि-सबधी शिक्षा की व्यवस्था की गई। छात्रो के स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया गया और इस प्रयोजन के लिए आधुनिक ढग का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए शिक्षक भेजे गए। कुछ चुने हुए स्कूलो मे भीगे हुए चूने, दूध और सोयाबीन दोपहर के समय दिया जाने लगा, ताकि बालको का स्वास्थ्य बने। विद्यार्थियो और शिक्षको के सहयोग से ग्राम-सुधार कार्य प्रारभ किया गया। -

यह बापनाजी के प्रयासो का ही फल था कि उस समय राज-पूताने और मध्यभारत मे सबसे अच्छी शिक्षा और चिकित्सा-व्यवस्था इदौर मे ही थी। नाबालिग शासन-काल मे इदौर नगर मे जो अनि-वार्य प्राथमिक शिक्षा आरम्भ की गई थी, उसे और बढाया गया एव दूसरी शिक्षा-सस्थाओ का पर्याप्त विस्तार किया गया। सन् १९३५ मे इन्दौर राज्य के सस्थापक श्रीमत मल्हारराव होल्कर की पुण्य स्मृति मे मल्हार आश्रम को पब्लिक स्कूल का रूप दिया गया।

इन्दौर-स्थित दो नर्सिग होम इन्दौर के निम्न मध्यम वर्गो के लिए वरदान स्वरूप थे। इस प्रकार की सुविधाए दिल्ली-बबई आदि बडे नगरो मे ही उपलब्ध होती है और यहा भी केवल धनी लोग ही उसका लाभ उठा पाते है। आयुर्वेद को भी काफी प्रोत्साहन दिया गया। उनके समय मे कई अच्छे और सफल वैद्य इन्दौर मे थे। कल-कत्ता के श्री गणनाथ सेन की अध्यक्षता मे एक आयुर्वेद सम्मेलन भी इन्दौर मे आयोजित किया गया था।

१९३० मे होल्कर सिविल सर्विस का गठन किया गया। केवल योग्यता के आधार पर सर्वोत्तम व्यक्तियो का चुनाव करने के लिए प्रतियोगिता परीक्षा के जरिए इस सर्विस मे भरती की जाती थी। इस तरह की प्रणाली उस समय तक किसी देशी राज्य मे नही अपनाई गई थी।

सभी स्तरो पर शासन का काम-काज शीघ्र निपटाने के प्रयास

जारी रहे। दीवानी तथा फौजदारी मामलो के शीघ्र निपटाने के लिए इस प्रकार की हिदायतें जारी की गई कि जब कभी दीवानी मामले मे एक वर्ष से अधिक और फौजदारी मामले में चार महीनें से अधिक समय लगे तो प्रत्येक न्यायालय के न्यायाधीशो द्वारा दिये गए आदेशो की प्रतिलिपिया मुख्य न्यायाधीश को भेजी जानी चाहिए। यह एक उदाहरण है कि किस प्रकार श्री बापनाजी के प्रशासन में न्यायालयो में भी मामलो के शीघ्र निपटारे की व्यवस्था की गई थी।

खेल-कूद को भी पर्याप्त प्रोत्साहन दिया गया। परिणामस्वरूप इन्दौर अखिल भारतीय प्रतियोगिताओ का केन्द्र वन गया। एम० सी० सी० ने अपने दौरे में इन्दौर को भी शामिल किया था।

सामाजिक सुधारो के क्षेत्र मे अनेक अधिनियम पारित किये गए, जिनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय है :

१ इन्दौर नुक्ता अधिनियम—इस अधिनियम का उद्देश्य मृत्यु-भोज पर किये जानेवाले खर्च को नियत्रित करना था। सामाजिक विधान-निर्माण के क्षेत्र में इस अधिनियम के साथ एक नये युग का सूत्रपात होता है। इसके अनुसार कोई भी व्यक्ति अपने परिवार के नुक्ते मे १०१ से अधिक व्यक्तियो को भोज नही दे सकता था। यह अधिनियम मुख्य रूप से किसानों के लाभ के लिए था।

२ इन्दौर बालविवाह-निषेध अधिनियम में सुधार किया गया और विवाह-योग्य लड़को की आयु १८ वर्ष और लड़कियो की १४ वर्ष कर दी गई।

३ वृद्धो और नावालिग लड़कियो के वीच विवाहो को निपिद्ध कर दिया गया।

४. एक अन्य अधिनियम द्वारा विवाहों में एक वार मे १०१ से अधिक व्यक्तियो के भोज को निपिद्ध कर दिया गया।

५ इन्दौर वाल अधिनियम।

वापनाजी ने सेठ-साहूकारो से वड़े-वड़े धर्मार्थ व जनहित के कार्य करवाए और राज्य सरकार की प्रेरणा से २६ जनवरी, १९२७ को इन्दौर अनाथालय की स्थापना हुई। १९३२ में 'गणेशशंकर

विद्यार्थी मदिर हाईस्कूल' बनाया गया और इसी जमाने मे दिगम्बर जैन पचायती पाठशाला सयोगितागज मे खोली गई ।

श्री बापना की कपडा बाजार-सबधी सूझ-बूझ ने इन्दौर नगर को देश की वडी-से-वडी कपड़ा-मंडियो की श्रेणी मे ला खडा किया और इन्दौर का कपडा उद्योग, दिन दूना रात चौगुना फैला । यहा इन्दौर के मिलो के उत्पादन से भी ज्यादा का माल बाहर के मिलो का आकर बिकने लगा ।

आज तो इन्दौर के सभी प्रकार के थोक व्यापारी, जो इन्दौर मे स्टाक रखकर बाहर गाववालो को अन्य नगरो मे माल देते है, वे चुगी की माग कर रहे है । वापसी चुगी के कारण वे अन्यत्र के मुकावले व्यापार मे अडचन अनुभव करते है, मगर श्री बापना ने सियागज को अपने जमाने मे चुगी से मुक्त मडी रखा था । क्लाथ मार्केट मे वाउडेड वेयरहाउस था और ट्राजिट पास का तरीका रखा था । उद्योगो को अनेक सुविधाए दी गई थी । कस्टम-फ्री सियागज मडी और इस बाउडेड वेयरहाउस ने इन्दौर को आसपास की सैकडो मील दूर तक की बस्तीवालो के लिए पूर्ति-केन्द्र बना दिया, जिससे यहा के लोग दिल्ली, बम्बई, अहमदाबाद आदि बड़े शहरो के बजाय इन्दौर आने लगे । इस तरह इन्दौर का व्यापार बढा और यहा रुई, सोना-चादी, लोहा, किराना, धान्य, तेल, दाल, तिलहन, घी, और इमारती लकड़ी आदि की अच्छी मडी बन गई । धीरे-धीरे यहा पर बैंकिग, बीमा व सहकारी सस्थाओ का भी विकास हो गया ।

इदौर को आधुनिक रूप देने के लिए अस्पताल, धर्मशाला, सिनेमा, स्कूल, कालेज, छात्रावास ये सब चीजे भी अपनी सूझ-बूझ से श्री वापना ने मुहैया कराई । वाहर आनेवालो को आकर्षित करने वाले साधन जुटाये गए ।

१६३१ मे मध्यभारत मिल-ऑनर्स एसोसिएशन की इदौर मे स्थापना की गई, जिससे मिल-मालिको मे परस्पर सद्भावना बनी रहे और कपडा उद्योग के हितो को सुचारु रूप से सरक्षण और सामूहिक रूप से वल मिल सके और कपडे के उत्पादन, वितरण तथा व्यापारिक व श्रम-सवधी समस्याओ का निराकरण किया जा

सके। कपड़ा व्यापारियों की संस्था 'श्रीमंत महाराज तुकोजीराव क्लाथ मार्केट मर्चेण्ट एसोसिएशन' की स्थापना १५ जुलाई, १६२१ को की गई। इसका उद्देश्य व्यापार-व्यवसाय की उन्नति, व्यापारियो के हितो की रक्षा और व्यापारियो, दलालो, तथा आढतियो में एकता पैदा करना था। १६३५-३६ मे संयोगितागज मर्चेंट ऐसोसिएशन कायम हुई। १६३० में यहा पर स्वदेशी कोऑपरेटिव स्टोर कायम किया गया था और १६३३ मे स्वदेशी मिल कर्मचारी सहकारी सभा कायम की गई थी। कपड़ा मिलों मे स्थापित मजदूरो की ये संस्थाए इसीलिए कायम की गई कि वे उनको आवश्यक सुख-सुविधाए उपलब्ध करा सकें। इस तरह वस्त्र-उद्योग मे सम्पूर्ण भारत मे इन्दौर का पाचवां स्थान हो गया था।

इस तरह उनके समय मे देश के सूती वस्त्र-उद्योग मे इन्दौर का नाम अग्रगण्य हुआ और आम लोग इसे छोटा वम्बई कहा करते थे। इन्दौर नगर ने औद्योगिक, शैक्षणिक, व्यापारिक व सास्कृतिक आदि अनेक क्षेत्रो मे एक साथ प्रगति की। इन्दौर के नागरिकों की सामाजिक उन्नति का उच्च स्तर न केवल आसपास के राज्यो के लिए अपितु ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत अनेक राज्यो के लिए भी ईर्ष्या की वस्तु वन गया था।

वापनाजी मे दूरदर्शिता, साहस और भावी घटनाओं का ठीक-ठीक मूल्याकन करने की क्षमता के साथ-साथ शालीनता और संयम का अद्भुत सम्मिश्रण था, जो हमारे देश में कुछ थोड़े ही लोगो मे देखने को मिलता है। अपनी इस व्यक्तिगत विशेषता के परिणाम-स्वरूप ही वह सब वर्गों को संतुष्ट रखकर इन्दौर राज्य की इतनी प्रगति कर सके।

मे लिखी जायगी । इस क्षेत्र मे उद्योग खोलनेवालो को उन्होने हर प्रकार का प्रोत्साहन दिया । इसका परिणाम यह हुआ कि न केवल होल्कर राज्य से अपितु विदेशो से भी पूजीपति तथा उद्योगपति आकर्षित हुए । एक ओर जहा पूजीपतियो को प्रोत्साहित किया वहा दूसरी ओर औद्योगिक विकास के सामाजिक पहलू को भी नजर से ओझल नही होने दिया । जब कार्य के घण्टे निश्चित करने, श्रम-कानूनो के निर्माण, मजदूरो के कल्याण, उचित मजदूरी तथा सेवा की शर्तो को निश्चित करने का प्रश्न उनके सामने आया तो उन्होने उद्योगपतियो का साहसपूर्वक सामना किया । इन सभी क्षेत्रो मे इन्होने इन्दौर को सदैव तकनीकी दृष्टि से उन्नत नगरो, जैसे बम्बई तथा अहमदाबाद, के समकक्ष लाने का प्रयत्न किया ।

वह समाज के सभी वर्गो के वीच लोकप्रिय थे । उद्योग-क्षेत्र मे भी उन्हे पूजीपतियो और मजदूरो दोनो का विश्वास प्राप्त था और कठिनाई तथा मुसीबत के अवसरो पर दोनो पक्ष के लोग उनके पास जाकर उनका मार्गदर्शन प्राप्त करते थे ।

अपनी दूरदर्शिता से बापनासाहब ने वस्त्र-उद्योग की भी, जो उस समय अनेक कठिनाइयो से होकर गुजर रहा था, बडी सहायता की । इन अवसरो पर इन्दौर के उद्योगपतियो तथा मजदूरो दोनो ने ही उनपर विश्वास किया । उदाहरणार्थ, सन् १९३१-३२ की आर्थिक मदी के समय तत्कालीन वित्त-मत्री के तीव्र विरोध करने पर भी मालवा मिल्स, इन्दौर को वचाने के लिए राज्य की ओर से ऋण-स्वरूप आर्थिक सहायता दिलवाई । इसी तरह जब १९३३ और १९३७ मे मदी के कारण मिलो की हालत खराब हो गई और उन्होने महगाई भत्ते मे कमी की माग की तो बापनाजी ने उसका यथोचित समाधान करा दिया । सन् १९३७ मे तो मजदूरो का प्रतिनिधित्व श्री गुलजारीलाल नदा कर रहे थे । वह भी बापना साहव पर उतना ही भरोसा करते थे, जितना कि उद्योगपति ।

श्री वापना ने इन्दौर के उद्योगीकरण और वाणिज्यिक विकास के लिए बहुत प्रयत्न किया । उनके प्रशासन-काल मे राज्य ने खराव स्थिति के समय उद्योगपतियो की सहायता की और अनेक

बार उन्हें बरबाद होने से बचाया। स्थानीय उद्योगपतियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शासन ने यह आदेश जारी किया कि सभी क्षेत्रो के स्थानीय निर्माताओ से माल खरीदा जाय और राज्य के सभी विभागो में यथासभव उसका उपयोग किया जाय। इस सहानुभूतिपूर्ण रुख और उनकी शिकायतो को तत्परतापूर्वक दूर करने की इच्छा के कारण राज्य मे वाणिज्य तथा उद्योग के तीव्र विकास के लिए तथा गैरसरकारी क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित हुआ।

अन्य महान् पुरुषो की भाति श्री बापना के विचार उनके समय की सीमा मे ही आबद्ध नही थे, अपितु वह भविष्य की तहो में जाकर सार्वजनिक समस्याओं का विवेचन करते थे और तत्कालीन राजनैतिक, वैज्ञानिक तथा आर्थिक गतिविधियो और सामाजिक समस्याओ के तीव्रगामी पद-विक्षेपो को स्पष्ट रूप से देख पाते थे। उन्होने अपने प्रशासन मे वर्तमान और भविष्य मे सतुलन का जो परिचय दिया, वह अति स्तुत्य है। बिना किसी व्यवस्था तथा उथल-पुथल के वह होल्कर राज्य तथा उसकी प्रजा को अनेक सघर्षो और कठिनाइयो से निकाल लाये और उन्हें समृद्धि और प्रगति के रास्ते पर अग्रसर किया।

: ९ :

प्रभाव और लोकप्रियता

इन्दौर राज्य के लोग बापनासाहब को एक महान् शिक्षा-शास्त्री, प्रशासक, समाज-सुधारक तथा इससे भी अधिक उनकी न्यायप्रियता, मानवता, समानता तथा उत्सर्ग-भावना के महान गुणो के कारण उनका महामानव के रूप मे सदैव सम्मान करेगे।

बापनासाहब साढे तेरह वर्ष तक एक सफल प्रधान मन्त्री के रूप मे कार्य करने के बाद जून, १९३९ मे इन्दौर की सेवा से निवृत्त हुए। महाराजासाहब ने उनकी सेवाओ के लिए उन्हे १००० रु० प्रतिमास की विशेष पेशन प्रदान की। इन्दौर राज्य मे सभी वर्गो के लोगो के बीच अपनी लोकप्रियता के कारण वह उनके लिए एक प्रधान मन्त्री से कुछ अधिक थे। उनके लिए वह एक ऐसी जीती-जागती सस्था थे, जिसे वे कभी नही भूल सकते थे। उन्होने लोगो के मन पर एक अमिट छाप छोड़ी और उनके दिलो में एक चिर-स्थायी स्थान प्राप्त कर लिया।

श्री बापना सन् १९२६ से १९३९ तक इन्दौर राज्य की सर्वोच्च सत्ता पर आसीन रहे। वह उन तेजस्वी व्यक्तियो मे से थे, जिन्होने इन्दौर राज्य को चतुर्मुखी विकास के चौराहे पर खडा किया, बल्कि यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि वह आधुनिक इन्दौर के निर्माता थे। उनके कार्यकाल मे नित्य नये सुधार हुए। उन्होने शिक्षा और सामाजिक क्षेत्रो मे भी पर्याप्त सुधार किये और होल्कर राज्य मे न्याय-व्यवस्था को जनता के लिए गतिशील एव सुलभ बनाया। उस समय देश मे विदेशी सत्ता प्रबल थी, किन्तु उन्होने विदेशी शासको को भी अपनी योग्यता और कार्यकुशलता से प्रभावित किया। वे उनकी योग्यता और लगन की भूरि-भूरि प्रशसा करते न थकते थे। नीच-ऊच का भेद उनसे कोसो दूर था। जहां

वह कुशल प्रशासक थे, वहां उनके मन में राष्ट्रीयता, मानवता और सहृदयता कूट-कूटकर भरी थी। वह सादगी और प्रामाणिकता की मूर्ति थे और समय की पाबन्दी का उनका सर्वविदित विशिष्ट गुण था। वह एक आदर्श व्यक्ति थे। जो भी उनके संपर्क में आता वह उनकी सादगी, स्नेह और योग्यता से प्रभावित हुए बिना नही रहता था।

इस प्रकार बापनासाहब का स्थान इन्दौर के निर्माण और इन्दौर के जन-जीवन मे कभी नही भुलाया जा सकता। वह इन्दौर की जनता के बीच शासक के रूप में ही नही, वरन् एक सहयोगी के रूप मे घुल-मिल गये थे और उनकी स्मृतिया सदा ताजा रहेगी। उनका जन्म भले ही उदयपुर में हुआ और उनकी शिक्षा इलाहाबाद में हुई, परन्तु इन्दौर मे वह जितने लोकप्रिय हुए, उतना उस जमाने में देशी राज्यो के प्रधान मत्रियों में कोई भी प्रधान मन्त्री लोकप्रिय नही हो सका। यद्यपि उन्होंने अनेक देशी राज्यों का मार्गदर्शन किया, किन्तु उनके जीवन का प्रमुख समय इन्दौर में बीता और वही पर उन्होने सबसे अधिक सम्मान, श्रद्धा और लोकप्रियता प्राप्त की, जो किसी भी शासक के लिए दुर्लभ है। 'नृपतिजनपदाना दुर्लभ 'कार्यकर्ता' की उक्ति अपने कार्य-कलापों से उन्होने असत्य सिद्ध कर दी, क्योंकि राजा व प्रजा दोनो का प्रेम उन्होने लम्वे समय तक अटूट मात्रा मे प्राप्त किया।

बापनाजी का इन्दौर से ३० वर्ष से भी अधिक समय का सम्बन्ध हो जाने से और सब वर्गो मे अत्यन्त लोकप्रिय होने से वह इन्दौर की एक अविभाज्य संस्था ही बन गए थे। सन् १९३९ जब वह में इन्दौर से सेवा-निवृत्त हुए तब सेवा-निवृत्त पोलिटिकल एजेट मि० जेम्स एलिग्टन ने इग्लैड से लिखा कि श्री वापना के निर्देशन एवं दयापूर्ण व्यक्तित्व के बिना इन्दौर के कल्याण आदि की वात सोची नही जा सकती। किसी-न-किसी रूप में राज्य से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति को उनकी अनुपस्थिति अवश्यमेव बुरी तरह खटकी होगी। यही भावनाएं उस समय भारत सरकार के पोलिटिकल डिपार्टमेंट की थी। यह उस समय के पोलिटिकल सेक्रेटरी बी. जी. ग्लेन्सी के पत्र से स्पष्ट है, जो

उन्होने शिमला से २८-४-३९ को लिखा था और जिसमे उन्होने श्री बापना का इन्दौर से सम्बन्ध-विच्छेद होना राज्य के लिए बहुत खेदजनक बताया था।

इसी तरह के विचार उस समय सभी वर्गो के लोगो द्वारा व्यक्त किये गए थे। इन्दौर की सम्पूर्ण जनता की ओर से सेठ श्रीहुकुमचन्द ने लिखा था, "आपने अपनी उत्कृष्ट और विलक्षण बुद्धि का उपयोग करके व्यापार, उद्योग, नगर और समाज की उन्नति करने मे कोई कसर बाकी न रखी। इसके लिए आपका सारा शहर चिर-ऋणी रहेगा। आज आपके अहसानो के लिए रियासत का बच्चा-बच्चा श्रीमान् का अत्यन्त आभारी है और आपकी जुदाई से जनता आपके प्रेमपूर्ण सद्व्यवहार को याद कर व्याकुल एव आतुर हो उठती है।"

श्री कैनेथ फिट्ज, ए जी जी., सैंट्रल इण्डिया ने कहा था, "मै अपने पुराने और महत्त्वपूर्ण मित्र श्री सिरेमल बापना का न केवल उनके प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व तथा अनेक अवसरो पर उनके अत्यन्त सुन्दर आतिथ्य-सत्कार के कारण ही उनका आभारी हू वरन् मेरे द्वारा जो प्रतिवेदन किये जाते थे, उनको सदा ध्यानपूर्वक सुनने के लिए व मेरे दृष्टिकोण को सरलता से समझने के लिए एक सौजन्यपूर्ण प्रशासक की हैसियत से भी मैं उनका बहुत आभारी हू।"

मैसूर के दीवान श्री मिरजा इस्माइल ने लिखा था, "आप अपने ऊचे पद से, जिसे आपने तेरह वर्षो तक बडी कुशलता और योग्यता से सभाला था, सेवा-निवृत्त हो गए—यह बात समाचार-पत्रो मे पढकर बहुत अचम्भा और दु ख हुआ। मेरे दुःख मे नि सन्देह सारा इन्दौर राज्य सहयोगी होगा, विशेषकर आपकी सेवा-निवृत्ति ऐसे समय हुई जबकि राज्य-शासन के विस्तृत ज्ञान और अनुभव से पूर्ण विद्वत्तापूर्ण सलाह-मशविरा आजकल के विचार-विमर्श मे अत्यधिक बहुमूल्य होता।"

कुछ दिन बाद जब श्री बापनासाहब बीकानेर राज्य के प्रधान मत्री पद पर नियुक्त हुये तो उन्होने लिखा था, "किसी भी प्रशासक के लिए, जिसे देशी राज्यो की समस्याओ के विषय मे पूरा अनुभव

हो, और जो अभी तक शारीरिक दृष्टि से भविष्य में अनेक वर्षों तक देश को सर्वोत्तम सेवाएं अर्पित करने के लिए सक्षम हो, यह कदाचित् ही संभव हो सकता है कि उसको सेवा-निवृत्त होने दिया जाय। वास्तव में ऐसे समय मे जबकि देशी राज्य कठिन परिस्थितियो में से गुजर रहे है, राज्यो के सर्वोत्कृष्ट हित में उनके मामलो से आपका सक्रिय रूप से सम्बन्ध रहना अधिक उचित होगा। आपके सेवानिवृत्त होने से जहा एक ओर इन्दौर को क्षति हुई है, वहा दूसरी ओर बीकानेर को लाभ हुआ है।"

इसी प्रकार इन्दौर प्रजामडल के नेता और होल्कर राज्य के भूतपूर्व मंत्री, श्री बैजनाथ महोदय, ने लिखा है—

"यो तो इस विशाल ससार में प्रत्येक पीढी मे सहस्रो व्यक्ति बडी-बडी जिम्मेदारियो के उच्च पदो पर आसीन रहते है तथा बडे-बडे कार्य सम्पन्न राजनीतिज्ञो, कूटनीतिज्ञो तथा गुणज्ञ मानवो की श्रेणी की सख्या में वृद्धि करते हैं, किन्तु सभी दृष्टियो से सहृदय मानव की श्रेणी मे अपना नाम अमर करनेवाले प्रशासको की सख्या प्राय: बहुत ही थोडी रहती है। इसी प्रकार के प्रजा-प्रशासक समाज को अपने जीवन से सही दिशा मे मार्ग-दर्शन देकर अपना नाम अमर करने के साथ-ही-साथ समाज के जीवन-स्तर, विशेषत नैतिक जीवन-स्तर को, सही दिशा में आगे बढाते है। वैसे प्रशासन की दृष्टि से, सेना-संचालन चातुर्य मे, कूटनीति के पाडित्य मे, देश के लिए जीवन उत्सर्ग करने में अनेकों महापुरुष अपनी अमिट प्रतिभा का परिचय दे चुके है, किंतु अंग्रेजी सल्तनत के युग में देशी राज्यो के प्रशासन का भार वहन करनेवाले व्यक्तियों मे प्रशासकीय गुणो के साथ-साथ उच्च चरित्र, समाज की दलित श्रेणी के प्रति सहृदयता, कर्तव्य-पालन मे दृढता, नि स्वार्थ सेवा एव उदारतापूर्वक सफल राजनैतिक जीवन-व्यतीत करनेवाले प्रशासको के नाम अगुलियो पर ही गिने जा सकते है। स्व० श्री सिरेमल बापना इन्ही इने-गिने व्यक्तियो में से एक थे।"

इन्दौर के आसपास के राज्यों मे भी वह अत्यन्त लोकप्रिय हो गये थे। उनके सेवानिवृत्त हो जाने से जनता मे एकदम दु ख की लहर फैल गई। जिस समय वह इन्दौर स्टेशन से रवाना हुए उस समय के दृश्य से

उनके प्रति लोगो के भाव परिलक्षित होते थे। इन्दौर स्टेशन पर उनको पहुचाने के लिए अधिकारी, राजनैतिक और सामाजिक कार्यकर्ता, गरीब-अमीर, सेठ-साहूकार तथा सब प्रकार के नागरिक उपस्थित थे और वहा पर इतनी भीड थी कि एक बडा भारी मेला-सा नजर आ रहा था। रेलगाडी उस रोज एक घटे से भी अधिक देर से आई थी, परन्तु सब लोग बराबर डटे रहे। इन्दौर मे उस समय के गवर्नर-जनरल, के एजेट भी रेलगाडी के समय आकर, रवाना होने तक प्लेटफार्म पर खडे-खडे श्री बापना के प्रति श्रद्धावान् भीड को आश्चर्यचकित हो देख रहे थे। बापनाजी सबसे प्रेमपूर्वक मिल रहे थे। भीड इतनी अधिक थी कि जैसे उनसे मिलने का अवसर देने को ही रेलगाडी देर से आई थी। ज्योही गाडी छूटी त्योही कई लोग जोरो की चीख मारकर रो पडे। सबकी आखो मे आसू भरे थे और बापनाजी के स्नेह की चर्चा कर रहे थे। एक सज्जन ने एक व्यक्ति को दिखलाकर कहा, "यह व्यक्ति चबल डाकबगले का चौकीदार है। यह जब बापनासाहब से मिलने आता तो बापनासाहब उसे कुर्सी पर बिठलाते थे।" एक ने कहा, "नगरपालिका का एक साधारण नौकर, जिसे पछी कहते है, अपने पुत्र की असामयिक मृत्यु से बडा दुखी रहता था। बापना साहब उसकी सब प्रकार से सहायता तो करते ही थे, पर साथ ही जब वह उनसे मिलने आता तो उसे कुर्सी पर बिठलाकर इस तरह से बाते करते, जैसे दो भाई या मित्र बातें करते हो।" इसी तरह के अनेक लोग अपने-अपने अनुभव सुनाते हुए शोकातुर होकर भरे हुए दिलो से स्टेशन से घर लौटे।

मई सन् १६३६ मे इन्दौर से सेवा-निवृत्त होते ही उनको बीकानेर के महाराजा गगासिहजी ने अपने यहा प्रधान मत्री का पद स्वीकार करने का निमत्रण दिया और उन्होने इस पद पर दो वर्ष तक कार्य किया। इस काल मे यहा वह बहुत लोकप्रिय हो गये थे और स्व० महाराजा गगासिंहजी द्वारा बहुत सम्मानित किये गए थे।

इसके पश्चात् उन्होने रतलाम में मुख्य मत्री के पद पर और

अलवर में प्रधान मंत्री के पद पर कार्य किया। सन् १९४६ में उनको गभीर बीमारी के कारण अलवर से बबई टाटा मेमोरियल अस्पताल मे जाना पडा और वहा लगभग ८ माह तक रहना पड़ा। वह अलवर से अतत. १९४७ मे सेवानिवृत्त हो गये।

अलवर के महाराजा ने, जिन्हे सवैधानिक शासक के रूप मे प्रशिक्षित किया गया था, अपने नये प्रधान मत्री श्री बापना को प्रशासन मे बिना हस्तक्षेप किये कार्य करने की स्वतत्रता दे दी। श्री बापना ने यह अनुभव किया कि जिस तरह वहा के प्रशासन के कार्यकारी और प्रशासनिक सघ की देखरेख करने के लिए वह मौजूद है उसी तरह राज्य के न्यायिक प्रशासन के लिए समान रूप से एक योग्य मुख्य न्यायाधीश उपलब्ध करना आवश्यक है। इस वास्ते न्यायाधीश एम० पी० चटर्जी की, जो उस समय पटना हाईकोर्ट से सेवानिवृत्त हुए थे, सेवाए उपलब्ध की। इस तरह श्री बापना अलवर राज्य के न्यायिक प्रशासन को उच्च स्तर पर पहुचाने मे सफल हुए। उस समय अलवर राज्य मे उद्योग नही के बराबर थे। अत उन्होने राज्य के उद्योगीकरण की एक विशाल योजना तैयार की। उनके वहा से सेवानिवृत्त होने तक कई कपनियो का पजीकरण हो गया था और कुछ उद्योगो की प्रारभिक कार्यवाही भी शुरू हो गई थी।

सन् १९४७ मे श्री बापना का शासकीय कार्यकाल चालीस वर्ष तक लगातार विभिन्न पदो पर सेवाए करने के पश्चात् बडी नेकनामी तथा प्रतिष्ठा के साथ समाप्त हुआ। इस दौरान वह बारह वर्ष तक यानी १९१८ से १९२६ तक इन्दौर और पटियाला राज्यो के गृहमंत्री एव उपप्रधान मत्री के पदो पर रहे, और इक्कीस वर्ष यानी सन् १९२६ से १९४७ तक इन्दौर, बीकानेर, रतलाम व अलवर में प्रधान मन्त्री और केबिनेट के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे। वह हर

श्री बापना देशी राज्यो के प्रतिष्ठित, सुप्रसिद्ध एव उल्लेखनीय प्रधान मन्त्रियो, जैसे मैसूर के श्री मिर्जा इस्माइल, हैदराबाद के श्री अकबर हैदरी, बडौदा व जयपुर के श्री वी० टी० कृष्णमाचारी, बडौदा, बीकानेर व ग्वालियर के श्री के० एन० हक्सर, कश्मीर के श्री आयगर, उदयपुर के श्री विजयराघवाचार्य तथा भावनगर के श्री प्रभाशकर पट्टणी के समकालीन थे। किन्तु कोई भी दीवान, मन्त्री एव प्रधान मन्त्री पद पर इतने लम्बे अर्से तक नही रहा, जितना कि श्री बापना रहे और किसी को श्री बापना जितनी लोकप्रियता व जनता का स्नेह प्राप्त नही हुआ। श्री पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास कहा करते थे "श्री बापना से ज्यादा कुशल प्रशासक और राजनीतिज्ञ और उनसे ज्यादा चतुर, योग्य तथा धैर्यशील व्यक्ति हुए है, किन्तु जिन अनेक गुणो का समन्वय उनमे था, वह विरले पुरुषो मे ही मिलता है।"

मध्य भारत और राजपूताना के इलाको मे वह खासकर प्रभावशाली थे। उदयपुर, जोकि उनका जन्मस्थान था और उनके पूर्वजो का निवासस्थान था, बापनाजी जैसे व्यक्ति के कारण गर्व अनुभव करता था। उदयपुर के महाराणा ने उनकी पुरानी जागीर वापस दे दी और उनको अनेक तरह से सम्मानित किया। स्वर्गीय महाराणा भूपालसिह उनका बहुत आदर करते थे और राज्य की कई प्रशासनिक समस्याओ मे उनकी सलाह लिया करते थे। सन् १९४० मे उदयपुर राज्य मे विजयराघवाचार्य की प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्ति भी श्री बापना की सलाह से ही हुई थी।

श्री बापना ने अपने चालीस वर्ष के शासकीय कार्यकाल मे अपने चरित्र, सचाई और व्यक्तित्व पर जरा भी दाग नही आने दिया तथा अपने-आपको बिल्कुल निष्कलंक रखा। प्रथम युद्ध के पश्चात् का काल बडा ही अशान्ति तथा गडबडी का काल था और भारत के देशी राज्यो मे भी अव्यवस्था व असन्तोष की लहर फैल रही थी। ऐसे जमाने मे श्री बापना साहब की तरह शायद ही कोई प्रशासक एव राजनीतिज्ञ हो, जो अपने-आपको इतने श्रेयपूर्वक रख सके और इतने सन्तोष व प्रभावोत्पादक ढग से कार्य कर सके और स्थितियो का

मुकाबला कर सके। वह प्रशासक के रूप में अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। इस उदार उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह अच्छे योग्य ढग के अधिकारियों का चुनाव करते थे, ताकि उनके प्रशासन मे ईमानदारी और कुशलता की सुनिश्चितता हो। वह स्वय शासकीय कार्य को बहुत शीघ्र निपटा देते थे और अपने प्रशासकीय तन्त्र मे कोई भी विशेष दोष होने पर उसे तत्काल दूर करने के लिए तत्पर रहते थे। यद्यपि वह मनुष्य व उनके व्यवहार के सम्बन्ध मे मृदु दिखाई पडते थे तो भी वह अपने विचारो तथा धारणाओ मे दृढ रहते थे और अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा व सम्मान की कीमत पर कोई भी समझौता करने को तैयार नही होते थे।

उन्होने मध्य भारत, पजाव और राजस्थान की अनुपम सेवा ही नही की वरन् अखिल भारत और विश्व की उलझी हुई समस्याओ को सुलझाने मे भी अत्यन्त कुशलतापूर्वक परिश्रम किया। वह जाति, धर्म और प्रान्तीयता के संकुचित दायरे के समर्थक नही थे। छोटे-वडे, धनी-निर्धन का भेदभाव भी उनके उदार हृदय में कभी स्थान प्राप्त न कर सका। वह सदा सबके हितैषी रहे। उनके हृदय मे विरोधियों के प्रति भी विद्वेष भाव नही होता था। अपने कट्टर-से-कट्टर विरोधियो को भी वह उदारतापूर्वक सहायता प्रदान करते थे। उनका यह निश्चित मत था कि क्षमा और प्रेम प्रदान करना विरोधियो पर विजय प्राप्त करने का एकमात्र सरल मार्ग है। अपने निदको को भी उन्होने कभी दुत्कारा नही। महात्मा तुलसीदास के शब्दो मे वह सदा "निन्दक नियरे राखिये" के सिद्धान्त का पालन करते रहे।

अगस्त १९४७ तथा उसके पश्चात् हिन्दुस्तान के विभाजन के कारण पजाव व अन्य स्थानो पर वड़े कटु साम्प्रदायिक एव जातीय उपद्रव हुए थे, जिनके कारण कटुता वढती जा रही थी। अत जनवरी सन् १९४८ मे श्री वापना ने स्वस्थ होने पर मुहम्मद अली जिन्ना को, जिनसे वह पहले से ही काफी परिचित थे, पाकिस्तान में पत्र लिखा . "मेरे लिए आपकी वर्तमान परिस्थिति और इस संकटमय समय में आपको सबोधन करना सगत तो नही जान पडता, फिर भी

विशेष स्थिति के कारण मैं आपके सम्मुख अपने विचार रखने का साहस करता हू । अभी जो घटनाए घट रही हैं, उनके पूर्व इतिहास मे प्रवेश करने की अथवा उनके सम्बन्ध की जिम्मेदारी डालने की मेरी इच्छा नही है। परन्तु यह वहुत ही दु.ख की वात है कि दोनो सम्प्रदायो के वीच जहा कुछ वर्ष पहले भ्रातृभाव था, वहा अब वह साम्प्रदायिक तनाव मे वदल गया है। वर्तमान हिंसा या सशस्त्र सघर्ष और भी ज्यादा खतरनाक है और मैं साहसपूर्वक कह सकता हू कि इससे किसी भी पार्टी को या पक्ष को लाभ नही होगा और पाकिस्तान को तो विल्कुल ही नही होगा । कश्मीर पर जो हमला किया गया है, उसका सामान्य सार्वजनिक कानून में या अन्तर्राष्ट्रीय कानून मे कोई समर्थन या न्यायानुकूलता नही है । वहा तथा दूसरे स्थानो पर अभी तक वेगुनाहो और निर्दोष लोगो का काफी खून वहाया गया है । मैं महसूस कग्ता हू कि इस देग के विभाजन के पग्चात् भी दोनो सम्प्रदाय आनन्द के साथ रह सक्ते है और एक-दूसरे को आपस मे पारस्परिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक प्रगति मे लाभ पहुचा सकते है। अगर आप इस सुखमय परिस्थिति का निर्माण करने के लिए नेतृत्व कर सकते है तो मुझे दृढ विश्वास है और मै निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि आपका नाम इतिहास मे अधिकतम हिताधिकारी की श्रेणी मे लिखा जाएगा ।"

सन् १९४८ के शुरू मे इन्दौर राज्य मे राजनैतिक स्थिति बहुत विगड गई थी, जिसके परिणामस्वरूप वहा के महाराजा और भारत सरकार के वीच काफी मनमुटाव हो सकता था । श्री वापनासाहव को, जिनका इन्दौर राज्य से दीर्घकालीन सम्वन्ध था, उस स्थिति से वहुत दु ख हुआ और वह उस स्थिति को देखकर वहुत चिन्तित हुए। उन्होने महाराजा साहव तथा सरदार वल्लभभाई पटेल को, जो कि उस समय भारत सरकार के गृहमन्त्री थे, पत्र लिखे कि महाराजा और उनकी प्रजा के वीच तथा महाराजा और भारत सरकार के वीच पुन अच्छे सम्वन्ध स्थापित कराने के लिए वह अपनी सेवाए अर्पित करने को तैयार है।

इसी प्रकार १९४७ मे महाराजा अलवर के भारत सरकार से

राजनैतिक कारणो से सम्बन्ध खराब हो गए थे। इस समय श्री बापना एक लम्बी बीमारी के बाद स्वास्थ्य-लाभ कर रहे थे और काफी कमजोर थे। किन्तु इसके बारे मे महाराजा अलवर का सदेशा मिलने पर वह तुरन्त दिल्ली गये और वहा पर पडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल से मिलकर महाराजा और गृहविभाग के बीच समझौता कराने का पूरा प्रयत्न किया।

सेवा-निवृत्त होने के बाद वह एक वर्ष तक उदयपुर मे रहे व बाद मे मृत्युपर्यन्त अपने पुत्रो के साथ इन्दौर मे रहे। इस अवधि में मध्य भारत राजधानी कमेटी, इन्दौर, मध्य भारत युनिवर्सिटी कमेटी और इन्दौर बैंक के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के अध्यक्ष भी रहे। इस तरह निवृत्ति-काल मे भी उनका सामाजिक एव शैक्षणिक सस्थाओ और अनेक कार्यकर्त्ताओ से सम्बन्ध बना रहा।

सन् १९६१ मे जब सन्त विनोवा भावे इन्दौर आये थे तब श्री बापना की अस्वस्थता का समाचार सुनकर उनसे मिलने गये थे। बापनासाहब ने आनन्दित होकर उन्हे यथायोग्य भेट दी।

सेवा-निवृत्त होने के बाद भी लोगो की उनके प्रति ऐसी सम्मान और आभार की भावनाए बनी रही, जो कि एक सेवानिवृत्त प्रशासक व राजनीतिज्ञ के लिए दुर्लभ होती है। इसका मुख्य कारण यह था कि उन्होने अपने सेवा-निवृत्त होने पर कोई विद्वेष या दुर्भावना नही छोड़ी और सदा लोगो की भलाई के लिए नि स्वार्थ निष्ठा से कार्य किया।

उनकी लोकप्रियता उनके व्यक्तित्व की विशेपता और गुणो के कारण थी, न कि उनके शासकीय अधिकारो पर निर्भर थी। इसी कारण उनके सेवा-निवृत्त होने पर भी इन्दौर तथा मध्य भारत व राजस्थान की जनता के हृदय मे उनके महान् व्यक्तित्व के प्रति परम आदर और स्नेह की भावना बनी रही, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि उनके इन्दौर से सेवा-निवृत्त होने के १३ वर्ष बाद सन् १९५२ मे इन्दौर की जनता ने ७०वी वर्षगाठ के उपलक्ष मे उनकी हीरक जयती मनाई। इस अवसर पर जनता की तरफ से उन्हे मानपत्र दिया गया था। इन्दौर की अनेक सस्थाओ द्वारा भी उन्हे

बधाई दी गई और मानपत्र समर्पित किये गए। इस अवसर पर इन्दौर की जनता ने ७५ हजार रुपए इकट्ठे करके 'सिरेमल बापना छात्रावास' बनाने का निश्चय किया और तारीख २४ अप्रैल १९५२ को नवलखा मे उसका शिलान्यास केन्द्रीय सरकार के तत्कालीन गृहमत्री डा० कैलासनाथ काटजू के कर-कमलो से कराया गया। उस समय मध्य भारत के मुख्यमत्री व अन्य मत्रीगण, उच्च अधिकारी, सेठ-साहूकार, राजनैतिक-सामाजिक कार्यकर्ता और इन्दौर के अनेक प्रतिष्ठित सज्जन बडी सख्या मे उपस्थित थे। डा० कैलासनाथ काटजू ने अपने भाषण मे कहा, "श्रीमन्त महाराजा होल्कर ने श्री सिरेमल बापना पर पूर्ण विश्वास रखा था। इन्होने राज्य की जनता की भलाई के सम्बन्ध मे अपना उत्तरदायित्व अच्छी तरह निभाया है। इन्दौर मे विभिन्न प्रकार के जो सुधार दिखाई पडते है, वे श्री बापना की दूरदर्शिता व बुद्धिमानी के प्रतीक है। सब प्रकार से समुन्नत वर्तमान इन्दौर नगर बापनासाहब का निर्मित किया हुआ है। उन्होने अकेले ही इन्दौर राज्य का जो वैभव बढाया व कायदे-कानून बनाये वैसा उन दिनो कई देशभक्तो से नही हो सका। मौजूदा पीढी को श्री बापना जैसे कुशल प्रशासक के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए, जिन्होने शिक्षा का प्रसार कर सामाजिक व राजनैतिक सुधार करने मे अथक परिश्रम किया है।" उन्होने आगे कहा, "जब ब्रिटिश प्रान्तो मे राष्ट्रीय नेता जेलो मे बन्द थे और रचनात्मक कार्य नही कर सकते थे, उस समय श्री बापना ने बडी सावधानी और धीरता से इन्दौर राज्य की भलाई तथा प्रगति के लिए बहुत-कुछ किया, जिसके कारण इन्दौर राज्य दूसरे राज्यो की अपेक्षा उस समय बहुत बढा-चढा और प्रगतिशील हो गया।"

यह छात्रावास सन् १९५३ मे बनकर तैयार हुआ और ९ जून, १९५३ को उसका उद्घाटन मध्य भारत के तत्कालीन मुख्य मत्री श्री मिश्रीलाल गगवाल द्वारा किया गया। उस समय भी मध्य भारत के अनेक मत्री और इन्दौर के प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित थे। दिसम्बर १९६९ को यह छात्रावास विधिवत् इन्दौर विश्वविद्यालय को हस्तान्तरित कर दिया गया और इसका नाम 'सिरेमल बापना

इन्दौर विश्वविद्यालय छात्रावास' रखा गया ।

इन्दौर राज्य के महीदपुर जिले के निवासियो ने भी कई वर्ष पूर्व श्री बापना के सद्‌गुणो से प्रभावित होकर महीदपुर में, जहा उन्होने इन्दौर राज्य मे डिस्ट्रिक्ट सेशन्स जज की हैसियत से अपनी सेवा की शुरुआत की थी, 'श्री सिरेमल बपाना टाउन-हाल' बनवाया था ।

श्री बापना अपने अन्त समय तक इन्दौर मे ही रहे । उनका देहावसान उनके ८३वे वर्ष मे १६ दिसम्बर, १९६४ को इन्दौर नगर मे उनके निवास-स्थान, नार्थ तुकोगज, में दिन के १ बजे के करीब हुआ । लोकप्रिय जननायक बापना जी की मृत्यु पर इन्दौर की जनता अथाह शोक-सागर में निमग्न हो गई । उस शोक में इन्दौर नगर-निगम ने अपने समस्त कार्यालय बन्द कर दिये और तुकोजीराव कपड़ा मार्केट तथा सराफा की दुकाने भी बन्द हो गई थी । करीब ४ बजे उनकी शव-यात्रा आरम्भ हुई, जिसमे इन्दौर की जनता व नागरिक हजारो की संख्या मे शामिल थे । आपका शव तोपखाना, कृष्णपुरा, राजवाडा चौक मे होकर देवास-घाट स्मशान, पर ले जाया गया, जहा सन् १९४२ में आपकी धर्मपत्नी का दाह-सस्कार किया गया था । वहा इन्दौर की जनता की ओर से आपको श्रद्धाजलि अर्पित की गई और उसके पश्चात् अश्रुपूर्ण नेत्रो और अथाह दुःख से भरे हृदयो से उनका दाह-सस्कार किया गया । उनकी पवित्र स्मृति मे इन्दौर तथा देश के अनेक स्थानो मे शोक-सभाए हुई और देश-विदेश से शोक-सन्देश प्राप्त हुए । श्री बापना के निधन से एक महान् व्यक्तित्व उठ गया और इन्दौर का एक युग समाप्त हो गया ।

: १० :

समग्र व्यक्तित्व की एक झांकी

इस तरह एक साधक की महान् जीवन-यात्रा समाप्त हुई। जिन्होने श्री बापना की मृत्यु का समाचार सुना, उन सबने कहा कि वह ऋषि थे। उन्होने न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन मे उन सिद्धान्तो और आदर्शो का पालन किया, जो किसी भी व्यक्ति को महान् बना सकते है वरन् उन्होने अपने व्यावहारिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन मे भी उन्ही के अनुकूल आचरण किया। माना कि उनका भौतिक शरीर अब इस असार ससार मे नही है, पर वह अपने पीछे अपने महान् कार्य, अपने परिवार, अपने व्यक्तित्व और स्वभाव के रूप मे ऐसी धरोहर छोड गये है, जो उन सभी की सपत्ति है, जिनका कभी भी, किसी भी रूप मे, उनसे वास्ता पडा है।

श्री सिरेमल बापना का पारिवारिक जीवन भारतीय गृहस्थो के लिए आदर्श और अनुकरणीय रहा। बापनाजी की पत्नी श्रीमती आनन्दकुमारी देवी साक्षात् गृहलक्ष्मी थी। गृह-प्रबन्ध मे वह बहुत ही कुशल थी। सिरेमल बापना को तो राजकीय कामो से ही फुर्सत नही मिलती थी। राजकोश से बापनाजी का वेतन सीधा श्रीमती बापना के पास जाता था और गृहस्वामिनी की व्यवस्था मे वे कभी हस्तक्षेप नही करते थे। इसलिए मित्रो, सबधियो, नवागतो आदि के आतिथ्य-सत्कार का सपूर्ण भार उन्ही के सिर पर था। जैसे बापना-जी घर से बाहर के कामो मे बराबर व्यस्त रहते थे, उसी तरह श्रीमती आनन्दकुमारी घर के कामो मे घिरी रहती थी। एक तो बापनाजी का अपना परिवार ही बडा था, फिर उनके यहा उनके कुटुम्ब, उनके मित्रो और सम्बन्धियो के अनेक छात्र परिवार के साथ रहते थे। इस तरह नौकर-चाकर सब मिलाकर लगभग ५० व्यक्तियो का परिवार था। इतने बडे कुटुम्ब का कुशलता से प्रबन्ध

करना कोई आसान काम नही था। किन्तु आनन्दकुमारीजी अपने परिश्रम, सादगी और अपनी धार्मिक प्रवृत्ति से इस सपूर्ण बोझ को सभाले रहती थी। एक बार जो उनके परिवार में आ जाता था, वह उनका अपना हो जाता था और उसके सुख और दु ख दोनो मे वह भाग लेती थी। यही कारण है कि बापनाजी इस उत्तर-दायित्व को श्रीमती आनन्दकुमारी को सौपकर निश्चिन्त हो गये थे।

इन्दौर में श्री सिरेमल बापना का निवास-स्थान 'बख्शी बाग' कहलाता था। यह श्रीमती आनन्दकुमारी का कार्यक्षेत्र था। रसोई मे छोटे-बडे सभी के लिए एक-जैसा भोजन बनता था और सबको भोजन कराकर अन्त में दो-ढाई बजे अपराह्न मे वह स्वयं भोजन करती थी। सभी के ऊपर उनका यथायोग्य आदर, प्रेम, स्नेह, कृपा और करुणा की दृष्टि रहती थी। वह सभी अतिथियो के साथ अद्भुत स्नेह दर्शाती थी और आदर्श बर्ताव करती थी। श्रीमती बापना की शिक्षा बहुत सामान्य थी, फिर भी वह बड़ी कुशाग्र बुद्धि-वाली थी। उनकी उदारता, स्वामी की सेवा-सुश्रूषा आदि गुण उल्लेखनीय है। वह प्राचीन भारतीय परपरा, सस्कृति की आदर्श नारी थी। उनका रहन-सहन, वेशभूषा अपने देश और कुल के अनु-रूप थी। बापनासाहब स्वय अनेक बार विदेश हो आए थे और वह आधुनिक युग में रहते थे, किन्तु कभी भी उन्होने श्रीमती बापना से यह इच्छा प्रकट नही की कि वह अपनी वेशभूषा को, अपने परि-वेश को, आधुनिक बनाये।

बापनाजी के दो पुत्र और दो कन्याए थी। ज्येष्ठ पुत्र कल्याण-मलजी का जन्म १९०२ मे हुआ था। वह भूतपूर्व मध्य भारत में ऐक्साइज व सेल्स टैक्स कमिश्नर थे। उनकी मृत्यु मई १९६६ मे हो गई। श्री सिरेमल बापना के द्वितीय पुत्र प्रतापसिहजी का जन्म सन् १९०८ मे हुआ। वह मध्यप्रदेश मे सचिव, योजना व विकास विभाग एव विकास-आयुक्त के पद से अवकाश ग्रहण कर आजकल मध्य प्रदेश राज्य परिवहन निगम एवं मध्य प्रदेश राज्य उद्योग निगम के अध्यक्ष है। बापनाजी की ज्येष्ठ पुत्री सौ० गणेशकुमारी का

पुत्र विवाह संवत्, १९७५, सन् १९१८ में फाल्गुन वदी द्वितीया को जोधपुर के डड्ढा वंश के सिरेमलजी के कनिष्ठ पुत्र कुंवर सज्जनसिंहजी के साथ हुआ व उनकी कनिष्ठ कन्या आयुष्मती मोहनकुमारी का जन्म सन् १९२६ में हुआ। इनका विवाह जोधपुर के रावराजा माधवसिंह के पौत्र गुलाबसिंहजी से हुआ।

बापनासाहब को विद्या से बहुत प्रेम था। वह स्वजनों के अतिरिक्त दूसरे जरूरतमन्द लोगों को भी अपने यहां शिक्षा के लिए हमेशा रखते थे। उनके यहां सब मिलाकर दस-पन्द्रह विद्यार्थी तो हमेशा रहा ही करते थे।

जो दास-दासियां उनके यहां थीं उनके बच्चे प्रायः उन्हीं के यहां भोजन करते थे। उन सबकी भली भांति देखरेख होती थी। बल्ली बाग में करीब पन्द्रह-बीस नौकरों के रहने के क्वार्टर थे। उन सब को त्यौहार, शादी व आवश्यकता के समय सहायता दी जाती थी और बीमारी का सारा खर्च बापनाजी ही उठाते थे। जब उनका कोई नौकर बीमार हो जाता तो नियमित रूप से उसको देखने जाते और अपने घरेलू डाक्टर से उसके हाल के बारे में पूछते। घर में रहने वाले हरेक व्यक्ति की तन्दुरुस्ती की तरफ पूरा ध्यान दिया जाता था। स्वजनों के इलाज कराने में कोई कसर नहीं रखी जाती थी व आपरेशन तथा लम्बी बीमारियों में हजारों रुपया खर्च होता था।

इन्दौर उन दिनों में चिकित्सा के साधनों के लिए मध्य भारत तथा राजस्थान में प्रसिद्ध था। अतः उनके यहां अक्सर कोई-न-कोई चिकित्सक चिकित्सा के लिए आते ही रहते थे या बापनासाहब स्वयं बुलाते ही रहते थे। डाक्टरों और नर्सों के प्रति बड़े सम्मान तथा सौजन्य का व्यवहार किया जाता था और वे लोग उनके कुटुम्ब के साथ भोजन करते थे। कौटुम्बिक डाक्टर को खास तौर से सम्मान और महत्व दिया जाता था। उनके यहां चिकित्सा के सम्बन्ध में जो डाक्टर, उपचारिका व कम्पाउण्डर आते थे उनको उदार हृदय से फीस दी जाती थी।

श्रीमती बापना को बाद के वर्षों में हृद्-रोग हो गया था और

उन्होने बिस्तर पकड़ लिया था। बापनाजी अपने व्यस्त जीवन के बावजूद दिन मे अनेक बार उन्हे देखने जाते थे। डाक्टर भरूचा, डाक्टर तिरोड़कर व बम्बई के अन्य सुप्रसिद्ध डाक्टर श्रीमती बापना के इलाज के लिए आवश्यकता होने पर बुलाये जाते थे। इसी तरह जब उनकी या कुटुम्ब में किसी अन्य व्यक्ति की बीमारी गम्भीर रूप धारण कर लेती तो उच्च श्रेणी के डाक्टर बुलाये जाते थे। जब बापनाजी सन् १९४६ में अलवर में अस्वस्थ हो गये थे और और उनकी हालत काफी गभीर हो गई थी तब उन्हे खासतौर से एक डकोटा हवाई जहाज किराए पर लेकर बम्बई ले जाया गया था। वहा वह तीन-चार महीने तक टाटा मैमोरियल हास्पिटल मे बम्बई के प्रसिद्ध डाक्टरो के इलाज मे रहे। बाद मे उनका अल्सर का आपरेशन हुआ। इस प्रकार देश की उत्तम-से-उत्तम चिकित्सा आवश्यकता होने पर, खर्च की परवा किये बिना, प्राप्त की जाती थी।

बापनासाहब को व्यायाम का बड़ा शौक था। वह हमेशा सवेरे व्यायाम किया करते थे। उन्होने अपने पुत्रो के लिए और अपने कुटुम्ब के बच्चो के लिए, जो वहा रहते थे, बख्शी बाग मे अखाडा बनवाया था। प्रात.काल उनके व्यायाम का भी पूरा प्रबन्ध किया गया था। बापनासाहब उनको पैदल भ्रमण के लिए उत्साहित करते थे और उनको स्कूल व कालेज में सवारी से नही भेजा करते थे। वह चाहते थे कि उनके बच्चो मे भी समानता की भावना पैदा हो और वे अपने को अपने दूसरे साथियो से ऊंचा न समझे। उनकी निगरानी व मार्गदर्शन मे वे लोग आसपास के रमणीय स्थानो पर कई मीलो तक अपना सामान लेकर पैदल जाते थे और वहा स्वय भोजन बनाते थे। इसके अलावा पहाड़ो पर चढने, जगल मे घूमने आदि का कार्यक्रम रखा जाता था। इस तरह वह अपने घर के विद्यार्थियो मे भ्रमण, स्काउटिग और घुडसवारी के द्वारा भी उनकी प्रवृत्तियां विकसित करना चाहते थे।

यह एक आश्चर्य की बात थी कि उनके-जैसे विशाल कुटुम्ब में इतना अधिक अनुशासन, कौटुम्बिक समन्वय, सद्भावना और पारस्परिक प्रेम रहता था। उक्त कुटुम्ब के सब सदस्य सहृदय और प्रसन्न-

चित्त रहते थे।

श्री सिरेमल बापना मे सबसे बडा गुण यह था कि उनका व्यवहार सबके प्रति समान रहता था। छोटा या बडा, गरीब या अमीर, जो कोई भी उनके सम्पर्क मे आता था, उसे लगता था जैसे श्री बापना और उसके बीच कोई व्यवधान नही है, किसी प्रकार की कोई दीवार नही है। इस स्पदनशील हृदय के कारण ही वह कठिन-कठोर कामो को करते हुए भी लोकप्रिय रह सके, क्योकि हर आदमी के दु ख-दर्द मे उनका स्पंदनशील हृदय उससे एकाकार हो जाता था। सब अतिथि और आगतुक उनके साथ बडी आत्मीयता का अनुभव करते थे। इसका वास्तव मे खास कारण यह था कि श्री बापना व श्रीमती बापना मे ये असाधारण गुण थे कि वे कुटुम्ब के हर सदस्य के साथ एक-सा बर्ताव करते और हरेक की आवश्यकताओ पर एक-सा ध्यान देते थे। उन्होने अपने पुत्रो-पुत्रियो और दूसरे सबधियो के बीच कभी भेदभाव नही रखा।

सध्या-समय क्लब से लौटने पर बापनाजी अपने ड्राइग रूम मे अपने परिवार के लोगो, निकट-सबधियो, विशेष परिचित लोगो और कौटुम्बिक डाक्टरो के साथ बैठा करते थे। उस वक्त जनता-जनार्दन की भलाई तथा शहर व देश के मामलो पर अधिकतर चर्चाए हुआ करती थी। जब कभी कोई किसी की टीका-टिप्पणी करता तो बापनाजी इस बात को वही काटते हुए यह कहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति मे कुछ-न-कुछ गुण पाये जाते है और उन गुणो की सदा कद्र की जानी चाहिए। इस तरह अयुक्त बाते आगे नही बढ पाती थी। कभी-कभी वह पश्चिमी देशो की तरक्की के विषय मे चर्चा किया करते थे और कहा करते थे कि वे देश अपने कठिन परिश्रम, सहयोग सहकारी भावना और अपने अच्छे व्यवहारो से आगे बढ गये। साथ ही यह भी चर्चा होती रहती थी कि अपने इस देश की तरक्की के लिए ये बाते कैसे अपनाई जानी चाहिए।

उनका पारिवारिक जीवन, जब वह बीकानेर और रतलाम मे थे, तब भी इसी प्रकार चलता रहा। सन् १९४२ मे रतलाम से जब वह अलवर जाने लगे, उन्ही दिनो श्रीमती बापना का इन्दौर

में देहांत हो गया था, किंतु श्रीमती बापना की परम्परा के अनुसार अलवर में भी सब कार्य उसी तरह होता रहा। अतर केवल इतना था कि श्रीमती बापना की तरह स्नेहशीलता से मातृवत् देखभाल करने वाला वहां अब कोई उपलब्ध नही था।

हर समय हर आवश्यकता पर वह इतने मुक्त हस्त से खर्च करते थे कि उनकी आमदनी का एक बडा हिस्सा लोगो की सहायता में चला जाता था और वह इतनी आमदनी होते हुए भी खर्चे के लिए तंगी अनुभव करते थे। किंतु बापनाजी ने एक क्षण के लिए भी अपने जीवन के ऊंचे सिद्धान्तो का त्याग नही किया। इसका वहुत-कुछ श्रेय श्रीमती बापना को ही है, क्योंकि इतने बडे कुटुम्ब का संचालन वह बिना घवराहट के करती थी और श्री बापना को पारिवारिक मामलो की चिता नही होने देती थी, यद्यपि कई मौको पर कडी आर्थिक कठिनाई का सामना करना पडता था। श्री बापना इस तरह अपना पूरा ध्यान अपने शासकोय कार्य पर केन्द्रित कर सकते थे। अत श्री बापना को कुशल शासक की हैसियत से जो सफलता मिली, उसमे श्रीमती बापना को योगदान कोई कम नही था।

बापनासाहब के व्यक्तित्व की एक विशेषता थी आतिथ्य-सत्कार। उनके यहा हमेशा कोई-न-कोई अतिथि आता-जाता ही रहता था। किंतु कुछ लोग तो दीर्घकाल तक के लिए रहते थे और अपना इलाज भी कराते थे। उनका घर सदैव कुटुम्बियो, अतिथियो और मित्रो से इतना भरा रहता था कि उनके रसोईघर मे दिनभर कुछ-न-कुछ काम होता ही रहता था। भोजन के वक्त वह सबसे मिला करते थे। सव मेहमानो के साथ—चाहे वह कोई बडे उच्च अधिकारी हो या छोटे कर्मचारी हो—बैठकर भोजन करते थे। वह यहा तक देखते थे कि हर मेहमान को उन्ही के समान भोजन के विभिन्न व्यजन मिले है या नही।

जब वह अलवर मे प्रधान मन्त्री के पद पर थे तो एक क्लर्क उनके यहा मेहमान था। उनके निजी सचिव ने उसको बापनासाहब से पहले ही भोजन करा दिया। जव वह भोजन के समय दफ्तर

से लौटे और उनको पता चला कि उक्त मेहमान को भोजन पहले ही करा दिया गया तो उन्होने निजी सचिव से कहा कि वह ध्यान रखे कि शाम का भोजन वह उन्ही के (श्री वापना) साथ करे।

राजस्थान हाईकोर्ट के एक जज ने इस सम्वन्ध मे लिखा था कि "श्री सिरेमल वापना उच्चतर कोटि के व्यक्ति थे। उनके आतिथ्य का पार नही था। मैं यह वात प्राय देखा करता था कि लोग अतिथियो के रूप मे आकर एक पूरी ऋतु उनके यहा ठहरते थे और दूसरी ऋतु आने तक उनके साथ डटे रहते थे। वह उन्हे केवल विस्तर ही नही, वल्कि कवल आदि भी मुहैया करते थे। वह उनको उसी स्नेह और सद्भावना से देखा करते थे कि मानो नये आगतुक हो या अभी-अभी उनके पास अतिथि के रूप मे ठहरने आये हो। उनकी यह आदत थी कि अपने निवासस्थान पर भोजन के समय जो भी आता उसे अपने साथ नाश्ता या भोजन करने को आमत्रित करते थे। वह इतने विनम्र थे कि भोजनालय के द्वार पर खडे होकर सव अतिथियो को, चाहे वह राज्य का अवर कर्मचारी ही क्यो न हो, भोजन के लिए अन्दर चले जाने के वाद ही खुद प्रवेश करते थे। जव श्री वापना से यह पूछा गया कि आप इतने अधिक उदार और इतने अधिक अतिथि-सत्कार के प्रेमी क्यो है जवकि आपका स्वय का इतना वडा कुटुम्व है, तो उन्होने तुरन्त और विनम्र रूप से जो उत्तर दिया वह अभी तक मेरे कानो मे गूज रहा है। उन्होने कहा था, "क्या आप यह विश्वास नही करते कि मनुष्य जो कुछ उसका होता है और जो कुछ उसके भाग्य मे होना है, उसी को खाता है? क्या यह मेरा वडा सौभाग्य नही कि लोग मेरे भोजनालय मे, मेरे साथ अपने भाग्य का खाते हैं और मेरा अनुग्रह मानते है?" उनका यह उत्तर वास्तव मे वडा सौम्य और उनके महान् व्यक्तित्व के अनुरूप ही था।

वापनासाहव अपने घनिष्ठ परिचितो का वहुत ध्यान रखते थे। सेवानिवृत्त होने के वाद भी उनका यही तरीका चालू था। जव कभी किसी उत्सव या समारोह पर अपने स्नेहियो को निमन्त्रण भेजा जाता और उनको नही दिखाया जाता तो वह हमेशा

सूची मंगाकर देखते थे कि उनको निमंत्रण पहुंचा या नही। कई बार तो वाद में उन्ही व्यक्तियो से पूछा भी करते थे।

इसी तरह राज्य मे जो मेहमान आते थे उनका भी वह पूरा ध्यान रखते थे। श्रीमती विद्यादेवी, संचालिका, आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद्, वाराणसी लिखती है, "मै १९३० मे शीतकाल में बम्बई से इन्दौर गई थी। उस समय महाराजा यशवन्तराव होल्कर के अधिकार-प्रदान का समारोह था। अनेक विशिष्ट सज्जन उस समय वहा आये थे।

"अत अतिथिशाला मे स्थान न होने से मुझे टैण्ट मे ठहराया गया था। टैण्ट यद्यपि सब प्रकार से अनुकूल था, परन्तु ठड बहुत थी। पहुंचने के दूसरे दिन श्रीमान् बापनासाहब से मिलने गई तो उन्होने पहला प्रश्न यह किया कि आपको कोई कष्ट तो नही है? मैंने उत्तर दिया कि जाड़े के मारे मुझे कल रात भर नीद नही आई। इतना सुनते ही उन्होने स्वय टेलीफोन उठाया और अतिथिगृह के अधिकारी को आदेश दिया कि अभी किसी अच्छे होटल में कमरे किराये पर ले लिये जाय और विद्यादेवीजी के ठहरने का प्रबन्ध कर दिया जाय। उनके आदेश का तत्काल पालन किया गया और एम्प्रेस होटल मे दो कमरे लेकर मेरे ठहरने तथा अलग रसोई बनाने का प्रबन्ध कर दिया गया गया। वह जानते थे कि मेरा भोजन बहुत मर्यादित है। होटल की खान-पान की व्यवस्था मेरे अनुकूल नही है। इस छोटी-सी घटना से मालूम होता है कि उनका नवनीत-जैसा कोमल हृदय दूसरे के साधारण क्लेश से भी कैसे पिघल जाता था। उसके बाद तो उनकी ऐसी कृपा हुई कि वह मुझे अपने निवास-स्थान बख्शी बाग मे ही ठहराया करते थे। वह मुझपर अपनी पुत्री के समान स्नेह करते थे। मै भी उनपर पिता के समान श्रद्धा करती थी।"

बापनाजी अत्यन्त धैर्यवान् और स्थितप्रज्ञ व्यक्ति थे। ऐसे व्यक्ति बहुत ही कम पाये जाते है, जो सुख-दुख में इतना समभाव रख सकते हों। अपने सिद्धातो और निश्चय से वह एक इच भी पीछे नही हटते थे, चाहे उन्हे उसके लिए कितने ही कष्ट क्यों न

उठाने पडे। इसी तरह वह जिसे अपना कर्त्तव्य समझते थे उसके लिए अपने जीवन की बाजी लगा देते थे। इसके साथ-साथ उनका मानसिक सतुलन इतना अधिक था कि वह बडी-से-बडी शासकीय और घरेलू मुसीबतो मे भी अपना विवेक नही खोते थे। जो लोग पचास वर्षो से भी अधिक उनके निकट सपर्क मे रहे, उन्होने भी कभी उन्हे झुझलाते नही देखा। उन्हे प्रायः कठिन राजकीय समस्याओ और परिस्थितियो का सामना करना पडता था। कई बार दगे-फसाद हो जाते थे और ऐसी राजकीय परिस्थितिया उत्पन्न हो जाती थी कि वह त्यागपत्र दे देते थे। लेकिन ऐसे समय मे भी उनके व्यवहार और बातचीत मे उन कठिनाइयो का कोई आभास नही मिलता था। इसी प्रकार कई बार स्वजनो की भयकर बीमारी मे भी उनका जीवन-क्रम बराबर चलता रहता था, वह कभी अशात या व्याकुल नही पाये जाते थे।

बापनाजी के धैर्य, कर्त्तव्यपरायणता तथा विपत्ति मे मानसिक सतुलन रखने के अनेक उदाहरण है। एक बार एक साधारण घटना से इन्दौर मे सन् १९२६ मे हिन्दू-मुस्लिम दगा हो गया था। उस समय इन्दौर जिले के कलेक्टर ठाकुर बलवतसिह थे। वह स्नेहलतागज मे रहते थे। कदाचित् उनके लडके का मुडन-सस्कार था। उनकी वश-परम्परा के अनुसार उनकी धर्मपत्नी उत्सव मे सम्मिलित थी। उनके यहा आई हुई स्त्रियो के साथ वह देवी पूजने गई थी। साथ मे रोशनचौकी, शहनाई का बाजा भी था। देवीजी के रास्ते मे एक मस्जिद पडती थी। उस मस्जिद के सामने से शहनाई बजती हुए चली गई। इन्दौर राज्य मे आम रास्तो पर बाजा बजाने पर कोई रोक नही थी। स्त्रिया पूजा करके वापस घर पर पहुची ही थी कि कलेक्टर साहब के मकान के आसपास हगामा मच गया। कलेक्टर साहब उस समय पर घर नही थे। थोडी देर मे और हो-हल्ला मचा, जबतक पुलिस को सूचना मिली और वह मौके पर पहुची, तबतक मारपीट होने लगी। भीड मे गोली भी चल रही थी। जब इसकी खबर बापनासाहब को मिली तो वह फौरन पुलिस और दूसरे अधिकारियो की राय के विरुद्ध मोटर से दुर्घटनाग्रस्त क्षेत्र मे

पहुच गए। जिस समय वह मोटर से उतरकर श्री बलवंतसिह के परिवारवालों को सुरक्षित स्थान मे पहुचाने की व्यवस्था कर रहे थे, उनके कधे के पास से बदूक की एक गोली निकल गई, परतु उन्होने बिना विचलित हुए उन सबको सुरक्षित स्थान मे पहुचाया। उसके बाद दगा कुछ जोर पकड गया। शहर-भर में अशाति फैल गई। बापनासाहब ने लोगो को शात होने को कहा। धीरे-धीरे दगा समाप्त हो गया और फिर उसके बाद इन्दौर मे कभी साप्रदायिक झगडा नही हुआ। इस तरह बापनाजी ने अपनी जान की तनिक भी परवा न की और कर्त्तव्यपरायणता एव निडरता का परिचय दिया।

बापनासाहब उस समय इन्दौर के प्रधान मत्री थे। वह अपनी कोठी के सामने की बगीची मे मिला करते थे। उस समय की स्थिति तनावपूर्ण होने के कारण बापनासाहब से एक सज्जन ने कहा, "इस समय आप बगीची मे न मिला करिये। वहा दुष्ट लोग अनुचित व्यवहार कर सकते है।" बापनासाहब ने उत्तर दिया, "इस प्रकार की भीरुतापूर्ण बात मन में भी न लानी चाहिए।" इससे यह भी प्रकट होता है कि बापनाजी मे कितना आत्मविश्वास था। ईश्वर में उनकी अगाध आस्था थी, जिससे वह हमेशा शात रहते थे।

जब कई दिनो के पश्चात् ठा० बलवन्तसिह से सबधित मुकद्दमे का फैसला सुनाया जानेवाला था, तब इस आशका से कि उनके छूटने पर मुसलमानो का क्षोभ और उत्तेजना एकदम भडक उठेगी और नगर की शाति को बडा खतरा हो जायगा, उस समय के अग्रेज इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस ने कुछ गिरफ्तारियो की तजवीजे पेश की, कितु बापनासाहब ने उन्हे न मानकर आई० जी० पी० को आदेश दिया कि वह सतर्कता से शाति बनाये रखने के हेतु इन्दौर मे ही रहे और श्री बलवन्तसिह को मोटर मे ले जाकर मक्सी रेल्वे स्टेशन पर रात को ११ बजे की ट्रेन मे बिठलवा दे, ताकि दूसरे दिन मुसलमानो को खबर लगने से पूर्व ही वह सैकडो मील दूर पहुच जाय। तद्नुसार अमल किया गया। इस तरह इन्दौर मे अशाति नही होने पाई।

इन्दौर जिले के खडैल गाव के पटेल नाथूसिह का उसके भाइयो से आपसी झगडा हो गया। उस झगडे ने उग्र रूप धारण कर लिया। उस सबध मे पुलिस द्वारा उसके खिलाफ कई फौजदारी मुकद्दमे चलाये गए। उसका विश्वास हो गया कि पुलिस उसके भाइयो की नाजायज सहायता कर रही है और उसे बर्बाद करना चाहती है। स्वयं की शक्ति से हीन तथा राज्य की सहायता से नाउम्मीद होकर नाथूसिह इस नतीजे पर आया कि अब इस राज्य में न्याय नही मिल सकता। इसलिए यहा के तत्कालीन दीवान बापनासाहब को ही वह गोली मार दे।

श्री बापना का अपने शासन-काल मे नित्य का नियम था कि वह सुबह ९-१० बजे तक बगीचे मे खडे होकर जो भी व्यक्ति आता था, उससे मिलते और उसके दु ख-दर्द की गाथा सुनकर जो भी मदद बनती, करते थे। ऐसे मौके का लाभ उठाकर नाथूसिह पिस्तौल मे कारतूस भरकर बापनासाहब को गोली मारने के इरादे से पहुचा और मिलनेवालो की पक्ति मे सबसे आखिर मे खडा हो गया। सब मिलनेवाले चले गये तब वह उनके पास पहुचा और अपना रिवाल्वर तानने का प्रयत्न करने लगा। बापनासाहब उसके मन की बात ताड गये, परतु उस भयानक परिस्थिति मे किसी प्रकार भी विचलित न होते हुए उन्होने गभीर मुद्रा मे नाथूसिह से पूछा, "क्या चाहते हो ?" नाथूसिह ने कहा, "मैं आपको मारना चाहता हूं।" बापनासाहब बोले, "ठीक है। यह तो तुम कभी भी कर सकते हो, परतु मारने के पहले मेरे योग्य काम हो वह ले लो और उसके बाद जब चाहो तब मार देना। मै तो हमेशा ही यहा मिलता हू और मिलता रहूगा।" यह उनकी अन्त करण की खरी वाणी थी, जिसका नाथूसिह के मन पर प्रभाव हुए बिना न रहा। उसके हाथ से रिवाल्वर छूटकर जमीन पर गिर गया, आखो से आसुओ की धारा बहने लगी और अन्दर का क्रोध और विद्वेप प्रेम और दीनता मे परिणत हो गया, जिससे अभिभूत होकर नाथूसिह बापना-जी के चरणो मे गिर पड़ा। इसका प्रभाव बापनासाहब पर भी पडे बिना न रहा। उन्होने नाथूसिह को दोनो हाथो से उठाकर छाती

से लगा लिया। नाथूसिह बड़ी देर तक बापनासाहब के सीनें से लगा हुआ फूट-फूटकर रोता रहा। बापनाजी ने अपने रूमाल से उसका मुह और आखे पोछी और उसे धीरज बंधाकर कहा, "तुम्हें जो तकलीफ है, वह सब तुम मुझे सुनाओ।" वह बड़े ध्यान से, शान्ति-पूर्वक उसकी व्यथा सुनते रहे कि किस प्रकार पुलिस ने उसके विरोधियो से मिलकर उसे अन्यायपूर्वक बर्बाद किया है। उसने बताया कि उसके खिलाफ कई झूठे फौजदारी मुकद्दमे चलाये, जो न्यायालय मे जाकर सभी झूठे पाये गए और अब भी सरकारी कार्यालयों में उसके खिलाफ अनेक प्रचार-कार्यवाहियां चालू है। लडने की अब उसमें शक्ति नही रह गई है। श्री बापना ने उससे कहा कि तुमने जो कुछ मुझसे कहा है वह सब लिखकर मुझे दे दो। इसके बाद उसका गिरा हुआ रिवाल्वर उठाकर उन्होंने उसे वापस दे दिया। नाथूसिह ने दूसरे ही दिन अपनी सब कठिनाइयां लिखकर उनके सामने प्रस्तुत की, जिन्हे पढकर बापनासाहब का दिल भर आया और हर महकमे से संबधित उसकी मिसिले तुरंत मगवाकर थोडे ही समय मे उन सबका निर्णय करा दिया।

सन् १९३९ में जब नगरपालिका के करो के विरुद्ध इन्दौर नगर मे हडताल हुई और जनता मे बहुत उत्तेजना फैली तो मंत्रिमडल की विशेष बैठक एक दिन रात को वक्षी बाग मे की गई। वहां इस्पेक्टर जनरल पुलिस भी बुलाये गए। बहुत कुछ वाद-विवाद के बाद इस्पैक्टर जनरल पुलिस ने कई लोगों के नामों की सूची पेश की, जिनको सुबह होने के पहले गिरफ्तार करके दूर भेजने की सिफा-रिश थी। इस सूची में उस समय के प्रजामंडल के कुछ कार्यकर्त्ता भी थे। विचार-विनिमय के पश्चात् बापनासाहब ने इस्पैक्टर जन-रल पुलिस की तजवीज नामजूर कर दी और नगर की शाति बनाये रखने के लिए जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

एक बार एक मत्री ने जब मत्रि-मण्डल की बैठक में महाराजा की ओर से एक जबानी सदेश सुनाया तब बापनासाहब ने बड़ा गम्भीर रूप धारण करके कह दिया, "महाराजासाहब को जो कुछ हुक्म देना हो, सीधे मुझे दे सकते है। मैं महाराजासाहब और उनके

प्रधान मत्री के बीच किसी तीसरे व्यक्ति के आने की जरूरत नही समझता, न किसी तीसरे आदमी के द्वारा दिये गए उनके जबानी हुक्म को सुनने को तैयार हू।" यह घटना बताती है कि बापना-साहब मे कोमलता के साथ कितनी दृढता थी।

सन् १९४५ की बात है। अलवर राज्य मे मेव लोगो ने राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उसके फलस्वरूप एक गाव मे गोली चली। महाराजा साहब, अन्य मत्रियो और इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस के मना करने पर भी बापनासाहब अपनी जान को जोखिम मे डालकर तुरंत घटना-स्थल पर पहुचे और क्षुब्ध लोगो को शान्त किया। वहा गोली चलने के अवसर पर पडित जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली से पत्र लिखा कि लोगो पर गोली चलाकर जो कार्यवाही की गई, वह दण्डात्मक थी। इस पत्र का उत्तर देते हुए बापना-साहब ने नेहरूजी को लिखा कि तत्कालीन भयकर और विस्फोटक परिस्थिति मे और भी कडी कार्यवाही करने की जरूरत थी और यदि आप मेरे स्थान पर होते तो आप भी वही कार्यवाही करते जो मैंने की। इस तरह सवेदनशील बापनाजी परिस्थिति के अनुकूल रुख अपनाकर सभी विरोधो को शान्त कर देते थे। साथ-ही-साथ निडरता से अपने कर्तव्य का पालन करते थे।

जब शहर मे कभी जोर की आग लग जाती तो बापनाजी स्वय मौके पर पहुचते थे। सन् १९३८ मे सियागज इन्दौर मे बड़े जोर की आग लगी तो बापनासाहब आधी रात वहा जाकर सुबह तक डटे रहे।

एक बार इन्दौर मे भारी वर्षा हुई और यशवतसागर की, जहा से इन्दौर नगर को पीने का पानी आता था, पाल टूटने का खतरा हो गया। उस समय बरसते पानी मे बापनाजी ने स्वय वहा पहुच-कर लोक-निर्माण विभाग द्वारा अपेक्षित प्रबध करवाया। उपरोक्त उदाहरणो से प्रतीत होगा कि बापनासाहब अपने कर्त्तव्य से कभी पीछे नही हटते थे। चाहे उनकी जान खतरे मे पड जाय, पर वह बडे धैर्य और साहस से काम करते थे।

उन्होने अनेक महाराजाओ की सेवा बडी ईमानदारी से की।

उनकी वफादारी जैसी आमतौर पर हुआ करती है, वैसी नही थी। वह राजाओ को खुश करने के लिए उनकी 'हा' मे 'हा' मिलाकर या प्रशंसा करके उनके इशारो पर काम नही करते थे। उनकी वफादारी राजा और प्रजा दोनो के सही हितो पर आधारित थी। महाराजा और शासक, अक्सर न्यूनतम प्रतिरोध की नीति का स्वागत करते है और उससे खुश होते है, क्योकि उनके द्वारा कई बार अल्पकालिक दृष्टिकोण अपनाया जाता है। ऐसी नीति सबंधित अधिकारी के लिए भी व्यक्तिगत रूप में लाभदायक सिद्ध होती है। पर बापनाजी ऐसी नीति से बिल्कुल परे थे। कई बार जब इनकी सलाह महाराजा की इच्छा से मेल नही खाती थी तब बडी गंभीर परिस्थिति उत्पन्न हो जाती थी। किंतु जब इन्हे पूरा विश्वास हो जाता था कि यही कर्त्तव्य का पथ है या इसी मे राजा और प्रजा का वास्तविक हित है तो अपने निश्चय से वह तनिक भी इधर-उधर नही होते थे। यद्यपि उन्हे इस दृष्टिकोण के कारण अनेक बार भारी कष्ट झेलने पडे, तथापि वह अपने मत पर साहसपूर्वक डटे रहे और कभी भी अपने विचारो और सिद्धातो के अनुसार काम करने मे दुःख नही माना। उनको अपना कर्त्तव्य-पालन करने से बडी शाति और सतोष मिलता था। इसके कई उदाहरण है। सन् १९२६ की बात है। महाराजा तुकोजीराव ने राजगद्दी छोडकर अपने पुत्र महाराजा यशवतराव को गद्दी पर स्वय अपने हाथो से बिठाया। उस समय प्रश्न उठा कि महाराजा यशवतराव के भाषण के बाद इक्कीस तोपो की सलामी दी जानी चाहिए या नही। ब्रिटिश सरकार चाहती थी कि इक्कीस तोपो की सलामी दी जाय, किन्तु बापनासाहब का मत था कि इसका मतलब यह होगा कि महाराजा यशवतराव को ब्रिटिश सरकार ने गद्दी पर बिठाया है, जब कि वास्तविकता यह थी कि उनको महाराजा तुकोजीराव ने स्वय बिठाया था। ऐसी हालत मे तोपो की सलामी नही दी जानी चाहिए। बापनासाहब अपने निश्चय पर डटे रहे। अन्त मे ब्रिटिश सरकार को उनकी बात मान लेनी पड़ी।

नाबालिग शासन-काल मे जब वाइसराय के यहा कोई औप-

चारिक समारंभ होता, तब बापनाजी ब्रिटिश सरकार के तमगो के साथ-साथ इन्दौर राज्य के तमगे भी लगाया करते थे। इस पर वाइसराय ने आपत्ति उठाई और एजेन्ट टु दी गवर्नर जनरल से इस सम्वन्ध मे रिपोर्ट मागी। एजेन्ट टु दी गवर्नर जनरल द्वारा पूछने पर बापनाजी ने उत्तर दिया कि इसमे कोई आपत्तिजनक बात नही होनी चाहिए। इस बारे मे पहले ही महाराजासाहव के शासन-काल मे निर्णय लिया जा चुका है और नाबालिग शासन-काल मे वह केवल उस परम्परा का पालन कर रहे है।

इसी प्रकार बापनाजी ने एजेन्ट टु दी गवर्नर जनरल से आपत्ति उठाई कि उनके यहा से शासकीय पत्र-व्यवहार मे इन्दौर राज्य द्वारा दी हुई उपाधिया नही लिखी जाती। उनके आग्रह करने पर वे उपाधिया लिखी जाने लगी।

एक अन्य घटना सन् १९२९ की है जब महाराजा यशवतराव होल्कर राज्याधिकार मिलने से पूर्व प्रशासकीय प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए इग्लैड से लौटे थे। प्रश्न यह था कि राज्याधिकार मिलने के बाद औपचारिक भेट करने के लिए महाराजासाहव एजेंट टु दी गवर्नर जनरल के यहा पहले जाय अथवा एजेंट उनके यहा आये। बापनाजी के लिए यह एक बड़ी कठिन परिस्थिति थी, क्योकि एजेट यह आशा करते थे कि बापनासाहव को भारत सरकार ने ही प्रधानमत्री के पद पर नियुक्त किया था, इसलिए वह महाराजा को यह सलाह देगे कि वह पहले एजेट के यहा मुलाकात के लिए जाय। बापनासाहव के सामने इस समय कर्त्तव्याकर्त्तव्य का सवाल था। यदि वह महाराजासाहव को एजेट के यहा पहले जाने की सलाह देते हैं तो न केवल महाराजा के स्वाभिमान को ठेस पहुचेगी, वरन् होल्कर राज्य का भी अनादर होगा। इसलिए उन्होने निडरता के साथ एजेट से कहा कि प्रथम औपचारिक भेट उन्हीको महाराजा के निवासस्थान पर करनी चाहिए। इसके साथ ही उन्होने महाराजा को सलाह दी कि उन्हे औपचारिक भेट के लिए पहले एजेंट के यहा नही जाना चाहिए। अत मे मध्यम मार्ग निकाल लिया गया।

इसी प्रकार एक घटना उस समय की है जब महाराजा यशवंत-राव को राज्याधिकार मिलने वाले थे। उस समय तत्कालीन वाइ-सराय राज्यारोहण के लिए इन्दौर नही आ सकते थे। इसलिए वह चाहते थे कि यह समारोह शिमला में किया जाय। बापना-साहब ने इस पर एजेन्ट टु दी गवर्नर जनरल से स्पष्ट शब्दों में कहा कि महाराजासाहब का राज्यारोहण के लिए शिमला जाना अशो-भनीय होगा और ऐसा किये जाने से हमेशा के लिए एक अनुचित परंपरा कायम हो जायगी। आखिर यह तय हुआ कि न वाइसराय इन्दौर आवे और न महाराजा शिमला जाय और राज्यारोहण की रस्म एजेन्ट टु दी गवर्नर जनरल द्वारा इन्दौर मे ही सम्पन्न कर दी जाय। इस तरह नाबालिग शासन-काल मे भी, यद्यपि बापना-साहब को ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रधान मत्री के पद पर नियुक्त किया गया था, फिर भी राज्य की किसी प्रकार हानि या अपमान को वह सहन नही कर सकते थे।

इदौर राज्य के तत्कालीन सेनाध्यक्ष ले० क० टी० एम० कार-पेडल लिखते है :

"जब मै शुरू मे इंदौर गया तो बापनासाहब से साक्षात्कार के समय उनके सीधे-सादे तरीकों से प्रभावित हुए बिना न रह सका। उन्होने न केवल मुझे मेरे कर्त्तव्य समझाये अपितु नियुक्ति से सबधित विभिन्न समस्याओं से भी अवगत कराया। मै इस बात पर बल देना चाहूगा कि हम लोगो के बीच आखिर तक जो कार्य-सबधी व्यवहार हुए, उनमें श्री बापना के मेरे प्रति रवैये मे कभी परिवर्त्तन नही हुआ। हमारी चर्चा का कोई भी विषय या समस्या हो, मुझे हमेशा विश्वास रहता था कि वह मेरे विचारो को सौजन्यपूर्ण भाव से सुनेंगे। अपना मत भी वह बिल्कुल स्पष्ट रूप से बता देते थे, चाहे वह मेरे प्रस्तावों के पक्ष मे हो या विपक्ष में, वह मुझे साफ-साफ कह देते थे कि मै आपका प्रस्ताव मत्रिमडल के सामने रखूंगा, किन्तु तथ्यो के अनुसार ही उसकी पुष्टि या विरोध करूगा। इसपर से मैं यथार्थ रूप मे जान लेता था कि मेरा प्रस्ताव वास्तविक रूप ने किस स्थिति में है। इस प्रकार हम उत्तम मित्रों की तरह विदा होते

थे और जहातक मेरा सवाल था, उनके निष्पक्ष व्यवहार और विचार-पूर्ण निर्णय के कारण उनके प्रति मेरी आदर-भावना दृढ हो जाती थी। इसी तरह अनेक मामलो मे महाराजासाहब के सामने भी वह अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रकट करते थे।"

इदौर राज्य की पुलिस के भूतपूर्व इस्पेक्टर जनरल लिखते है

"इदौर की सकटकालीन स्थिति मे श्री सिरेमल बापना की निर्णय-शक्ति तथा धैर्यशीलता राज्य के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। उच्चतर सिद्धांतो के व्यक्ति होने के कारण उन्होने किसी भी ऐसी नीति और कार्य को पसन्द नही किया या उसका समर्थन नही किया, जो उनके स्वय के मानसिक स्तर से मेल नही खाते थे। उनमे अपने निश्चय पर अडिग रहने का अपूर्व साहस था। वास्तव में कुछ परोक्ष परिस्थितियो मे अपने रुख मे दृढ रहने के कारण ही, जो बहुत प्रशसनीय था, वह प्रधान मत्री के पद से सेवा-निवृत्त हो गए, जिसका मुझे अत्यन्त दु ख हुआ। तेरह वर्ष तक प्रधान मत्री और तीस वर्षो से अधिक राज्य की सेवा मे रहकर ऐसे उच्च प्रतिष्ठित अधिकारी को खोना इदौर राज्य के लिए एक बडा दु ख-पूर्ण आघात है। मैं निश्चयपूर्वक अनुभव करता हू कि भारतवर्ष ने क्वचित् ही उनसे अधिक योग्य और अधिक अन्त करणानुयायी या शुद्ध अत करण के प्रशासक पैदा किए हो।"

सैद्धान्तिक मामलो पर उन्होने सन् १९२० के पहले तीन बार अपना त्यागपत्र दिया था। तीसरी बार वह स्वीकृत भी किया गया, जिससे उनको इदौर छोडना पडा। इसी तरह उन्होने महाराजा-साहब की ओर से उचित अवसर पर पोलिटिकल एजेन्ट से भी मुठभेड ली। सन् १९२६ मे प्रधान मत्री होने के बाद भी वह अपने सिद्धातो से पीछे नही हटे। नाबालिग शासन मे भी जेम्स कैनिथ फिट्ज ने कहा है, "वह हमेशा एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल व पोलिटिकल एजेन्ट के सामने अपनी राय निडरता से रखते थे। जहा सैद्धांतिक प्रश्न आता, वह उसपर डटे रहते थे और सख्त विरोध करते थे।"

जब महाराजा यशवंतराव होल्कर ने एक अमरीकी महिला

से शादी की तब बापनाजी को यह बात उनके राज्य के हित मे नही मालूम हुई । अत महाराजासाहब की नाराजगी का ख्याल न करके उन्होने उस शादी पर महाराजासाहब को बधाई नही दी ।

बापनासाहब सन् १९४५ में रतलाम मे चीफ मिनिस्टर थे । उन दिनो श्रीमती बापना का स्वर्गवास हो गया । बापनासाहब ने विशेष परिस्थिति के कारण त्याग-पत्र दे दिया । इधर तो श्रीमती बापना का वियोग और उधर यह पद-त्याग, पर इतने पर भी बापना-साहब का सन्तुलन कायम रहा । त्यागपत्र उन्होने इसलिए दिया था कि महाराजासाहब कुछ ऐसा रास्ता अपनाना चाहते थे, जो उनके हित में नही था और जिससे उनकी बदनामी भी हो सकती थी। बापनासाहब ने उनको सलाह दी, लेकिन उन्होने उसपर अमल नही किया । बापनासाहब को यह सहन नही हो सका कि उनके मुख्य सलाहकार रहते हुए महाराजासाहब की बदनामी हो। महाराजासाहब बापनासाहब को अपना त्याग-पत्र वापस लेने के लिए स्वय समझाने आए और एजेन्ट टू दी गवर्गर जनरल ने भी टेलीफोन द्वारा इन्दौर से बापनासाहब से अनुरोध किया कि वह जबतक बापनासाहब से न मिल ले, बापनासाहब अपना त्याग-पत्र स्थगित रखे । लेकिन बापनासाहब अपने निर्णय से विचलित नही हुए । पत्नी के स्वर्गवास के बारह दिन भी पूरे नही हुए थे और अतिथियों का काफी जमाव था, फिर भी अगले दिन सामान बधकर तैयार हो गया और उन्होनें रतलाम से फौरन प्रस्थान कर दिया ।

वह अपने वचन के भी बहुत पक्के थे और कितनी भी हानि क्यो न हो, उसका पालन करने मे नही हिचकते थे । इन्दौर मे एक बार उन्होने अपने एक सचिव को महाराजासाहब से पूछकर किसी बात का आश्वासन दे दिया था । बाद मे महाराजासाहब के उस प्रकार हुक्म देने को तैयार न होने पर उन्होने अपना त्यागपत्र पेश कर दिया । जब वह सन् १९३९ मे इन्दौर से सेवा-निवृत्त हुए तब महाराजासाहब बीकानेर ने अपने यहा प्रधान मत्री होने का निमत्रण दिया, जिसे उन्होने मजूर कर लिया । उनके वहा जाने के पहले ही सेठ जमनालालजी बजाज स्वय बीकानेर से ज्यादा अच्छी

शर्तो तथा अधिक वेतन पर जयपुर राज्य के प्रधान मत्री पद के लिए प्रस्ताव लाये थे, परन्तु वापनाजी ने उस प्रस्ताव को स्वीकार नही किया, क्योकि वह बीकानेर जाना स्वीकार कर चुके थे।

पद, प्रभुत्व, यश और गौरव साधारण मनुष्य को अनुचित लाभ उठाने के रास्ते पर धकेल देते हैं। कोई भी मनुष्य प्रभुता पाकर सहज ही पक्षपाती, स्वार्थी और लोभी वन जाता है। परन्तु श्री वापना इससे विल्कुल भिन्न थे। जैसे-जैसे उनके अधिकार बढ़ते गए, उनकी शक्ति बढ़ती गई, वह उच्च पदों पर आरूढ़ होते गए और जैसे-जैसे उनकी कीर्ति बढ़ती गई, वैसे-वैसे वह और भी ज्यादा विनम्र और परोपकारी होते गए।

उनके उज्ज्वल चरित्र मे चैत्र की धूप की तरह उष्णता, उज्ज्वलता और पोषण-शक्ति थी। निर्मल चांदनी की तरह पवित्र व महिमामय आचरण उनके जीवन का आभूषण था। यही कारण थे कि वह इतने लोकप्रिय हुए और उनके प्रति जनता का स्नेह और विश्वास रहा। जिस समय वह सन् १९२१ में इन्दौर से पटियाला जा रहे थे, इन्दौर के मुसलमानों ने मस्जिदों मे खुदा से इवादत की कि वापनासाहव सफल न हो तथा जल्द इन्दौर वापस आ जायं। जब वह पटियाला से सन् १९२४ मे वापस आए, तव पटियाला के लोगो को, यद्यपि वह वहां सिर्फ ढाई वर्ष ही रह पाये थे, वहुत दु.ख हुआ और कुछ कर्मचारी और व्यक्तिगत नौकर तो उनके साथ इन्दौर आने को तैयार हो गए। कुछ को तो उन्होने समझा-बुझाकर वही रखा, किंतु एक मुसलमान ड्राइवर और एक नाई साथ ही आ गए और करीव एक वर्ष तक इन्दौर रहकर अपने घर वापस लौटे।

इन्दौर में वापनाजी गंभीर रूप से बीमार हो गए। तव हिन्दू-मुसलमान और अन्य धर्मावलंवियो की ओर से पूजा-स्थानो मे उनके शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ के लिए प्रार्थनाए हुआ करती थी।

अलवर से सन् १९४७ मे सेवा-निवृत्त होने के वाद जव विशाल राजस्थान वन चुका था और अलवर के छोटे-वड़े अधिकारी और कर्मचारीगण जयपुर आ चुके थे, तव एक वार वापनासाहव जयपुर

पधारे। उस समय अलवर से आये हुए बहुत-से अफसर भी बापना-साहब का स्वागत करने आये थे। जब बापनासाहब रेलगाड़ी से उतरे, प्रत्येक ने, चाहे वह किसी श्रेणी का था, बापनासाहब के पैर छुए। सेवा-निवृत्त होने के बाद किसी प्रधान मन्त्री के लिए उनके अधिकारियो की ओर से इस प्रकार की और इतने गहरे सम्मान की भावना का उदाहरण मुश्किल से मिलेगा।

जनता को उनमें कितना विश्वास था और उनको जनता मे कितना विश्वास था, यह उन घटनाओ से पता चलता है, जबकि वह सन् १९२६ में और १९३९ मे एक बड़ी भीड़ के अन्दर, जहा गोलिया चल रही थी, बिना हिचक के पुलिस तथा अन्य अधिकारियो के मना करने पर भी, उसको शात करने चले गए। इसी तरह अलवर में भी सन् १९४५ मे मेवो के दंगो मे जाकर उनको शात किया।

श्री बैजनाथ महोदय, जो कि होल्कर राज्य मे सन् १९४६-४७ मे मन्त्री रहे थे, लिखते है, "स्नेह, सौजन्यशालीनता मे उनकी तुलना में खडा हो सके, ऐसा व्यक्तित्व शासकीय क्षेत्र मे मिलना कठिन है। जिन परिस्थितियो मे उन्होने काम किया उनमे इन गुणो की रक्षा करना कितना कठिन है। या तो शुद्ध मनुष्य का दम घुट जायगा या वह वहां अपनी शुद्धता की रक्षा ही नही कर सकेगा। ऐसी परिस्थितियों मे उन्होने अपने-आपको सम्हाले रखा, यह उनके असाधारण पुरुषार्थ का ही उदाहरण है। मुझे निश्चय है कि इस पुरुषार्थ को उपयुक्त क्षेत्र मिलता तो वह हमारे भारतीय गगन के देदीप्यमान नक्षत्रो में होते।"

इन्दौर राज्य के एक भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश ने लिखा है :

"मुझे सिरेमल बापना-मन्त्रिमंडल मे न्यायमन्त्री के रूप मे चार वर्ष से अधिक समय तक कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मै उनके छोटी-बड़ी सभी समस्याओ को बुद्धिमत्तापूर्वक तथा चतुराई से हल करने के कौशल से बहुत प्रभावित हुआ हू। उनमें सतुलन बनाये रखने तथा सभी को प्रसन्न रखने की अद्भुत क्षमता थी। यह राज्य में उनकी लोकप्रियता का वास्तविक रहस्य है। वह

राजा तथा प्रजा के हितो का बडा ध्यान रखते थे। इसके साथ ही उनके दीर्घकालीन अनुभव और कर्तव्यनिष्ठा का एक परिणाम यह हुआ कि प्रभुसत्ता के प्रतिनिधिगण कभी मार्ग से विचलित नही हुए। महाराजा के राज्य से प्राय बाहर रहने के कारण कभी-कभी उनका कार्य वडा कठिन हो जाता था, किन्तु उन्होने सदैव ही अवसर के अनुकूल क्षमता प्रदर्शित की और राज्य के अधिकारो और सुविधाओ का कभी अतिक्रमण नही होने दिया। तत्कालीन प्रस्तावित भारतीय सघ के प्रश्न पर अपने दृष्टिकोण को जिस प्रभावशाली ढग से उन्होने प्रस्तुत किया, वह उनकी राजनैतिक सूझ-बूझ का ज्वलत उदाहरण है।"

भारतीय जनता के अलावा अंग्रेज अधिकारियो मे भी वह इतने अधिक प्रिय थे कि ले० कर्नल टी० एम० कारपेंडल एक स्थान पर लिखते है

"आधिकारिक व्यवहारो के अतिरिक्त मै और मेरी धर्म-पत्नी अपने किसी भी सामाजिक समारोह मे उनकी उपस्थिति से बहुत ही आनन्दित होते थे। उन्होने मेरे परिवार का, यहा तक मेरी पन्द्रह वर्ष की पुत्री का, इतना स्नेह प्राप्त कर लिया था कि जब उनको मालूम पडता था कि श्री सिरेमल बापना उनके घर पर पधारने वाले है तो उनकी खुशी का ठिकाना न होता। मेरे पुराने कर्मचारियो का मुखमण्डल तो आनन्द से इतना आलोकित हो जाता था कि वह दृश्य वडा ही मनोरजक एव हृदयद्रावक रहा करता था। इसी प्रकार अपनी दयापूर्ण सौजन्यता एवं दूसरो के प्रति दिलचस्पी की भावना से वह हमारे अतिथियो का भी स्नेह प्राप्त कर लेते थे।

"वापनासाहव के प्रधान मत्री का पद छोड़ने पर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैने न केवल एक विद्वान् और चतुर सलाहकार, वल्कि एक सच्चा और वहुमूल्य मित्र खो दिया है और मैं जानता हू कि इन्दौर की सारी सेना और इन्दौर, महू एव आसपास के रहनेवाले समस्त अग्रेजो की भी यही भावना रही होगी।"

इन्दौर की जनता और उनके अधीनस्थ कर्मचारी अनेक अवसरो पर, जैसे उनके पुत्र-पुत्रियो के विवाह के समय, उन्हे वहुत हर्ष

के साथ आमन्त्रित करते थे और उनके सम्मिलित होने पर बहुत ही प्रसन्न होते थे। विवाहो के मौसम मे उन्हे प्राय हर रोज एक दो या ज्यादा जगह जाने को समय निकालना पडता था। वह कर्मचारियो और उनके परिवार की बीमारी-हारी मे या दूसरी मुसीबतो मे धन, औषधि तथा दूसरी सुविधाएं देकर उनको मदद पहुचाया करते थे। उनकी दयालुता एव परोपकार के बहुत-से कार्य सन् १९३९ मे उनके इन्दौर छोडने पर ज्ञात हुए, जबकि लोगो द्वारा ऐसी घटनाओ का उल्लेख किया गया और गरीब लोगो को उनकी अनुपस्थिति अखरने लगी। उनके प्रति लोगो को, विशेषकर निर्धन वर्ग को इतना विश्वास और भरोसा था कि अनेक लोग जब गभीर बीमारी होती तो बापनाजी को अपने निवास-स्थान पर इस आशा से ले जाते कि उनकी उपस्थिति मे रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जायगा। इस तरह के कई उदाहरण है जबकि उनके आग्रह मे बापनासाहब को जाना पडता था।

सेवा-निवृत्त होने के पश्चात् इन्दौर की जनता ने जिस ढग से उनकी हीरक जयन्ती मनाई और उनके नाम पर छात्रावास बनाया, उससे उनकी लोकप्रियता का पता चलता है। अन्त समय तक उनके प्रति जनता का स्नेह तथा सम्मान उसी प्रकार बना रहा।

जनता के साथ उनका व्यवहार अत्यन्त सहानुभूति एव सौजन्यपूर्ण था। हरेक की उनके पास सरलता से पहुच थी। प्रतिदिन प्रातःकाल अपने निवासस्थान के उद्यान मे सब लोगो से मिलने मे वह एक घण्टा व्यतीत किया करते थे। उस समय कोई भी व्यक्ति उनके पास बिना रुकावट या हिचक के पहुच सकता था। उस समय प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह कितना ही अपाहिज या गरीब क्यो न हो और कितना ही कष्ट मे व जरूरतमंद क्यो न हो, अपना दुःख-दर्द सुना सकता था। वह उसको ध्यान से सुनते थे और उसकी आवश्यकता, कष्ट व दुःख-दर्द को दूर करने के लिए उचित कार्य-

पाये। यह एक आश्चर्यजनक बात है कि वह इतने लोगो की समस्याओ को याद रखते थे। जो निवेदन-पत्र उनके द्वारा दिये जाते थे या लोगो की जो समस्याए होती थी, उन पर शीघ्रता से कार्यवाही की जाती थी। अगर कोई कार्य वह नही कर सकते थे तो उसी समय उसको शान्त भाव से समझाकर इन्कार कर देते थे। किसी को झूठा आश्वासन देकर लटकाये रखना उनका स्वभाव नही था। एक बडी सख्या मे लोग उनके निवास-स्थान के कार्यालय और सचिवालय मे समय लेकर मिलते रहते थे। अगर किसी आगन्तुक को आवश्यक कार्य हुआ या वह इन्दौर के बाहर से आया हो और यदि उसे शीघ्र वापस लौटना हो तो उसके बिना समय नियत कराये आ जाने पर भी शीघ्र मिलने के लिए बुला लिया जाता था। जिस सरलता एव सौजन्यपूर्ण व्यवहार से बापना-साहब लोगो से मिलते थे और जिस शीघ्रता से उनकी आवश्यकताओ पर ध्यान दिया जाता था, उसे देखकर वे विस्मय और श्रद्धा से नत हो जाते थे।

एक दूसरे राज्य के जिला न्यायाधीश लिखते है, "मुझे अपनी बीमारी के उपचार के लिए लगभग पन्द्रह दिन इन्दौर मे रहना पडा। मैने अपने एक निकट-सम्बन्धी से श्री बापना के दर्शनो की इच्छा प्रकट की तो उन्होने कहा कि यह तो अत्यन्त सरल कार्य है। मै किसी भी दिन सवेरे ८ बजे बख्शी बाग जाकर अपना कार्ड भेजकर मिल सकता हू। दूसरे दिन मैं भी बाग में पहुचा। वहा मालूम हुआ कि दीवानसाहब आफिस के कमरे मे है। मैने अपना कार्ड एक आदमी के हाथ भेजा और आशा करता था कि इतने व्यस्त दीवान से मिलने के लिए कम-से-कम आधा घटा तो प्रतीक्षा करनी ही पडेगी। किन्तु उस आदमी ने तुरन्त लौटकर कहा, "चलिये।" मै गया और मेरे बैठने पर उन्होने मेरे परिवार की कुशलता पूछी। मैं कब और क्यो इन्दौर आया हू, कहा ठहरा हू, आदि सब हाल पूछकर उन्होने कहा कि यदि मुझे कोई कष्ट हो या किसी चीज या सहायता की आवश्यकता हो तो मैं नि सकोच उनके पास आकर कह सकता हू। अन्त मे सचमुच मेरे लिए यह विश्वास करना कठिन था कि मैं

जिन सज्जन से मिला हूं वह दीवान श्री बापना ही थे, क्योंकि मिलने मे उन्होंने इतनी नम्रता और सज्जनता दिखाई कि वह एक दीवान मे होना असम्भव समझा जाता था।"

बापनासाहब सच्ची जानकारी के लिए केवल पुलिस तथा शासकीय यंत्र पर ही निर्भर नही रहते थे, बल्कि उनको अपने जन-सपर्क से भी पूरी और सच्ची जानकारी प्राप्त होती रहती थी। उससे उनमे केवल आत्मविश्वास की ही भावना जाग्रत नही हुई, वरन् जनता का भी इतना अधिक मात्रा में विश्वास पैदा हुआ।

एक बार 'प्रिंसली इडिया' के सपादक श्री पिल्लै गुपचुप इन्दौर आये। जब बापनासाहब को इसकी खबर लगी और उन्होने इस्पेक्टर जनरल पुलिस से पूछा तो उन्होने कहा कि ऐसा नही हो सकता कि श्री पिल्लै इन्दौर में आए और मुझे पता भी न लगे। तब उन्होंने उस मुहल्ले और आदमी का नाम बताया जहा श्री पिल्लै ठहरे हुए थे। जब इस्पेक्टर जनरल पुलिस ने इसकी बारीकी से जाच की तब वह बात सही पाई गई। उस समय बापनासाहब ने आई० जी० पी० से कहा कि आप ऐसा न समझे कि मेरा शासन केवल पुलिस की रिपोर्ट के आधार पर ही चलता है। आई० जी० पी० उस समय काफी शर्मिन्दा हुए और उन्होने अपनी भूल स्वीकार की।

एक बार एक सज्जन खडवा से इलाज के लिए इन्दौर आए और महाराजा तुकोजीराव अस्पताल मे एक प्राइवेट वार्ड लेकर रहे। प्राइवेट वार्ड मे वार्ड का किराया देना पड़ता था, किन्तु जनरल वार्ड की तरह डाक्टरो की फीस और आपरेशन आदि का खर्चा नही लगता था। इन सज्जन को पन्द्रह दिन बाद आपरेशन आदि का तीन सौ रुपये का बिल दिया गया। बिल देखकर उनको आश्चर्य हुआ और उनके एक रिश्तेदार परेशान होकर बापनासाहब से मिलने गए। जब वह उनसे मिले तो उन्होंने घबराते हुए वह बिल उनके हाथ मे देकर निवेदन किया कि प्राइवेट वार्ड में किराये के अति-रिक्त और खर्चा नही लगता है। श्री बापनासाहब ने वह बिल छोड़ जाने को कहा, ताकि उस बाबत जानकारी ली जा सके। इस-

पर मरीज के रिश्तेदार ने कहा कि विल छोडने से शिकायत मानी जायगी और डाक्टर लोग नाराज हो जायगे । अत उन्होने विल वापस ले लिया । श्री बापना ने तुरन्त उस मामले की जाच करवाई और नतीजा यह हुआ कि मरीज को विल नही देना पडा और उसके इलाज मे भी किसी तरह की कमी नही आई । आइन्दा के लिए भी इस तरह की शिकायत दूर हो गई ।

वापनासाहव का जन-संपर्क इतना रहता था कि उन्हे राज्य की व्यवस्था और शासन की नीतियो के विपय मे किस-किस अश तक उनका पालन किया जाता है, इस सम्बन्ध मे ठीक-ठीक पता चलता रहता था । यही कारण था कि राज्य मे भ्रष्टाचार वहुत कम मात्रा मे था और अधिकारी एव कर्मचारी सतर्क रहते थे ।

सेवा-निवृत्त होने के वाद भी उनका बिना किसी रुकावट और हिचकिचाहट के लोगो से मिलना जारी रहा । कोई भी व्यक्ति, चाहे वह सैनिक हो या शासन का उच्च अधिकारी, बडी आसानी से उनसे मिल लेता था, यहा तक कि सन्ध्या को जब वह टहलने जाते थे और किन्ही लोगो से मुलाकात हो जाती तो वह ठहरकर उनसे प्रेमपूर्वक उनके और उनके परिवार के लोगो के स्वास्थ्य तथा अन्य वातो के सम्वन्ध मे पूछताछ करते थे ।

वापनासाहव जाति, धर्म और प्रान्तीयता की भावना से परे थे । वह हरेक की सहायता करते थे । उनके मित्रो मे प्रत्येक धर्म, जाति और प्रान्त के व्यक्ति थे और इसी तरह राज्य की नौकरियो मे भी इसका कभी ध्यान नही दिया गया । यद्यपि वह जैन कुल मे पैदा हुए थे, पर वह सवके साथ एक-सा व्यवहार करते थे । वास्तव मे 'वसुधैव कुटुम्वकम्' का उनका जीवन-सिद्धान्त था । जाति-पाति के भेद-भाव से ऊपर उठकर उन्होने प्रजा-हित किया था । कोई भी दीन-दुखी और दरिद्र उनके द्वार मे निराश लौटकर नही जाता था । छोटे-वडे और धनी-निर्धन का भेदभाव भी उनके उदार हृदय मे कभी स्थान प्राप्त नही कर सका । वह सदा सर्वहितरत रहे । यही कारण था कि हर, धर्म, जाति और प्रान्त के लोगो मे वह इतने लोकप्रिय थे ।

भारत बहुत बडा देश है और लाखों शहरों एवं गांवों में हिन्दू और मुसलमान आपस में बड़े मेल से रहते थे। उनमें कोई साम्प्रदायिक झगड़ा नहीं था। आमतौर पर इस तरह के झगड़े गिने-चुने शहरों में ही होते थे, हालांकि कभी-कभी गांवों में भी झगड़ा फैल जाता था। यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि साम्प्रदायिक सवाल भारत मे जड-मूल से एक मध्यमवर्गी सवाल था और चूंकि काग्रेस में, कौसिलों में, अखबारों मे और करीब-करीब सारी हलचलों में हमारी राजनीति पर मध्यम वर्ग हावी रहा था, इसलिए गुजरे जानाने में इसे बहुत ज्यादा महत्व दे दिया गया था। मुसलमान लोग सामूहिक रूप से गाधीजी द्वारा शुरू किये गए १६२१ के असहयोग आन्दोलन मे, खासकर खिलाफत की वजह से, शामिल हुए थे। यह निरा मजहबी ख्याल था, जो सिर्फ मुसलमानों से सम्बन्ध रखता था और गैर-मुसलमानों को इससे कोई लेना-देना नही था। फिर भी गाधीजी ने इसे अपना लिया था और दूसरों पर भी इसके लिए जोर डाला था, क्योंकि मुसीबत में पड़े भाई की मदद करना वह अपना कर्त्तव्य समझते थे।

१६२०-२१ के असहयोग आन्दोलन के दिनो में भारत में जो हिन्दू-मुस्लिम-एकता दिखाई दी थी, उसने अंग्रेजी शासन को हिला दिया था। इसलिए अग्रेजों ने हिन्दू और मुसलमान मे फूट डालने की नीति को अपनाया, जिससे भारत एक-स्वर से आजादी की मांग न कर सके। इसका फल यह हुआ कि असहयोग की लड़ाई के दिनो की एकता एकदम गायब हो गई।

सन् १६२०-३० के वर्षों में जो शक्तियां और आन्दोलन भारत को हिला रहे थे, उनका असर इन्दौर राज्य पर भी पडना अनिवार्य था। उस समय हिन्दू-मुस्लिम समस्या सारे वातावरण पर हावी हो रही थी। आपसी संघर्ष बढ रहा था और मस्जिदों के सामने बाजा बजाने के अधिकार-जैसे तुच्छ सवालों पर उत्तर भारत में कई स्थानों पर दगे हो गए थे। उसी क्रम मे एक साधारण-सी घटना के कारण इन्दौर में भी १६२६ में हिन्दू-मुस्लिम दगा हो गया, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है। श्री बापना ने नाबालिग

शासन के दौरान हिंदू-मुस्लिम-एकता वनाये रखने मे जो काम किया, उसने इन्दौर राज्य मे सदा-सदा के लिए सांप्रदायिकता की नीव कमजोर कर दी।

वापनासाहव का स्वभाव वडा ही सरल था। उनकी मिलनसारिता और मानवता की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। विघाता ने ये गुण उनमे कूट-कूटकर भर दिये थे। वार्त्तालाप मे उनकी नम्रता, मधुरता- गभीरता एवं विद्वत्ता स्पष्ट प्रतीत होती थी। वह महाकवि कालिदास के शब्दो मे **अधृष्य श्चामि गमध्यश्व यादारत्नैरिवार्णवः"** के उदाहरण थे। जैसाकि एक प्रबधक को होना चाहिए, ठीक वैसे ही वह थे। उनकी प्रबंधपटुता देशी राज्यो में प्रसिद्ध थी। वह कभी शिथिल या असवद्ध रूप मे वार्त्तालाप नही करते थे। नियम तथा समय के वडे पावन्द थे।

जिस गुण के लिए वह सदा के लिए लोगो के हृदय में रहेंगे, वह थी उनकी मानवता। स्नेह, सौजन्य, शालीनता और मानवता मे उनकी तुलना मे खड़ा हो सके, ऐसा व्यक्ति शासकीय क्षेत्र मे मिलना कठिन है। मानव-सेवा उनका धर्म था, उनका कर्म था और उनके जीवन का मर्म था। वह सत्य, अहिसा और अपरिग्रह के परम उपासक थे। वास्तव मे अहिंसा उनके लिए प्रयत्न-साध्य नही, सहज थी। उनका सपूर्ण जीवन दयामय, परोपकारमय और करुणामय था। वह राजनीति मे रहते हुए भी कूटनीति से परे थे। जैसे वह विद्वान् थे, वैसे ही विद्या-व्यसनी भी थे। राजकीय कार्यो से अवकाश निकालकर वह वरावर स्वाध्याय किया करते थे।

वाल्यकाल से ही वह उच्च विचारो से पूर्ण मनस्वी पुरुष थे। उनकी मातृ-भक्ति, पितृ-भक्ति और गुरु-भक्ति भी स्तुत्य थी। उन्होने वाल्यकाल मे मातृ-वियोग हो जाने पर पिता की खूब मन लगाकर सेवा की।

वापनासाहव का आचरण उच्च कोटि का था। नीचता, कायरता और असत्य से उनको वडी चिढ थी। नीच, असभ्य या अशिष्ट व्यवहार को वह वरदाश्त नही कर सकते थे। भीपण-से-भीपण संकट में भी वह विचलित नही होते थे। उनका

जीवन बहुत नियमित और सादगीपूर्ण था। वह हमेशा भारतीय वेश-भूषा मे रहते थे।

श्री बापना ने समर्पित जीवन जिया। उनका जीवन वास्तव में स्वय की अपेक्षा जन-सेवा के लिए ही अधिक था। उन्होंने कुटुम्ब, आम जनता तथा देशी राज्य और उनके नरेशों के लिए जो कुछ किया, उस सबमे उनकी सहायता करने की प्रेरणा ही मुख्य रही। जो कुछ उनसे बन सका, उन्होने स्वेच्छा और सेवा-भाव से किया। उनके महत्वपूर्ण पदों पर रहने के कारण उनके पास सभी वर्गो के लोग बहुत बड़ी संख्या में आते थे। वह जहां तक सभव होता था, हरेक को सहायता पहुचाने के लिए उत्सुक रहते थे। वह अनुभव करते थे कि कभी-कभी लोग अपना कष्ट बहुत बढाकर बताते और प्रस्तुत करते है, लेकिन उनके हृदय की महानता और विशालता इतनी थी कि वह यह जानते हुए भी उनके कष्ट निवारण करने मे आनाकानी नही करते थे। उन्होंने हरेक के साथ भला किया, चाहे वह उनका मित्र हो या शत्रु।

दूसरो के साथ भलाई करना उनका सहज-स्वाभाविक गुण था। कोई भी सहायता का इच्छुक उनके यहा से कभी निराश नही लौटा। इसमे अगर कभी भूल होती थी तो अति की दिशा में। जो भी कोई अपना दुखडा लेकर आता, वह द्रवित हो जाते और जो भी सहायता हो सकती, अवश्य करते। पात्र-अपात्र का भेदभाव भी भूल जाते थे। कभी-कभी अपात्र लोग उनकी उदारता का बेजा फायदा उठा लेते थे, किन्तु वह उन्हे क्षमा करने मे सदा उदार रहते थे। कभी-कभी लगता था जैसे उनके मन मे संघर्ष चल रहा है कि अपात्र को सहायता दी जाय या नही या अपात्र से उसी तरह का व्यवहार किया जाय या नही; किन्तु अंत मे उनके हृदय की कोमलता केवल न्याय के सीमित दृष्टिकोण पर विजय प्राप्त करती थी।

बापनासाहब ने अपनी शासकीय हैसियत से लोगो की जो सहायता की, उसके अतिरिक्त भी उन्होने अपनी जेब से या निजी आमदनी में से गरीबों, जरूरतमन्दो और साधनहीन विद्यार्थियों को

शिक्षा के लिए मुक्त-हस्त से सहायता दी। इस तरह उन्होने अपने जीवन-काल में हजारो विद्यार्थियो की शिक्षा का प्रबन्ध किया। उनकी सहायता के बिना कई विद्यार्थी, जिन्होने आगे चलकर अपने जीवन में ऊंचे पद प्राप्त किये, शिक्षा के लाभ से वचित रह जाते। हरिजन विद्यार्थियो के लिए वह छात्रवृत्ति के अतिरिक्त पुस्तको और कपडो के लिए भी रुपये दिया करते थे।

उनके निजी सचिव के पास उन लोगो की एक बडी सूची रहती थी, जिनको हर माह छात्रवृत्ति या शिक्षावृत्ति दी जाती थी। अतः बापनासाहब के वेतन मे से काफी बडी रकम कट जाने के बाद ही बाकी रकम श्रीमती बापना के पास जाती थी। किन्तु उनके निजी सचिव को इस कटौती के बारे मे श्रीमती बापना को समझाने मे कोई कठिनाई नही होती थी, क्योकि वह अपने पति के विशाल हृदय से भली भाति परिचित थी। हर महीने के प्रारम्भ में अनेक विद्यार्थी तथा दूसरे लोग बडी सख्या मे उनके निवास-स्थान पर सहायता प्राप्त करने आते थे। सहायता पानेवालो के नाम और किस व्यक्ति को कितनी सहायता मिलती थी, यह बात उनके निजी सचिव ही जानते थे, क्योकि पूरी बात गोपनीय रखी जाती थी। वह अपनी सहायता और दान का विज्ञापन न करके बिना दिखावे के देना पसन्द करते थे। उनकी हमेशा यही इच्छा रहती थी कि जरूरतमंद को मदद इस तरह दी जाय कि उसमे वह दीनता का अनुभव न करे।

इन्दौर तथा बाहरवालो को गुप्त रूप से भी वह इतनी अधिक सहायता करते थे कि उसे कोई नही जानता। सेवा-निवृत्ति-काल मे भी वह गरीबो के हमदर्द और असहायो के सहारे थे।

बापनासाहब के छोटे पुत्र अपनी बाल्यावस्था मे हिन्दी पढते थे। उन्हे घर पर पढाने के लिए एक वृद्ध अध्यापक आते थे। एक दिन जाडे के दिनो मे अध्यापक सूती कपडे पहनकर पढाने आये। उसी समय उधर से बापनासाहब आ निकले और अध्यापक को जाडे से कपकपाते देखकर वापस लौट गये। कुछ क्षण के पश्चात् एक बहुमूल्य जरसी लिए हुए आये और अध्यापक से कहा, "आपको

सरदी लग रही है, यह जरसी पहन लीजिए ।" अध्यापक ने कहा, "श्रीमान्, क्षमा कीजिये, मै ब्राह्मण हू, किसी का पहना हुआ कपडा नही लेता ।" बापनासाहब ने कहा कि यह जरसी कल ही मेरे लिए मगाई गई है और मैने एक बार भी नही पहनी ।" फिर तो अध्यापक ने जरसी लेकर पहन ली और बड़े प्रसन्न हुए ।

जब वह गृहमत्री थे, एक दिन चार-पाच भिक्षुक आये । सरदी का मौसम था । भिक्षुकों ने बापनासाहब से कम्बल मागे । उन्हे एक ओर बिठाकर अपने सेक्रेटरी को बुलाकर बापनासाहब ने कहा कि इन गरीब भिक्षुको के लिए अभी ऊनी कम्बल मंगाकर दे दो । सेक्रेटरी ने कहा कि ये भिक्षुक लोग कम्बल मांगकर बेच देते है । बापनासाहब ने कहा कि जो आपने सुना है वह ठीक होगा, परन्तु यह भी तो सभव है कि इनके पास ओढने के लिए कम्बल ही न हों । इसलिए अभी मंगाकर दे दो । थोड़ी देर में कम्बल आ गए और भिक्षुकों को दे दिये गए ।

एक दिन बापनासाहब अपनी कोठी के सामने के बगीचे में लोगों से मिल रहे थे । तभी एक महाराष्ट्रीय ब्राह्मण नवयुवक उनसे मिला और उसने कहा कि मैं बी० ए० पास हू और दो महीनो से कोशिश कर रहा हू, परन्तु कोई नौकरी नही मिल रही है । बापनासाहब ने सेक्रेटरी को बुलाकर कहा कि इनके लायक कोई जगह हो तो इनकी अर्जी लेकर उनके सामने पेश करे । सेक्रेटरी ने कहा कि कोई जगह खाली नही है और कुछ पहले की दी हुई अर्जियां भी है । यह सुनकर नवयुवक की आखो मे आसू आ गए । बापनासाहब ने कहा, "घबराओ नहो । अर्जी दे दो । जगह खाली होने पर तुम्हे नौकरी मिल जायगी ।" "नवयुवक ने कहा कि ऐसा सुनते-सुनते कई मास बीत गए है । मेरे पिता सरकारी नौकर थे, उनकी मृत्यु हो गई । जो कुछ बचा सकते थे, वह मेरी पढ़ाई में खर्च कर देते थे । मा है, एक छोटा भाई और बहन है । घर मे खाने को भी नही है । अब मैं क्या करू ? मुझे आशा थी कि आप नौकरी दिला देगे ।" इतना कहकर जब वह जाने लगा तो बापनासाहब ने कहा, "जरा ठहरो ।" युवक ने देखा कि बापनासाहब की मुद्रा गभीर हो गई और नेत्र

दया से परिपूर्ण हो गये। युवक को बिठाकर भीतर गए और वापस आकर उसे पचास रुपये देकर कहा कि जबतक तुम्हारी नौकरी न लगे तबतक हर महीने मेरे पास आते रहना। युवक ने रोते हुए पैरो मे लिपट जाना चाहा, परन्तु बापनासाहब ने उसे उठाकर कहा, "घबराना नही चाहिए।" और उसे समझाकर रवाना किया।

एक दिन एक मुसलमान बुढिया ने बापनासाहब से कहलवाया कि उसके पति फौज मे नौकर थे। सात रुपये मासिक पेशन पाते थे। वह अब नही रहे। लडके-लडकी नही है। भूखो मरने की नौबत आ गई है। इसके बाद वह बापनासाहब से मिली और उन्हे अपनी गरीबी बतलाई। बापनासाहब को दया आ गई और कहा कि हर महीने सात रुपये ले जाना या मगा लिया करना। तुमको जिन्दगी-भर मेरे यहा से सात रुपये माहवार मिलते रहेगे। एक लिफाफे मे कुछ नोट भी उसको दे दिये।

एक सज्जन महाराजा तुकोजीराव चिकित्सालय मे अपनी धर्म-पत्नी की चिकित्सा कराने आये थे। दवाइओ के लिए उनको कुछ रुपयो की आवश्यकता पड गई। यद्यपि बापनासाहब से उनका परिचय नही था, तथापि रुपयो की व्यवस्था न हो सकने के कारण उन्होने बापनासाहब को पत्र लिखा। दूसरे या तीसरे दिन बापना-साहब स्वय चिकित्सालय मे पहुचे और पत्र भेजनेवाले का पता लगाकर उनसे मिले। उनकी धर्मपत्नी की स्वास्थ्य-सम्बन्धी पूछताछ की और चलते समय सौ रुपये औषधोपचार के लिए दिए। उन भाई ने कहा कि पैतालीस रुपयो की दवाइया मगानी है और बाकी रुपये लौटाने लगे तो बापनासाहब ने नही लिये और कहा कि ये रुपये बाद मे काम आयगे।

एक दिन एक गरीब ब्राह्मण बापनासाहब के पास आया और कहने लगा कि उसके घर मे चोरी हो गई है। एक हफ्ते मे उसकी बहन की शादी होनेवाली थी। उसके लिए जो नये कपडे बनवाए थे वे सब चोरी चले गए और करीब एक हजार रुपये का नुकसान हो गया। बापनासाहब को उसकी पीडित हालत देखकर बडा दु ख हुआ। उसे उसी समय सौ रुपये का नोट दिया। वह ब्राह्मण, जो

उनसे पहले कोई खास परिचित नही था, गद्गद हो गया और कृतज्ञता के आसू बहाता चला गया ।

एक दिन सवेरे बख्शी बाग मे एक वृद्धा स्त्री अपनी पुत्री के साथ खडवा से बापनासाहब का नाम सुनकर आई । उस वृद्धा स्त्री के पति की कुछ रोज पहले अकस्मात् मृत्यु हो गई थी और संसार में उसका कोई नही रहा था । खाने के भी लाले पडने लगे । उसे पुत्री की शादी की भी चिंता थी । वे लोग खडवा से विना टिकट इदौर रवाना हुए । रास्ते में टिकट-बाबू ने टिकट मागा । टिकट के बदले उसे अपनी एकमात्र अगूठी भी देनी पड़ी । बापनासाहब ने उसकी करुण कथा सुनकर उसे एक लिफाफे में सौ रुपये दिये और खंडवा के कलेक्टर के नाम एक पत्र सहायता के लिए दिया ।

बहुत बार तो वह लोगो को विना बताये ही मदद किया करते थे, क्योकि अनेक व्यक्ति आर्थिक कष्ट मे होते हुए भी किसी से आर्थिक सहायता लेना पसद नही करते थे । जब वह बीकानेर में प्रधान मत्री थे, उनके पौत्रो को पढाने के लिए तीन शिक्षक रखे गए थे । एक दिन उन्होने एक और शिक्षक रख लिया । उनके निजी सचिव और दूसरे शिक्षको ने कहा कि चौथे शिक्षक की आवश्यकता नही है । उन्होने उनको समझाया कि यह व्यक्ति बहुत सच्चा और ईमानदार है, लेकिन आर्थिक कठिनाई मे है और अपने बच्चो को पढा नही सकता । वह सीधी सहायता नही लेगा । इसलिए उसको शिक्षक रखने से परोक्ष सहायता हो जायगी ।

कई व्यक्ति अपनी गरीबी बताकर उनकी उदारता का अनुचित लाभ उठा लेते थे । इसके कई उदाहरण उनकी निगाह मे लाये गए, किंतु इससे उनकी उदारता में किसी प्रकार का अंतर नही पडा । एक बार एक व्यक्ति यह कहते हुए उनके पास उपस्थित हुआ कि उसके पिता की मृत्यु हो गई है और उनके अतिम संस्कार के लिए उसके पास एक भी पैसा नही है । उन्होने उसे पच्चीस रुपये तुरंत दे दिये । वास्तव मे उस व्यक्ति के पिता की मृत्यु कुछ अर्से पहले हो चुकी थी । कुछ ही दिनों बाद वही व्यक्ति यह कहकर उनसे पुनः सहायता की प्रार्थना करने लगा कि उसके पुत्र की मृत्यु हो गई है

और उसकी अत्येष्टि के लिए उसे रुपयो की आवश्यकता है। जब बापनासाहब को यह बतलाया गया कि वह व्यक्ति पहले भी झूठ बोलकर पच्चीस रुपये ले गया है और अब फिर उसी प्रकार का बहाना लेकर रुपया मागने आया है तो उन्होने उसे पुन पच्चीस रुपये दे दिये और कहा कि वास्तव मे इस व्यक्ति को इस समय रुपयो की इतनी अधिक आवश्यकता मालूम होती है कि वह अपने पुत्र की मृत्यु के समान दु खित घटना उपस्थित करके रुपया प्राप्त करना चाहता है। अत. चाहे वह घटना घटित न भी हुई हो तो भी उसकी लाचारी को ध्यान मे रखते हुए सहायता देना योग्य है।

श्री बापना बाल्यकाल से ही उदार थे। बाल्यकाल मे उनकी सेवा मे रहनेवाले भृत्य अतिम दिनो तक उनके साथ रहे तथा जन्मभर श्री बापना ने न केवल उनका वरन् उनके सारे कुटुम्ब का उसी प्रकार पालन-पोषण किया, जैसे कि वे अपने कुटुम्बी जन हो। वह मानते थे कि भृत्यवर्ग के साथ हमेशा उदारता दिखलाई जानी चाहिए, क्योकि उन्हे कभी अपनी स्थिति पर मायूसी न हो, यह जरूरी है। जब कभी भृत्य को उनके साथ बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली या शिमला जाने का अवसर मिलता था तो बापनासाहब उन्हे अपने बच्चो के लिए कुछ-न-कुछ चीजें खरीदने तथा घूमने-फिरने के लिए एक दिन की छुट्टी देकर अपने पास से कुछ रुपये भी दे देते थे।

विधान के अन्तर्गत यदि वह किसी व्यक्ति की शासन द्वारा सहायता करने में असमर्थ होते थे तो अपने वेतन मे से उसकी सहायता कर उसका दु ख कम करने का प्रयास करते थे। सौंधिया राजपूत की एक विधवा पत्नी मोतीबाई लगभग साठ-पैंसठ वर्ष की वृद्ध महिला थी, जो वर्षो पूर्व अपने पति के देहान्त के पश्चात् अपनी जमीन का आधिपत्य खो चुकी थी और यह जमीन दूसरो के नाम पर दर्ज हो गई थी। उस समय राज्य मे बन्दोबस्त का काम चल रहा था। उसे जमीन से बेदखल हुए बरसो बीत चुके थे। अधिकारियो द्वारा उसे कोई राहत नही दी जा सकती थी और राज्य के सबधित मत्री के लिए भी उसे उसकी जमीन वापस लौटाना सभव नही था। उसे कई प्रकार से समझाया गया, किंतु उसे विश्वास

नही होता था। वह चारो ओर से निराश होकर प्रधान मंत्री के न्यायालय में उपस्थित हुई। उसके प्रार्थना-पत्र की सुनवाई के समय वह एक दराता लेकर आई थी और जब उससे कहा गया कि उसके मामले में कानूनन किसी प्रकार की कार्यवाही संभव नही है तो उसने दराता निकालकर कहा कि वह जीते-जी अपने गांव वापस नही जायगी और या तो सबधित अधिकारी की या जिन व्यक्तियो के पास उसकी जमीन है, उनकी हत्या कर देगी अथवा स्वय आत्म-हत्या कर लेगी। बापनासाहब ने उसे समझा-बुझाकर जैसे-तैसे शांत किया और आजीवन उसके जीवन-यापन की व्यवस्था इदौर मे ही करने का आश्वासन दिया। जबतक वह जीवित रही, उसके भोजन-वस्त्र आदि की व्यवस्था अपने खर्चे से करते रहे।

पजाब के एक सज्जन थे, जिन्होने इंदौर में मैडिकल लाइसेंशिएट का डिप्लोमा लिया था। उनको आगे मद्रास में एम० बी० बी० एस० के कोर्स में प्रवेश मिल गया, किंतु उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होने से उन्होने वहा जाने मे असमर्थता प्रकट कर दी और वह अपने घर मुलतान (जिला पजाब) चले गए। वह बापनाजी से परिचित। थे जब उन्हे यह पता चला तो बापनाजी ने उन्हे तार भेजा कि अपने पिताजी को सलाह दे कि उन्हे मद्रास जाने दे। ऐसे सुनहले अवसर को नही खोना चाहिए। मद्रास जाते समय इदौर होकर जाना।" तार पाकर उनके पिता ने उन्हे मद्रास जाने की इजाजत दे दी। जब वह इदौर आए तो बापनासाहब ने उन्हे प्रारंभिक खर्चे के दो सौ पचास रुपये दिये। उसके बाद जबतक वह मद्रास में पढ़े, उन्हे पचास रुपये माहवार भेजते रहे।

सेंधवा के पास एक ऐसे वैद्य रहते थे, जो गगोत्री के निकट जाह्नवी नदी के जल और तुलसी-दल से क्षय-रोगियो का उपचार करते थे। बापनासाहब को ज्ञात होने पर वह वहा गए और वैद्यजी को औषधियों की खेती और रोगियो के रहने के लिए स्थान बनवाने के लिए शासन से धन और जमीन दिलवाई।

इस तरह की अनेक घटनाए होती रहती थी। व्यक्तिगत रूप से आर्थिक तथा दूसरे तरीकों से लोगों की मदद करते थे, किंतु अनेक

विद्यार्थियो, बेवाओ, रोगियो और जरूरतमन्द लोगो को सेठ-साहूकारो से तथा दूसरे राज्यो के शासको से सहायता दिलवाया करते थे। उनका दूसरे राज्यो के सेठ-साहूकारो, शासको और सस्थाओ से इतना सपर्क था कि इस तरह सैकडो व्यक्तियो को सहायता और लाभ उनके द्वारा पहुचाया जाता रहता था, यहातक कि अनेक जागीरदारो, ठिकानेदारो और राजाओ को अपने मसले सुलझाने मे वह पालिटिकल डिपार्टमेट और उस वक्त के एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल से भी बहुत सहायता दिलवाते रहते थे। इस तरह राजा-महाराजाओ से लेकर दीन-दुखी तक उनसे सहायता पाते थे। दयालुता की जो धारा उनके विशाल एव महान् हृदय से प्रवाहित हुई उसने प्रातीय और साप्रदायिक सीमाओ को पार करके दूर-से-दूर स्थलो को भी प्रभावित किया था। एक कवि ने उनके लिए ठीक ही लिखा है

> **जनता हित रत जस लिया सकृत किया सघाटा।**
> **था खुल्ला मिलवा थिरु काका : बांका : सुरग कपाटा॥**
> **स्वागत सत्कारी सदा जारी राखिया अज्ञ।**
> **कहु बलिहारी बापना पर उपकारी प्रज्ञ॥**

उनका यह निश्चित मत था कि क्षमा और प्रेम प्रदान करके विरोधियो पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इसलिए अपने निदको को भी उन्होने कभी नही दुत्कारा। महात्मा कबीर के शब्दो मे वह सदा 'निदक नियरे राखिये आगन कुटी छवाय' के सिद्धान्त को मानते थे। बापनासाहब ने कभी किसी का बुरा नही चाहा और उनके हृदय मे किसी के प्रति शत्रुता की भावना नही रही। उन्होने अपने विरोधियो से, जिन्होने उन्हे नुकसान पहुचाया था, कभी बदला लेने या उनको कुचलने के विचारो को अपने हृदय मे स्थान नही दिया। इतना ही नही, समय आने पर उन्हे भी उदारतापूर्वक सहायता पहुचाते रहे। उनके मन मे राग-द्वेष की भावना कभी रहती ही नही थी। अत उनके विरोधी भी उनकी उदारता, क्षमाशीलता तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार के सदा कायल रहे।

एक बार एक सज्जन ने बापनासाहब के मत्रिमडल के एक

विरोधी को अपने यहा से एक छपी रिपोर्ट दे दी। उसके आधार पर समाचार-पत्रो में उसने उनकी कटु आलोचना की। पुलिस की जाच से पाया गया कि एक शासकीय अधिकारी ने यह रिपोर्ट दी है। चूकि वह शासकीय अधिकारी थे, इसलिए उनके खिलाफ कार्य-वाही करने की सिफारिश की गई। बापनासाहब ने कहा कि राज-नैतिक दृष्टि से किसी राजनैतिक कार्यकर्त्ता को शासकीय अधिकारी द्वारा प्रकाशित करने के लिए कुछ सामग्री देना आक्षेप-योग्य है, किन्तु छपी हुई रिपोर्ट दे देने के लिए अधिक तूल देने की आवश्यकता नही है और उस सज्जन को क्षमा कर उनसे पहले जैसा व्यवहार बनाये रखा।

बापनासाहब के शासन-काल में कुछ दिनो तक कुछ असतुष्ट तत्त्वों ने 'प्रिसली इडिया' नामक अग्रेजी साप्ताहिक को प्रभावित किया और हिन्दी के इश्तहारो द्वारा आएदिन बापनासाहब के प्रशा-सन की कटु आलोचना जारी रखी। इस षड्यत्र के पीछे कौन-कौन लोग है, यह जानने के लिए बापनासाहब ने डी० आई० जी० पुलिस तथा एक अन्य उच्च अधिकारी को नियुक्त किया। महीनो की मेह-नत के बाद जब पता लगा कि इस षड्यत्र के पीछे कुछ ऐसे व्यक्तियो का हाथ है, जो उनके सहयोगी वरिष्ठ मन्त्री है तो उन्होने यह कह कर कि आगे इस मामले मे कोई कार्यवाही करना बेकार है, सारा मामला समाप्त करा दिया। बापनासाहब विरोधियो को क्षमा करना जानते थे और 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' सिद्धान्त का पूर्णतया पालन करते थे।

कुछ शरारती व्यक्तियों ने उनके लिए एक भृत्य के हाथो जादू-टोने का प्रयोग करवाया गया और जब यह बात उनतक पहुची तो उन्होने उक्त भृत्य को क्षमा कर दिया और कह दिया कि क्या इन्दौर के प्रशासन पर जादू-टोने का असर हो सकता है !

एक दिन वह बख्शी बाग मे घूम रहे थे कि सेना विभाग के एक अफसर ने, जिसे उनसे कुछ काम करवाना था, एक लिफाफे मे बन्द करके सौ रुपये का एक नोट उनके हाथ मे थमा दिया। बापनासाहब न तो नाराज हुए और न उत्तेजित। उन्होने उस आदमी को वही

विठलाते हुए फौरन लीगल रीमेम्बरेन्सर को फोन करके वख्शी वाग वुलवाया और वही सौ रुपये का नोट देते हुए सब बात कह सुनाई। अधिकारी रिश्वत देनेवालो पर लागू होनेवाली ताजीरात हिन्द की दफा को दिखा ही रहे थे कि उसी समय उस शख्स ने हाथ-पाव जोडते हुए वापनासाहव से दया की प्रार्थना की और वीवी-वच्चो पर तरस खाने का अनुरोध किया। वापनासाहव ने सबकुछ सोच समझकर उसे माफ कर दिया और आइन्दा वैसी मूर्खता न करने की हिदायत की।

वापनासाहव ने अपने सहयोगियो, अधीनस्थ अधिकारियो और कर्मचारियो के साथ व्यवहार मे सदा सर्वोत्कृष्ट विचारशीलता एव सौजन्यता का प्रदर्शन किया। अपना मतलव सिद्ध करने के लिए किसी को हानि पहुचाना उनके लिए विल्कुल असगत वात थी और उनके स्वभाव के विपरीत भी। यदि कोई अधीनस्थ अधिकारी दोषी होता और वह सत्य प्रकट कर देता, तो कानून और व्यवहार के दायरे मे वह उसकी जितनी मदद कर सकते थे, करते थे। अपने सहयोगियो के साथ उनका व्यवहार सदा समानता का रहा और उनको भी मौका पडने पर सहायता ही दी। उनके मातहत आसानी से उनके पास पहुच सकते थे और वह उनकी शिकायतो को धीरतापूर्वक सुनते थे। वह मानव-सम्बन्धो के मूल्यो को अच्छी तरह समझते थे और अपने मातहतो तथा अधिकारियो की योग्यता और गुणो की कद्र किया करते थे।

जनता के मानस पर उनके गभीर चिन्तन एव न्यायप्रियता की छाप थी। सम्वन्धित व्यक्ति के विरुद्ध आदेश दिये जाने पर भी उसे यह सन्तोष होता था कि उसके मामले मे सभी दृष्टिकोणो से विचार किया गया है। प्रत्येक आवेदक की यही इच्छा रहती थी कि उसका मामला वापनासाहव स्वय देख ले तथा अपने विवेकानुसार जो भी उचित हो वही आदेश दे। वह प्रत्येक मामले का सहृदयतापूर्वक अध्ययन करते थे और आदेश देते समय जनहित को सर्वोपरि मानते थे।

कर्मचारियो की त्रुटियो पर कभी क्रोधित होते हुए उन्हे किसी

वह समय के इतने पाबन्द थे कि उनका सारा कार्यक्रम और दिनचर्या निर्धारित समय पर होती थी। उनसे परिचित व्यक्ति भले ही इन्दौर के बाहर हो, समय देखकर कह सकते थे कि उस समय वापनाजी का क्या कार्यक्रम होगा। एक बार उदयपुर हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस श्री तैयब अली पालीवाल महाराजा उदयपुर से मिलने गए थे और वहा वह महाराजा साहब के समय की पाबन्दी और दिन-चर्या की तारीफ करने लगे। इसपर महाराणासाहब ने कहा कि इस विषय मे मेरी क्या तारीफ करते हो, मुझसे ज्यादा तोश्री सिरेमलजी है। हमने तो यह बात उनसे ही सीखी है। उन जैसे आदमी तो हमने कम ही देखे है, वास्तव मे ऐसा कोई उदाहरण नही मिलता, जब किसी सभा। समारोह और उत्सव मे वह निर्धारित समय से देर मे पहुचे हो। उनके समय के पाबन्द होने से दूसरे लोगो को भी जहा वह जाते, समयानुसार कार्यक्रम करना पडता था। उनकी दिनचर्या भी उतनी निर्धारित थी कि अत्यन्त प्रतिकूल राजकीय एव घरेलू परिस्थितियो में भी उनका क्रम बराबर चलता रहता था, जैसे घर पर सभी आगन्तुको से मिलना, दफ्तर जाना, क्लब मे टेनिस और ब्रिज खेलना, आदि-आदि। प्रात से रात्रि तक वह अपने समय को इस तरह बाट चुके थे कि उनका एक मिनट भी व्यर्थ नही जाता था। सेवा-निवृत्त होने के बाद भी उनकी समय की पाबन्दी और दिनचर्या अनुकरणीय थी। जब वह उन वर्षो मे सायकाल पैदल घूमने निकलते तो निश्चित समय पर मेडीकल होस्टल से होकर नौलखा वाग की तरफ जाते थे। होस्टल के छात्र अनुभव करते थे कि वापना-साहव इतने वजकर इतने मिनट पर ही नित्य होस्टल के सामने से निकलते है, दो-तीन मिनट का भी अतर मुश्किल से पडता था।

वापनासाहव की एकनिष्ठा, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी सच-मुच अनुकरणीय थी। वह अपने स्वयं के रुपये-पैसे इतने मुक्तहस्त और उदारता से खर्च करते थे कि वैक मे उनका कुछ होने के स्थान पर वैक का रुपया उनकी ओर निकलता रहता था। उन्होने धन जोडने की कभी परवा नही की। जिस समय उनका वेतन चार हजार रुपये माहवार से भी अधिक था (जो कि नि शुल्क

निवास-गृह और दूसरी सहूलियतों के और बिना आयकर के आज-कल के मूल्य से पच्चीस हजार रुपये मासिक के बराबर है) उस समय भी उनको खर्च के बारे मे तगी रहती थी। उनका आधे से अधिक वेतन दान, छात्रवृत्ति और जरूरतमंद लोगों की सहायता करने मे खर्च हो जाता था। वह उन विरले पुरुपो मे से थे जो चालीस वर्ष से ज्यादा अवधि तक इतने ऊचे व महत्वपूर्ण पदों पर एव इतने ऊंचे वेतन पर रहकर भी बिना धन जोडे या बिना किसी जमीन-जायदाद के सेवा-निवृत्त हुए। वह न कभी बचत कर सके, न अपने रहने के लिए स्वय का मकान बना सके, यहा तक कि कभी जीवन बीमा भी नही ले सके। उनके सेवा-निवृत्त होने पर बैंक का कुछ रुपया उनकी ओर निकल रहा था और बैंकर को आवश्यक खर्च के समय उनको सुविधा देनी पडती थी। पैंशन का भी काफी बड़ा हिस्सा वह गरीबो को तथा दूसरे जरूरतमदों को सहायता करने में खर्च कर देते थे। अपनी मृत्यु के लगभग दो वर्ष पहले उन्होंने जैसलमेर में अपनी पैतृक जायदाद को बेचकर उस रुपये का एक ट्रस्ट बनाया, ताकि उसके ब्याज की रकम से गरीब विद्यार्थियों, बीमारो और विधवाओ आदि को कुछ सहायता पहुंचाई जाय। इस तरह उनके देहान्त के बाद भी उनकी परोपकारिता का सिलसिला कुछ अंश में अब भी जारी है।

बापनासाहब के सेवानिवृत्त होने के वाद उनके कागजात में एक पुराना फाउंटेनपेन मिला। देखते ही उन्होने अपने निजी सचिव को आदेश दिया, "जिस राज्य का वह मालूम होता हो, वहा भेज दो।"

वापनाजी को पैसो का विल्कुल मोह नही था और खर्च करने मे बिल्कुल हिचकिचाहट नही होती थी। कहा जाता है कि लक्ष्मी और सरस्वती कभी भी साथ नही रहती। यही चीज उनके जीवन में थी। वापनासाहब ने लाखो रुपये कमाए और लाखो ही परोप-कार में खर्च कर दिए। एक सज्जन ने उनके लिए लिखा है .

सत्ता के सँग बसत है लक्ष्मी और अभिमान ॥
छू न सके पल को कभी सर सिरेमल महान् ॥

अर्थात् सत्ताधारी के पास दो चीजे प्राय रहती है—सपत्ति और अभिमान। पर श्री बापना दोनो से ही रहित थे।

इस प्रकार उस जमाने मे ईमानदारी का जो स्तर और प्रतिमान बापनाजी ने कायम किया था, उसका उदाहरण स्वतत्रता-प्राप्त भारत मे सभी के लिए प्रेरक सिद्ध हो सकता है। आज जबकि सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और निष्ठा से काम करना मानो अयोग्यता माना जाने लगा है, उस युग मे बापनाजी की ईमानदारी के बारे में सहसा ही विश्वास नही होता, क्योकि आज तो सभी क्षेत्रो मे ईमानदारी के दर्शन कठिनाई से ही होते है। लगता है कि हमारी अवनति के अनेक कारणो मे से यह भी एक है। यदि हमारी नई पीढी बापनाजी से यह प्रेरणा ले सके तो निश्चित ही राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।

श्री बापना बडे सरल स्वभाव के थे। वह सादगी से रहना पसद करते थे। उन्हे किसी प्रकार का अभिमान नही था। हरेक के साथ बडा अच्छा व्यवहार करते थे। वह अपने विचार स्वतत्रता-पूर्वक और निडरता से व्यक्त करते थे, किंतु अभिमान और अभद्रता से दूर रहते थे। उनकी सादगी और सरलता हरेक नागरिक के लिए अनुकरणीय है। कपटपूर्ण एव कुचक्री राजनीति मे उनका विश्वास नही था। राजनीति मे होते हुए भी वह कूटनीति से ऊपर थे और विशेष रूप से मत्रियो तथा उच्च अधिकारियो और प्रशासको के लिए एक वाक्य मे वह सादे जीवन और उच्च विचार के आदर्श थे।

बापनासाहब मे आत्मीयता की कोई सीमा न थी। जो कोई भी उनसे मिलता, यही भाव लेकर लौटता कि बापनासाहब तो मेरे ही है। मेरी बात को फौरन समझ गये, और वह अपने को निश्चिंत समझता था। उनका जीवन बहुत ही विधिवत् और सादगी का जीवन था। वह सौजन्यता की मूर्ति थे। किसी दु:खी व्यक्ति को देखकर उनका अत करण द्रवीभूत हो जाता था। उनके मन मे किसी के प्रति भी विद्वेष की भावना नही थी। बीकानेर के भूतपूर्व स्वास्थ्य एव राजस्व मंत्री डा० कुमेरसिंह ने लिखा है :

सर डर सूना किया सर होता भी आप
सरल प्रेमखू रैतरा सर हो गया निष्पाप
सर सिरेमल ही सदा शासन के सब अग
कर्मठ निर्भर अनुभवी जद अपनाया गंग[1] ।

प्रेम बरत नित बापना किया आपणा लोग ।
फरत समझ करतब किया सभी आप रे जोग ।

साम्य सुजन निष्कपट जन दया प्रेम आगार
निरभिमान नित बापना सद्गुण रा भांडार
मित्र बंधु वण आप जग भली निबाही लाज
हाथ पकड़ छोड़यो नही उसो कुण जग आज ।

अपनी दृढ इच्छाशक्ति से बापनाजी को सहायता और बल मिलता था । दो-तीन बार वह बडी गभीर बीमारी से ग्रस्त हुए । डाक्टरो का मत था कि दृढ इच्छाशक्ति के कारण ही वह रोगो से लड़कर स्वस्थ हो सके । सन् १९४६ मे बापनाजी की गभीर बीमारी के अवसर पर उनको हवाई जहाज द्वारा बबई ले जाया गया । रास्ते भर करीब-करीब अचेत अवस्था में रहे । बम्बई मे टाटा मेमोरियल अस्पताल पहुचने पर डाक्टर बोरजिस ने जो कि वहा के प्रसिद्ध सर्जन थे, कहा, "अलवर से इतनी दूर आने का क्यो कष्ट किया ?" बापनाजी ने उत्तर दिया, "डाक्टर, मैं अभी अगले दस वर्ष तक नही मर सकता ।"

और उनकी भविष्यवाणी सत्य निकली ।

: ११ :

जीवन-दर्शन

श्री वापना एक दिन मे ही महान् वन गए, ऐसी बात नही। उन्हे अपने जीवन-काल में जो विभिन्न अनुभव प्राप्त हुए थे, उन् सवका उन्होने मूल्यांकन किया था और उसके आधार पर उन्होने अपने जीवन का एक विशिष्ट दर्शन वनाया था। इस दर्शन के विकास मे उनकी पारिवारिक परम्परा और जैन धर्म की धर्म-सहिष्णुता ने विशेष योगदान दिया। उनका चरित्र और व्यक्तित्व अहिंसा, सत्य, अस्तेय, निर्भयता और अपरिग्रह—इन पाच नियमों के आधार पर विकसित हुआ था। वह उदारवादी थे और जनगण के प्रति अत्यधिक स्पंदनशील थे। यही कारण है कि उनके दर्शन मे निर्वलो, दीनो और दु खियो के लिए वहुत अधिक जगह थी। वह राष्ट्रवादी थे, किन्तु विश्व-प्रेम के सदर्भ मे ही उनकी राष्ट्रीयता विकसित हुई थी। साप्रदायिक एकता के लिए उनकी दृढ प्रतिज्ञा मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतीक थी, जो उनकी रग-रग मे समाई हुई थी। सच वात तो यह है कि वह एक प्रकार से स्थितप्रज्ञ व्यक्ति थे। उनका घर सदैव ही विद्यार्थियो और जरूरतमन्दो से भरा रहता था। उन्हे उस परिवार से न केवल भरण-पोषण मिलता था, अपितु मार्गदर्शन मे समानता का व्यवहार भी प्राप्त होता था।

वापनासाहव के शिक्षा-संवधी विचार अत्यन्त व्यावहारिक थे। प्रथमत वह प्रशिक्षित नेतृत्व में विश्वास करते थे, अर्थात् उनका मत था कि देग की या लोगो की आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक उन्नति के लिए प्रशिक्षित नेतृत्व, जिसमे शारीरिक और मानसिक प्रशिक्षण भी शामिल है, आवश्यक है। उन्हे उन लोगो मे विश्वास न था, जो लोगो के सीधेपन और सरलता का लाभ उठाकर या किसी भी तरह अपना जोड-तोड विठाकर नेता वन जाते थे। ऐसे पुरुषो

के विषय में उनका कहना था कि वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की सिद्धि के लिए काम करेंगे और यदि भाग्य से ऐसे लोगो को शक्ति मिल गई तो वह पूरे तानाशाह वन जायेगे। इसलिए वह ऐसे विद्यालयों और महाविद्यालयों के लिए उत्सुक रहा करते थे, जिनकी पद्धति में प्रत्यक्ष प्रयोग, अनुभव और श्रम-सम्बन्धित शिक्षा का समावेश हो। वह सदैव सच्चरित्र और उच्च आदर्शो वाले विद्यार्थियो को उचित मार्गदर्शन प्राप्त कराने मे रुचि लेते थे।

शिक्षा के सम्बन्ध में दूसरी महत्वपूर्ण बात थी स्त्री-शिक्षा। इसके लिए वह लडकियों की पाठशालाओं के हेतु ज्यादा धन-राशि स्वीकृत करानें मे हिचकते नही थे, चाहे ऐसा करने से शिक्षा के या प्रशासन के अन्य क्षेत्र मे असुविधा हो। उनकी भावना थी कि स्त्रियो की शिक्षा के विना देश सुचारु रूप से आगे नही बढ सकता।

प्राथमिक शिक्षा का विस्तार शीघ्र-से-शीघ्र हो सके, इसके लिए वह बेचैन रहते थे। वह प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य और नि शुल्क करने के वडे पक्षपाती थे। उन्हीके समय में इदौर राज्य मे प्राथमिक शिक्षा नि शुल्क कर दी गई थी और इन्दौर नगर मे अनिवार्य शिक्षा का भी श्रीगणेश कर दिया गया था। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के विस्तार के लिए कोई कसर नही छोड़ी। उन्होने तत्कालीन शिक्षा-सचालक को आदेश दिये थे कि गावो मे स्वय जाकर जाच करे कि काश्तकारो में प्राथमिक शिक्षा लोकप्रिय क्यों नही हो रही है। जाच करने पर वह इस नतीजे पर पहुचे कि किसान यह महसूस करते है कि उनके वच्चे प्राथमिक शिक्षा पाकर खेती को निम्न कोटि का धंधा समझने लगते हैं और शहरो में जाकर चपरासी की नौकरी करना ज्यादा पसन्द करते है। अत. वापनाजी ने गावो के लिए प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम मे सुधार करना आवश्यक समझा और इस वास्ते पाठ्यक्रम के एक भाग मे यह शामिल किया कि वच्चे अपने खेतों मे क्रियात्मक कार्य भी करे, ताकि वे अपने पैतृक धधो को न छोड बैठे, जिनको कि आगे चलकर उन्हे अपने जीवन मे अपनाना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त वापनाजी ने शिक्षा-सचालक को व्यक्तिगत रूप से आदेश दिये कि वह और उनके अधीनस्थ कर्मचारी पाठ्यक्रम में

हुए परिवर्त्तनो को काश्तकारो को अच्छी तरह से समझावे । इसके अतिरिक्त उन्होने जिलो के कार्यकारी अधिकारियो को भी आदेश दिये कि वे किसानो में प्राथमिक शिक्षा को लोकप्रिय बनाने का भरसक प्रयत्न करे । ग्रामो मे शिक्षा की यह समस्या, जो बापनाजी को उस समय अनुभव हुई थी, आज भी उसी रूप मे विद्यमान है और उसका समाधानकारक हल नही निकल पाया है । किसानो के लडके अब भी पढकर खेती के प्रति अरुचि रखते है और शहरो मे नौकरिया खोजते है ।

विद्यार्थियो की उन्होने कितनी सेवा की, इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है । शिक्षादान को वह सबसे बडा धर्म समझते थे । शायद ही कोई विद्यार्थी उनके यहा से निराश होकर गया हो । अगर और कुछ नही हुआ तो पुस्तकदान तो उसे मिल ही जाता था । इसके अतिरिक्त वह सेठ-साहूकारो से कालेज के विद्यार्थियो को बिना व्याज ऋण भी दिलवाया करते थे ।

बापनाजी ने महिला-शिक्षा के क्षेत्र मे काफी काम किया । महिलाओ की कोई पाठशाला खुली हो या उस समाज के उत्थान का प्रस्ताव हो, बापनाजी उसे विशेष रुचि से देखते थे और सहायता करते थे । ऐसी पाठशालाए तथा शिक्षा-केन्द्र स्थापित करने मे उनका पूरा हाथ रहता था । इसी तरह अनेक दूसरी शिक्षण-सस्थाओ को वह स्वय सहायता देते थे या दूसरो से दिलवाते थे ।

बापनासाहब बडे विद्वान थे । अच्छी-अच्छी पुस्तके बराबर खरीदते रहते थे । उनके निजी पुस्तकालय मे हजारो पुस्तके थी ।

बापनासाहब को भविष्य की आशा और विश्वास के प्रतीक तरुणो के प्रति विशेप रुचि और प्रेम था । जब इन्दौर मे बालचर आदोलन का आरभ हुआ तो बापनाजी ने सदेश भेजा कि वह स्वय शाला की बालचर टोली मे सम्मिलित होना चाहेगे । बाद मे उन्होने कुछ समय के लिए मुख्य बालचर होना भी स्वीकार किया । अनेक शासकीय कार्यो मे व्यस्त होने पर भी वह बालचरो से मैदान मे या कैम्प मे मिलने का समय निकाल लेते थे । यह इसलिए

नही कि वह होलकर राज्य के बालचरों मे मुख्य बालचर थे, बल्कि तरुणो के साथ उनका विशेष हार्दिक स्नेह था। इसी तरह वह विद्यार्थियों की शारीरिक शिक्षा मे भी पूरी दिलचस्पी लेते थे। शिक्षा का ऐसा कोई भी पहलू नही था, जिसमे वह स्वय रुचि न लेते हो अथवा किसी-न-किसी तरह सहायता न करते हो।

बापनासाहब ईश्वर मे विश्वास रखते थे, किन्तु किसी परम्परागत धर्म या संघ के अनुयायी नही थे। वह जातिवाद और साम्प्रदायिकता से परे थे। मानव की सच्ची सेवा करना, उसके दु ख-दर्द मे काम आना, ईमानदारी और निडरता से अपने कर्तव्य का पालन करना यही उनके धर्म की कसौटी थी। विश्व-प्रेम और विश्व-कल्याण की भावना बापनाजी मे कूट-कूटकर भरी थी। दिन-भर क्या कार्य उन्होने किये, कहा पर त्रुटि रह गई या कहां वह अपने सिद्धान्तो से या अपने धर्म से पीछे हटे, इस सबंध मे रात को सोते समय विचार कर लेते थे और अपनी कमियो को दूर करने का पूरा प्रयत्न भी। राजकार्य मे अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी उनका आध्यात्मिक चिन्तन बराबर चलता रहता था। वह सद्-ग्रन्थो का स्वाध्याय करते रहने के अतिरिक्त नियमित रूप से प्रति-दिन प्रातःकाल सस्कृत के विद्वानो से भगवद्गीता सुना करते थे और उसके उपदेश को अपने जीवन मे आत्मसात् करते थे। गीता के इस उपदेश पर उनका अटल विश्वास था कि हमारा स्वरूप इस शरीर से भिन्न है, वह अजर-अमर है और उसका कोई शक्ति हनन नही कर सकती। इसलिए संसार मे पूर्ण अभय गुण से सम्पन्न होकर हमे कर्तव्य-परायण होना चाहिए। उन्होने जीवन-भर गीता के सिद्धान्त 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का पूरी तरह अनुसरण किया। इसी तरह 'वैष्णव जन तो तैंने कहिये जे पीर पराई जाणे रे' के सिद्धान्त को अपने जीवन का अग बना लिया। उन्हे पूज्य बापू की आश्रम-भजनावली के भजन बहुत प्रिय थे और उनकी प्रार्थना-पद्धति भी बहुत प्रिय थी। जब कभी वह दिल्ली जाते थे और महात्माजी वहा होते थे तो उनकी प्रार्थना-सभा मे अवश्य सम्मिलित होते थे।

वापनासाहव धार्मिक द्वेष को जड से उखाडना चाहते थे। वह भाग्य के स्थान पर कर्म मे अधिक विश्वास करते थे। और दूसरो को भी यही परामर्श देते रहते थे। वापनाजी की भावना थी कि धार्मिक द्वेष दूर करके भारत मे विभिन्न धर्मावलम्बियों मे परस्पर प्रेमभाव उत्पन्न हो, ताकि वे मातृ-भूमि मे सुखपूर्वक रह सके। उनका यह भी मत था कि भारत मे जो जन-गणना होती है, उसमें जाति वतलाने को पद्धति नही होनी चाहिए। इसी अभिलाषा से उन्होनें एक पाठमाला तैयार कराने का प्रयत्न किया था और होल्कर राज्य की ओर से काफी धन-राशि की मजूरी दी। उनका आशय यह था कि इन पुस्तको मे भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न धर्मो के सिद्धान्त इस प्रकार लिखे जाय कि उन्हे पढ़कर विद्यार्थियो को आरम्भ से ही जहां अपने धर्म का ज्ञान हो, वहा वे अन्य धर्मो के सर्वोपयोगी सिद्धान्तो से परिचय प्राप्त कर परस्पर प्रेम करना सीखे, जिससे भारत के विभिन्न सम्प्रदायो मे सहिष्णुता की वृद्धि हो। उनका विश्वास था कि अगर शुरू से ही वालको को सब धर्मो के बुनियादी सिद्धान्तो का ज्ञान करा दिया जाय तो उनमे द्वेष की भावना पैदा न होकर एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता की भावना वढेगी।

वापनासाहव मानते थे कि ससार मे पापकर्म मनुष्यो के अविवेक से होते हैं। इसलिए ऐसे लोगो की मूर्खता जबतक दूसरो के लिए घातक सिद्ध न हो, उस सीमा तक उन्हे क्षमा करने को वह तैयार रहते थे। किन्तु जव औचित्य की सीमा का उल्लंघन कर मनुष्य अपनी दुष्ट प्रवृत्तियो से दूसरो को दु.ख देने का कारण वनते, तो वह उन्हे दण्ड देकर सुमार्ग की ओर लाने का प्रयत्न करते।

'भारतमणि' तामिल मासिक, मेलापुर, मद्रास, के सम्पादक श्री के० एस० वैंकटरमण ने लिखा था, "वापनाजी का वही स्वरूप है, जिसे हिन्दुत्व में वहुत आदर का स्थान है। उनकी मधुरता और सौम्यता तथा कर्त्तव्य परायणता का उच्च-भाव गीता की सच्ची शैली के चरित्र और पवित्रता से युक्त है। परन्तु वह स्वरूप अपनी तरुण पीढ़ी मे से वड़ी तेजी से लुप्त हो रहा है। क्या नवीन भारत

इस स्वरूप की महत्ता पुनः स्थापित करेगा ?"

बापनासाहब का राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति शुरू से ही गहरा अनुराग था। उनके निजी पुस्तकालय में न केवल अंग्रेजी की पुस्तकें थी, अपितु हिन्दी की पुस्तकें भी पर्याप्त सख्या में थी। उनका हिंदी के प्रसिद्ध लेखकों और पत्रकारों से भी बहुत सम्बन्ध तथा सम्पर्क रहा। इन्दौर राज्य की राज-भाषा हिन्दी ही रहे, इसमे बापनाजी का बड़ा हाथ था। जब इन्दौर राज्य के प्रधान मन्त्री सर चन्द्रावरकर नियुक्त किये गए थे, उस समय मराठी भाषा-प्रेमियों ने महाराजासाहब से लिखित निवेदन किया था कि होल्कर नरेश की मातृ-भाषा मराठी है, इसलिए राज्य का पूरा कामकाज मराठी में होना चाहिए। इस सम्बन्ध में सर चन्द्रावरकर की भी पूर्ण सहानुभूति प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किये गए थे और सेना-विभाग में मराठी में कार्य प्रारम्भ भी हो गया था। हिन्दी-प्रेमियो को जब यह पता चला तो वे बापनाजी से मिले। बापनाजी ने बताया कि ऐसा हो रहा है और अपनी मातृभाषा की उन्नति सभी चाहते है। उन्होंने कहा कि यह सब जानते है कि इन्दौर राज्य की अधिकाश प्रजा हिन्दी भाषा-भाषी है और अभी भी ज्यादातर कार्य हिन्दी में हो रहा है, किन्तु इसके लिए सगठित रूप से सस्थाओं द्वारा प्रयत्न करने की आवश्यकता है, तभी सफलता मिल सकेगी।

बापनासाहब की इस प्रेरणा से इन्दौर में कुछ हिन्दा-प्रेमियों ने, जिनमें हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और कवि प गिरिधर शर्मा भी शामिल थे, मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति का गठन करने का प्रयत्न शुरू कर दिया। किसी योग्य स्थान पर सभा करने के लिए प्रयत्न किया गया, परन्तु समुचित स्थान नही मिला। एक दिन जव वापनासाहव को यह बात वतलाई गई तो उन्होंने कहा, "मेरे यहां यह सभा कीजिए।" इस पर जव वापनासाहव से यह कहा गया कि ऐसा न हो कि कोई यह आक्षेप करे कि उन जैसे वरिष्ठ अधिकारी के यहां यह सभा क्यो की गई, तो वापनासाहव ने उत्तर दिया, "मेरी मातृ-भाषा भी हिन्दी ही है और मैं किसी के कहने-सुननें की ऐसी कार्यों में परवा नही करता। मेरे यहां ही सभा की जाय।"

यह देखकर सरदार माधवरावजी किबे अपने प्रशस्त सरस्वती निकेतन में सभा करने को सहमत हो गए और मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति का गठन किया गया। कुछ समय के पश्चात् बापनासाहब के परामर्श से श्रीमंत महाराजा तुकोजीराव होल्कर से समिति के संरक्षक बनने के लिए प्रार्थना की गई, जो उन्होंने स्वीकार कर ली।

इससे स्पष्ट है कि मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति के गठन और इन्दौर राज्य में हिन्दी को राज-भाषा बनाये रखने का श्रेय बापनाजी को है। वह समिति के प्रमुख संस्थापक थे और उन्होंकी प्रेरणा से सर सेठ हुकमचन्द ने अध्यक्ष और डा० सरजूप्रसाद ने प्रधान मन्त्री होना स्वीकार किया। समिति का गठन हो जाने से इन्दौर राज्य की राजभाषा हिन्दी का विरोध आगे फिर नहीं किया जा सका और इसके बाद फिर राजभाषा का प्रश्न नहीं उठाया गया। बापनासाहब उस समय इन्दौर राज्य में गृह-मंत्री के पद पर कार्य कर रहे थे। आगे चलकर उनके प्रयत्नों से इन्दौर में इस समिति के भवन का भी निर्माण किया गया, जिसके लिए शासन द्वारा योग्यस्थान पर पर्याप्त भूमि दी गई थी। इस भवन का शिलान्यास महात्मा गांधी के कर-कमलों द्वारा सन् १९१८ में हुआ था। मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के अंतर्गत उस समय बापनासाहब की ही प्रेरणा से होल्कर कालेज तथा दूसरी संस्थाओं के अध्यापकों द्वारा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की जो परीक्षाएं होती थी, उसके लिए विद्यार्थियों को सायंकाल शिक्षण का प्रबन्ध करके तैयार किया जाता था।

यह भी बापनासाहब की प्रेरणा का ही नतीजा था कि १९१८ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आठवां अधिवेशन इन्दौर में हुआ और उसके सभापति महात्मा गांधी थे। महात्मा गांधी को इन्दौर लाने का श्रेय भी श्री बापना को ही था। इस अधिवेशन के लिए निर्वाचित की गई स्वागत समिति के वह उपाध्यक्ष थे। इस सम्मेलन के पहले महात्मा गांधी ने आदेश दिया था कि देश के समस्त विद्वानों से राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में सम्मतियां मंगाई जायं। उसमें समस्त देश के विद्वानों का चयन करने में बापनासाहब से

अविस्मरणीय सहयोग मिला था। स्वागत समिति की कार्यकारिणी की अधिकाश बैठके उनकी ही अध्यक्षता में हुआ करती थी। डा० सम्पूर्णानन्द, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी तथा अन्य हिन्दी-प्रेमियो से भी बापनासाहब और डा० सरजूप्रसादजी को बहुमूल्य सहयोग मिलता था। यह बात सर्व-विदित है कि इन्दौर के उस अधिवेशन में ही प्रत्येक प्रदेश से आये हुए विद्वान प्रतिनिधियों ने, जिनमे अन्य भाषा-भाषी भी थे, सर्वसम्मति से हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए प्रथम बार प्रस्ताव स्वीकार किया था। इसीलिए इन्दौर के आठवे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतना महत्व प्राप्त हुआ। इस अधिवेशन के सचालन में बापनाजी का प्रमुख हाथ रहा था। महात्मा-जी के आदेश से राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए जो पच्चीस हजार रुपये एकत्र किये गए थे उसमे भी बापनाजी का सक्रिय सह-योग था। बापनासाहब ने इस सम्मेलन के समय महात्माजी को यह परामर्श दिया था कि यदि राष्ट्रभाषा के लिए हिन्दी का नाम हिन्दुस्तानी रख दिया जाय तो सर्वसाधारण उसे अच्छी तरह अपनायेगे और हिन्दी-उर्दू का भेदभाव मिट जायगा। इससे हिन्दू-मुस्लिम-एकता को भी सहायता मिलेगी।

इन्दौर मे मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति का भवन बनाने के लिए चन्दा या धन इकट्ठा किया गया था उसमे भी। बापनाजी ने बहुत सहायता की। सेठ कस्तूरचन्द ने श्रीमत तुकोजीराव तृतीय को दस हजार रुपये किसी अच्छे काम मे खर्च करने के लिए भेट किये थे। वे बैंक मे जमा थे तथा व्याज सहित लगभग बत्तीस हजार हो गए थे। सेठ कस्तूरचन्द की सम्मति से बापनासाहब ने वे रुपये भी मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति को दिलवा दिये।

सन् १९३५ मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन महात्मा गाधी के सभापतित्व में दूसरी बार इन्दौर मे हुआ था। बापना-साहब उस समय इन्दौर राज्य के प्रधान मत्री थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ-साथ स्वदेशी और ग्रामीण वस्तुओ की प्रदर्शनी भी हुई थी। बापनासाहब का इस अधिवेशन तथा प्रदर्शनी के साथ निजी और शासकीय पूर्ण सहयोग रहा था।

इस तरह महात्मा गाधी दो बार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हुए और दोनो बार यह सम्मेलन इन्दौर मे हुआ। प्रथम आगमन के समय महाराजा तुकोजीराव होल्कर इन्दौर के शासक थे और दूसरी बार उनके सुपुत्र महाराज यशवन्तराव होल्कर। दोनो बार महात्माजी को इन्दौर लाने मे श्री बापना का प्रमुख हाथ रहा। द्वितीय बार के अधिवेशन का उद्‌घाटन तो स्वयं महाराज यशवन्तराव होल्कर ने किया था और महारानी सयोगितावाई होल्कर ने श्रीमती महादेवी वर्मा तथा श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल को महात्माजी के आग्रह पर सेक्सरिया पुरस्कार प्रदान किया था, यद्यपि कार्यक्रम मे यह पुरस्कार महात्माजी द्वारा दिया जानेवाला था।

दोनो सम्मेलनो के समय दक्षिण भारत मे हिन्दी-प्रचार का कार्यक्रम निर्धारित हुआ। द्वितीय सम्मेलन का अध्यक्ष-पद तो महात्मा गाधी ने इसी शर्त पर स्वीकार किया था कि उन्हे दक्षिण भारत मे हिन्दी-प्रचार के लिए एक लाख रुपया प्राप्त हो। जिन लोगो ने यह सम्मेलन देखा होगा, उन्हे वह सदा स्मरण रहेगा। इस कार्य मे प्रधान मत्री श्री बापना के कारण होल्कर राज्य का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ था। पडाल के लिए साधन, प्रतिनिधियो के ठहरने की व्यवस्था और सवारियो आदि की सुविधा शासन की ओर से थी।

यह वह समय था जबकि देशी राज्यो मे हिन्दी का काम करना सरल नही था। उसे एक प्रकार से राजनैतिक कार्य ही समझा जाता था। किन्तु बापनासाहब ने इस बात की परवा नही की और इस कार्य को शुरू से ही अपना सक्रिय सहयोग ही नही, बल्कि प्रेरणा भी दी और स्वय उसमे रुचि ली। इन्दौर मे मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति का विशाल रूप उपस्थित करने मे जो सफलता मिली उसका अधिकाश श्रेय उन्हीको है। इस प्रकार इन्दौर मे हिन्दी का विकास श्री बापना के कारण हुआ। होल्कर राज्य का काम हिन्दी मे हो, यह निर्णय तो उनके पहले ही हो चुका था, परन्तु उस निर्णय को कायम रखवाना और उसे कार्यरूप मे परिणत करने का श्रेय श्री बापना को ही था। उनके प्रयत्नो से राज्य

का अधिकांश कार्य हिन्दी मे होने लगा । विधान-सभा का कार्य भी हिन्दी में हुआ और उनके समय मे महाराजा तथा महारानी साहिबा के समस्त भाषण हिन्दी मे ही होने लगे । सब विधेयक और अधिनियम अग्रेजी तथा हिन्दी दोनों मे प्रकाशित होते थे ।

केवल हिन्दी से ही नही, हिन्दी के साहित्यकारो से भी श्रीबापना का विशेष प्रेम था । राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन उनके घनिष्ठ मित्रो में से थे । साहित्यकारों का सम्मान उनके समय में बराबर होता रहा । महाराजा यशवन्तराव होल्कर के राज्याभिषेक के समय हिन्दी के कई प्रतिष्ठित विद्वान् इन्दौर आमंत्रित किये गए और उनका राज्य की ओर से सम्मान किया गया । इन विद्वानो में सम्पादकाचार्य स्वर्गीय अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, स्वर्गीय महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, साहित्याचार्य स्वर्गीय पडित पद्मसिह शर्मा और स्वर्गीय कृष्णबिहारी मिश्र मुख्य थे । झालरापाटन के स्वर्गीय प० गिरिधर शर्मा उनके विशेप परिचितो में से थे और वह वापनासाहव से मिलने इन्दौर आते ही रहते थे । स्व० गणेशशकर विद्यार्थी और श्री बनारसीदास चतुर्वेदी से भी उनका बहुत सपर्क रहा ।

हिन्दी पत्रकारो के प्रति वापनासाहव की धारणाए महत्वपूर्ण थी । यद्यपि उन दिनो देशी राज्यो मे पत्र-सम्पादको का आना-जाना बड़ा खतरनाक समझा जाता था, परन्तु श्री वापना के कारण इन्दौर मे यह वात नही थी । उनका साहित्याचार्य डा० माखनलाल चतुर्वेदी, स्वर्गीय सिद्धनाथ माधव आगरकर और श्री रघुनाथ प्रसाद पारसाई तथा श्री हरिभाऊ उपाध्याय जैसे पत्रकारो से घनिष्ठ सम्बन्ध था । खंडवा से प्रकाशित होनेवाले 'कर्मवीर' के सम्पादक प० माखनलाल चतुर्वेदी और 'त्याग-भूमि' के सम्पादक प० हरिभाऊ उपाध्याय तो अक्सर उनके यहा आते-जाते रहते थे । इन्दौर आने पर ये दोनो विद्वान् वापनासाहव से अवश्य मिलते थे । श्री माखनलाल चतुर्वेदी तो मध्य भारत हिन्दी समिति की गतिविधियो में भी भाग लेते थे ।

एक वार हिन्दी पत्रकारो ने अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन का आयोजन प्रधान मन्त्री श्री वापना से विना पूछे ही कर डाला,

परन्तु जब उन्हे पता लगा तो उन्होने अपना और राज्य का पूरा सहयोग प्रदान किया। इस सम्मेलन के अध्यक्ष 'अर्जुन' के सम्पादक स्वर्गीय श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति थे और सम्मेलन मे सम्पादकाचार्य अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, श्री माखनलाल चतुर्वेदी, स्वर्गीय बाबूराव विष्णु पराडकर तथा स्व० सिद्धनाथ माधव आगरकर जैसे कई प्रतिष्ठित सम्पादको और पत्रकारो ने भाग लिया था।

इस तरह बापनासाहब अपने कार्यकाल के प्रारम्भ से ही हिन्दी के अनुरागी रहे और उन्होने हिन्दी की अविस्मरणीय सेवाए की।

बाल्यावस्था से ही बापनासाहब मे राष्ट्रीयता की भावना का उन्मेष होने लगा था। इसी कारण उन्होने राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओ और सिपाहियो को हमेशा प्रोत्साहन दिया। उनका जीवन सदा भारतीय प्रणाली और विचारधारा के अनुकूल रहा। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रति उनके अनुराग का वर्णन पीछे किया जा चुका है। विदेशी पोशाक तथा पाश्चात्य सस्कृति को उन्होने कभी नही अपनाया और अपने जीवन मे पाश्चात्य सभ्यता को कभी हावी नही होने दिया।

स्वतन्त्रता के लिए उनके हृदय मे प्रेम था और इस सम्बन्ध मे उन्होने उस समय भी, जबकि देशी राज्यो पर अग्रेजो का काफी प्रभाव था, दमन-नीति नही अपनाई। इस मामले मे वह किसी से दबते नही थे। एक बार भारत के भूतपूर्व गवर्नर जनरल लार्ड विलिगडन ने बापनासाहब से राजनैतिक चर्चा करते हुए महात्मा गाधी के सम्बन्ध मे कुछ इस प्रकार कहा था, "गाधीजी कहते कुछ और करते कुछ है।" यह बात सुनकर श्री बापना से नही रहा गया और उन्होने कहा, "महात्माजी के राजनैतिक विचारो से चाहे कोई सहमत न हो, किन्तु उनकी नीयत के सम्बन्ध मे किसी को शक नही हो सकता। वह सदा वही करते हैं, जो कहते है।" उनके इस निर्भीक उत्तर को सुनकर लार्ड विलिगडन कुछ नही बोले, परन्तु उस समय से वह बापनासाहब का और अधिक सम्मान करने लगे।

जिस समय बापनाजी ने इन्दौर राज्य के नाबालिग शासन का सूत्र अपने हाथ मे लिया, उस समय भारत के राजनैतिक वातावरण

मे प्रबल झंझावात की आशंका थी। अंग्रेजी शासन से ऊबकर अखिल भारतीय काग्रेस आन्दोलन कर रही थी और देशी राज्यो मे वह आन्दोलन जोर पकडता जा रहा था। स्वतत्रता के अनन्य उपासक और जनता की आकाक्षाओं के प्रबल समर्थक श्री बापना अत्यधिक सतर्क दृष्टि से इन गतिविधियो को देखते थे और जनता की आकाक्षाओं के प्रति उनकी विशेष सहानुभूति रहती थी। राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में इदौर की जो विशेषताए दिखलाई पडती थी उसका श्रेय बापनाजी को ही है। देशी राज्य होते हुए भी कई क्रान्तिकारी वहा स्वतत्रतापूर्वक रहते रहे और उन्हे किसी प्रकार की असुविधा नही हुई। श्री बापना को राज्य मे आये हुए क्रान्तिकारियो की गतिविधि का पूरा पता रहता था, परन्तु इन्हे कोई असुविधा नही हो पाती थी। कुछ लोग तो इनसे मिलकर उनका सहयोग भी प्राप्त करते थे। इसी प्रकार काग्रेसी कार्यकर्ताओं का यद्यपि प्रान्तीय क्षेत्र अजमेर था, तथापि अधिकाश कार्यकर्ता इन्दौर मे बैठकर ही अपनी योजना बनाते थे। कुछ लोग ऐसे थे, जो शहर में नही आ सकते थे, परन्तु स्टेशन पर स्वतत्रतापूर्वक रहकर अपने इष्ट-मित्रो से मिल लेते थे। उदाहरणार्थ, सोहागपुर के रघुनाथ प्रसाद पारसाई का यद्यपि इन्दौर मे आना मना था, फिर भी वह किसी-न-किसी रूप मे वहा आते रहते थे और बापनाजी से उनके अच्छे सम्बन्ध थे।

जिस समय महात्मा गांधी ने भारत में नमक सत्याग्रह शुरू किया तब मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर की मुख-पत्रिका 'वीणा' मे ब्रिटिश शासन की नमक-कर-नीति की तीव्र आलोचना और भर्त्सना की गई। इस पर इन्दौर छावनी के ब्रिटिश अधिकारियो ने एक लम्बी-चौडी रिपोर्ट 'वीणा' के सम्पादक और हिन्दी साहित्य समिति के मत्री तथा सभापति के विरुद्ध तैयार की। ऐसा लगता था कि उनके खिलाफ कोई कार्यवाही अवश्य होगी और यदि कोई कार्यवाही होती तो उसका प्रभाव मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति पर अवश्य पडता। रिपोर्ट प्रधान मंत्री के नाते बापनाजी के पास भेजी गई, परन्तु उनका प्रभाव जनता और सरकार पर इतना था

कि ब्रिटिश कर्मचारियो को कोई कदम उठाने की हिम्मत नही हुई।

एक बार इन्दौर मे श्री हजारीमल जडिया ने सभाबन्दी के हुक्म के विरोध मे आमरण अनशन किया। छठवे या सातवे दिन जब उनकी हालत गभीर होने लगी तो बापनासाहब ने अपने एक सेक्रेटरी को आदेश दिया कि वह उनके पास जाकर अनशन छुडवाने का प्रयत्न करे। बाद मे अग्रेज इस्पेक्टर जनरल के होते हुए भी उन्होने सभाबन्दी हुक्म मे कुछ ऐसी सुविधाए दे दी कि जडियाजी ने सहर्ष अनशन समाप्त कर दिया। इस तरह अनेक राजनैतिक मामलो को बापनासाहब अपनी सूझ-बूझ तथा राष्ट्रीयता की भावना से निपटा दिया करते थे।

श्री मिश्रीलाल गगवाल ने अपने सस्मरणीय पत्र मे लिखा है कि उनके काल मे जब इन्दौर मे स्वतत्रता का आन्दोलन हुआ तब उन्होने कानून की परिधि मे रहकर राष्ट्र-प्रेमियो की सदैव सहायता की, अग्रेजो की दमननीति का खुलकर विरोध किया और स्वतत्रता के दीवानो को गले लगाया। इन्दौर मे राजनैतिक जागृति को उन्होने सदा प्रोत्साहित किया, दबाया नही। यही कारण था कि राजनैतिक कार्यकर्ता और सस्थाओ के सचालक बापनाजी को आदर की दृष्टि से देखते थे और जनता का उनपर प्रगाढ प्रेम और अटल विश्वास बना रहा।

अलवर मे भी उन्होने स्वतत्रता के सिपाहियो या प्रेमियो से बहुत सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखा। जब अलवर के प्रजामडल ने 'कुर्सी छोडो' आदोलन छेडा और सत्याग्रह बडे पैमाने पर शुरू किया तब प्रजामंडल के कुछ नेताओ को नजरबद करना पडा और उस समय जनता को यह अनुमान नही था कि उनके नेताओ को कबतक नजरबन्द रखा जायगा, क्योकि अलवर राज्य मे प्रजामंडल आन्दोलन उस समय शैशव अवस्था मे था, इसलिए लोगो की धारणा थी कि वह सदा के लिए दबा दिया जायगा। किन्तु बापनाजी की नीति इससे भिन्न थी। उन्होने राज्य के बाहर प्रजामडल के एक कार्य-कर्ता के हस्तक्षेप पर कुछ ही दिनो मे नजरबन्दियो को रिहा कर दिया। इस एकमात्र घटना ने अलवर के लोगो को यह स्पष्ट कर

दिया कि बापनासाहब केवल विशाल हृदय के व्यक्ति ही नही है, ऐसे अधिकारी भी है, जो कि अपने कर्त्तव्यो और उत्तरदायित्व को दूरदर्शिता तथा बिना द्वेष की भावना के और राजा-प्रजा के अधिकाधिक हितों को ध्यान में रखते हुए कार्यान्वित किया करते है। इस तरह उन्होने अनेक देशी राज्यो का कुशलतापूर्वक निर्दोष शासन किया।

इन्दौर प्रजामण्डल के भूतपूर्व नेता और मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री वी०सी० सरवटे ने लिखा है, "सन् १६१७ मे इन्दौर राज्य के समाचार-पत्र 'मल्लारि मार्तण्ड विजय' का मै मुख्य सपादक था। यह पत्र यद्यपि शासकीय था, फिर भी उसमे सपादक के नाते मै शासन पर टीका-टिप्पणी करता था। मत्रियों की कारगुजारियो के न्यूनाधिक दोष इस टीका-टिप्पणी में खुले रूप से बताये जाते थे और उनपर कभी-कभी कटु चर्चा और विचार प्रकट किये जाते थे। उस समय सिरेमलजी होम और जुडीशियल मिनिस्टर थे। कई बार उनके मत्रिमंडल का कारोबार भी मेरी टीका का विषय होता था।

"ऐसी पूर्व-भूमिका होते हुए भी आगे चलकर जब प्रधान मत्री की हैसियत में दो-चार बार मेरे व्यक्तिगत मामले उनके सामने पेश हुए तब उन्होंने अपने सारासार विवेक का अधिकार मेरे अनुकूल किया और मुझे नुकसान नही पहुचने दिया।

"सामान्यत मेरा यह अनुभव रहा है कि जैसे-जैसे श्री सिरेमलजी की प्रतिष्ठा, पद और अधिकार-क्षेत्र बढता गया, वैसे-वैसे वह अधिक उदार होते गए और दूसरों की मदद करने, न्याय का उल्लघन न करने और उन्हे अधिकाधिक लाभ पहुचाने की वृत्ति दृढ होती गई। अधिकार की वृद्धि होने पर मनुष्य का अहकार और गर्व बढते देखा जाता है। श्री सिरेमलजी इसके अपवादरूप थे। मेरी विनम्र सम्मति में उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यही थी। मेरे वकालत के काल में होल्कर राज्य के मत्रिमडल के सामने मुझे कई बार जाना पडा। जब सिरेमलजी प्रधान मत्री की हैसियत से मत्रिमंडल के अधिष्ठाता थे तब मैने यह अनुभव किया कि इनाम के

मामलो मे जब-जब इनाम जब्त करने का मौका आता तब-तब भूत-पूर्व इनामदार को लाभ पहुचाने की जितनी गुजायश हो उतनी गुजायश देने मे वह कोई कसर न करते। जितनी न्यायोचित हो, उतनी निष्पक्षता वह रखते थे। मेरी तुच्छ राय मे अच्छे न्यायमूर्ति की यही वृत्ति होनी चाहिए।

"उनके प्रधान मत्रित्व-काल मे किसी मामले मे जाच के लिए खडवा के 'स्वराज्य' पत्र के सम्पादक को यह सूचना दी गई कि यदि सम्पादकजी को मजूर हो तो वह (वापनाजी) जाच करने के लिए किसी निष्पक्ष व्यक्ति को नियुक्त करने को तैयार है। जाच के लिए मेरा नाम भी उन्होने (वापनाजी ने) सुझाया था। मै किसी समय उनका तीव्र आलोचक रहा था, इस बात को ध्यान मे रखते हुए मेरे नाम का सुझाव उनकी उदारता का परिचय देता है।

"अपने प्रधान मत्रित्व के दिनो मे वह बख्शी बाग मे रहते थे। वहा के बगीचे में घूमने के लिए एक बडा गोल रास्ता था। रोज सुबह वह एक घटा वहा टहलते थे। उस समय हर व्यक्ति उनसे मिलकर अपना दुःख-दर्द बेरोक-टोक कह सकता था। शासकीय मामलो मे यदि उसकी शिकायत होती तो उसका लिखित आवेदन सिरेमलजी लेते और उसपर योग्य कार्यवाही की जाती। यात्रा के लिए पैसे और रोजमर्रा के खाने-पीने को मदद भी कई व्यक्ति मागा करते थे। मुझे जहा तक जानकारी है, प्राय किसी व्यक्ति को विमुख होकर नही जाना पडता था। पूरी नही तो थोडी-बहुत मदद मिल ही जाती थी।

"सन् १९३९ मे इन्दौर नगर मे आठ-नौ दिन की लम्बी हडताल चल रही थी। तब श्री सिरेमलजी प्रधान मत्री थे। हडताल के आठवे या नवे दिन श्री सिरेमलजी को यह सलाह दी गई कि व्यापा-रियो को दुकान खोलने का हुक्म दिया जाय और हुक्म की पाबन्दी न होने पर फौज द्वारा गोलिया चलाई जाय। श्री सिरेमलजी ने इस प्रकार की कार्यवाही का तीव्र विरोध किया।

"मेरी मान्यता है कि वह जब होल्कर राज्य के प्रधान मत्री थे तो सरकारी दफ्तरो मे शिथिलता बहुत कम थी। अर्जदारो की
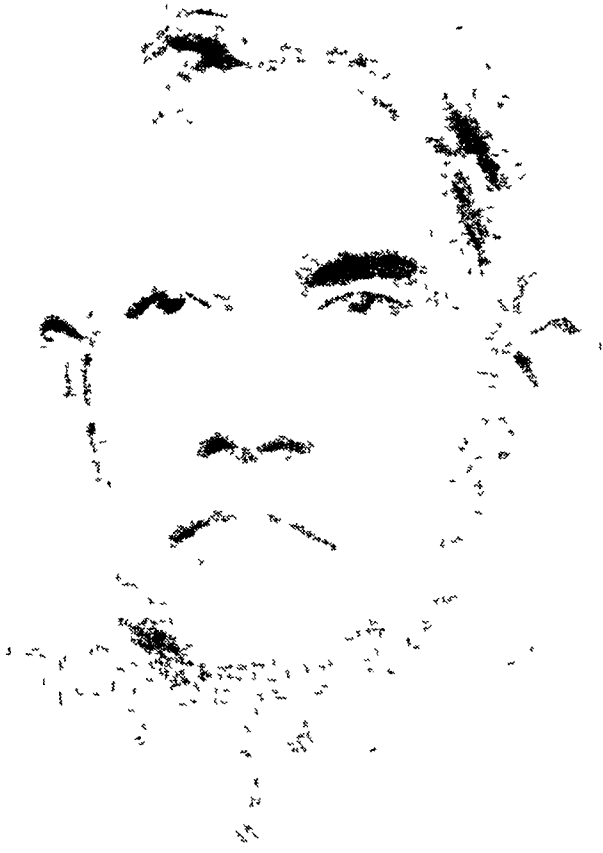
वापना-दम्पती
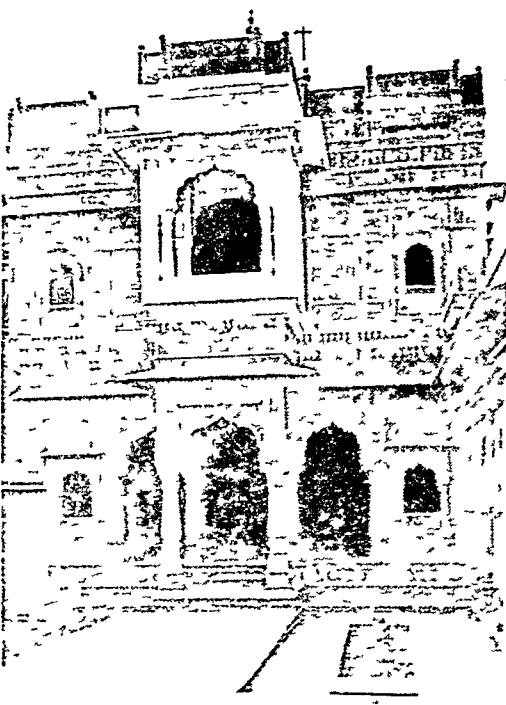
जेसलमेर के निकट अमरसागर-स्थित बापना-वंश का मंदिर, जो कोरनी के काम के लिए विख्यात है

सेठ छोगमल (पिता)

सेठ जोरावरमल (प्रपितामह)

सेठ जोरावरमल द्वारा निर्मित जेसलमेर की हवेली, जो पत्थर की खुदाई के लिए प्रसिद्ध है
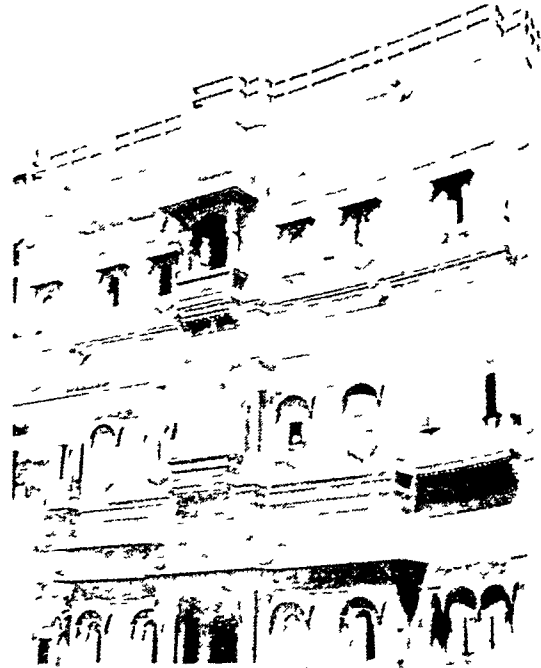
विद्यार्थी अजमेर मे

उदयपुर मे

सिरेमल बापना . विभिन्न रूप

डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन्स जज

महाराजा होल्कर के सेक्रेटरी
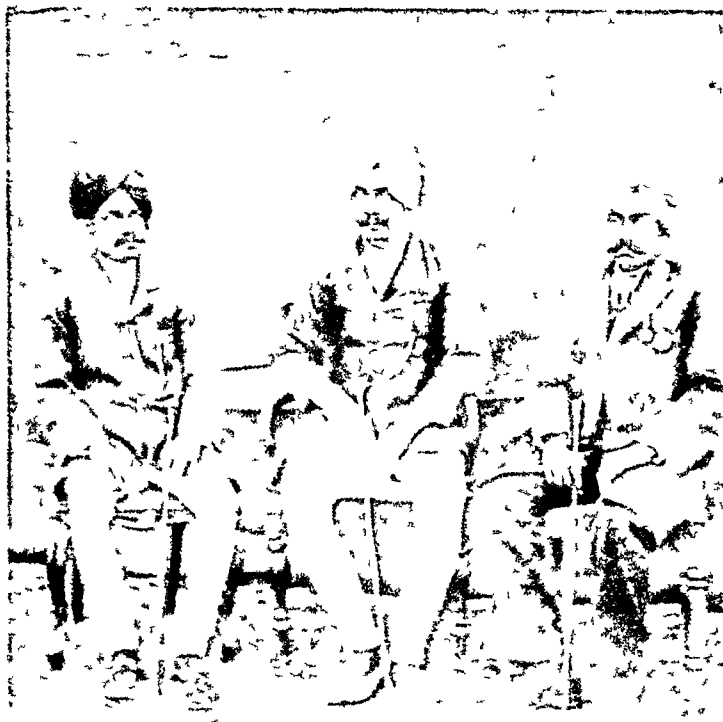
अपने विशाल परिवार के साथ (१९४१)

अपनी पत्नी, पुत्रो, पुत्रियो तथा पौत्रो के बीच (१९४१)

।दन मे गोलमेज परिषद मे (१९३१)

लीग आफ नेशन्स के अन्य प्रतिनिधियो के साथ जिनेवा मे (१६३५)

जिनेवा से लौटते समय मिस्र की प्रसिद्ध पिरामिडो के सामने (१६३५)
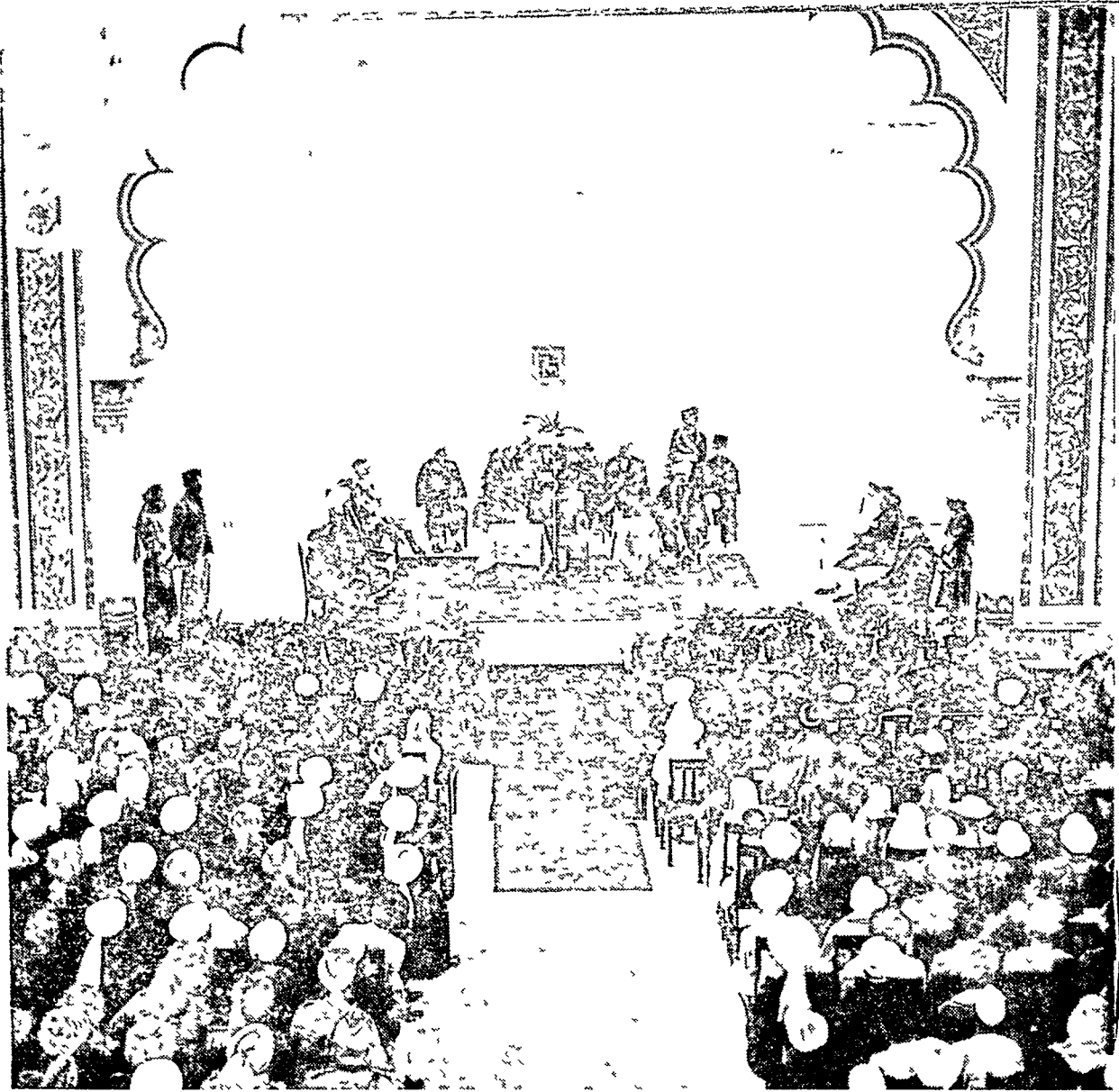
इन्दौर लेजिस्लेटिव कमेटी का उद्घाटन करते हुए (१९३६)
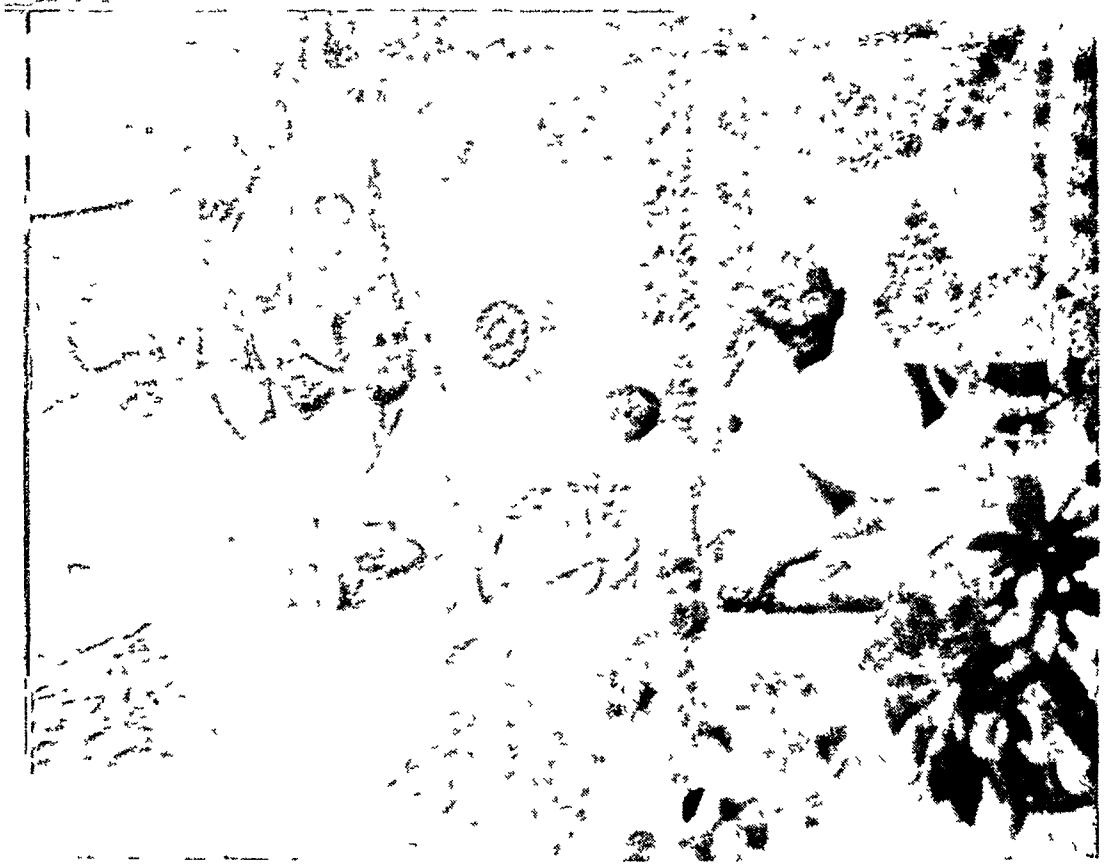
महात्मा गाधी के साथ
इन्दौर मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर (१९३६)

सुनवाई ठीक तरह हुआ करती थी। कामकाज मे तत्परता थी। रिश्वतखोरी बहुत कम मात्रा में थी। विशेषरूप से मेरा निजी अनुभव है कि मंत्रिमडल को अपील करने पर न्याय प्राप्त हुआ करता था। स्वयं बापनासाहब एक कुशल प्रशासक, सभी विभागो के जानकार और ईमानदार प्रधान मंत्री थे। सरकारी दफ्तरों मे जो कुछ अच्छाई थी, उसका श्रेय अधिकाश में इनके सफल नेतृत्व को था।

"इन्दौर राज्य के लोग बापनासाहब के एक महान् शिक्षा-शास्त्री, प्रशासक, समाज-सुधारक तथा इससे भी अधिक उनकी न्यायप्रियता, मानवता, समानता तथा उत्सर्ग-भावना के दुर्लभ गुणो के कारण उनका महामानव के रूप मे सदैव सम्मान करेगे।"

: १२ :

उपसंहार

हर मानव अपनी मृत्यु के उपरात केवल अपने अच्छे और बुरे कामो के रूप मे अपनी स्मृति को छोड जाता है। अतीत के इन्ही पद-चिह्नो से मानव-समाज उसका मूल्याकन करता है।

भारत के अतीत का इतिहास न जाने कितने मार्मिक वृत्तो से भरा पडा है। इस पुस्तक मे भी अतीत के एक ऐसे ही व्यक्तित्व की कथा है, जिसके माध्यम से उस काल के जन-जीवन के क्रिया-कलापो से परिचय प्राप्त होता है। श्री सिरेमल बापना तो एक निमित्त मात्र है। उनकी सहायता से उस काल का जीता-जागता और सच्चा चित्र खडा करने का प्रयत्न किया गया है। उनकी आत्मा काल के आवरण को पार करके अमर हो गई है, पर उन्होने अपने जीवन मे जो कुछ किया, वे ऐसे क्षितिज है, जो आनेवाली पीढियो का लम्बे समय तक मार्ग प्रशस्त करते रहेगे। श्री सिरेमल बापना मे एक ऐसा व्यक्तित्व समाया हुआ था, जो भारत के सास्कृतिक पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है। यह वह जमाना था जब रजवाडो मे एक ओर ऐश्वर्य, आमोद-प्रमोद और भोग-विलास का बोलबाला था तो दूसरी ओर रियासती जनता अवसाद, विवशता और नैराश्य की मूर्ति बनी हुई थी। सिरेमल बापना का व्यक्तित्व इन दोनो जीवनो के बीच मे रहकर उनसे अलग, ऊपर उठकर, एक ऐसा मानस प्रदान करता है जो काल की सास्कृतिक कहानी बन गया है। उनका धैर्य, कर्त्तव्यपरायणता, मानसिक सतुलन, स्नेह, विश्वास ऊच-नीच और छोटे-बडे के प्रति समान भावना, उदारता, दयालुता, दानशीलता आदि कुल मिलाकर ऐसे जीवन-मूल्य और प्रतिमान स्थापित करते है, जो सार्वभौमिक हैं। सत्यनिष्ठा, क्षमाशीलता, ईमानदारी, समर्पण, राष्ट्रीय भावना तथा दृढ इच्छा-शक्ति के जो गुण बापनाजी

में विद्यमान थे, उनका किसी देश को आगे बढाने और राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण के लिए जन-जीवन में व्याप्त होना अत्यन्त आवश्यक है। जो भी व्यक्ति बापनाजी के सम्पर्क में आया वह आज भी उनको नही भूला है। राजस्थान और मध्यभारत के पत्थर भी यदि बोल सकते तो सभी एक स्वर से कहते कि मानवतावादी बापना को हमारी आनेवाली पीढिया सदा याद रखेगी।

जगत का यह नियम है कि जब मनुष्य इस लोक से विदा ले लेता है तो कुछ समय बाद आमतौर पर विगत आत्माओ के बारे में लोग भूल जाते है, किन्तु यदि कोई मनुष्य अपने कार्य-व्यवहार का आधार मानवीयता को बनाता है तो वह जन-जन के हृदय को कुछ इस प्रकार स्पर्श कर लेता है कि उसे भूले नही बनता। भारत के रजवाडों में प्राचीन काल से ही प्राय यह परम्परा रही है कि राजा-महाराजा अपने व्यक्तित्व के, सर्वस्व के, विनष्ट होनें के विचार से इस भौतिक ससार में अपनी अमिट स्मृतिया छोड़ जाने को विकल हो जाते है। इनमें से कुछ मनस्वी कला का सहारा लेते है, कुछ इमारतो के आकर्षक सौन्दर्य द्वारा अपने को स्मरण कराने का प्रयत्न करते है। और यह जानते हुए भो कि काल के सामने किसी की नही चलती, वे अपनी स्मृनियो को अमर बनाने का प्रयास करते हैं। सिरेमल बापना भी चाहते तो स्मारकों के द्वारा अपनी स्मृति को चिर-स्थायी बना सकते थे, किन्तु उन्होंने ऐसा कुछ भी नही किया। फिर भी उन्होंने अपने जीवन में जिस मानवता का सहारा लिया था, वह कुछ ऐसी प्रभावशाली थी, जो बिना स्मारकों के ही अमर हो जाती है।

रक हो चाहे राजा, इस ससार से सभी को जाना पडता है। दु.ख और सुख दोनो को भुगतना पडता है। अतीत के लम्बे-चौड़े प्रागण मे इन उभय पक्षों की विषमता सिरेमल बापना के सामने भी थी, किन्तु उनकी मानवता ने उनको एक ऐसी पुनीत भाव-धारा में अवगाहन करने की शक्ति दी थी कि जिसके द्वारा वह अपने परायेपन-के कलमष को दूर करते रहे उनका हृदय स्वच्छ होता गया। उनके चारों ओर का जीवन जहा ऐश्वर्य, कला और सौंदर्य की जगमगाहट,

रागरग और आमोद-प्रमोद की चहल-पहल से भरा हुआ था, वहा दूसरी ओर जनगण का जीवन अवसाद, निराशा और, उदासी से सरावोर था। सुख-दु ख के इस वैषम्य का प्रभाव श्री सिरेमल बापना पर वडा मार्मिक और हृदयस्पर्शी पडा। जनता-जनार्दन की दीनता, विवशता और उदासीनता ने उनमे मानवता के एक ऐसे पक्ष का विकास कर दिया, जिस पर कोई भी सस्कृति गर्व कर सकती है।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाय तो सामान्यतया मनुष्य अर्थ और काम के वीच डोलता है। अर्थ उसके लिए साधन और काम साध्य है। मनुष्य कभी अर्थ-भूमि पर रहता है और कभी काम-भूमि पर। अर्थ-साधना और काम-साधना के वीच मनुष्यो का जीवन बटता हुआ चला जाता है और जो व्यक्ति इन दोनो मे अच्छा सामजस्य स्थापित कर लेता है उसीको जगत सफल पुरुष मान लेता है। किन्तु सिरेमल वापना अर्थ-साधना और काम-साधना दोनो से ऊपर थे। उनके जीवन मे ऐसा जमाना काफी देर तक रहा जव उन्हे पूरी तरह से सुख-सुविधाए प्राप्त थी और वह चाहते तो अर्थ और काम के क्षेत्र मे सबकुछ प्राप्त कर सकते थे, किन्तु उनकी मानवता ने, उनके गम्भीर चितन से उपलब्ध जीवन ने, उनको इन सासारिक सुखो से ऊपर रक्खा, क्योकि उनकी सास्कृतिक धरोहर ने उन्हे सिखाया था कि जीवन क्षणभगुर है। उनके धर्म ने उन्हे बताया था कि जीवन एक वुदवुदा है, घूमती हुई आत्मा के लिए ठहरने का एक अस्थायी स्थान है। इसलिए वह सासारिक जीवन की व्यवस्थाओ के वीच भी जीवन-सग्राम की गिरावट और ऊचाई मे रहते हुए भी एक तटस्थ दर्शक की भाति जीवन को भोगते रहे। उन्होने प्रभुता, ऐश्वर्य और सामर्थ्य का कभी भी अनुचित लाभ नही उठाया। वह देशी राज्यो के उस काल मे हुए थे जब शासक वर्ग आमतौर पर आख वन्द किये सुरा, सुन्दरी और सगीत के स्वप्न-लोक मे विचरते थे। फिर भी सिरेमल वापना इन वातो से अछूते रहे, उसका कारण यह था कि उनके मन मे जो शुद्ध मानवता की ज्योति थी, उसीके उजाले मे वह इन सारी वातो को देखते थे। वह जानते थे कि वैभव और विलास जीवन मे स्थायी नही होते। उन्होने न जाने कितने

खडहर इस बात की साक्षी देते हुए देखे थे कि मनुष्य की विलास-भावना और लिप्सा अन्त मे केवल बीभत्स अट्टहास करती रह जाती है। वह उन करुणानिधियो में से एक थे, जिनका हृदय, जिनकी भावना, पीड़ितो के रुदन को भी सुनती है तथा सुख-लिप्सु और विलासियो की कामनाए पूर्ण करने के लिए निर्दयता के साथ कुचली हुई आत्माओ को भी देखती है। सिरेमल बापना में तप और सयम की अद्वितीय चमक थी, जिसके कारण दरबारो की सजावट, तड-कीली-भड़कीली पोशाक, विलास भवन मे बेगम और बादियो की वेशभूषा, रग-बिरगे कालीनो, वड़े-बड़े फानूसो का दृश्य उनपर कोई असर नही डाल पाया। उन्होने अपने जीवन मे ऐसे अनेक दृश्य देखे थे जब श्वेत पत्थरों पर सुगन्ध फैलाता हुआ जल, श्वेतागों पर रंग-बिरगे वस्त्र लपेटे, नूपुर पहने, अत्यन्त सुन्दर अप्सरा की रुन-झुन की आवाज, रग-बिरगे सुगन्धित जलो के फव्वारो के माध्यम से सौन्दर्य बिखर पड़ता था, सुख झलकता था और उल्लास की बाढ आ जाती थी, किन्तु मस्ती का एकमात्र शासन और मादकता का नर्तन उनपर अपना कोई प्रभाव इसलिए नही छोडता था, क्योकि उनकी मानवता ने, उनकी क्षमाशीलता ने जनता-जनार्दन के जीर्णशीर्ण और जर्जर अवशेषों से उठती हुई कामनाओ, वेदनाओ उमड़ते हुए आसुओ, दहकती हुई आहो, नैराश्यपूर्ण वेवसी, दीनता और उदासी की झलक को भी देखा था। तभी तो वह जीवन-भर अर्थ और काम के चक्कर से निकलकर जन-जीवन के उत्थान में लगे रहे।

जीवनी-लेखक आमतौर पर अपने नायक की अच्छाइयों की ओर अधिक दृष्टिपात करता है। वह उसके साथ एकाकार हो जाता है, इसलिए उसका दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण बन जाता है। फिर भी उसके लिए यह आवश्यक होता है कि वह अपने नायक की जीवनी का मूल्याकन करके अच्छे और बुरे को परखे और आनेवाली पीढी की सूचना और मार्ग-दर्शन के लिए उस सवको प्रस्तुत करे। वापना-जी के जीवन का मूल्याकन करने से पहले हमे यह समझ लेना आवश्यक है कि जिस युग मे वह रहते थे वह आज की पीढी के लिए एक स्वप्न-सा प्रतीत होता है। माना कि उस जमाने में गरीवी

थी, अत्याचारो से परित्राण पाने के लिए जनता अपनी आवाज भी बुलन्द नही कर सकती थी। फिर बापनासाहब एक देशी राज्य के दीवान थे। जिनकी हालत और भी बदतर थी—निरकुशता और अत्याचार देशी शासन के जैसे पर्यायवाची बन गये थे। फिर भी उस जमाने मे जनगण के पास जो धरोहर थी, लगता है आज के जीवन मे से धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। सभी मूल्य जो कभी किसी जाति के, किसी राष्ट्र के स्वाभिमान के चिह्न माने जाते थे, आज के युग मे अर्थहीन हो गये है।

जान पडता है जैसे वैज्ञानिक तथा तकनीकी सभ्यता ने, सभी जीवनमानो को बदल दिया है। एक जमाना था जब लडाई के मैदानो को छोडकर भागना सबसे बडा देशद्रोह और कायरता का सबसे बडा चिह्न माना जाता था। जिस राजस्थान मे बापनासाहब पैदा हुए थे वहा की प्रत्येक माता अपने रणबाकुरे पुत्र को लडाई मे भेजते समय एक ही आशीर्वाद देती थी—बेटा, पीठ पर गोली नही खाना। किन्तु अब इन भावनाओ का मूल्य बदल गया है। यदि अन्तिम विजय के लिए आवश्यक हुआ तो सेना पीछे भी हटती है।

श्री बापना उस परपरा मे पैदा हुए थे, जहापर इस बात का अक्षरश पालन करने का प्रयत्न किया जाता था कि प्राण भले ही चले जाय, पर वचन नही जाना चाहिए। यह नया युग इसमे आस्था ही नही रखता, कूटनीति ने जैसे मनुष्य के सभी मूल्यो को अपने नीचे दबा लिया है। आज की पीढी शायद ही इस बात पर गर्व के साथ सिर उठा सके कि सत्य, ब्रह्मचर्य और प्रण-परायणता ही सफल जीवन की कसौटी है। आज के बड़े-बडे नगरो मे रहनेवाली पीढी को सहसा इस बात पर विश्वास नही होगा कि उनसे दो-तीन पीढी पूर्व ऐसे अनोखे मनुष्य भी इस जगत मे रहते थे, जिनके लिए अतिथि-सत्कार अपने जीवन के सबसे बडे आदर्शो मे से एक माना जाता था। वे घर फूककर अतिथियो का सत्कार करते थे। श्री बापना ऐसे ही व्यक्तियो मे थे। आज की चकाचौध मे आदमी अपने परिवेश को सजानें मे, अपनी सुख-सुविधाओ को आधुनिकतम बनाने मे, अपनी आय का सर्वोत्तम भाग खर्च कर देते हैं। परन्तु

घर मे एक अतिथि के आने पर जैसे गाज गिर जाती है। बापना-साहब ठीक इसके विपरीत थे। वैसे देखा जाय तो उनका कुटुम्ब चार-छ: व्यक्तियो तक ही सीमित था, किन्तु उनकी अपनी दृष्टि में उनका परिवार उन पचास-सौ स्वजनों का था, जो उनके साथ रहते थे, जो अपनी बीमारी को दूर करने के लिए इन्दौर उनके पास ठहरते थे और जिनको वह शिक्षावृत्ति देते थे। इसमे वे स्वजन भी शामिल थे, जो उनके यहा सफाई का काम करते थे, उनके कपड़े धोते थे, उनकी बग्घी को चलाते थे। किसे विश्वास आयगा कि उस जमाने में चार हजार रुपये मासिक पानेवाले बापनाजी अपनी सारी आय अपने इन स्वजनो पर खर्च करते समय वही दृष्टि रखते थे, जो एक स्थितप्रज्ञ की होती है ? इस बृहत परिवार मे उनकी दृष्टि अन्त्योदय की रहती थी और सबसे पीछे के व्यक्ति को, सबसे असहाय को, सबसे विवश शिशु को, वह सभी कामों मे प्राथमिकता देते थे। इसका नतीजा चाहे यह भी होता था कि इस समभाव के कारण उनकी अपनी सन्तान व प्रियजन भी कभी-कभी उपेक्षा के पात्र बन जाते थे।

इस बात पर भी सहसा किसी को विश्वास नही होगा कि एक पूरे राज्य के मालिक श्री बापना, जिसके वह चौदह वर्ष तक प्रधान-मन्त्री रहे, चार वर्ष तक नाबालिग शासन के सर्वेसर्वा रहे, जब कार्यभार से मुक्त हुए तो कर्ज मे डूबे हुए थे। आज के युग में उनके स्थान पर कोई दूसरा व्यक्ति होता तो करोड़ो की सपत्ति का मालिक होकर पदमुक्त होता। जिसकी कलम मे इतना जोर था कि लाखो का वारान्यारा कुछ क्षणो मे ही कर सकता था, उसने अपने लिए कुछ नही किया, यह जानकर आज की पीढी उसे क्या कहेगी ? वास्तव मे आधुनिक पीढी के लोगों और विशेष रूप से मत्रियों और प्रशासको के लिए उनका यह उदाहरण अनुकरणीय होना चाहिए।

हर जमाने मे मूल्यो का परिवर्तन होता है। प्रत्येक युग उन मूल्यो को छोड देता है. जो मनुष्य-समाज के स्वार्थो से टक्कर खाते है, क्योकि मानव-समाज का मुख्य उद्देश्य जीवन-सघर्ष में अपने को जीवित रखना है। इसलिए काल-सरिता के तट पर अनेक सभ्यताएं

अपने जीवन-मानो को लेकर बुदबुदे के समान उठती है और फिर उसीमे विलीन हो जाती है। इतने पर भी मानव-जीवन के कुछ ऐसे चिरस्थायी मूल्य है, जिनको छोडने का अर्थ है मनुष्य-जाति का सम्पूर्ण विनाश। सत्य, निर्भयता और नैतिकता ऐसे सार्वभौम और सार्वकालिक गुण है। श्री सिरेमल बापना मे इन गुणो का चरम विकास हुआ था। यह बात आज की पीढी की सहज ही समझ मे नही आ सकती कि दु ख उठाकर सत्याचरण करने की क्या आवश्यकता थी ? इस बात को तो वे ही समझ सकते है, जिनका बाहर और अन्दर का विकास समान हुआ हो। सत्याचरण से एक व्यक्ति कितना शक्तिशाली बन सकता है, इसकी कल्पना वे नही कर सकते, जिनकी सत्याचरण मे आस्था नही है। आज के जमाने मे जब जनसख्या इतनी अधिक बढ गई है कि व्यक्ति का अस्तित्व एक कीडे जितना रह गया है, सत्याचरण करनेवाला व्यक्ति चाहे तो सारे ससार को हिलाकर रख सकता है और अभी कुछ समय पहले गाधीजी ने ऐसा किया भी था। बापनासाहब ने भी जीवन-भर इसी परम्परा को निभाने का प्रयत्न किया था। आज जो मनुष्य सत्य-पालन का वचन लेता है उसे जीवन-भर दु ख सहना पडता है, इसलिए कि वह एक ऐसे समाज मे रहता है जिसमे उसका सचाई से काम नही चल सकता। कदम-कदम पर हर आदमी को समझौता करना पडता है। जो समझौता नही करता है, वह दु ख मोल लेता है। या तो व्यक्ति मे इतनी शक्ति हो कि वह दु ख को भी इतने ही सहज भाव से सहन कर ले, जितने सहजभाव से उसने सत्य को अपनाया है अथवा सत्य-मार्ग को छोडकर उस मार्ग को अपना ले, जिस मार्ग पर सारा जगत चल रहा है। बापनासाहब के जमाने मे इस बात के दिशा-सकेत मिलने लगे थे। इसलिए अनेक वार सत्य के साथ समझौता न करने के कारण उन्हे अपने पदो से त्यागपत्र देने पडे थे, अनेक कठिनाइया उठानी पडी और राज्यो को छोडना पडा था।

आज के जमाने का सवसे पहला गुण है आत्म-प्रचार और प्रकाशन। जो इसमे विश्वास नही रखते वे, इस दौडती दुनिया मे

हमेशा पीछे रह जायंगे। पर भारत के मनीषियो ने कभी इसकी चिन्ता नही की। उन्होने जगत के सामने कभी भी अपनी कीर्ति के माध्यम से आने का निर्णय नही किया। किन्तु आज मूल्य बदल गये है। व्यक्ति को पहले अपने व्यक्तित्व को प्रकट करना पड़ता है तब उसका कृतित्व लोगो की समझ में आता है, उसका विकास हो पाता है। पर बापनाजी ने जो कुछ किया, बिना प्रचार के किया, बिना प्रदर्शन के किया और यह सब इसलिए किया, क्योकि वह मानवता-वादी थे। उनके प्रत्येक निर्णय मे, उनकी प्रत्येक दृष्टि मे, मानवता प्रथम थी, अन्य बाते बाद मे। यही कारण है कि एक प्रतिगामी देशी राज्य के प्रधान मन्त्री होते हुए भी वह जनता के प्रिय शासक रहे, प्रिय पात्र रहे। जनता उनको भूली नही और जबतक वह जीवित रहे, तबतक उनके गुणगान होते रहे, इसलिए कि उन्होने जनता के दिलो पर राज्य किया था। हर बेसहारे को, जो भी उनके पास आया, उन्होने सहारा दिया था। वह दूसरो के कन्धो पर चढकर आगे नही बढे थे, वरन् जहा तक सम्भव हुआ, उन्होने दूसरों को अपने कन्धो चढाकर आगे बढाया था। उन्होने जनसाधारण के अरमानो को, जहातक हो सका, पाला-पोसा था, उनके अरमानो को मिटाया नही था। दरिद्र-नारायण की सेवा करने मे उन्होंने अपने ढग से जो काम किया, वह बिरला ही कर पाया है।

आज दुनिया बदल गई है। विकसित देशो में मनुष्य का व्यक्तित्व बट गया है। मानसिक स्तर पर वह पश्चिमी जगत का प्राणी बन गया है, पर सामान्य जीवन उसको अपनी सस्कृति मे बिताना पडता है। उसका बचपन और किशोर अवस्था ग्रामीण भारत मे बीतती है, यौवन और प्रौढ अवस्था उसको आधुनिक जीवन की चकाचौध से ओत-प्रोत बड़े-बड़े नगरो मे बितानी पड़ती है। पूर्वी परम्परा के अनुसार सयुक्त परिवार से वह आता है और पश्चिमी परम्परा के अनुसार उसका परिवार अपनी पत्नी और सन्तान तक सीमित रह जाता है। उसका मन विद्रोह करता है और उस विद्रोह को वह प्रकट करता है हड़तालो में, घेरावो मे, पथरावो मे।

श्री बापना का विकास जिस सस्कृति में हुआ था, उसमें

व्यक्तित्व विभक्त होने के स्थान पर समन्वित था। पश्चिम का जो कुछ भी अच्छा था, प्रगतिशील था, उसकी कलम पूर्व की पौध पर लगाई जाती थी, तभी तो बापनाजी पश्चिमी जीवन और जगत मे रहते हुए भी पूर्णतया भारतीय बने रहे। बाहरी जीवन की चकाचौध का उनपर असर इसलिए नही पडा, क्योकि उनका अन्तर एक ऐसे आलोक से प्रकाशमान था जो पूर्ण सतोष से और अपने-आपको समझने से प्राप्त होता है और जिसका अभ्यास उपनिषदो के ज्ञान को व्यवहार मे लाने से प्राप्त होता है।

बीसवी सदी के इस वैज्ञानिक युग मे भौतिकता एक बृहत मकडी के समान बन गई है, जो रास्ते मे आनेवाले को अपने जाल मे लपेटती चली जाती है। आज उसी भौतिकता-रूपी मकडी के जाल मे फसे वैज्ञानिको के दल छटपटा रहे है। चारो ओर गहन अधकार है, जिसमे प्रकृति, पुरुष, अंडपिड सभी समा गये है।

किन्तु इस अधेरे मे दूर से, बहुत दूर से, मानवो की एक छोटी-सी टोली सहस्रो वर्षो से एक ऐसी मशाल को अपने हाथ मे लेकर आगे बढ रही है, जिसका दृढ निश्चय है कि अधेरा रह नही पायगा। प्रकाश के आते ही वह हट जायगा और भौतिकता इस सम्मिलित वाणी की गूज मे खो जायगी, छिन्न-भिन्न हो जायगी। यह टोली मनुष्य की सास्कृतिक धरोहर के कधो पर चढकर बराबर आगे बढ रही है। इसका नारा है—तेजोमय पृथ्वी को कोई भी क्षत विक्षत नही कर सकता, मानवता की साधना सफल होकर रहेगी। इसका मानना है कि विधाता की सृष्टि मे मानवता ही सर्वश्रेष्ठ है, वह प्रचड शक्तिशाली बमो से भी नष्ट नही हो सकती, क्योकि प्रकृति का सबसे बडा सत्य स्वय मानव है। लगता है, सिरेमल बापना इसी छोटी-सी टोली के एक सदस्य थे।

●

परिशिष्ट

: १ :

जीवन-क्रम

२४ अप्रैल, १८८२	जन्म
१८९६	विवाह
१८९८	महाराणा हाई स्कूल, उदयपुर से प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक्युलेशन
१९००	इंटरमीडिएट . गवर्नमेन्ट कालेज, अजमेर से, विश्वविद्यालय मे द्वितीय
१९०२	बी० ए०, बी० एस-सी०, प्रथम श्रेणी मे प्रथम, कैमिस्ट्री मे आनर्स-सहित
१९०३	डी० एस-सी० (प्रथम वर्ष) म्योर सेन्ट्रल कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, जुबली पदक व इलियट स्कालरशिप मिला
१९०४	एल-एल० बी०, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी मे, प्रथम लैम्सडन मैडल प्राप्त हुआ।
१९०४-१९०५	अजमेर मे वकालत
१९०५-१९०६	ज्युडिशियल आफीसर, मेवाड स्टेट।
जनवरी, १९०७	होल्कर स्टेट सर्विस मे प्रवेश, डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन्स जज।
१९०८-१९११	महाराजा के कानूनी शिक्षक, कुछ महीनो को छोडकर, जव डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन्स जज का कार्य पुन किया
१९१०-१९११	महाराजा के साथ यूरोप-यात्रा (१८ मास)
१९११	किंग्ज कारोनेशन मैडल
१९११ से १९१३	महाराजा के द्वितीय सैक्रेटरी
१९१३-१९१४	महाराजा के प्रथम सैक्रेटरी
१९१४	महाराजा के साथ यूरोप-यात्रा (छ मास)
१९१४	ब्रिटिश सरकार द्वारा रायबहादुर की उपाधि।

१९१५ से अप्रेल १९२१	होल्कर स्टेट के गृहमत्री
१९१९	होल्कर स्टेट द्वारा एतमादुद्दौला की उपाधि
अप्रैल १९२१	इदौर राज्य से स्पेशल पेशन पर सेवा-निवृत्त
अप्रैल १९२१ से अगस्त १९२३	पटियाला स्टेट के गृहमत्री
१९२२-१९२३	पटियाला । नाभा केस मे पटियाला के मुख्य प्रतिनिधि
अगस्त १९२३ से	होल्कर राज्य मे गृहमत्री
१९२३ से फरवरी १९२६	उपप्रधानमत्री व अध्यक्ष, अपील-कमेटी, होल्कर राज्य
फरवरी १९२६ से मई १९३०	प्रधानमत्री और मत्रिमण्डल के अध्यक्ष, महाराजा के नाबालिग काल मे
मई १९३० से १० जून १९३९	प्रधानमत्री व राज्य मत्रिमण्डल के अध्यक्ष, महाराजा होल्कर के पदाधिकार के बाद
१९३०	होल्कर स्टेट द्वारा 'वजीर उद्दौला' की उपाधि
जनवरी १९३१	सी० आइ० ई० की उपाधि, ब्रिटिश सरकार द्वारा
१९३१	लदन मे गोलमेज परिषद मे भारतीय प्रतिनिधि
१९३५	राष्ट्रसघ मे भारतीय प्रतिनिधि
१९३६	ब्रिटिश सरकार द्वारा नाइट की उपाधि
अगस्त १९३९ से अगस्त १९४१	प्रधानमत्री, बीकानेर राज्य
अप्रैल १९४२ से नवम्बर १९४२	मुख्य मत्री, रतलाम राज्य
१९४२-१९४७	प्रधानमत्री, अलवर राज्य
१९४६-१९४७	गभीर बीमारी
१९४७	सेवा-निवृत्त
१९५२	इदौर-निवासियो द्वारा हीरक जयती उत्सव
१९५२	सर वापना छात्रालय का शिलान्यास, भारत के गृहमत्री डा० कैलासनाथ काटजू द्वारा
१९५२-५३	सभापति, मध्य भारत युनिवर्सिटी कमेटी
१९५३	सर वापना छात्रावास का उद्घाटन
१९५२ से १९५८	सभापति, बैंक ऑफ इदौर के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स
१६ दिसम्बर, १९६४	स्वर्गवास

: २ :

सेठ जोरावरमल की प्रतिभा तथा सेवाएं

लेफ्टिनेंट ए. एच. ई. बॉइलो ने अपनी पुस्तक 'परसनल नरेटिव ऑफ ए टूर थ्रू दी वेस्टर्न स्टेट्स आफ राजवाडा इन १८३५ कम्प्राइजिंग बीकानेर, जैसलमेर एण्ड जोधपुर' मे, जो सन् १८३७ मे कलकत्ता से प्रकाशित हुई थी, सेठ जोरावरमल की प्रतिभा तथा प्रतिष्ठा का निम्नलिखित शब्दो मे वर्णन किया है

Page 3

Upon entering the Jodhpur territory a number of native agents of various degrees both in rank and intellect were despatched at different times to meet the mission, but the attendance of such persons being rather matters of ceremony and State than as conducive to the settlement of any real business they were looked upon in this light, and matters of importance regarding the Jodhpur State were transacted at the capital by personal conference with the Maharaja as above-mentioned a few more respectable men at this Court, men who might well be entrusted to act as Ministers of State, but Mansingh seemed unwilling to trust himself too much to any one individual or to any one set of men, so the accidental presence of Zorawarmull, the rich Banker of Kotah and Ajmer who, through belonging to party, was respected by all the chiefs of Rajwara, was a most fortunate occurrence and much benefit was derived from his friendly advice and influence at Jodhpur, as well as at Jaiselmer and Bikaner, with Chiefs of which State he also had meetings during the time of our intercourse with them.

Page 44

Gardens near Jaiselmer : The gardens at Moolsagar and Umursagar with the Nursery called Baree (containing some very fine trees near the Burning place of the Rawal's family) and

Bahadarmull are nearly every thing that we heard of or saw in the shape of a Bagh

Page 85

Continuation of the interview By way of making darkness visible and letting in some little light upon the scene, four table-sheds were introduced and when the candles appeared both the Rajas rose from their seats and saluted each other Among those present on this occasion, was happy to see Zorawar mull one of the greatest merchants of Marwar who came in the train of neither party, but as a friend of both, though seated on Jaiselmer side of the line , on the Bikaner side was a Thakur of note

(Interview for fixing the boundary)

Page 133

Mission in Jodhpur Mission's visit to Zorawar Mull's House

On the 15th July we had our second interview with the Maharaja as above mentioned and on the following day we remained quietly in camp making a sketch of the Citadel and the part of the Townhall On the 17th we went at 5 p m to see the new house of the rich merchant Zorawarmull of Ajmer Kotah, Bikaner, Jaiselmer and Jodhpur, who with his brethren may be considered the Rotachilds of Marwar though only humble imitators of Baron Andreas, Baron Solomon or Baron Moses The palace as it may be called which is now in progress at Ajmer as a sort of family Mansion really a grand building containing 4 or 5 separate Courts, and said to have already cost upwards of a Lac of rupees, but the Jodhpur Edifice is a much less noble affair though built of excellent materials faced with hewn stone and enclosing two separate Courts It is not intended for the permanent residence of any of the members of Zorawarmull's family, but was built at a cost of about 20,000 to please Raja Mansingh who likes to see his Capital ornamented with such structures. It is situated close to the south side of the Citadel, next to the Gao-sala or Royal cattle yard in which are also kept the State carriages After seeing a dance and receiving a few trays of sweetmeats we quitted Zorawarmull's house about sunset and on our way back to camp visited the tank called Fatehsagar and Tonarjeeka-Jhalra,

Page 141

Visits from different Ministers : The 26th July being Sunday was a day of rest, but Lachmichand Bhandari called alone to see Lt Travelyan, was an encouraging proof of the Raja's increased confidence in allowing any one of his principal Ministers to communicate privately with the Head of the Ajmer Mission, without having one of the opposite faction also in attendance to act as a spy upon him Shambhoodutt Joshi called at our Camp in the similar manner on the following afternoon, and it was quite a pleasure to be able to enter into unrestrained conversation with the sensible men, as well as with the merchant Zorawarmull who had previously called upon Lt Travelyan, and was also received in private by the Raja during the few days he remained at Jodhpur.

भारत सरकार के सचिव डब्ल्यु, एच, मेनेफ्थ का सेठ जोरावरमल के नाम पत्र

The attention of the Government having been called to the various useful and ornamental works which have lately been constructed at Ajmer, I am directed to inform you that the honourable the Governor General of India in Council views with much approbation the benevolent efforts in which you have been engaged The honest satisfaction with which you must regard the good you have done to your countrymen will amply repay you for the sacrifice that you have made and their gratitude will, no doubt, perpetuate your name as a public benefator in a manner most agreeable to the feelings of your-self and your descendants

The success which you have met with, it is hoped, stimulate you to further acts of well directed benevolence, and will also encourage others by your example to adopt a similar course both at Ajmer and elsewhere.

राजपूताना के पॉलीटिकल एजेंट कर्नल टी० राविन्सन का पत्र :

The high repute in which the character of Seth Zorawarmull is held both by those of his own profession and the community generally is too well known to stand in need of individual testimony It is now about thirty years since I first became acquainted with this intelligent and respectable Seth and during the last half of that period in particular have been in

almost constant communication with him both in a private and official capacity The result of this long intercourse and correspondence has been to impress me with the same favourable opinion of his worth and integrity so generally entertained by his numerous acquaintances European as well as native From the nature and extent of his connexions with the different States of Central India, he has acquired a knowledge of their affairs in a degree seldom to be found in one and the same individual so that any new comer entrusted with the conduct of our relations with those States would find it of considerable advantage to avail himself of the fund of information he possesses regarding them

The influence which opulence usually confers appears in this case according to all concurring accounts to have been laudably exercised for the good of his fellow creatures His munificent charities for the relief of indigent and unfortunote and for the promotions of public utility, have long ranked him in general estimation in the list of public benefactors It is to his good offices that the British Government has been realisig punctuality for many years past its tributes from the different petty States under the Maywar Agency, as well as in providing funds for the regular payment of the Bheel Corps in the currency of the country in which it is located—both of them, points of considerable importance to British interests when it is recollected that in the former case the tributes in question, had never previously been realized without the exercise of a degree of importunity bordering in compulsion and that in the latter the funds required for the monthly payment of the corps could not elsewhere have been supplied inequally favourable terms.

Neemuch,
20th August 1849

३

अभिनन्दन

सन् १९२१ में गृहमंत्री के पद से त्याग-पत्र देने पर इन्दौर से विदा होने के अवसर पर इन्दौर-निवासियों की ओर से दिया गया मानपत्र

इन्दौर रियासत के अनेक उच्च-उच्च विभागो मे पद्रह वर्ष तक प्रशसनीय कार्य करके जो आज आपने अवकाश प्राप्त किया है, उस वियोग के कारण हम इन्दौर के नागरिक एव प्रजाजन हार्दिक खेद प्रगट करते हुए अपनी शुभेच्छाओ को आपकी भावी उन्नति के लिए प्रगट करते है।

आपका पद्रह वर्ष का कार्यकाल व सहवास इन्दौर की जनता के लिए बडा ही आनन्दप्रद रहा है। इस अवसर मे इन्दौर राज्यप्रणाली के मुख्य-मुख्य और उच्च पदो पर रहकर प्रजाहित के लिए जो चिर स्मरणीय कार्य आपने किये है, उनका इन्दौर की वर्तमान और भावी प्रजा पर अखण्डनीय प्रभाव पडा है और पडेगा। उदाहरणार्थ आपका अनिवार्य शिक्षा-सम्बन्धी प्रयत्न इन्दौर के उन्नति के इतिहास मे चिर स्मरणीय रहेगा। दुर्भाग्यवश यद्यपि उसके पूर्ण रूप से सफल होने मे विलम्ब हुआ, पर तो भी इन्दौर की जनता हमेशा उसे कृतज्ञता से अपने हृदयपट पर अकित रखेगी।

आपने जिस स्थानिक स्वराज्य के वृक्ष का आरोपण कर दिया है, वह पूर्ण रूप से फलने-फूलने पर इन्दौर की प्रजा को उत्तरदायित्व शासन का मधुर फल चखाने मे समर्थ होगा।

आपका उच्च चरित्र, नम्र और मिलनसार स्वभाव, आपके उच्चतम वौद्धिक गुण आदि अनेक बाते विद्वानो के लिए आदर्श रूप हो जायगी। आपका निष्पक्ष न्याय, राज्यभक्ति और स्वार्थत्याग प्रशसनीय है। यद्यपि आपका वियोग इन्दौर के लिए बडा ही हानिकारक है, तो भी इन्दौर की प्रजा यह सोचकर आनन्द मनाती है कि आप अपनी उज्ज्वल कीर्ति के साथ अपने गुणो का उपयोग इससे भी विस्तीर्ण क्षेत्र मे करेगे।

अन्त मे उस सर्वशक्तिमान से यही प्रार्थना है कि आप जैसे सज्जनो का स्मरण हमारे हृदय मे, हमारा स्मरण आपके हृदय मे चिर काल तक वना रहे और वह आपको दिन प्रतिदिन शारीरिक, मानसिक और सम्पत्ति सुख प्रदान करे, जिसे देखकर हमारा हृदय प्रफुल्लित हो।

सन् १९३९ मे इन्दौर राज्य के प्रधान मंत्री के पद से अवकाश प्राप्त करने पर इन्दौर की सम्पूर्ण जनता की ओर से दिया गया मानपत्र

मान्यवर, आपने अपने तैतीस वर्ष की सरविस मे होल्कर स्टेट व जनता की जो बेशकीमती सेवाए की है, उनकी प्रशसा करने के लिए ढूढने पर भी शब्द नही मिलते है।

आपने अपनी उत्कृष्ट और विलक्षण बुद्धि का उपयोग कर व्यापार, शहर व समाज की उन्नति करने मे कोई बात उठा न रक्खी, जिसके लिए सारा शहर आपका चिर ऋणी रहेगा।

आपके ही सराहनीय परिश्रम के फलस्वरूप शिक्षा-विभाग, औद्योगिक विभाग, हेल्थ, सेनिटेशन, मेडिकल वगैरा—हर विभाग मे बेहद उन्नति हुई है, जिससे सम्पूर्ण जनता को लाभ हुआ है।

आज आपके अहसानो से रियासत का बच्चा-बच्चा श्रीमान् का अत्यन्त आभारी है।

आज आपकी जुदाई मे आला से अदने तक का दिल भर आ रहा है—जनता आपके प्रेमपूर्ण और सद्व्यवहार को याद कर व्याकुल और आतुर हो उठती है।

अन्त मे परम पिता परमात्मा से हमारी हार्दिक प्रार्थना है कि आप कही भी विराजें, हमारी शुभकामनाए और सच्चा प्रेम हमेशा श्रीमान् के साथ है। आशा है, आप भी हमको नही भूलेगे।

सन् १९५२ मे हीरक जयंती के अवसर पर मध्य भारत के निवासियो द्वारा भेंट किया गया अभिनंदन-पत्र

मान्यवर !

परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से हमे आज आपका अभिनदन करने का यह मगलमय अवसर प्राप्त हुआ है। यह अवसर बडे ही आनद और हर्ष का है, क्योकि आप अपने सफल जीवन के सत्तर वर्ष पूर्ण कर रहे हैं और हम आपकी अमूल्य सेवाओ से प्रभावित और प्रेरित होकर आपका हीरक जयती महोत्सव मना रहे है। इस शुभ वेला मे आपके निष्कलक व्यक्तित्व से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट गुणो का उल्लेख करना हम अपना कर्त्तव्य समझते है।

कुल श्रेष्ठ !

आपने वीर-भोग्या वसुधरा मेवाड भूमि मे जन्म लिया, जहा राणा प्रताप, सागा, जयमल फत्ता और बप्पा रावल जैसे प्रतापी शूरवीरो ने अपने रक्त से, शौर्य, वीरता एव स्वाभिमान की रेखाए खीची है। उसी मेवाड के एक प्रतिष्ठित

और सम्पन्न परिवार मे आपका आविर्भाव हुआ। आपके पूर्वज श्रीमान् सेठ जोरावरमलजी की कीर्त्तिगाथा सर वाइले और कर्नल टॉड जैसे प्रसिद्ध इतिहासकारो ने गाई है एवम् तत्कालीन राजनीतिज्ञो मे उनका विशिष्ट स्थान माना है। ऐसे परिवार मे आपके सस्कार, शिक्षा-दीक्षा और आदर्श ढले है। उन्हीके अनुरूप आपने अपना जीवन निर्माण किया है। उसीका फल है कि आपका विद्यार्थी-जीवन प्रतिभाशाली, अध्ययनशील और आदर्श रहा है। आप सदैव सर्वप्रथम उत्तीर्ण होते रहे है, यही आपके कुल श्रेष्ठ होने का आरभिक प्रमाण है।

कुशल शासक !

आपने वीर-प्रसूता मेवाड भूमि से उदित होकर देवी श्री अहिल्याबाई के महामालव के प्रधान मन्त्रित्व के सिंहासन को गौरवान्वित किया। आपका कार्य-काल देश की राजनीति का उत्क्राति काल था। ऐसे समय मे आपका नगर-सेविका-सम्बन्धी सुधार, ग्राम-पचायत-व्यवस्था, विधान सभा की लोकतान्त्रिक प्रणाली, आवश्यक सामाजिक व शासन-व्यवस्था-सम्बन्धी सुधार आदि कई कार्यो द्वारा आपने जनतान्त्रिक सिद्धान्तो का सूत्रपात किया और उनकी नीव को मजबूत बनाया है। साथ ही आपने इन्दौर राज्य के साठ वर्ष पूर्व के विवादो को समाप्त किया, मानपुर तथा इन्दौर रेसीडेसी और गारण्टीड स्टेट्स का निर्णय कराया। इन्दौर के अतिरिक्त आपने बीकानेर, रतलाम, अलवर आदि राज्यो मे भी शासन-व्यवस्था को उन्नत बनाया है। आप एक युग से भी अधिक तक होल्कर राज्य के प्रधान मत्री रहे और सुरक्षा की जवाबदारिया निभाई है, वे स्वर्णाक्षरो मे सदा अकित रहेगी।

आप उन विरले महाभागो मे है, जिन्होने आदर्श और न्याय की रक्षा के लिए व्यक्तिगत स्वार्थो का बलिदान कर डाला और अपनी दूरदर्शिता, चारित्र्य बल और न्याय-निष्ठा का एक ज्वलत आदर्श कायम किया। इसीलिए स्वर्गीय महामना मालवीयजी ने आपको 'सत राजनीतिज्ञ' कहा था।

मगलदृष्टा !

आप योग्यतापूर्वक शासन-तत्र का सचालन तो करते ही थे, किन्तु साथ-ही साथ भविष्य के लिए निर्माणशील योजनाओ की ओर भी आपका ध्यान लगा ही रहता था। यशवत सागर बाध आपके कार्य-काल मे निर्मित हुआ। कुछ लोगो का घोर विरोध होते हुए भी आपने निर्भीकतापूर्वक उसे पूर्ण करवाया, जिसका सुन्दर अनुभव इन्दौरवासियो को आज हो रहा है। इसी तरह ग्लान्सी पावर हाउस, अण्डर ग्राउण्ड ड्रेनेज, शिक्षण सस्थाए और स्वास्थ्य-सम्बन्धी कई निर्माणशील योजनाओ को आपने मूर्त्त रूप दिया, जिससे आज इन्दौर नगर

प्रात मे ही नही वरन् देश के प्रगतिशील और उन्नत नगरो मे एक प्रमुख नगर गिना जाने लगा है। यह आपके मगलदृष्टा होने का परिचायक है।

चतुर श्रेष्ठ !

आपके व्यक्तित्व को जब हम पारदर्शी दृष्टि से देखते है तो आपमे विभिन्न गुणो का सुन्दर समन्वय दिखाई देता है, जिनमे से आपमे न्याय-निष्ठा, उदारता, सहृदयता, निर्भीकता और कर्त्तव्यतत्परता ये गुण विशेषत प्रतिबिम्वित होते हे। इन्ही गुणो के कारण यहा की जनता का सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, आर्थिक और सास्कृतिक विकास हुआ है। महाराजा तुकोजीराव क्लाथ मार्केट की स्थापना, स्थानीय सराफा बाजार का सुधार, उद्योगपतियो को व्यापारिक सुविधाए, मिल-मजदूरो को उनके यथोचित अधिकार, लेबर यूनियन की स्थापना को प्रोत्साहन, किसानो को पट्टेदारी के कानूनी अधिकार, अनिवार्य शिक्षा का सूत्रपात, मालवा मिल और स्वदेशी मिल को सकट से बचाना आदि कई कार्य आपने ऐसे किये है, जो आपके चतुर श्रेष्ठ होने का ज्वलत प्रमाण है।

राष्ट्रभाषा एव सस्कृति के सरक्षक !

स्थानीय मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के सगठन मे सदैव योग देते हुए विश्व-वद्य महात्मा गाधी के सभापतित्व मे होनेवाले आठवे और चौबीसवे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर जो आपने सक्रिय सहयोग प्रदान किया वह आपके राष्ट्रभाषा-प्रेम का आदर्श उदाहरण है।

भारतीय सस्कृति के मूल गुणो परोपकार, शातिप्रियता, स्नेह, सौहार्द की आप प्रतिमूर्त्ति है।

अपने जीवन-काल मे कई छात्रो को अज्ञात रूप से छात्रवृत्तिया देकर आपने शिक्षा के महत्त्व को सर्वोपरि रखा। अपनी असाम्प्रदायिक, राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण ही सन् १९२८ के साम्प्रदायिक पागलपन मे अपने प्राणो की परवा न कर आपने सकटग्रस्त जनता की रक्षा की, तथा सन् १९३९ मे महाराजा तुकोजीराव क्लाथ मार्केट की हडताल के समय क्षुब्ध जनता के बीच गोलीकाड की घटना बचा लेना भारतीय सस्कृति के अनुरूप, आपके साहस और धैर्य के द्योतक है।

आदर्शमना !

स्थानाभाव से हम आपके समस्त गुणो का वर्णन यहा करने मे सर्वथा असमर्थ है, किन्तु कुछ ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करना तो आवश्यक प्रतीत होता है। आपने राउण्ड टेबल कान्फ्रेंस, जिनेवा सभा मे राष्ट्रो के मूल अधि-

कारो का ही समर्थन नही किया, वरन् विश्व की उलझी हुई समस्याओ पर स्वस्थ और बलशाली विचारो से अतर्राष्ट्रीय राजनीति पर भारत की अमिट छाप अकित की है।

अन्त मे, हम परमेश्वर से प्रार्थना करते है कि आप दीर्घजीवी होकर उत्तरोत्तर यशस्वी होते रहे। और यह जो आपके हीरक जयती महोत्सव पर सर बापना छात्रावास का शिलान्यास माननीय डाक्टर कैलासनाथ काटजू साहब के हाथो हो रहा है, यह आपका स्मृति-मन्दिर उच्च आदर्शो का, केन्द्र बनकर, एक कीर्ति मन्दिर का रूप ग्रहण करे। इस अभिनदन-पत्र के रूप मे हम हमारी हार्दिक भावनाओ को गूथकर आपको सादर समर्पित करते है। आशा है, आप हमारी इस श्रद्धाजलि को सहर्ष स्वीकार करेगे।

इन्दौर
२५ अप्रैल, १९५२

हम है
आपकी सार्वजनिक सेवाओ के अनुरागी
मध्यभारत निवासी

४

कुछ महत्वपूर्ण पत्र

बापना साहब द्वारा लिखित देशी राज्य परिषद की स्थापना के अवसर पर दिल्ली से महाराजा होल्कर के नाम

I arrived here the day before yesterday morning The Committee began its sittings from yesterday The Maharaja of Patiala made an opening speech in which he summarised the work they did at Bikaner and Alwar and also dealt with the draft scheme After some unimportant talk the Maharaja of Bikaner read the Nizam's letter to the Viceroy In this letter the Nizam after criticising the aims and functions of the proposed Chamber of Princes declard that he would not join the proposed Chamber, but would settle the affairs of his own State singly with the British Government and would not make any change in the existing system and procedure The Maharaja of Bikaner and Sir Ali Imam attributed this attitude of the Nizam to some misunderstanding of the proposed scheme The Maharaja of Patiala then declared that they would put before the Meeting the opinions of the Ruling Princes communicated to him tomorrow (that is to say today) and also appoint Sub-Committees for consideration of different parts of the proposed scheme Thereupon I suggested to the Meeting that we should first have different proposals which the Ministers and Publicmen from British India make before us before we appoint Sub-Committees To this they agreed The Meeting was then adjourned We met again at 12 noon, today The Jam Saheb was appointed as President for the Patiala Session The substance of the opinions of the Princes was then read out by Dewan Daya Kishan Kaul The Maharaja Scindia favours the Council of Princes but suggests that it should be composed of only a few princes elected by Princes arranged in territorial groups All other Princes including Rewa, Jaipur and Baroda

generally agree with the draft scheme The Begum of Bhopal is the only ruler who does not endorse the scheme. As this took up considerable time, the Maharajas decided to read the remaining opinions tomorrow. After this they invited the opinions of the Ministers and others I waited for a few minutes to see if any body got up and expressed any opinion. When nobody got up, I rose and after one or two preliminary remarks read my note After I had finished my note, at the request of the Maharaja of Bikaner, I gave its copies to all the Maharajas and a few others including Sir Ali Imam The Maharaja of Bikaner then questioned me regarding the most important point *viz* the condemnation of the Council of Princes, I gave him my reasons at length and then sat down Sir Ali Imam then rose and addressed the Meeting, giving his views regarding coordination and settlement of political questions. He expressed himself in favour of a sort of consultative body composed of representatives of States and British India for questions of joint interest and a special Tribunal for political questions. As from today's talk I found that nearly everybody was in favour of Council of Princes I tried to get Mr Samrath to support me After Sir Ali Imam sat down Mr Samrath addressed the Meeting urging caution and deprecating hasty action He also spoke on the advisability of having representation according to status and position But he did not go behind this. Mr Khaserao Jadhav who also promised to support me, unfortunately did not say much. He simply endorsed Mr Samrath's advice as regards caution and sat down. There were no more speeches after this The Maharaja of Bikaner then proposed the appointment of a Sub-Committee for drafting the constitution of the Chamber of Princes I thereupon suggested to them that they should first settle the functions and determine what sort of body they should have The question of constitution will come latter. Then they also appointed a Committee to settle functions and draft introduction and also consider all other questions. After this the Meeting was adjourned. After adjournment several Members talked to me about my proposals They all are more or less impressed by them, but they have all committed themselves to the Council of Princes and it appears do not wish to give up the position they have taken Besides the influence of the Maha-

raja of Bikaner is too strong He is bent on having his own views carried out and every body appears to be influenced by him Even those who privately express different views do not express disagreement at the Meeting The Maharaja of Bikaner, after the Meeting was over, told me that he hoped I would not take ill as he questioned me I gave a suitable reply and again urged on him the necessity of considering functions and the main question first and the constitution after these were settled He gave a polite answer but I am afraid he is not likely to deviate from his settled scheme

Mr Manu Bhai is entirely with the Maharaja of Bikaner and I feel that the Maharaja Gaikwar's attitude is greatly responsible for the support which the draft scheme is receiving If Maharajas Gaikwar and Scindia had adopted a different attitude the matter would have perhaps taken a different turn Another thing I noticed is that the smaller Princes have improved and are improving their position while our State is on a downward course We must now seriously think about it The Maharaja of Alwar also made two speeches in which he gave at length the history of States and dealt with their position etc In his second speech he advocated the proposed council The Maharaja of Bikaner followed him and opposed him

Besides the Ministers only Sir Ali Imam and Mr Samrath are here

Messrs Sri Niwas Shastri, Malviya, Chantamani, Sir S P Sinha and Visheshwar Ayyar are coming tomorrow There was a general impression here that Your Highness, like the Nizam, also wanted to keep aloof I have tried to remove that impression without at the same time giving them an impression that Your Highness would join even if the first proposal is bad

I met Mr Crump yesterday evening and had a long talk with him. He is very much against the proposals of the Princes

Sir John Wood is coming here on the 9th instant and will discuss the final scheme with us

I shall inform Your Highness about what happens further duly **Delhi, 5 1 1918**

In yesterday's Meeting a couple of hours were taken up in reading the views of the Princes who communicated them in writing to the Committee After this the question of coordina-

tion was taken up The Publicmen from British India discussed the question thoroughly with the result that they were not unanimous in their advice. But the majority of them advised the Princes to drop the matter for the present. In today's meeting, the remaining views of the Princes were read After this the gentlemen from British India were requested to give their advice as regards appointment of one member suggested by the Princes in the Viceroy's Executive Council Every one of them spoke against this and advised the Princes to drop the proposal Sardar Daljit Singh of Kashmir also placed his views regarding the draft scheme prepared at Bikaner His views are exactly similar to mine and I was glad to find that at least one man supported me Other Ministers entirely support the Bikaner scheme. Major Dube's note which he sent to Dewan Daya Kishan Kaul was also read before the meeting by Mr Kaul It is now almost settled that they will propose the establishment of Chamber of Princes with equal representation for all salute Princes up to 11 guns They are likely to drop the coordination question and one or two other objectionable things They have appointed Sub-Committees for considering various questions in detail and drafting the scheme and when the scheme is ready and comes to Your Highness, we shall have to consider carefully what our policy should be. I shall tell Your Highness personally how things have been manipulated here

Trusting Your Highness is in the enjoyment of excellent health.

On the 8th and 9th instant the General Committee did not meet as the Sub-Committees sat and discussed various proposals Today is the last day, but the sub-committees haven't finished their work, the General Committee will not meet today but will meet tomorrow and discuss the reports of the Sub-committees I think the business will be over tomorrow and I shall be able to leave tomorrow night for Indore Sir John Wood arrived here yesterday. I have met him today and had some talk with him about the scheme From what he told me it appears that the British Government is prepared to constitute "Chamber of Princes" with advisory functions and

also considers favourably some other parts of the scheme He himsef appears to be in favour of this I also gathered from his talk that the British Government will do nothing till the whole question is thoroughly discussed by the Princes at the next Conference at Delhi and also the Princes individually consulted I met Mr Crump also Though he is against the scheme yet he also said the same thing It appears therefore that as far as the Chamber is concerned the matter is practically settled I placed my views before Sir John Wood and pointed out to him some of the serious objections to the Chamber He did not quite refute them but he gave me to understand that the Government would consider the question carefully before arriving at a decision He then asked me whether Your Highness would go to Delhi next month I told him that I did not know He then asked me to write to Your Highness and tell you from him that Your Highness should go to Delhi and express your views freely before the Viceroy and the Secretary of States He also said that he wished that Your Highness would come out more During the course of conversation, he enquired about Your Highness's health etc He also enquired what sort of climate we have in Indore in March From his talk it appears that the Viceroy contemplates visiting Indore in March next.

I had a long talk with Sardar Daljit Singh, Chief Minister of Kashmir yesterday about the scheme He is exactly of my opinion and I understood from him that the Maharaja of Kashmir will keep aloof He advises the same course to us He will also try to influence some other bigger Princes

I have done my best to convert as many Gentlemen here as possible including British Indian politicians and have also succeeded in getting some objectionable features of the scheme modified, but as far as the Chamber of Princes is concerned I do not think there is any chance of its being dropped But there is ample time yet and we don't know what turn the circumstances may take

10 1 18

सन् १६२१ मे गृहमंत्री के पद से त्याग-पत्र देने के अवसर पर श्रीमत महाराजा होल्कर के नाम

As Your Highness is aware my position and work under

the new scheme have undergone considerable change, I am now without any portfolio, work or powers Though I remain a member or President of the Council, it is a dignity which only accentuates my humiliation The Council composed as it is of men without touch with the administration and with the power placed with the Chief Minister of stopping execution of its decisions whenever it pleased him is only an ornament without real worth, and the so called Ministers or Members are no better than Mankaries or pensioners I would have welcomed their life of indolence if I were an old man or averse to work, but accustomed to real hard work and impregnased with a keen desire to serve the State usefully for many years still, I cannot persuade myself to lead this life and spoil my habits and get misled Besides everbody in and out the State looks down on me or cuts jokes at my expense or taunts me or worse still, pities me which even a man with the strongest nerves or sense of self-respect deadened, cannot bear for long To see my subordinates and men with no worth wielding powers which even I never exercised and to live in the same place deprived of all authority and like a dove is a life which cannot suit my temperament I am here to serve Your Highness to the best of my ability and if I cannot do it, my life here cannot continue

सन् १६२१ में पटियाला राज्य के गृहमंत्री के पद का कार्य ग्रहण करने पर पटियाला के महाराजा के नाम

As your Highness observes I have also during my 5 month's sojourn here found, to my surprise, that there are parties and how intrigues ripe in this State When your Highness know me better, your Highness will feel convinced, that I am not amenable to such influences I have lived in a very intriguing state, but I have always met intrigues openly and by fearless conduct, and in my public life, my sole guide has been the interests and welfare of the State and I have always kept myself aloof from parties and above intrigues

As I want your Highness to know even my failings before I begin real work in your State, I wish to put them also before you In the discharge of my official duties, I have never played the part of a courtier and your Highness may find sometimes that in talk or discussion with your Highness, I speak very

plainly Your Highness may get annoyed at the time, but you will always feel that if I speak plainly and strongly, it is in Your Highness's interests and for your sake and for the sake of your State and not for me Considering this, Your Highness will, I hope, kindly put up with this Another shortcoming is that I do not take part in my Master's amusements and avoid night functions If there is any official work or function, I won't mind even spending the whole night, but I want always to be excused from private, social and official functions or Jalsas at night

पाकिस्तान बनने के बाद सन् १९४८ मे मोहम्मद अली जिन्ना के नाम

It may be a presumptous on my part to address you in your Excellency's present position and at this critical time, but it is exactly for the reason that I venture to place my views before you I do not wish to enter into the past history and apportion responsibility for the present happenings The fact is that most resprehensible form of communal tension has replaced the brotherly feelings that until a few years ago united the two communities The present conflict of arms is still more reprehensible and I may say, is not likely to benefit any party and much less Pakistan The Kashmir raid has no justification whatsoever under the common law or the international law So much blood of the poor and the innocent has already been shed there and elsewhere I again repeat that it is a presumptous on my part to bring this aspect to the notice of the learned Quaid-i-Azam It is only to emphasise my views I feel that even with the division of the country the two communities can live happily and with mutual advantage socially, politically and economically and if you take the lead to bring about this happy State, your name will go down to posterity and in history as the greatest benefactor

I retired from the Alwar service soon after my illness and am now living in retirement I came here about 4 months ago as Udaipur is my home, but am thinking of living in Indore with my sons and may go there in February or March next

Please remember me to your sister

I hope you both are in the enjoyment of excellent health

सन् १९४८ में इन्दौर राज्य की स्थिति के सम्बन्ध में सरदार वल्लभभाई पटेल के नाम

I am much worried to know from the papers that the Maharaja of Indore is politically in hot waters at present and due to some administrative acts done by him, there is much misunderstanding between him and his politically minded subjects and naturally you are anxious to put things right I have ventured to write to you as I am deeply interested in that State having served it for over 32 years and especially as I have the privilege of your acquaintance I hope you remember me We met several times when I was Prime Minister of Indore I have addressed His Highness also today. If he thinks I can render some useful service to him and his State in bringing about better relations between him and his subjects and also yourself, I shall approach you with his letter on hearing from him If, as I hope and pray, cordial relations are restored and my services are not required, I shall see you possibly in March, when I visit Delhi for the Bharat Bank meeting

Now something personal over a year ago, I fell seriously ill, when I was Prime Minister in Alwar and had to undergo a major operation in Bombay for ulcer I was confined to bed for about 7 months, but am now well I am here at present as Udaipur is my home, but I am thinking of going back Indore and living there with my sons, who are in service there

सन् १९४८ में इन्दौर राज्य की स्थिति के सम्बन्ध में इन्दौर राज्य के तत्कालीन मंत्री श्री वैजनाथ महोदय के नाम

I am writing to you today as I am much worried to learn from the papers that the political situation in Indore has much deteriorated Whatever the causes, I consider it my duty to do what I can to improve the situation and bring about better relations between H H and his politically-minded subjects I have addressed H H also today and if he thinks or you think that I can be useful, I shall come there atonce and do my best to achieve the object You may show this letter to Mr Sarwate and your other colleagues, so that you may be in a better position to come to a decision.

[illegible]नासाहब के नाम लिखितपत्र

कर्नल ल्युअर्ड द्वारा, जो महाराजा होल्कर के सेक्रेटरी थे, सन् १९१३ मे अवकाश ग्रहण करने पर

Dear Bapna,

This is just a little line to thank you for all the great help and assistance you have been to me while in this post. I could not have wished for a more sympathetic colleague or one on whom I could rely with the same confidence as I could on myself or any one whom I know in this world

I hope things will go on smoothly and I believe they will for I am sure His Highness fully appreciate the great standby he has in you

पं० मदनमोहन मालवीय का १९१५ में लखनऊ से

I am glad to know that His Highness is quite well now.

I am much more concerned to hear that intriguers have made you and Dewan Br. Khandekar their objectives now. I hope their evil efforts to deprive His Highness of the services of honest-able man will fail and that His Highness will see through their tricks and visit them with his displeasure Pray do not allow yourself to be easily upset by your opponents Do not let them achieve victory over you and His Highness If you believe that His Highness has been pursuaded to think, or does himself think, that you have insulted him, offer him, I believe you have already done so, like a gentle man and a devoted friend, a full and frank apology He has trusted you and appreciated you for many a year Speak to him in confidence at a suitable time, and tell him of what is going on, unless, of course, you think that he will not like your doing so I think misunderstanding can be cleared and should be cleared by a respectful, but frank statement of the situation, when you find His Highness in a mood to hear it and to consider it You know my regard for the Maharaja Holkar and my earnest desire that he should be served honestly and well, by the best available men, I am sorry to hear that matters are taking such a course and that both you and Dewan Br Khandekar may have to leave the service of His Highness I sincerely hope that

रहे और आपको हर तरह श्रेय मिले, ख्याति दिन दूनी रात चौगनी बढे तथा महाराजासाहब बीकानेर के आप पूर्ण स्नेह भाजन बने, यही हमारी सच्ची धारणा है। श्रीमन्त महाराजासाहब बीकानेर बहुत ही विचारवान, विद्वान, दानी और दूरदर्शी हैं। आपका उनको सहयोग बहुत ही सफल सिद्ध होगा।

श्रीमान्, आप जबसे पधारे हैं, हृदय को जो सतोष हुआ और हो रहा है उसको प्रगट करने को मेरे पास योग्य शब्द नही हैं। आपका सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार, आपकी सज्जनता व आपका प्रेम हमको ही नही अपितु सारी इन्दौर की प्रजा को चिर-स्मरणीय रहेगा। हमारे लिए तो आपका बडा आधार व सहारा था। आपकी हमारे पर, जबसे आपका इन्दौर मे पदार्पण हुआ तबसे, ही, स्नेहपूर्ण कृपा रही, जिसके लिए मैं आपका पूर्ण आभारी हू और रहूगा और प्रार्थना करता हू कि आप सदैव हमपर उस ही तरह स्नेह व कृपा बनाए रखेंगे।

मेरी एक बार पुन ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप चिरायु हो और भविष्य मे पूर्ण यशस्वी व समृद्धिशाली होवें।

श्रीमती सौभाग्यवती लेडी बापनासाहबा की तबीयत पहले से अच्छी होगी? उनको शीघ्र पूर्ण आरोग्य लाभ होवे, यही हमारी ईश्वर से प्रार्थना है।

श्रीमती सौ० आपकी सुपुत्री को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, यह जानकर बडी खुशी हुई। ईश्वर नवजात शिशु को चिरायु करें।

कृपा बनी रहे।

वेंकट रमानी, एडिटर, 'भारत मनी' मद्रास का

Yours is just the type which Hinduism values most. utmost sweetness and gentility a high sense of duty, character and purity in the true Gita style But this type is fast vanishing from our younger generation Will New India ever restore the primary due to this type? The one great aim of Hinduism is to produce in quantity men of quality, quantative production of saints and good men

1946

५

बापनासाहब के स्फुट विचार

इन्दौर के गृहमंत्री के रूप में सन् १९१९ तैयार किया हुआ नरेन्द्र मंडल की सभा में प्रचारित नोट

The Position of Indian States in relation to the Government of India has never been clearly defined. In fact, it could not be done The treaties or enagements which bind them to the British Government have been made at different periods and under different circumstances and the independence guaranteed and enjoyed under them has varied from almost absolute independance to actual subjection of a Jagirdar. This being so they could not be grouped in one class and they could not be accorded the same treatment But the tendency of late has been to reduce them to the same level and apply the same principles in dealing with them At least this is true in the case of bigger States The smaller States are treated more or less like dependant vessals. Further the princes have not been allowed hitherto have any voice in matters which affected British India jointly with their States and also seldom consulted in matters of Imperial concern Even in matters of internal administration they have to submit often to the rulings of the Political Department which for the sake of prestige if nothing else generally supports its local representatives Again there are some questions which from the nature of the disabilities under which the Indian Princes labour have to be settled by the British Government In the settlement of these questions the Prince concerned has only a feeble voice. His brother princes have absolutely no voice and no publicity is given to the decisions of the Government of India which are based on reports and opinions of the Political Officers attached to the Princes' Courts and on whose whim, character or intelligence his future is made or marred.

It is a question whether this state of things can continue

any longer With the awakening in British India and in States, with the horizon wide and with opportunities for closer ties and desire for representative Goverment and development of self-governing institutions throughout India, it is suggested that Princes should claim a voice in the settlement of affairs which concern them solely or jointly with others and put an end to the effect and outworn system which has made them impotent onlookers of their own degradation But the solution of this problem is fraught with immense difficulties I think it would be better if the Princes do not commit themselves to any view hurriedly and wait for the announcement of His Majesty's Government regarding development of self-government in British India We would then be in a better position to formulate our proposals We must not jeopardise our future by any hasty or ill-considered proposals In this momentous question the whole order of Indian Princes is deeply interested and we must give them all sufficient time and opportunity to consider and express opinion on whatever schemes are put before them Whatever constitution is proposed and granted now, is capable of being twisted and distorted and hopes entertained by its framers may prove delusive in the long run Its scope may become narrower or wider It is therefore not only necessary but prudent to consider the question in all its bearings

The questions then for which joint organised action may be necessary are

1 Which concern the States jointly with British India
2 Which concern the whole Empire

In cases where there is an encroachment on the Treaty rights and Izzat of a Ruler or interference in the internal administration or differences in political questions generally between the Princes and the British Government or which involve questions in which the Princes have by mutal consent or otherwise surrendered their sovereign powers, some satisfactory arrangement whereby a higher standard of justice be secured may also be necessary The question then is what sort of constitution will discharge these functions adequately and remedy the existing evils What should be its form and whom should it comprise Several suggestions have been put forward, but in my opinion they are more or less liable to serious objec-

tions Our object is to have a manageable body fully representative in character and composed of independent and best men available in Indian States A Chamber of Princes will not be a satisfactory solution. Two assemblies or houses and bycameral constitution are still more objectionable Imperial and Provincial Conferences of Princes and subjects of Indian States is more indefensible still Further any constitution based on the analogy of the German Buncsrat or federal America cannot but end in disaster

In my opinion a house or chamber of representatives of Indian States is a better solution In it the objectionable features are eliminated and some advantages secured. The representatives may be Princes, Dewans or other high dignitaries or from the public. It will rest on the Government of a particular State whom to send as its representative It will be a sort of mixed assembly though I would prefer to exclude Princes altogether There may be sentimental objection to it on the part of Princes and it may be said that Princes will not like to rub shoulders with their officers or subjects To this the reply may be that there are some Committees in which Princes have sat and do sit with Dewans or high officers and there cannot be any objection to their sitting with officers or subjects of their States while they welcome a seat on a committee composed of British Indian officers or subjects.

The membership of this house should be extended to all the States and Chiefships which come under the category of Indian States, but they should be given representation in proportion to their status and importance. I lay great stress on this point as it would be most unfair to give equal representation to all whether they be sovereign of territories extending over thousands of miles and with ruling powers or petty chiefs or princes with hardly an income of a few thousand rupees and limited powers I would propose the following constitution ·

1. Ruling Princes with 21 guns and 19 guns salute—2 representatives each-22
2. Ruling Princes with 17 guns and 15 guns salute—1 representative each—30.
3. Ruling Princes with 13 and 11 guns salute—one representative from every two of the former and three of the

latter class-16

4 Other salute Chiefs—one representative from every five-6

5 Non-salute Chiefs—one representative from every territorial division—11

The total number of members will thus be approximately 85 It should elect its own president, vice-president and Secretary, and meet at least once a year Its permanent office should be at the head quarters of the Government of India It should be granted recognition by means of a Royal Proclamation which should be worded consistently with the positions of Ruling Princes In matters which relate exclusively to States such as minority administration, education of a Prince, internal boundary disputes, succession, precedence etc reference may be made to it when diplomatic negotiations fail, either by a State or the Government of India and when its opinion is vetoed by the Viceroy he should give his reasons in full in writing and the house or the State concerend may if so inclined not accept the Viceroy's decision Matters in which the Viceroy does not accept the recommendation of the house should be referred to an independent body which be called 'Supreme Council' composed of three representatives from this house, three representatives of the Government of India with a Judge of the rank not inferior to that of a Chief Justice of an Indian High Court as President The decision of this tribunal should be binding and final

In matters of common interest between the States and British India the members of this house should sit with members of the Imperial Legislative Council, but the proportion of the representatives of Indian States should not be less than one-third In case this proportion is not ordinarily secured both the bodies should send their representatives in the proportion of one to two and this body should decide by mojority provided that no measure should carried in which 3/4ths of the members do not agree

In matters outside the jurisdiction of the Imperial Legislative Council such as defence, etc , two representatives of this house should sit with three representatives of the Government of India and the Viceroy as President The States should also have the right and privilege of sending one representative who

may or may not be its member to the Imperial Cabinet.

It will thus appear that by means of this house we should not only secure full representation in all matters affecting our States either exclusively or jointly with British India, but have an effective voice in the final settlement. It will also remove all causes of friction between the States and the British Government and tend to establish and strengthen friendly relations and that union which will eventuate in mutual trust and betterment all round I have purposely excluded the Viceroy from this assembly as his presence would alter its character and also affect free discussion and expression of opinions adversely In its advisory functions, it should not include in it any but Princes' representatives. When it is called upon to discharge other than advisory functions, my scheme provides for mixed assemblies in which representatives or delegates from this house would sit with British Indian representatives

If this scheme is approved it will do away with the desirability—which I think is doubtful—of sending a Prince's representative to the Executive Council of the Government of India. Whatever advantages this proposal may have, have been secured by my scheme and its objections have been removed.

My scheme dispenses with the necessity of an advisory Board also which in my opinion will not be an unmixed advantage

As regards the proposed Supreme Judicial Tribunal, the scheme above outlined provides for it. I have in it proposed a similar tribunal but with a different designation and constitution. As regards establishment of direct political relations with the Government of India I am of opinion that the question is not so important as it looks The Political Agent or Residents will if my scheme is adopted be relieved of most of their work and play the role of ambassador

I have in this memorandum attempted to give the general outline of the scheme and if it is adopted details can be worked out easily It is a very delicate and important question and I hope the various suggestions which have been submitted for the consideration of the Princes by responsible ministers who had the honour of being consulted will receive their most careful attention

विधान परिषद, इन्दौर मे सन् १९३६ मे दिये गए भाषण के अंश

Federation

Constitutional changes which will have far reaching effects on the future of the Indian States are projected under the Government of India Act of 1935 The British Indian Provinces will become autonomous units from the 1st of April 1937 It is also intended to bring into being of Federation of India comprising the British Indian Provinces and such of the States as desire to enter the Federation. The Draft Instrument of Accession, which indicates how and to what extent Indian States can join the Federation, has been sent recently by the Government of India to Indore as to other Indian States, and it is being most carefully considered by His Highness's Government. His Highness the Maharaja and his Government know how important are the issues involved, and I can assure you that in making his decision His Highness's chief care will be to safeguard the interests of his State and his subjects

Internal Affairs

Before I pass on to other aspects of our financial position I am sure you will all rejoice to learn that in spite of the increase in the total revenue, His Highness the Maharaja has retained the amount of his Civil List at Rs 11 lacs instead of at the usual 11 per cent of the total revenues of the State

His Highness has also limited the expenditure of the Army to a fixed sum of Rs 10½ lacs which, having regard to the dignity and political status of Indore, is moderate in comparison with the military expenditure of other Indian States of equal importance

Judicial Administration

Let us turn for a moment to the question of judicial administration in the State It has been the constant endeavour of His Highness's Government to reduce the Law's delays and expense and inconvenience to the litigant public While it is realised that these are very necessary qualities of any judicial system, every attempt has been made to ensure that the chief quality of all, the impartiality and efficiency of work in the Law Courts of the State remain unimpaired The Courts of the

Magistrates have been so placed that no one has to travel so far in order to get justice as to deter him from seeking legal redress of his wrongs

Education

More and more, it is being realised throughout the world that social and economical problems depend largely for their successful solution upon the type and quality of the education imparted by a State to those who will be its citizens tomorrow. These are days in which the specialist far outstrips the general handyman and the Education Department of the State is doing its best to give a vocational bias to primary as well as to secondary education This applies both to rural and to urban schools and agriculture is being introduced as a definite part of the primary school curriculum

But a child requires more than a knowledge of the three R's · the true object of education is to build character and character to a far greater extent than is generally realised depends upon a child's health. Not only is physical hygiene regularly taught in our schools but every boy at school in Indore City is medically examined once a year , so beneficial has this proved that the practice has now been extended to girls' schools also and will soon, I hope, reach out into the districts

Social Legislation

But I am, I regret, compelled to say that Government's efforts to advance the social welfare of the people has not met with the success which it deserves. The orthodox section of the community, ever averse to change, always raises the cry of 'religion in danger' whenever even the smallest attempt is made to rectify the evils that arise from rigid and outworn customs Some of Indore's caste PANCHAS and leaders persistently make deliberate efforts to defeat every law passed for the good of the people and they show brilliantly misguided cleverness in their methods of breaking the law and of sheltering behind the ingenuity of the lawyer.

Admittedly the success of social legislation depends essentially upon education ; only as people become advanced both physically and intellectually are the true aims of social and sumptuary laws perceived ; having given the strongst possible

lead Government demands—and rightly demands—that all who are educated, all who have the welfare of the people at heart, shall assist it in every possible way in its endeavour to lead Indore as far as possible along the path of social reform

The extent to which the forces of reaction can go is sometimes surprising and amazement is not too strong a word to express my feelings when I received representations against the Public Trusts Registration Bill, the Select Committee's Report on which is before you for consideration

It is for you, gentlemen, to give by your whole hearted support of advanced legislation, whether that legislation is a Usurious Loans Act, a bill to control money lending in the rural areas, or a bill for the control of public trusts, it is for you, gentlemen I repeat to give the clearest and most determined lead to the public and to show both in this Council and in your private lives your resolution to make of Indore a State which will command the respect and admiration of all enlightened people

Charter of liberty for Harijans

There can be no justification for the ill-treatment and suppression of a large section of the Hindu community on either moral or humanitarian grounds, religious sanction cannot rightly be called to the aid of reactionaries These are the considered views of His Highness, whose deep concern for the well-being of everyone of his subject is too well-known for me to expatiate upon it here But views, however sound, can do little good unless they are put into practice, convictions, however deep-seated, must be followed by action, His Highness acted Just before his departure for Europe he granted what, perhaps, you will permit me to describe as a Charter of Harijan Liberty, a charter the object of which is to ensure the amelioration of the conditions in which the so-called "Depressed Classes" live and the rapid removal of the moral and social restrictions placed upon them was announced in 1938 His Highness's proclamation reads as follows

1 "All State temples within the limits of the State be thrown open to Harijans for darshan according to the rules that may be laid down by us
2. All existing public wells as well as all wells constructed

by the State hereafter be invariably open to all classes alike This is our policy, but in enforcing it in regard to the existing public wells the District Officers will act in their discretion according to the local needs and circumstances

3 All concerned should make it possible for the Harijans to have an unrestricted use of public places such as hotels, restaurants and public conveyances

4. Our Minister I/C Municipality should, subject to his discretion in the light of the conditions and requirements of a particular locality, allow Harijans to build or own houses in all areas open to higher castes and communities

5 Full and hearty effect be given to the existing orders relating to the unrestricted admission of the Harijans' children into State Educational Institutions.

6 There shall be no restrictions in the matter of recruitment to State services, except where the incumbent has essentially to be recruited from a particular class or community.

7 All State public offices and buildings are open to Harijans for entry

8. There shall be no restrictions on the wearing of ornaments, the taking out of processions and performance of ceremonies"

Harijans and advanced and progressive minded Hindus all over India welcomed this measure with the warmest enthusiasm and work for the uplift of the former was started immediately and vigorously in the State District Boards and Pergana Committees have been formed to assist in the work and Pracharaks have been appointed to visit Harijan localities and to give them all possible instruction and aid to enable them to raise their standard of living.

It would be false if I were to paint the picture of the progress of this great work entirely in bright colours · some of the orthodox Sanatanists of Indore resented the proclamation to such an extent that when Harijans started to exercise their new right of entry into the temples, bodies of Sanatanists endeavoured to prevent their doing so and a very difficult and tense situation arose I am glad to be able to say that good sense

eventually won the day

The rigid clinging to customs and ideas that are out-worn means the stultification of progress The strength and prosperity of a State depends upon the ready acceptance and practice of all that is best in the new concepts of a broad-minded humanitarianism, acting as a leaven upon social and administrative principles which tradition and history have shown to be sound. To keep a large section of the people in a permanent state of subjection convicts the subjectors of a narrowness of outlook and an inelasticity of mind which eventually can redound only to their own disadvantage I hope and I am sure you all hope with me that the Sanatanists of Indore will increasingly realise the justice of giving to their less fortunate brethren opportunities for the improvement of their conditions of life Only in this way can they become a source of strength instead of one of fatal weakness to the Hindu community

In keeping with the policy which His Highness has steadfastly pursued since he ascended the throne was the important order he passed early this year that wherever it is possible articles of indigenous manufacture are to be used in all State departments.

1938

Industry (Textile Mills)

You will recall that in the award I made last year when I did my best to bring about happier relationships between mill-owners and operatives, I made certain recommendations for the improvement of the material conditions in which the mill hands worked Many of these recommendations have been adopted and it is reported that the Mills now provide better medical facilities for the labourers and better arrangements for meals and bathing water Some of the mills are installing airconditioning plants In general the workers now receive their wages on or about the tenth of every month All this is most gratifying, and I look forward to the day when the mills of Indore will set an example to the whole of India

Speeding up of cases in the Courts

Another step likely to assist in the quick disposal of cases

is the rule issued this year that copies of orders passed by the presiding officer of every Court must be submitted to the Chief Justice whenever a Civil case which has been pending for more than one year, or a Criminal case for more than four months, is adjourned

Schools

Constantly with the policy of bringing education in the State up-to-date—a policy which has been steadily pursued for many years—the Primary School Curriculum has been completely revised and reorganised and many new subjects have been introduced, among them practical hygiene, agriculture, nature-study, sanitation, and social service, while as an experiment handicrafts are being taught in 4 selected vernacular Middle Schools Should this latter prove a success it will be extended as soon as possible to other schools

Recent years have been a growing realisation on the part of Governments almost throughout the world of the value of bodily fitness among their citizens Indore cannot yet claim to have regimented its people into semi-military physical culture classes such as are popular in certain parts of the Continent of Europe, but a great deal of attention is in fact being paid to the health and physique of school children and to this end teachers are being sent to physical training centres outside the State in order that they may have the benefit of learning the most modern methods The Education Department is also carrying on uplift work in the villages both through the schools and in other ways Efforts to improve the health and physique of children are not confined to physical culture and in certain selected schools in Indore germinating gram, milk, and Soya beans are being given experimentally at mid-day, this form of tiffin will be extended to other schools if it results in an improvement in the general standard of health among the school children to whom it has been given

Jails

Society now-a-days is realising that the mere confinement of criminals behind bars is no solution to the problem of crime, everywhere prison administrations are concentrating more and more on the transformation of the forbidding old type of prison

into what amounts to a specialised educational institution wherein those convicted of offence against the State may be educated to fit them in later life to be useful citizens

14th November, 1938

अखिल भारतीय औद्योगिक प्रदर्शनी, अजमेर मे, सन् १९४३ मे, दिया गया उद्घाटन-भाषण

In our country, the masses are poor and illiterate Poverty is the cause of illiteracy and unless the country is industrialized, the standard of living cannot be raised and country cannot reach the level of the prosperous European and American Countries India has, no doubt, made progress, but the progress achieved so far is insignificant in comparison to the achievements of other countries, where materialistic mentality, scientific discoveries and technical inventions have pulled them up almost to the goal of their ambition We are far behind them in this respect, but we have seen the other side of the picture also and therefore can avoid pitfalls The culture and civilization of India are based on spiritualism and this has saved us from extinction in the gigantic world race, but no country can survive onslaughts on it and rise and maintain its position for any time, unless there is a harmonious blending of material progress with moral and religious fervour The geographical position and the climatic conditions of India are a sufficient guarantee that it will never be divorced from spiritualism They are, however, a disadvantage also and do block material progress, and encourage pessimism, and that is why serious and continuous effort is required Exhibitions play a very useful part in awakening and keeping alive our interest in the use of Swadeshi articles and arousing enthusiasm for development of industries, which would make the country self-sufficient, and enable us to stand competition from out side A good deal of labour, patience, concentrated work and careful planning is necessary to achieve our goal, and we must always be prepared for such social and economic adjustments as the changing conditions and the increasing contract with the materially advanced countries necessitate for the uplift and welfare of the Indian Nation

हीरक जयन्ती के अवसर पर सन् १६५२ में

आपने मार्केट की उस दुखद घटना का भी वर्णन किया है, जो अभाग्यवश सन् १६३६ मे पैदा हो गई थी और जिससे राहत मिलने के सम्बन्ध मे आप समझते है कि मेरी भी कुछ सेवाए थी। इसमे सन्देह नही कि उस दिन का वातावरण बहुत क्षुब्ध हो गया था, परन्तु मै आप सबके बीच मे आने का साहस आपके विश्वास पर ही कर सका था। अत उसका श्रेय वास्तव मे आप सबको ही है।

कहा जाता है कि व्यापार की उन्नति सीधे व सच्चे रास्ते से नहीं हो सकती, परन्तु मेरा विश्वास है कि किसी भी देश मे कोई भी व्यवसाय सचाई की नीव बगैर, ठोस उन्नति पर नही पहुच सकता। हमारे जगत्पूज्य महात्मा गाधीजी ने तो राजनीति के क्षत्र मे भी सचाई की सफलता प्रत्यक्ष दिखाई है, इसी कारण अपने देश मे त्याग और सत्य को सदैव प्रधानता दी गई है।

... .

छात्रालय का शिलान्यास माननीय डाक्टर काटजू के बलवान हाथो द्वारा होने से मुझे बडी खुशी हो रही है। मुझे आशा है कि छात्रालय की व्यवस्था ऐसे ऊचे आदर्शों के आधार पर की जायगी कि जिससे इस छात्रालय मे रहकर अध्ययन करनेवाले छात्रो की सदाचरण की छाप दूसरे छात्रो पर भी पडेगी और वे देश तथा समाज की सेवा मे सदा तत्पर रहेगे।"

... ...

जिस समय का अभी उल्लेख किया गया है उस समय अधिकाश भारतीय राज्यो मे काग्रेस व अन्य राजनैतिक पार्टियो के साधारण कार्यकर्ता तक नही जा सकते थे और वहा देशहित के काम करने मे भी बाधाए पडती थी, किन्तु इन्दौर मे उस समय भी काग्रेस के अनेक नेता आया करते और यहा राजनैतिक एव सामाजिक हलचले भी बडे उत्साह के साथ होती थी। यह भी बडे अभिमान की बात है कि जगतपूज्य महात्मा गाधीजी का उस समय दो बार स्वागत करने का मौका इन्दौर-निवासियो को प्राप्त हुआ और मेरे निवास-स्थान पर स्वय बापू ने पधारकर मेरे गौरव को बढाया।

... ...

मेरा जब इन्दौर तथा दूसरे राज्यो से शासकीय सम्बन्ध था, उस समय मै जैन समाज की कोई खास सेवा नही कर सका, क्योकि मेरा हमेशा से यह मत रहा है कि राजा व उनके मत्रियो तथा शासन मे काम करनेवालो को जाति-पाति से परे रहकर काम करना चाहिए। ऐसी स्थिति मे भी आप सबने जिस हार्दिक उत्साह से मेरा अभिनन्दन किया है इसके लिए मैं आभार प्रकट करता हू, और यह मानता हू कि यह केवल आपकी कृपा व प्रेम का ही कारण है कि जिससे आप मेरा इस तरह सम्मान कर रहे है।

महातपस्वी तीर्थंकरो ने अहिंसक मार्ग से जिस वर्गहीन समाज का प्रेम-पूर्वक सगठन किया था और उसके अनुसार उनके अनुयायी जैन समाज ने समय-समय पर जो सेवा की है उसकी तारीफ सारे ससार मे हो रही है। विश्ववद्य महात्मा गाधीजी ने वर्तमान समय मे मानव-समाज की महान् सेवा करने के लिए, वर्ग-हीन समाज बनाने के लिए, जो लगातार कोशिश की है, उस आदर्श काम को पूरा करने की बहुत जरूरत है। अपने समाज मे उच्च शिक्षा की कमी होने से, विशेषतया महिला-समाज मे शिक्षण का अभाव होने से, अनेक रूढिया इस प्रकार बढ गई है कि उनसे अपने महान् आदर्श को समझने की शक्ति कम हो गई। इसलिए अपने यहा आदर्श शिक्षा के प्रचार की बहुत आवश्यकता है। आशा है, इस ओर विशेष प्रयत्न किया जायगा।

यह बात सच है कि व्यापार मे लक्ष्मी बसती है। देश का वैभव, देश की की शान तथा देश की उन्नति व्यापार पर ही निर्भर है। "परन्तु सद्गुण सुवर्ण के आश्रित है," इस लोक कहावत मे मत-भेद की बहुत बडी गुजाइश है। अपने यहा ऋषियो, मुनियो और तीर्थंकरो के समीप खाने के लिए न तो अन्न सग्रह रहता था और न तन ढकने को कपडो का ढेर, फिर भी उन्होने जो आध्यात्मिक उन्नति करके देश की महान् सेवा की है वह सुवर्ण भडार रखनेवालो से कही नही बन सकी। उच्च विचारो का सुवर्ण से सम्बन्ध रहना सर्वथा आवश्यक नही है।

•

आज समिति भवन मे आते ही मुझे महामना पडित मदनमोहन मालवीयजी और जगत्पूज्य महात्मा गाधीजी की याद आ गई। इन दोनो महापुरुषो की चरण-रज से समिति-भवन पावन है। इस भवन के भाग्य की तुलना बहुत कम इमारतो से की जा सकती है। जिस महान विभूति महात्मा गाधीजी के भारत की राजनीति मे पदार्पण करने से देश को स्वतन्त्र होने का गौरव प्राप्त हुआ है उन्ही महात्मा गाधीजी ने इस भवन की नीव रखी थी।

मुझे याद आता है कि स्वर्गीय डॉक्टर सरजूप्रसादजी ने मुझसे सलाह करके देहाती जनता के पुस्तकालयो के लिए योजना बनाई थी, उस समय उसके अनु-सार काम भी होने लगा था। मुझे आशा है कि मध्य भारत बनने के पश्चात उस योजना का और अधिक उपयोग हुआ करेगा। आज पुस्तकालयो की पहले से अधिक आवश्यकता है। यद्यपि यहा कई पुस्तकालय है, परन्तु जिस तरह के बडे व आधारभूत व सर्वविषयपूर्ण पुस्तकालय की आवश्यकता है उसकी पूर्ति उनसे नही होती है। यदि समिति अथवा सब पुस्तकालय मिलकर इसकी पूर्ति कर सके तो बहुत अच्छा हो।

यह बडी खुशी की बात है कि जब मे अपनी पार्लमेंट ने हिन्दी को राष्ट्र-

भाषा मान लिया है तबसे देश के विश्वविद्यालय हिन्दी के माध्यम द्वारा शिक्षा की व्यवस्था कर रहे है और विदेशो मे भी अनेक देशो मे, यहातक कि रूस मे भी, भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी की शिक्षा के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। ऐसी स्थिति मे हिन्दी मे योग्य पाठ्य पुस्तको के प्रकाशन की आदर्श योजना बनाकर उसके अनुसार काम करने की आवश्यकता है। मै यह महसूस करता हू कि हिन्दी मे अभी महाविद्यालयो मे विद्यार्थियो की उच्च शिक्षा के लिए टैकनिकल विषयो की पुस्तके नही है। ऐसी पुस्तको के अनुवाद का कार्य कई जगह चल रहा है, फिर भी इस प्रश्न की विशालता को देखकर इस ओर अभी बहुत प्रयत्न करना होगा। जबतक ऐसी पुस्तको के लिए योजना न होगी, हिन्दी भाषा का विश्वविद्यालयो मे शिक्षा का माध्यम बनना बहुत ही कठिन होगा।

महाराजा विक्रम, महाराजा भोज और महाकवि कालिदास के मालव प्रदेश मे किसी समय देववाणी संस्कृत की जो महिमा थी वह जगत-जाहिर है। ईश्वर-सम्बन्धी और मानव-सेवा की महानता की खोज भारत के ऋषियो, मुनियो और विद्वानो ने की है। उससे संस्कृत का साहित्य भरा हुआ है। अत. प्रत्येक भारतवासी के लिए भारतीय सस्कृति और उच्च आदर्शो की जानकारी के लिए सस्कृत का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है। मुझे इसका साभिमान हर्ष है कि इन्दौर मे उस सस्कृत साहित्य की सेवा होती रहती है। मुझसे तो उसकी सेवा नही हो सकी, फिर भी आप सब मुझे सस्कृत भाषा का प्रेमी जानकर मुझपर जो कृपा कर रहे है, उसके लिए मै कृतज्ञता प्रकट करता हू।

६

महत्त्वपूर्ण भेंट

होल्कर राज्य के नाबालिग शासन-काल मे श्री बापना की प्रधान मंत्री की हैसियत से तत्कालीन एजेन्ट टु दी गवर्नर जनरल इन सेन्ट्रल इण्डिया, इन्दौर से

10th March, 1926

Regarding the question of firing a salute of 21 guns after His Highness's speech was over, I told Mr Glancy that it was not necessary and it could have no meaning I further told him that I objected to it on the ground that if it was fired, it might be taken to mean that it was to mark His Highness's installation of his succession by the British Government, which was quite wrong and out of place Mr Glancy said it was not for that purpose, but he had no reply to give to my objection He then said that he had referred the matter again to the Government of India and would drop me a line as soon as he received a reply He also said that he had wired to Gwalior to find out what was done there, but he received a mutilated reply and had wired again I again pressed my point of view and requested him to consider it

11th March, 1926

He informed that he had received a reply from the Government of India regarding the question of firing a salute after His Highness's reply to his speech on the 12th instant The Governmeat had left the decision to him I then told him that it should not be insisted on as it was likely to be misinterpreted He agreed

25th April, 1926

I spoke to him about the question of my precedence over the General of Mhow and told him what was done at the time of Lord Chelmsford's visit He said he would arrange in such a

way that neither of us would have precedence over the other.

21st September, 1926

Mr. Glancy asked me if I knew a Unionist Member of Parliament and his activities in India. I told him that I knew something but a good deal of what I knew had been communicated to me in strict confidence and I could not divulge He gave me to understand that the information was wanted by the Government of India and also put several questions to me My attitude remained the same He appeared to realise the delicate position I was in

4th October, 1926

I mentioned to him that in official correspondence from the Residency our State titles were not used and said that there could be no reason why they were not used After some talk he remarked that he did not see any thing against it but would look up his office file first and made a note

30th March, 1927

Regarding the letter of the Maharaja of Patiala (Chancellor of the Chamber of Princes) he thought that I should reply to the letter and as Indore was an important state it should influence the decision of others and not be left out I told him that I did not propose to reply because it would be a departure from the policy of the Ex-Maharaja who did not consider himself as its member I told him that there were some other important Princes who had done the same and I expected that Government of India would consult the Princes individually and when it was done we would certainly give our opinion to Government of India He had then nothing to say but wished to keep the letter as he wanted to read it once more as he was likely to be asked by Government of India about it.

13th April, 1927

He showed me letters from Dr Hardy and His Highness to the address of Mr. Glancy There were three important points in His Highness's letter viz.

1 that he wished Her Highness to be educated in England.

2 that he did not wish to live at the College
3 that he wished to stay there until he passed his B A examination after which he wished to travel for six months and then receive administrative training for six months before he got his powers.

As regards (1) I had nothing to say although my opinion was that she should return to India, but I saw no objection to the course proposed As regards (2) I still had the same opinion that is to say that he should be induced to reside at the College As regards (3) I told him that it would mean delaying his powers which I could not support, as, if it was done, persons not knowing the real reason might attribute it to me and to the Government of Indla He said that he had a talk with some of the Princes and they too were not in favour of giving powers early

21st January, 1928

I discussed with him proposals regarding revision of the constitution of the Legislative Committee He had no objection to increasing the daily allowance of non-official members As regards increasing the number of the members of the Legislative Committee and giving greater powers to it, I told him that my chief reason for favouring it was that I wanted that there should be some permanent check on the Maharaja and whatever the fitness of the Members may be, it would still exercise a great check on him He said that he was not in favour of revising it during the minority but he had not objection to my taking all the preliminary steps and keeping my proposals ready for the Maharaja

26th January, 1928

We again discussed the question of appointing an Indian Guardian to His Highness I told him that if he could get a man of ths type of Sir Vishweshvar Aiya or Sir Siwa-Swam i Aiyar and appoint such men for about a year, it would be a very desirable thing He thought that it was not possible to secure a man of that type especially as in the present circumstances Dr Hardy could not be removed and one could not work under the other I told him that some via media could be found

6th August, 1928

Regarding the pamphlet containing criticism of the Minority Administration he said that the Viceroy and all the Members of his Staff had received a copy of it and they all came to breakfast with it in their hands He said that the Viceroy marked with reference to it that if that was all they had to say against the Minority Administration, he did not think there was anything wrong with it

15th August, 1928

He talked to me about the question of wearing State Medals outside the State and at the Viceroy's function and said that the Viceroy had noticed that I wore a State Order and also the British Government Medals together at the Dinner at the Residency, the other day. I told him that there was nothing objectionable in that as I wore it in accordance with the settlement arrived at He then went through the past correspondence with me and appeared to be convinced about the correctness of my position. He said that he had to submit a report to the Government of India

14th November, 1929

In order that His Highness and the A.G G. might meet, I suggested that he might ask His Highness to tea so that the formality of calls might be avoided He said that he did not agree as he thought that the proper thing was for His Highness to call on him first He added that he did not want him to write his name in the Visitors' book but, what he wanted was that His Highness should call on him first I told him that I did not agree with him and my suggestion was with a view to avoid formality during His Highness's minority, but if he insisted on formality, in my opinion he should call on His Highness first He said that he did not agree with me but I told him that it was my considered opinion, and I would give the same opinion to His Highness He then said that he would think over the matter He afterwards agreed with me and asked His Highness to tea.

10th April, 1930

He discussed with me a number of points in the investiture programme. We had a long discussion. I agreed to modify a

few minor items but as regards some important points we did not agree but his attitude was very good and he decided to refer the points on which I did not agree to the Government of India

26th April, 1930

He was already informed that we did not deem it advisable that His Highness should go to Simla for his investiture by the Viceroy as it would be setting a bad precedent and I also told him that considering that it was hot weather His Highness would not insist on Viceroy coming to Indore to invest him

25th April, 1931

In this connection the Agent to the Governor General had written to me on the evening of the 23rd instant to say that the General Officer Commanding Mhow had informed him that in case of the possibility of a disturbance on the "Id Day" and the military being required for the Residency area, the situation might be discussed beforehand He had arranged that an experienced Military Officer, Major Chambers of the Rajputana Rifles, might come and discuss the matter with Mr Reeve and that though he did not apprehend any trouble, it would be an excellent thing if our Inspector General of Police and Mr Reeve discussed the situation with Major Chambers I accordingly asked Mr Watson the Inspector General of Police, to go to the meeting on the 24th A suggestion was made at this meeting that the Military Officers from Mhow might be allowed to go round the city and inspect the quarters where a riot could be probable with a view to their being able to plan out the measures for handling the situation in case of a disturbance Mr Watson informed me of this so that the question could be talked over with the Agent to the Governor General

The Agent to the Governor General while putting forward this suggestion, told me that the Mhow General has received instructions to remain fully in touch with the civil authorities and was therefore anxious to do all that his help could do to avoid a possible disturbance I informed the Agent to the Governor General that first of all I did not apprehend any disturbance in the City at all , and that even if there was any breach of the peace we had sufficient police and military strength to cope with the situation successfully On the other hand if

there was any riot in the Residency area we could help them also without their having to summon help from Mhow Under the circumstances there was no necessity at all to resort to the measure outlined by the Mhow Military authorities as we did not want their help in any case The Agent to the Governor General was satisfied and dropped the proposal

७

बापनासाहब की डायरी के अंश

Wednesday, 22 June 1910 (London)

Went to Portsmouth with H H by motor at 11 a m The Admıral of the Dockyard deputed one Captaın who showed us a battle shıp (Superb), the Kıng's shıp (Vıctorıa and Albert) and the ınstıtutıon where ınstructıon to soldıers and officers are gıven (how to work guns etc) Went to see the Vıctory (Nelson's) The party had lunch and tea wıth the Admıral who was very courteous It was very ınterestıng to see how the guns were worked & c Had seen Destroyers, Torpedos, Crusıers, Submarınes & c Also saw shıp-buıldıng Returned at 6 p m.

Wednesday, 20 July, 1910 (London)

In the afternoon vısıted the Kıng's Jud courts. Attended the Lord Chıef Justıce's and other courts Left London by 8 mornıng traın (7 55 m)

Monday, 27 November, 1910 (London)

Attended a Lıberal meetıng at 7 30 p m held at the Lambete Baths The prıncıpal speaker was Rt Hon'ble Wınston Churchıll

Tuesday, 29 November, 1910 (London)

At 8 Mornıng attended a mass-meetıng of the Unıonıst at the Albert Hall The prıncıpal speaker was Rt Hon'ble Balfour

Tuesday, 6 May, 1913. (London)

At 3 45 P M went wıth H H to the House of Commons We were gıven seats ın the dıstınguıshed gallary We heard Mr Asquıte (P M) and Sır Edward Grey (F S) speak on Women's Bıll We returned at 7 P M

Thursday, 12 June, 1913. (London)

Attended the Levee at St James' Palace at 11.30 A.M. We arrived there at 11 A M. and returned at 12 15 P M. It was in Indian Darbar dress and on our return we (Major Hamilton, Major Dube, Col. Dube, Major R.B. Jadhava and Mr. V B. Jadhav and myself) had our photos taken.

Saturday, 21 June, 1913. (Paris)

After breakfast, motored to Waterloo (14 miles) and saw the battlefield and the monuments there. Walked up the mount on which the principal monument (lion) stands and had a view of the whole place Had an Englishman as a guide Returned to the hotel at 12 30 P.M Mr. Craven left for Hague After lunch we saw Palace-de-Justice Chamber of Deputis, Palace de Roi (from outside) Museum Park Left for Berlin by Nord Express leaving Brussels at 5 22 P M Brussels is a fine town but people are not very scrupulous. They were courteous to us Houses are very clean and good looking One hour's difference in time in Germany We had to move forward hands of our watches

Saturday, 2 August, 1913. (Oxford)

Attended lectures at Ex-schools Saw Mr Price by appointment at Balliol College He took me to Mr. E Lipson at Christ Church. Mr Lipson agreed to give private tuition in Economics from 4th to 18th for 10 gns (at 2.15 p m)

Tuesday, 12 August, 1913 (Oxford)

Attended lectures—At 6 P.M. went to Dr. Carlyle and discussed some problems of Economics with him.

Monday, 18 August, 1913 (Oxford)

Attended lectures (including the last lecture of Mr E Lipson's permanent address :—Trinity College, Cambridge.

Tuesday, 19 August, 1913 (Oxford)

Attended lectures at Ex-Schools In the evening, went to Dr. Carlyle for an hour and a half for Economics.

Friday, 22 August, 1913 (Oxford)

Attended lectures In the Evening had a lesson in Economics from Mr. N B Dearle

6 February, 1917 (Indore)

H H consulted me (C M, and Sardar Kibe also present) about other matters also *e g.* appointment of Mr Moroney's (I G P) successor etc I advised him to have a European preferably one whom Moroney recommended for some time more as under the present circumstances it was necessary and more so, as we had no one from Indore to succeed him

it appears, has not much weight and he appears to be mightly afraid of H H He cannot or dare not contradict H H or correct him when he is wrong He generally says ditto to what H H says and tries his best to keep him pleased in this way He devotes much of his time to H H 's private and household work

is too weak and not capable of strong action His judgment is very weak too and his opinion is seldom what it should be This is noticed in all consultations and discussions. He expresses one opinion and when an opposite opinion is expressed by others and strongly put, he atonce changes and adopts and advocates the opposite opinion as if it was his own and makes it appear so This makes it very difficult to work with him

The future of Indore, if circumstances don't improve, does not appear to be bright

Tuesday, 2 January, 1923 (Patiala)

Was sent to Amballa by H H to represent the State before the Special Commission Mr Justice and Stuart (Judges of the Allahabad High Court) in the Patiala-Nabha dispute

Saturday, 14 July, 1923. (Patiala)

Spoke to the Prime Minister (Patiala) about the resignation He tried to dissuade me and asked me to reconsider my decision

Sunday, 15 July, 1923 (Patiala)

I saw the Prime Minister at 8 45 A M and told him that I must resign, He did his best again to dissuade me but I gave him my resignation in the end and requested him to submit it to H H for acceptance He said he would do it if I pressed it But he was still unwilling He asked me to see him in Patiala about it on the 17th when I returned and have a final talk about it with him

Tuesday, 17 July, 1923 (Pinjore)

Left Pinjore at 6 45 A M. and reached Patiala at 9 15 A M Had a long talk with him about my resignation and in the end prevailed upon him to submit it to H H.

Sunday, 29 July, 1923 (Chail)

Left Amballa by train at 3 45 A.M and reached Chail at 10 45 A M Put up with Capt Sampatsingh Saw H H. in the afternoon Had a long interview with him about my resignation The Maharana of Dholpur was also present at the latter part of the interview H H did not agree to accept the requition and put me off by saying in the end that he would consider the whole thing and have an other talk with me tomorrow

Tuesday, 31 July, 1923 (Chail)

Had another interview with H H in the afternoon. He finally accepted my resignation on the condition that I would rejoin his service after staying 5 or 6 months if I could be spared from Indore I agreed I also submitted special inquiry file with my report and had some talk about it. I took my leave of him at 5 30 P M. and left for Patiala after seeing the Prime Minister by 6.30 P M

Saturday, 11 July, 1925 (Delhi)

Lala Lajpat Rai paid me a visit and was with me for about an hour and a quarter.

Wednesday, 22 July, 1925 (Saloagra)

Left Saloagra by motor at 7 30 A.M. On my way saw Lala Lajpat Rai Had tea with Rai Bahadur Kanchand at Solon and saw Dr Dwarkanath at Dharanpur Reached Pinjore at 11 20 A M.

Sunday, 14 February, 1926 (Delhi)

Saw Pandit Madan Mohan Malviya twice at the Birla Mills and Lala Lajpat Rai at the Western Hotel in Raisina Met there Mr Jairamdass, Editor of the Hindustan Times, also saw Mr Iyengar, Ed U & I Left by 9 45 P M train

Saturday, 8 August, 1931 (Delhi)

The Confernce of ministers commenced at 1 p m and lasted

till 7 45 p m I presided The Maharaja of Patiala attended for part of the time Sir Prabha Shankar Pattani joined at 11 A M

Wednesday, 4 November, 1931. (London)

8 30 P M gave a dinner party at the Hans Crescent Hotel The total number of guests was 38 Among them were Lord Clive, Sir Rignold and Lady Glancy Count John de Salis, Col and Mrs Harle, Raja of Sarila, Sir Pheroz S Mehta, Maj Gen Henry Henderson, Col Thomas, Sir Purshottamdass Thakurdas, Mr G D Birla, Sardar and Sardarni Ujjalsingh, Sir Sultan Ahmed, Nawab Liaquat Ali Khan, Messrs Haig, Brown, Fitze Patrick, Coatsman, Shaukat Ali, Wadia, Madhao Rao, Mrs Ritihe, Mr and Mrs Jinnah, Sardar, Mrs and Miss Kibe, Miss Fitze, Mr Sahni and Pratapsingh (My son)

5 November, 1931 Attended the King's afternoon party at Backingham Palace, Mahatma Gandhi also attended

Monday, 9 November, 1931 (London).

2 P M Went to the India House to see the Lord Mayor's Pageant

4 30 A M Attended the Dewali, At-Home given by Sir Purshottam Dass Thakur Dass at Gros Venar House

Thursday, 19 November 1931, (London)

1 P M. Lunched with the Prime Minister and Miss Macdonald at 10 Downing Street He talked to me for some time Mr Wedger-Wood Benn (Ex-Secretary of State of India) also talked to me for some time

Tuesday, 24 November, 1931 (London)

8 P M Dined with Sir Chimanlal Sitalwad at Hotel Metropole There were about 25 guests including Lord Lothian, Sir William Jowett, Mr Wedgerwood Benn, Sir Dinshow Mulla and others. I had a long talk with Commander Kenworthy

Saturday, 28 November, 1931 (London)

Attended the Plenary Session of the Round Table Conference presided over by the Prime Minister Mr Ramsay Macdonald

I delivered speech on behalf of His Highness at 4 30 P M

Read for about 22 minutes when I was cut short and asked by P M. to hand in the speech. This earned a good deal of consternation and P M sent to me a letter of apology the same night It reached me on the following morning

Monday, 30 November, 1931, (London)

Mr Rennie Smith (Late Labour M P and Hon Secy British Group Inter Parliamentary Union) called on me at St James' Palace.

Tuesday, 1 December, 1931, (London)

11 30 A M Plenary Session Prime Minister made a statement on behalf of His Majesty's Govt It was adjourned at 12 30 after a vote of thanks to the P M moved by Mahatma Gandhi was passed

Wednesday, 2 December, 1931, (London)

8 P.M. Dined with Rt Hon'ble Sir Dinshaw Mulla at 17, Portman Court, Portman Square There met the late Chief Justice of Bombay, Mr Pitterson of the Tata Works, Sir Bhupendra Nath Mitra, Sir Strongman, late Adv. General of Bombay, Mr Wallace, Deputy Registrar, Privy Council, Mr. Polak, Dr. Bharma, Mr Beaumount and Dutta

Thursday, 10 December, 1931 (London)

Left London for Marseilles by 2 P M. P & O Boat train from Victoria (via Follislone Boulgria and Paris) Mr. Henne and Mr. Jevary came to see me

At the Station were many friends including Lord Clive, Count John De Salis, Mr Brown, Mr Polak, Indore and Udaipur students, Mr Henne, Capt Allason, Miss. Wheals etc The Prime Minister's representative was also there to wish pleasant voyage on his behalf I asked him to convey to P M my thanks for courtesy, and hospitality.

Tuesday, 22 December, 1931 (On boat)

D B Ramchandra Rao brought to me a statement signed by Sapru, Jaykar, and many others, giving their views about the work done at the R T C., which they wished to give to the press on arrival in India and asked me to sign it I read it and

refused to sign it saying them that I could not sign it consistently with the views held by me I also told them that in my opinion the All India Federation on the lines on which it was worked would not come about

Monday, 15 February, 1932 (Delhi)

10 A M Mr Iyengar called on me 11 25 A M. saw sir Charles Watson, Pol Secy

2 P M meeting of Ministers at Bhawalpur House till 7 45 P M I presided over it

Saturday, 31 August, 1935 (London)

Reached London at 4 P M. Stayed at the Hans Crescent Hotel where they gave me my old suite No. 78 on the 3rd floor (where I stayed in 1931)

Wednesday, 4 September, 1935 (London)

Mr Baldwin, Prime Minister returned my call (some one on his behalf came to the hotel and left his card for me)

Sunday, 8 September. 1935 (Geneva)

Reached Geneva at 8 45 P M The hotel (where I stayed) has a beautiful situation, overlooking the lake Leman (lake of Geneva) and beautiful surroundings I was given a good suite (Nos 92 and 93) on 3rd floor

Attended the meeting of the Delegation in H H the Aga Khan's room at 6 45 P M

10 30 A M. to 1 15 P M and 5 30 P M to 7 00 P M Attended the meeting of the Assembly of the League 9 30 P M Attended a reception given by Dr Reddril, permanent delegate of Canada to the League I was there introduced to Mr De-Velera of Ireland and Mr Butler, Director of the International Labour Office and several others Returned at 11 15 P M Was introduced to Sir Samuel Hoare, Foreign Secretary of England by Sir Danys Bray

Tuesday, 10 September, 1935 (Geneva)

8 15 P M Dined at the Hotel with the Secretary of State for foreign affairs, Sir Samuel Hoare After dinner I had a long talk with Mr Edonard Mont Petit K T (Can Delegate),

Mr Rt Hon'ble Anthony Eden, Minister of League of Nations affairs and the Rt Hon'ble S M. Bruce, High Commissioner (For Australia) in London and Leader of the Australia delegate and Mr Andrews, Pol Secy High Commissioner's Office

Thursday, 12 September, 1935 (Geneva)

On return spoke to Sir Samuel Hoare about my interviews with Hitlar and Mussollini

3 30 P M Attended the first meeting of the 2nd Committee I spoke on one subject only

After dinner, Mr J H Woods C.M G , Delegate of Canada came to me and sat with us for about an hour and talked on various subjects

Friday, 13 September, 1935. (Geneva)

10 30 A M. attended the meeting of the Assembly His Excellency Mr Pierre Laval Prime Minister of France was the first to speak

4 P M attended the first meeting of the 5th Committee

5 P M attended the Council of the League as a visitor only

Sunday, 15 September, 1935 (Geneva)

10 30 A M attended the meeting of the Assembly

I spoke to Princess Starhem (Delegate of Austria) about my visit to Vienna and asked for her assistance She promised to help 3 30 P M , attended a meeting of the Assembly I spoke to Mr Marine Litvinov (1st delegate of the Union of Soviet Socialist Republic) about my visit to Russia He is Foreign Minister or Peoples' Commissar for Foreign affairs in Russia

Tuesday, 17 September, 1935. (Geneva)

Morning and afternoon—attended meetings of the Committees 1 15 P M lunched with the Chinese Delegation at the Hotel de la Paix H E Dr Sen, Ambassador of China in Moscow is the 1st Chinese Delegate—a very cultured and attractive man

8 15 P.M. Dinner of the Indian Delegation We had about 30 guests. I had Princess Starhemburg on my right and Mrs Butler (wife of the Director of the Int Labour Bureau) on my left.

Friday 20, September, 1935

Morning and Afternoon—attended meetings of the Committees

8 15 P M Dined with H H the Aga Khan and Begum Aga Khan There were about 60 guests—all distinguished persons from all parts of the World Dr Burgin, 3rd delegate of the United Kingdom sat on my right and Mr Strang, Secy General of the United Kingdom sat on my left H E Mr Eamon De Valera President of the Ex-Council, Ireland sat opposite to me

10 15 P M Attended the reception by H E Mr Benes, President of the Assembly at Hotel Des Bergues

Tuesday, 24 September, 1935. (Geneva)

Morning—Attended a meeting of the Committee

3 30 P M Attended the Plenary Session of the Assembly

4 15 P M Attended a meeting of the Committee

Wednesday, 25 September, 1935 (Geneva)

10 15 to 11 and 11 to 12 20—Attended a meeting of the Committees

12 30—Had an interview with the Secretary General in the Secretariat by appointment

1 15 P M Miss Push (German-Czechoslavic) and correspondent of the Amrit Bazar Patrika came to lunch with me and afterwards had an interview with me on behalf of her paper

Sunday, 29 September, 1935 (Geneva)

1 P M Lunched at Hotel Billerue, with His Excellency Phija Raja Wangsan, Delegate of Siam There was none else and we talked till 2 30 P M He appeared to be a very well-informed and educated man with varied experience

Wednesday, 2 October, 1935. (Lucerne)

Left Interlaken for Lucerne by 9 06 A M train and arrived there at 12 15 P M

Had a beautiful view of the snow clad mountains and the country. Had a drive round the lake Saw the grand panorama in Lion Place It represents the passage of the French Army near the Swiss frontier in the Franco-Prussian War 1870-71 It is a master piece of the artist castres of Geneva

It is the largest panorama and oil picture in the world, measuring 12400 sq. ft.

Monday, 7 October, 1935. (Austria)

10 A.M Saw Princess Starhemburg at an Hof. 4 (and Countess Kielmansburg) At 10 30 A.M. Countess took me to the room of Col Walter Adam, Secy of the Father land front Princess acted as an interpreter

Thursday, 17 October, 1935 (Athens)

With a guide visited old Seraglio with its famous treasure, collection of porcelain arms (all unique) and harem Wonderful panorama of the whole town and the sea of Mermosa is seen from there. The Offg British Minister Mr. James Morgan was with me for about an hour

Sunday, 20 October, 1935 (Ankara)

It is a delightful place on a hill. On our way we saw the residences of the President Kamal and the Prime Minister Izmal As advised by Mr. Morgan, I sent cards with the Embassy messenger for being left on the Prime Minister and the Foreign Minister. The Prime Minister returned the call at about 7 P M I left my card with Mr Morgan for the President

Thursday, 24 October, 1935 (Jerusalem)

Had Interesting drive through places of Biblical interest After lunch, saw church of the Holy sepulchre where Christ's body was brought after the crucification and burried It is a very holy place of all Christians and has chapels for diff sects of Christianity (Greek Church, Coptic Syrean, Rom Catholic & c) and has pictures of Gold, Silver jewels—most beautiful—and then saw the 'Wailing Wall' of the Jews. There a large number of jews were wailing Saw carpets and articles made of mother of pearl, olive wood etc. Population of Jerusalem is 160,000 out of which more than half are Jews Church of Holy Sepalchre was originally built by Helena, Mother of Constantine in the 3rd century Destroyed and rebuilt several times Also saw the steps from where Gen Allenby came out of the Jeffa gate after the Turks were defeated in the last European war and also the gate by which he entered Jerusalem

Wednesday, 4 November, 1936 (Bhopal)

11 A M to 2 P M Discussed constitutional points with H H the Nawab Sahib and his Ministers at her Palace (Bhopal) Sir Manubhai Mehta and Mr Sen were also present and took part

Monday, 11 January, 1937 (Indore)

6 A M was present on the Club grounds where Swami Vivekanand arrived himself in a pit for 24 hours He was supposed to be in a trance (Samadhi)

Tuesday, 12 January, 1937 (Indore)

6 P M was present when Swami Vivekanand was taken out of the pit His condition was quite good When the pit was opened he was found sitting in Samadhi

Friday, 25 March, 1938 (Indore)

7 30 A M Left by car for Nasik to attend the formal opening ceremony of the Bhosle Military School by H H the Maharaja Scindia.

Monday, 18 April, 1938 (Indore)

6 15 P M Opened the All-faith Conference at the King Edward Hall There were about 1200-1500 persons The President was Allama Mohamed Inayatulla Khan Mashriqui (founder of the Khaksar movement)

Saturday, 26 November, 1938 (Indore)

He (Col. Muirhead Under Secretary of State for India) talked to me about Federation and other matters As regards Federation, he said at the end of our talk "I shall remember your remarks"

Monday, 28 November, 1938 (Indore)

3 P M Attended the meeting of Princes and Ministers at Taj Met many Princes and Ministers There were about 30 Princes and 50 Ministers

Wednesday, 12 April, 1939 (Bombay)

12 noon to 1 30 P M and 3 P M to 6 P M Attended meeting of the Hydari Committee at the Nizam's Palace, 6.30 P.M

The members who attended are:

1 Sir Akbar Hydari, Chairman
2. Sir Krishnamachari
3. Sir Joseph Bhore
4. Mr Gopal Ayengar
5. Sir Manubhai
6 Sir K Haksar
7 Sir Shanmukham Chetty
8. 14 Messrs Amarnath Atal, Pannikar, Sen, Madhorao Neogie, Thombre, Surve, Observers: Messrs Abbasi, Saksena, Thakkor and Nawab Meharjung

Saturday, 10 June, 1939 (Bombay)

11 A.M to 12 45 P.M Attended the meeting of Princes and Ministers, 1 15 P M. Lunched with Sir Purshottam Das Thakurdas to meet Pt. Jawaharlal Nehru and other Members of the Planning Committee I met there, Pt. J. Nehru, Mr Bholabhai Desai, Mr V Patil, Rt. Hon'ble Sir Akbar Hydari, Sir Larmound (Imperial Bank), Mr. Low (Times of India), Sir Vishwesharayya and others.

Sunday, 19 November, 1944 (Alwar)

6 A M A wonderful ox was brought by his owner and gave a performance My guests and the House party, boys and many servants stood in a circle. The ox walked round and by standing in front of the person found out, (1) which boy came from Nagod, (2) which boy read in the XI class, (3) who won the prize at Rajgarh, (4) who was the oldest person, (5) who was the youngest, (6) which was Mrs Wheeler, (7) which was her daughter, (8) which was Mr Ghoshal, (9) which was his son and so on All correct This miraculous exhibition none could understand or explain It was named 'Shambhunath'

Tuesday, 23rd April, 1946 (Delhi)

Went to Ram Lila Maidan and attended Mahatma Gandhi's prayer at 6 30 P M for half an hour.

26th September, 1946

10 30 A M. Saw Mr. Herbert, Acting Political Adviser to Government of India During the talk he said that H M

Government had decided definitely to leave India and a special Act might be passed to come into operation after the Interim Government I, then, saw Mr Griffin, Political Secretary to Government of India He also said that the English were leaving India

28 September, 1946 (Delhi)

At 10 30 A M reached Mr M A Jinnah's bungalow As he was engaged, his sister Miss Jinnah received me and took me to the drawing room where she talked to me for about 7 minutes till Mr Jinnah came My talk with Mr Jinnah lasted for about one hour His views were

1 J L Nehru and Congress were arrogant, offensive, Insulting
2 They are provocative to Muslims and this leads to riots and bloodshed
3 He was discussing and may join Interim Government
4 Congress is fascist-class of Hindu Organisation Maulana Azad a beggar (a traitor) without a coat on his back Asaf Ali a C I D creature now also
5 Result of elections shows Momins voted for Muslim League About 92% of votes Muslim League got
6 Hindu and Muslims can never Unite Different culture, different traditions, different interests
7 Pakistan is the only solution Muslims can never agree to become a minority which it would be in the all India Government (Hindustan)
8 British Government can go only if Hindus and Muslims agree and unite
9 He does not want blood-shed, but if no settlement is arrived at it cannot be avoided
10 In States—Muslims must organise to get their rights and must agitate
11 Can live peacefully if Hindus live in Hindustan and Muslims in their homeland (Pakistan) North-East and North-west (with 30 million Hindus) and in Hindustan (30 million Muslims)
12 In States or Provinces—no question of parity Only population basis with some weightage

5 30 P M. Saw Seth Jugal Kishore Birla and had a talk with him on various subjects He thought that :

1. Pt. Nehru, Rajaji and Rajendra Prasad were wavering but S Patel was strong and would not compromise with Muslim League
2. There will be Hindu-Muslim fight, if not now, later.
3. Congress—Hindus strong enough to rule
4. Hindu—W. Bengal and Hindu Punjab and Assam not to be included in Pakistan
5. Hindu-Meo marriage should be encouraged
6. Meos to be converted.

6 30 P M Met Sir Sultan Ahmed who was in bed and had a talk with him. He thought that

1. States won't negotiate or join Constituent Assembly until Hindus and Muslims agree.
2. No reforms were likely for the present
3. Smaller States should not form Confederation etc Dungarpur is not wise and not consulting Chancellor. Alwar was wise in refusing
4. At his suggestion Constituent Assembly is postponed to December.

Wednesday, 15 January, 1947 (Alwar)

Dr. Mirajkar saw me at 10 A.M I was delirious and had to be given morphea injection I had a bad night.

Thursday, 16 January, 1947 (Alwar)

Dr Mirajkar examined me in the morning and left in the afternoon. He advised me to go to Bombay at once and arranged for my treatment at the Tata Memorial Hospital

Sunday, 19 January, 1947 (Delhi)

Left Delhi by Decota Aeroplane specially chartered for me for Bombay at 11 A M.

Dr Borges and Dr. Paymaster received me on arrival at the Hospital and examined me

Wednesday, 26 March, 1947 (Bombay)

Dr Bharucha examined me with Dr. Borges and they both informed me about their final decision to operate me. I agreed to their decision.

Friday, 28, March, 1947 (Bombay)

I was operated upon by Dr Borges assisted by Dr Meharumjee The operation began at 10 15 A M and lasted till 11.45 A M Drs Bharucha, Sharma, Yeshwant Singh and Dharam Chand were by my side while I was operated On opening, no malignancy was found except small ulcers at 2 places in the small intestine, which were causing partial obstruction and pain all through Short circuiting was done The operation was very successful and I stood it well all through

Friday, 15 August, 1947 (Indore)

H H last evening announced his independence on the lapse of paramountcy and also the appointment of 3 ministers from the public.

Tuesday, 17 February, 1948. (Delhi)

At 12.30 P M I saw Seth Ghanshiamdas Birla He pointed out to me the spot where Mahatma Gandhiji was assassinated by Nathooram(Narain Vinayak Godse) His Secretary showed me the room in which Mahatmaji lived during his last days Besides his Gaddi on which were his articles, there were his Charkha, blood-stained clothes and his other articles His grand daugther-in-law and grand son who also there I returned at 12 45 P M in Mr Devdas Gandhi's room

Tuesday, 24 February, 1948 (Delhi)

I saw the Hon'ble Sardar Patel, Deputy Prime Minister of India by appointment at 3 10 P M in his office, Saw H H of Alwar at 7 20 P M and returned at 8 P M

Tuesday, 26 February, 1948 (Delhi)

At 11 30 A.M I saw the Hon'ble Pt Jawaharlal Nehru Prime Minister of India at the Council House, room No 11 After lunch, I went to H H Alwar as his A D C and Capt Khuspal came to fetch me

I then remained with H H till 4 P M then with him to Dholpur house to attend a meeting of the Rulers of Alwar, Dholpur, Bharatpur, Kranchi

Tuesday, 11 March, 1948 (Udaipur)

After breakfast went by car to the City Palace to see H H

as desired by him. Theti me appointed by him was 9 A M Local time. When I arrived there, he was having his breakfast and there were others also In about 5 minutes he finished his breakfast and asked others to go and talked to me alone for half an hour on the political questions affecting him and his State I tendered him my advice on all the points on which my advice was sought

Tuesday, 30 March, 1948. (Manipur)

On my way back, His Highness met us and stopped his car and called me and talked to me for a few minutes regarding his joining the Rajasthan Union and his allowances as Raj-pramukh and also about the decision that Udaipur would be the Capital

I had H H 's inv } jitationo the at-home tomorrow at Jagmandir to meet Lord and Lady Mountbatten

Sunday, 18 April, 1948 (Udaipur)

Attended the installation of H H the Maharana Sahib as Raj Pramukh of the Rajasthan Union by India's P M. Pt Jawaharlalji Nehru at 11 A M (actually at 11.15A M) The Rulers of Kotah, Bundi and Dungarpur were installed as Up-Rajpra-mukha or Mr Maniklal Verma was appointed as Chief Minister. They were administered oath by Panditji H H arrived about 20 minutes before Panditji who came in procession accompanied by the Maharaj Kumar and escorted by the Cavalary.

Tuesday, 15 March, 1949 (Delhi)

At 10 30 A M. I saw by appointment H E Shri Chakravarty Rajagopalchari, Governor-General of India at the Govt house and had 50 minutes' talk with him We talked on many subjects.

Friday, 30th November, 1951 (Indore)

At 10 A M , Capt Dhandha, Mr J L Mital, R B. Seth Kanhiyalalji Bhandari, Mr Jall, Mr Dravid Mr Tara Nath Pathak, Mr Patodi, Mr Narendra Sharma, Mr Purushottam Dutt, Members of the deputation of Indore Rajdhani met and the meeting lasted till 12 noon The discussion was as regards the points to be submitted and by whom to the Hon'ble Pt. Jawaharlal Nehru tomorrow evening

3 January, 1952 (Indore)

After breakfast went to the Aerodrome to receive H H Maharaja Holkar who came by Air from Bombay Then went to the Diamond Club and gave my notes to Mr Nandlal Joshi for the House of Parliament and Mr. Ram Singh Bhai of the M B Legislative Assembly. Returned at 11 15 A M

20 February. 1952 (Indore)

Dr. L C Jain, Mr Rao, Finance Secretary Pt Shiv Sewak Tiwari, Mr N D Joshi Manager of the Bank of Indore saw me while I was having a walk and pressed the request made by Dr Jain and Mr Rao Untimately I agreed to be the Chairman of the Board of Directors of the Bank

8 May. 1952 (Indore)

The question of the Madhya Bharat Capital has been decided by Mr Nehru His award is that the Capital should be at Gwalior for 7 to 7½ months and at Indore from 4½ to 5 months

25 May, 1952 (Indore)

Mr K C Neogy, Chairman of the Union Finance Commission called in the afternoon

15 November, 1952 (Indore)

After half an hour's talk with H H or Col Dinanath about the telegram sent to Mr Nehru, Dr Katju, Maulana Azad and the M B Ministers regarding the M B University I sent telegrams to Mr Nehru and Dr. Katju about it in the evening

19 November. 1952 (Indore)

At 5 30 P M I had a meeting of the University Committee here of which I am the Chairman

Friday, 5 June. 1953 (Indore)

I had a meeting here of the M B University Committee I presided The members present were besides myself

Mr J L Mital, Mrs Kibe, Mr Sarvate, Mr Nihal Karan, Zamindar, Bada Raola, Mr Nandlal Joshi, Mr Bhanu Das Shah We had tea and then went to the Residency to see H H the Raj Pramukh in his capacity of the Chancellor of the M B. University by appointment at 6 P M He saw us at about 6 30

P M I on behalf of the Committee submitted our reasons against his order.

20 March, 1954 (Indore)

At 5 P M. there was a meeting to consider the steps to be taken regarding the reference of the M.B. University Bill to a Select Committee and also to consider the question of submission of a memorandum to the Delimitation Committee.

10 October, 1954 (Indore)

At about 5 P M Had a meeting in connection with the organisation of State Boundary Commission which is to come here tomorrow at 11 A M The members present were : Mr Mital, Mr Muchha, Mr Bhanu Das Shah, Mr. Totlaji, Mr Narendra Nath Sharma, Mr. Hastimal Jain The meeting was over at about 6 P M.

11 October, 1954. (Indore)

Mr Mital telephoned to me that the members of the Re-organisation of States Boundary Commission will receive us on the 13th at 12 30 P M. at the Residency The Chairman is Mr. Fazal Ali, Governor of Orissa. Other members are Sardar K M Panikkar, and Mr. Hirdayanath Kunzru

Tuesday, 21 December, 1954 (Indore)

Mullaji of Bohras and 4 other Bohras came to deliver to me Bada Mullaji's invitation to the marriages of his three sons and three daughters and requested me to attend them I expressed my inability and told them that I would write to him and convey my thanks and good wishes.

10 August, 1960 (Indore)

Shri Vinoba Bhave paid a visit to meet me at 8 A M along with about 20 people He stayed with me for about 10 to 15 minutes Shri Khode was also with me then. A purse of Rs 501/- was presented to Shri V Bhave.

८

एक ऐतिहासिक शिलालेख

(सेठ जोरावरमलजी व उनके भाइयो ने जो शत्रुजय तथा अन्य तीर्थो के लिए सघ निकाला था, उसका वर्णन जैसलमेर के पास अमरसागर-स्थित वापना-वश के मन्दिर के एक शिलालेख मे दिया हुआ है। यह शिलालेख स्व० पूरनचन्द नाहर द्वारा रचित 'जैसलमेर' नामक पुस्तक मे दिया हुआ है। यह अध्याय २ मे अकित है। उक्त शिलालेख की प्रतिलिपि यहा दी जाती है।)

प्रशस्ति नं० १

(२५३०)

(१) ॥ ओम् नम ॥ दूहा ॥ ऋषभादिक चौवीस जिन पुडरीक गणधार। मन वच काया एक कर प्रणमू वारवार ॥१॥ विघन हरण सप-

(२) ति करण श्री जिनदत्तसूरिद। कुसल करण कुसलेस गुरु वद खरतरइद ॥२॥ जाके नाम प्रभावतै प्रगटै जय जय-

(३) कार। सानिधकारी परम गुरु रहौ सदा निरधार ॥३॥ स० १८९१ रा मिति आपाढ सुदि ५ दिने श्री जेसलमेरु नगरे महारा-

(४) जाधिराज महारावलजी श्री १०८श्री गजसिघजी राणावतजी श्रीरूपजी वापजी विजयराज्ये वृहत्खरतर भट्टारक

(५) गच्छे जगमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनहर्पसूरिभि २ पट्टप्रभाकर ज०। यु०। भ०। श्री १०८ श्री जिनमहेन्द्रसूरिभि २ उपदेशा-

(६) त् श्रीवाफणागोत्रे सा० श्री देवराजजी तत्पुत्र गुमानचन्दजी भार्या जैता तत्पुत्र ५ वहादरमल्लजी भार्या चतुरा। सवाईराम

(७) जी भार्या जीवा मगनीरामजी भार्या परतापा जोरावरमल्लजी भार्या चौथा परतापचदजी भार्या माना एव वहादरमल्लजी त-

(८) त्पुत्र दानमल्लजी सवाईरामजी तत्पुत्र सामसिघजी माणकचद। सामसिघ पुत्र रतनलाल। मगनीरामजी तत्पुत्र भभूतसिघ तत्पुत्र २

(९) पूनमचद दीपचद। जोरावरमल्लजी तत्पुत्र २ सुलतानमल्ल चनणमल्ल सुलतानमल्ल पुत्र २ गभीरचद इद्रचद प्रतापचदजी पुत्र ३ हिमतरा-

(१०) म जेठमल्ल नथमल । हिमतराम पुत्र जीवण जेठमल पुत्र मूलो गुमानचदजी पुत्र्या २ झबू बीजू सवाईरामजी पुत्र्या ३ सिरदारी सिणगारी नानूडी

(११) मगनीरामजी तत्पुत्र्या २ हरकवर हसतू सपरिवारसहितै सिद्धाचलजीरो सघ कढायो जिणरी विगत जेसलमेरु उदयपुर कोटे सु कुकुमपत्र्या सर्व दे-

(१२) सवरा मे दीवी । च्यार २ जीमण कीया नालेर दीया पछे सघ पाली भेलो हुवो उठै जीमण ४ कीया सघ तिलकरा सघतिलक मिति माह सुदि १३ दिने

(१३) भ० । श्री जिनमहेद्रसूरिजी श्री चतुर्विधसघसमक्षे दीयो पछे सघ प्रयाण कीयो मार्ग मे देसना सुणता पूजा पडिकमणादिक करत सातँ

(१४) क्षेत्रा मे द्रव्य लगावना जायगा २ सामेलो हुता रथजात्रा प्रमुख महोत्सव करता श्रीपवतीर्थीजी बभणवाडजी आबूजी जिरवलोजी तार-

(१५) गोजी सखसरोजी पचासरोजी गिरनारजी तथा मार्ग मे सहरारा गावारा सर्व देहरा जुहारचा इणभात सर्व ठिकाणे मदिर २ दीठ चढायो कीयो

(१६) मुकुट कुडल हार कठी भुजवध कडा श्रीफल नगदी चद्रवा पुठिया इत्यादिक मोटा तीर्थमाथे चढावतो घणो हुवो गहणो सर्व जडाऊ हो सर्व

(१७) ठिकाणे लाहण जीमण कीया सहसा वनरा पगथ्या कराया उठै सू सात कोस ठरै गाव सू श्रीसिद्धगिरिजी मोल्या सू वधायने पालीताणै वडा हगाम

(१८) सू गाजा वाजता तलेटी रो मदिर जुहार डेरा दाखल हुवा दूजै दिन मिती वैशाख सुदि १४ दिने शातिक पुष्टिक हूता श्री सिद्धगिरिजी पर्वत पर चढ्या

(१९) श्री मूलनायक चौमुखोजी खरतरवसीरा तथा दूजी वस्या सर्व जुहारी मास १ रह्या उठे चढायो घणो हुवो अढाई लाख जात्री भेलो हुवो ।

(२०) पूरव मारवाड मेवाड गुजरात ढूढाड हाडोती कछ भुज मालवो दक्षण सिध पजाव प्रमुख देसारा उठै लहण १) सेर १ मिश्री घर दीठ दीवी जीम-

(२१) ण ५ सघव्या मोटा कीया । जीमण १ वाई वीजू कीयो और जीमण पिण घणा हुवा । श्री चौमुखजी रै वारणै आला मे गोमुखयक्ष चक्रेश्व-

(२२) री री प्रतिष्ठा करायने पधराई चौमुखजी रो सिखर सुधरायो १ नवो मन्दिर करावण वस्ते नीव भराई । जूना मदिरा रा जीर्णोद्धार कराया जन्म

(२३) सफल कीयो अथच गुरुभक्ति इण मुजब कीनी ११ श्री पूज्यजी ठा २१०० साधु साध्व्या प्रमुख चौरासी गच्छाधिकारी त्यां प्रथम स्वगच्छ

(२४) रा श्री पूज्यजी री भक्ति साचवी हजार पाच रो नकद माल दीयो दूजो
खरच भर दीयो अनुक्रमे सारा दूजा श्रीपूजा री साधु साध्वीया री भक्ति
(२५) साचवी आहार पाणी गाडियारो भाडो तवू चीवरो ठाणे दीठ ४) रुपया
दीया नगद दुसालावालाने दुसाला दीया सेवग ५००हा जिणाने जणै दीठ
(२६) २१) इकीस रोट्या खरच न्यारो मोजा पहरण रा ओपध खरची सारू
रूपया चाहीज्या जिणानैं दीया पछे भ० । श्रीजिनमहेद्रसूरिजी पासे सिंघ-
(२७) विया २१ सघमाला पहरी जिणमैं माला २ गुमास्तै सालगराम महेसरी
नै पहराई पछै वडा आडवर सू तलेटी रो मदिर जुहार डेरा दाखल हुवा
(२८) जाचका नै दान दीयो पछै जीमण कीयो साधर्म्या नै सिरपाव दीया
राजा डेरे आयो जिणनें सिरपाव हाथी दीया दूजा मार्ग मे राजवी न-
(२९) वाव प्रमुख आया डेरै जिणानै राज मुजव सिरपाव दीया श्रीमूलनायकजी
रै भडार रै ताला ३ गुजरातिया रा हासो चौथो तालो सघव्या आ-
(३०) परो दीयो सेदावरत सरू देई जैसा २ मोटा काम कर्‌या पछै सघ कुसल-
षेमसू अनुक्रमे राधनपुर आयो उठे अगरेज श्री गोडी-
(३१) जी रा दरसण करण नै आयो उठै पाणी नहीं थो गैवाऊ नदी नीसरी
श्री गोडीजी ने हाथी रै होदै विराजमान कर सघ नें दरसण दि० ७
(३२) इकलग करायो चढापै रा साढा तीन लाख रुपया आया सवा महीनो
रह्या जीमण घणा हुवा श्री गोडीजी रै विराजण नै वडो चोतरो
(३३) पक्को करायो ऊपर छतरी वणाई घणो द्रव्य खरच्यो वडो जस आयो
अक्षात नाम कीयो साथे गुमास्तो महेसरी सालगराम हो जिणनै जै-
(३४) नरा शिवरा सर्व तीर्थ कराया पछै अनुक्रमे सघ पाली आयो जीमण
१ करने दानमल्ल कोटे गयो भाई ४ जेसलमेरु आया डेरा दरवाजे
(३५) वाहिर कीया पछे सामेलो वडा थाट सू हुवो श्री रावलजी साम पधार्‌या
हाथी रे होदै सघव्या नै श्री रावलजी आपरे पूठे वेसाण नै
(३६) सारा सहर मे हुय देहरा जुहार उपासरै आय हवेल्या दाखल हुवा पछै
सर्व महेसरी वगैरे छत्तीस पौन ने लुगाया समेत पाच पकवान
(३७) सू जीमायो ब्राह्मणा नै जणे दीठ एक रूपयो दिपणा रो दीयो पछै श्री
रावलजी जनानैं समेत सघव्या री हवेली पधार्‌या रूप्या सू चातरो-
(३८) कीयो सिरपेच मोत्यारी कठी कडा मोती दुसाला नगदी हाथी घोडा
पालखी नीजर कीया पाछा श्री रावलजी इण मुजव हीज सिर-
(३९) पाव दीयो एक लुद्रवोजी तावा पत्रा पट्टे दीयो इतो इजाफो कीयो आगे
पिण इणारी हवेली उदैपुर राणोजी कोटेरा महारावजी
(४०) वीकानेररा किसनगढरा वूदीरा राजाजी इदोररा हुलकरजी प्रमुख सर्व
देसारा राजवी जनाने समेत इणारे घरे पधार्‌या देणो

(४१) लेणो हजारा रो कीयो दिल्ली रे पातसा री अगरेजा रै पातसा री
दीयोडी सेठ पदवी हे सुविख्यात हीज है पछै सघरी लाहण न्यात मै
(४२) दीवी पुतली १ हेमरी थाली १ मीश्री सेर १ घर दीठ पछै वहादरमल्लजी
लारै लाहण कीवी रुपया ५) थाली १ मिश्री सेर
(४३) १ घर दीठ दीवी जीमण कियो पछै सहर मै ठावा २ नै सिरपाव दीया
पछै गढ माहला मदिरा लुद्रबे उपासरे बडे चढापो कीयो इण-
(४४) मुजब हीज उदैपुर कोटै देणो लेणो कीयो हिवै सघमैं देरासर रो रथ हा
जिणरा ५१००) लागा त्रगडो सोना रूपैरा २
(४५) जिणरा १००००) लागा मदिर रा सुनैरी रूपैरी वासणा रा १५०००)
लागा। डूजा फुटकर सरजामनै लाख एक रुपया
(४६) लागा। हमे सघ मै जाबतो हो तिणरी विगत। तोपा ४ पलटण रा
लोक ४००० असवार १५० नगारै निसाण समेत उदैपुर रा रा-
(४७) णैजीरा असवार ५०० नगारै निसाण समेत कोटै रा महारावजी रा
असवार १०० नगारै निसाण समेत जोधपुर रै राजाजी
(४८) रा असवार ५० नगारै निसाण समेत। पाला १०० जेसलमेर रा
रावलजी रा असवार २०० टूक रे नबाब रा असवार ४०० फु-
(४९) टकर असवार २०० घरू और अगरेजी जाबतो चपरासी तिलगा सोनेरी
रूपैरी घोरेवाला जायगा २ परवाना बोला
(५०) वा एव पालख्या ७ हाथी ४ म्याना ५१ रथ १०० गाडिया ४०० ऊट
१५०० इतातो सघव्या रा घरु सघ री गाड्या ऊठ प्रमुख न्यारा
(५१) सर्व खरचरा तेरेलाख रूपया लागा इति सघरी सक्षेप पणै प्रशस्ति ॥
और पिण ठिकाणै २ धर्म रा काम करचा सो सषेप
(५२) लिखिये छै श्रीघूलेवाजी रै मदिर बारणै नोबत रवानो करायो गहणो
चढायो लाख एक लागा मगसीजी रै मदिर रौ जीर्णोद्धार क-
(५३) रायो उदैपुर मै मदिर २ दादासाहिब री छतरी धर्मशाला कराई कोटा
मैं मदिर २ धर्मशाला दादासाहिब री छतरी कराई
(५४) जेसलमेरु मे अमरसागर मैं वाग करायो जिणमै मदिर करायो जयवता
री उपासरो करायो लुद्रवैजी मै धर्मशा-
(५५) ला कराई गढ माथे जमी मदिरा वास्ते लीवी वीकानेर मैं दादासाहिव
री छतरी कराई इत्यादिक ठिकाणे २ धर्मरा आ-
(५६) हीठाण कराया श्री पूज्यजी रा चौमासा जायगा २ कराया पुस्तका रा
भडार कराया भगवतीजी प्रमुख सुण्या प्र-
(५७) श्न दी५ २ मोनी घर्‌यो कोठी मे दोय लाख रुपया देनै वदीखानो
छुडायो बीज पांचम आठम इग्यारस चउदसरा

(५८) उजमणा कीया इत्यादिक काम धर्म रा कीया फेर ठिकाणे ठिकाणे धर्म रा काम कराय रह्या हे इण मुजब हीज

(५९) सवैयो ३१ सो ।। सोभनीक जैसाणै मैं वाफणा गुमानचद ताके सुत पाच पाच पाडव समान है । सपदा मे अच-

(६०) ल वुध मैं प्रवल राव राणा ही मानै जाकी कान है । देव गुरु धरम रागी पुण्यवत वडभागी जगत सहु वात जाने

(६१) प्रमान हे देसहू विदेश माह कीरत प्रकास कीयो सेठ सहु हेठ कवि करत वखान है ।। १ दूहा ।। अठारसे छि-

(६२) नूवै जेठ मास सुदि दोय लेख लिख्यो अति चूप सू भवियण वाचो जोय ।। १ सकल सूरि सिर मुगटमणि

(६३) श्री जिनमहेद्रसूरिंद चरण कमल तिनके सदा सेवै भवियण वृद ।। २ कीनो अति आग्रह थकी जेश-

(६४) लमेरु चोमास सघ सहू भक्ति करै चढतै चित्त उलास ।। ३ ताकी अज्ञा पाय करि धरि दिल मैं आणद

(६५) ज्यु थी त्यु रचना रची मुनि केसरीचद ।। ४ भूलो जो परमाद मै अक्षर घाट ही वाध लिखत पोट आ-

(६६) ई हुवै सो खमीयो अपराध ।। ५ इति ।। श्री ।। श्री ।।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५	२	१४ मील	१४० मील
२०	११	चादमलजी	चादनमलजी
२७	१४	महाराजा	महाराणा
३६	१	४०	७०
४२	३०	चरितनायक वर्प की	चरितनायक ने २२ वर्ष की
५१	२५	१९१०	१९१७
६२	२४	कोर्ट	कोड
७९	१२	दाही	डही
८०	२४	पदो	मदो
९५	१	जाना था	जाता था
९५	३	वेकर हाउस	वेग्रर हाउस
१०८	४	सभा किए	एक सभा
११६	२२	१९३०	१९३८
१२०	१०	वे चुगी की माग कर रहे है। वापिसी चुगी के कारण	वे चुगी को कम करने की माग कर रहे है। चुगी के कारण
१३४	२९	दिसम्बर १९६९	दिसम्बर १९६८